खनिधिव्योमशरमित-(५०९०)-कलिवर्षस्य वेदवेदाङ्गोपाङ्गस्मृतिपुराणादिशास्त्रवशंवदस्वाद्ध्यायशालाकुटुम्बनिर्णीत-
वैदिकतिथिपर्वादि-समलङ्कृतं स्वाद्ध्यायशालाकुटुम्बजनविरचितं लगधमुनिप्रोक्त-वेदाङ्गज्योतिषानुसारि

वैदिक-तिथिपत्रम्

वैदिक पात्रो २०८२

दृक्सिद्ध गणना र वैदिक साइत भएको एकमात्र पात्रो

१५

संस्थापक
शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन

ऐन्द्राग्नं युगम् (१०)
वत्सरः (५)
चान्द्रः अनलः संवत्सरः (५०)
महाकल्पसंवत् १५,५५,२१,९७,२९,४९,०९०
कल्पसंवत् १,९७,२९,४९,०९०
वैवस्वतमन्वन्तरसंवत् १२,०५,३३,०९०
अष्टाविंशतितममहायुगसंवत् ३८,९३,०९०
युधिष्ठिरसंवत् (भारतयुद्धसंवत्) ५१२६
कलिसंवत् ५०९०
वैदिकतिथिपत्रप्रवृत्त्यब्दाः १५

बार्हस्पत्यः कालः (५२) संवत्सरः
सिद्धार्थी (५३) संवत्सरश्च
विक्रमसंवत् २०८१-२०८२
शकान्तसंवत् (शकसंवत्) १९४६-१९४७
मैथिलसंवत् १४३२-१४३३ (साल)
नेपालसंवत् ११४५-११४६
एलेसंवत् (किरातसंवत्) ५०८५
सोनमसंवत् (तामाङसंवत्) २८६१
लक्ष्मणसेनसंवत् ९१५-९१६
बङ्गसंवत् १४३१-१४३२
हिजरिसंवत् १४४६-१४४७
क्रैस्तसंवत् २०२४-२०२५ (सन्)

स्वाद्ध्यायशालाकुटुम्बम्
काष्ठमण्डपजनपदस्थम्, ९८४१९६८२६२

यस्मिन् देशे मृगः कृष्णस् तस्मिन् धर्मान् निबोधत ।–याज्ञवल्क्यस्मृति १।२

मूल्य रु. १२०/-

स्वाद्ध्यायशालाकुटुम्बका वेदाङ्गज्योतिषसम्बद्ध सामग्री र वैदिकतिथिपत्रहरु

स्वाद्ध्यायशालाकुटुम्बको स्वधर्मसन्देश (४)

स्वाद्ध्यायशालामा भएको वेदवेदाङ्गादिशास्त्रको अध्ययनबाट गरिएको वैदिक मूल वर्षगणनापद्धतिको यथार्थ आकलनबाट वैदिक मूल कालगणनापद्धति बुजेर धार्मिक कृत्य गर्न उद्बोधन

स्वाद्ध्यायशाला २०३६

पथिकृत्

शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन

आचार्य, एम्.ए., विद्यावारिधि (पिएच्.डि.), वाचस्पति (डि.लिट्.)

कार्यकर्ताहरु

देवी आचार्यानी घृतकौशिकी
आमोदवर्धन कौण्डिन्न्यायन, शुक्लयजुर्वेदाचार्य
वेदवती आचार्यानी काश्यपी
प्रमोदवर्धन कौण्डिन्न्यायन, धर्ममीमांसाचार्य
सुमोदवर्धन कौण्डिन्न्यायन, ब्रह्ममीमांसाचार्य
सम्मोदवर्धन कौण्डिन्न्यायन
वशंवदाम्बा कौण्डिन्न्यायनी
अतिसम्मोदवर्धन कौण्डिन्न्यायन
ऐन्दवी कौण्डिन्न्यायनी
अन्वयवर्धन कौण्डिन्न्यायन

स्वाद्ध्यायशाला

च २/४१९ सरस्वतीमार्ग, लाजिम्पाट्, काठमाण्डु–२, नेपाल; दूरस्वन ४३३३२७।
कृष्णयुगाब्द ५०६७, वैदिक परिवत्सर, उदगयन, शिशिर ऋतु, तपश्शुक्लप्रतिपत्
वैदिकनववर्षारम्भतिथि
(२०५८।८।३०=२००१।१२।१५)

(२०५८) मूल्य रू.५।-

स्वाद्ध्यायशालाकुटुम्बको स्वधर्मसन्देश (८)

वैदिक धर्मकर्मका लागि वैदिक कालगणनापद्धति नै अँगाल्नपर्छ

यज्ञ तथा विवाह-व्रतबन्धादि-संस्कार-कर्म-समेत सबै श्रौत-स्मार्त धर्मकर्म लगधमुनिप्रोक्त मूल वेदाङ्गज्योतिषग्रन्थमा प्रतिपादित वैदिककाल-गणनापद्धति अँगालेर मूलशास्त्रोक्त कालमा नै गर्नपर्छ

पथिकृत्

शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन

आचार्य, एम्.ए., विद्यावारिधि (पिएच्.डि.), वाचस्पति (डि.लिट्.)

कार्यकर्ताहरु

देवी आचार्यानी घृतकौशिकी
आमोदवर्धन कौण्डिन्न्यायन, शुक्लयजुर्वेदाचार्य, विद्यावारिधि
वेदवती आचार्यानी काश्श्यपी
प्रमोदवर्धन कौण्डिन्न्यायन, धर्ममीमांसाचार्य
श्रुतिमती आचार्यानी कौशिकी
सुमोदवर्धन कौण्डिन्न्यायन, ब्रह्ममीमांसाचार्य
आम्नायवती आचार्यानी काश्श्यपी, दर्शनशास्त्रि, कलाचार्य
सम्मोदवर्धन कौण्डिन्न्यायन, चिकित्साविज्ञानाचार्य (एम्.डि.)
अतिसम्मोदवर्धन कौण्डिन्न्यायन, औषधविज्ञानशास्त्रि
ऐन्दवी कौण्डिन्न्यायनी
अन्वयवर्धन कौण्डिन्न्यायन
वैश्वदेविका कौण्डिन्न्यायनी
वारुणी कौण्डिन्न्यायनी

स्वाद्ध्यायशाला

काठमाण्डु, ☏ ४३८६९८९, ९८०८६४१२१७, ९८४९०९१४६७
वैद्युतसन्देश (इमेल) svadhyaya@hotmail.com
२०६७।६।७
५०७५ (२०६७) मूल्य १५।–

आचार्य-शिवराजकौण्डिन्न्यायनपथिकृत्त्वे प्रारब्धम्

वैदिकतिथिपत्रम्

पञ्चदशं पत्रम् (१५)

व्यवस्थापकः

आमोदवर्धनः कौण्डिन्न्यायनः

शुक्लयजुर्वेदाचार्यः, विद्यावारिधिः, ९८४९-०९१४६७

रचयिता सम्पादकश्च

प्रमोदवर्धनः कौण्डिन्न्यायनः

धर्ममीमांसाचार्यः, एम्.ए., विद्यावारिधिः ९८४१-९६८२६२

वैद्युतसन्देशः **acharyapramod622@gmail.com**

सहयोगी

सुमोदवर्धनः कौण्डिन्न्यायनः

ब्रह्ममीमांसाचार्यः (अद्वैतवेदान्ताचार्यः), विद्यावारिधिः ९८४३-०३५३९७

स्वाद्ध्यायशाला, ब्रह्मपुरी, काष्ठमण्डपजनपदः, नेपालदेशः

वैद्युतसन्देशः **svadhyaya2036@gmail.com**

सुसङ्गमकगणनासहयोगी

रघुनाथः उपाध्यायः ढुङ्गेलः

प्रचारणसंयोजकाः

कृष्णराजः वाग्लेः, व्यासनगरपालिका, तनहुँ, ९८४६-२४५९२२

कृष्णप्रसादः दुवाडीः आत्रेयः, वैदिक प्रज्ञा-प्रतिष्ठानम्, रत्ननगर–१३ जयमङ्गला, चितवन, ९८४५-१६०२४२, ०५६-५६०९४०

केशवः दाहालः, धरान, ९७४९-९२८१३३।

हिन्दी भूमिका

वैदिकतिथिपत्रस्य संस्कृतभूमिका

हिन्दी भूमिका

(क) तिथिपत्र देखने से पूर्व ज्ञातव्य विषय

प्रस्तुत तिथिपत्र में प्रत्येक पृष्ठ के ऊपर प्रथम पङ्क्ति में **वेदाङ्गज्योतिष की परिभाषा के अनुरूप वर्ष, अयन, ऋतु, महीना** और **पक्ष** बडे अक्षरों में दिए गए हैं। **अन्य मत (सिद्धान्तज्योतिष) के अनुरूप के वर्ष, महीना इत्यादि** दूसरी पङ्क्ति में छोटे अक्षरों में दिए गए हैं।

वेदोक्त अहोरात्रात्मक **तिथि** और आथर्वणज्योतिषोक्त **करण** सुरु के स्तम्भों में दिए गए हैं। तदनन्तर **लौकिक तिथि, वेदाङ्गज्योतिषगणितानुसारि मध्यम नक्षत्र, दृक्सिद्ध गणना के नक्षत्र** क्रमशः दिए गए हैं। उसके बाद दिनमान (घण्टा-मिनट में), सूर्योदयसमय तथा सूर्यास्तसमय दिए गए हैं। सौर उत्तरायणारम्भ से गणना किया गया **अहर्गण, वार, निरयण सौर महीने के दिन (गते)** और **तारीख** अन्त के स्तम्भ में क्रमशः दिए गए हैं।

वैदिक चान्द्र संवत्सर वर्षभर एक ही रहता है। **बार्हस्पत्य संवत्सर** गणितानुसार बीच में ही परिवर्तित होता है। अतः उसी के अनुसार इन संवत्सरों का उल्लेख किया गया है।

अयनचलन के कारण पौराणिक पर्वों का समय भी आगे आ गया है। कतिपय पौराणिक त्योहारों का समय १ महीने पूर्व और कतिपय पौराणिक त्योहारों का समय २ महीने पूर्व हो सकता है। इसको निश्चित करना और सुधारना भी आवश्यक है। अतः मुख्य कुछ पर्व–त्योहारों को एक माह पूर्व भी दिखाया गया है। जहाँ पर तिथि में अधिक अन्तर है वहाँ पौराणिक पर्व त्योहार **वैदिक तिथि तथा लौकिक तिथि** दोनों में लिखे गए हैं।

विवाह-व्रतबन्धादि के दिन (पुण्याह, मुहूर्त) वैदिक-सिद्धान्तअनुसार पारस्करगृह्यसूत्र के विधान के आधार में दिए गए हैं। वेदों में नक्षत्र की बात होने से और लग्न की बात न होने से नक्षत्र के आधार पर पुण्याह दिए गए हैं, लग्नका विचार नहीं किया गया है। उस दिन के लिए शुभ समय दिन के १५ मुहूर्तों में से अच्छे मुहूर्त का समय माना जाता है।

इस वैदिक तिथिपत्रका गणित नेपाल के प्रामाणिकसमय के अनुसार किया गया है। भारत के लिए १५ मिनट सयमका अन्तर (–१५) होगा। सूर्योदय और सूर्यास्तकाल तो प्रत्येक नगर में देशान्तर के अनुसार भिन्नभिन्न होते हैं।

प्रस्तुत तिथिपत्र देखने के समय इन विषयों में विशेष ध्यान देना आवश्यक है।

(ख) शास्त्रपरिचय

भारतवर्ष में सम्पूर्ण विद्याओं का मूल वेद माना जाता है। वेद में अन्तर्निहित बीजों को ही लेकर मुनियों ने विभिन्न विद्याओं का प्रणयन और विकास किया है। उन विद्याओं में भी वेद की अत्यन्त निकट विद्याएँ छः हैं। उनको वेदाङ्ग कहते हैं। वे हैं— शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्दश्शास्त्र और ज्योतिष।

ज्योतिष में श्रौत और गृह्य कर्मों में अपेक्षित काल का निरूपण होता है। ज्योतियों की अर्थात् ज्योतीरूप सूर्य-चन्द्र-नक्षत्रों की गति-स्थितियों के आधार में काल का निरूपण करने वाला शास्त्र होने से इसको ज्योतिष कहा गया है। सभी वेदाङ्गशास्त्र वेद में प्राप्त तथ्यों को ही सङ्गृहीत तथा पल्लवित और विकसित करके मुनियों से विरचित माने जाते हैं।

उक्त स्थिति में वर्तमान काल में बहुप्रचारित ज्योतिष ग्रन्थों में और उनमें प्रतिपादित कालगणनासिद्धान्त में वेदवेदाङ्गों में आकाङ्क्षित विषयों का अभाव, अनाकाङ्क्षित विषयों का प्रतिपादन और वेदप्रतिकूल रूप में वर्षादि का निरूपण भी वेदाङ्गज्योतिष के सिद्धान्त में और प्रचलित ज्योतिष के सिद्धान्त में बहुत बडा अन्तर है।

(ग) वैदिक कालगणना के कुछ महत्त्वपूर्ण विषय

(१) वैदिक पञ्चवर्षात्मक युग

वेद में पञ्चसंवत्सरात्मक युग का प्रयोग है। अग्निचयन से युक्त सोमयाग में पाँच आहवनीयधिष्ण्यचितियों का चयन होने पर विधान के अनुसार गार्हपत्य अग्नि से अग्नि को ले जाकर आहवनीयचिति में यथास्थान रखकर विधानानुसार कर्म करके **"संवत्सरोऽसि परिवत्सरोऽसीदावत्सरोसीद्वत्सरोऽसि वत्सरोऽसि"** इत्यादि मन्त्र से (शुक्लयजुर्वेदसंहिता २७।४५) उपस्थान करने का विधान है। इस मन्त्र का पाठ वेदमन्त्र-

संहिताओं में हैं। इसी लिए लौगाक्षिस्मृति में[1] पञ्चसंवत्सरात्मक युग का चराचरजगद्रूपता बताई गई है। इसी लिए लगधमुनि से विरचित **"पञ्चसंवत्सरमयम्"** इत्यादि वेदाङ्गज्योतिष-ग्रन्थ में पञ्चसंवत्सरात्मक युग का प्रतिपादन किया गया है। महाभारत में (१।१२४।२२, २।११।३८) कौटलीय अर्थशास्त्र में (२।२०) और सुश्रुतसंहिता में (सूत्रस्थान ६।७) भी पाँच संवत्सरों का युग बताया गया है। किन्तु सूर्यसिद्धान्त में अथवा आर्यपद्धति के ज्योतिष के मूल ग्रन्थ आर्यभटीय में अथवा ब्राह्म-पद्धति के ज्योतिष के मूल ग्रन्थ ब्राह्मस्फुट-सिद्धान्त में भी इस पञ्चवर्षात्मक वैदिक युग का प्रतिपादन नहीं है।

(२) नववर्षारम्भ तपोमास (आर्तव माघ महीने) में

लगधमुनिप्रोक्त वेदाङ्गज्योतिष में तपश्शुक्लप्रतिपदा में अर्थात् वेदाङ्गज्योतिष के अनुकूल परिभाषा के आर्तव माघ महीने की शुक्लप्रतिपदा में वर्ष का आरम्भ बताया गया है। यह माघ महीना शिशिर ऋतु से सम्बद्ध शिशिर ऋतुका पहला महीना है। यह माघ वर्तमान काल में प्रचलित मकर, कुम्भ, मीन मेष इत्यादि राशियों से परिभाषित माघ नहीं है[२]। यह तो शिशिर ऋतु से सम्बद्ध है। इस विषय में वेदाङ्गज्योतिष के प्राचीन व्याख्याकार सोमाकर ने वेदों में वसन्त-ग्रीष्म इत्यादि ऋतुओं का उल्लेख तो ब्राह्मण-क्षत्रियादि वर्णों के अग्न्याधान–अग्निष्टोम-सोमयाग इत्यादि कृत्यों के प्रयोग के अभिप्राय से किया गया है, काल की गणना तो प्रकृतिसम्मत शिशिरादि वर्षारम्भ से ही होती है, ऐसा कहा है। दिव्यकालमान की दृष्टि से देखने पर भी मानुष वर्ष में सूर्यका उदगयन का (उत्तरायणका) काल देवों का दिन माना जाता है।

इस स्थिति में मूल वैदिक परम्परा में ऋतु–मासादि–गणना के आधारभूत प्रकृतिसम्मत वर्ष का आरम्भ तपश्शुक्ल-प्रतिपदा में (वेदाङ्गज्योतिषानुसारी माघ–शुक्लप्रतिपदा में) माने जाने की बात अत्यन्त स्पष्ट हो जाती है।

आर्यभटीय में, ब्राह्मस्फुटसिद्धान्त में और सिद्धान्त-शिरोमणि में और प्रचलित नवीन सूर्यसिद्धान्त में कैसे चैत्रशुक्लप्रतिपदा में अथवा मेषमास के आदि में वर्ष का आरम्भ बताया गया। यह वैदिकों के लिए ग्राह्य बात नहीं है। इस तिथिपत्र में उत्तरायण के तथा शिशिर ऋतु के प्रथम मास तपोमास में ही वैदिक नववर्ष माना गया है।

(३) संवत्सर–परिवत्सरादि पाँच वर्षों का वैदिक युग

मार्कण्डेयस्मृति में संवत्सर–परिवत्सरादि वर्षों में तिल–यवादि के दान से बडा पुण्य मिलने की बात बताई गई है (स्मृतिसन्दर्भ, षष्ठ भाग पृ.१३४)। विष्णुधर्मोत्तर पुराण में (३।३१७) हेमाद्रि के चतुर्वर्गचिन्तामणि में (दानखण्ड पृ. ८९०) माधवाचार्य के कालमाधव में संवत्सरप्रकरण में भी इस दान का प्रतिपादन किया है। अतः वैदिक कृत्यविशेषों के अनुष्ठान के लिए वर्तमान वैदिक चान्द्रसंवत्सरादि का ज्ञान की आवश्यकता स्पष्ट होती है। किन्तु प्रचलित ज्योतिषग्रन्थों में संवत्सर–परिवत्सरादि वर्तमान वत्सर को जानने के लिए कोई करणसूत्र नहीं मिलता है। वराहमिहिर की बृहत्संहिता के बृहस्पतिचाराध्याय में प्रतिपादित प्रभवादि संवत्सर तो (पद्य २०, पद्य २४) बार्हस्पत्य प्रभवादि संवत्सरों को जानने का करणसूत्र

---

१. **पञ्चसंवत्सरमयं जगदेतच् चराचरम्।**
ते पञ्च संवत्सराश् चाऽपि त इमे परिकीर्तिताः।—पृ.३७७।

२. भारतसम्प्रशासन (भारतसरकार) से नियुक्त पञ्चाङ्गसुधारसमिति के सदस्यसचिव रहे हुए निर्मलचन्द्र लाहिडी ने भी इस विषय में ध्यान न देकर अपने एफिमेरिज में वैदिक अथवा वेदाङ्गज्योतिषोक्त माघ मास को आधुनिक राशिपरिभाषित माघ मास मान कर इसी राशिपरिभाषित माघ मास की शुक्लप्रतिपदा से वैदिक अथवा वेदाङ्गज्योतिषोक्त नववर्ष का आरम्भ मानने की परम्परा चलाई है। उदाहरण के लिए Lahiri's Indian Ephemeris of Planets¬ Positions for 2004 के पृष्ठसङ्ख्या ११ के वेदाङ्ग-ज्योतिषानुसारि कहकर दिया गया नववर्षसम्बद्ध उल्लेख को देखें। किन्तु यह बात यथार्थ नहीं है। मूल वैदिक वाङ्मय के प्राचीन ग्रन्थों में मकर, कुम्भ, मीन, मेष इत्यादि राशि का उल्लेख ही न होने से राशिपरिभाषित महीनों का उन में उल्लेख होने की बात नहीं मानी जा सकती है। वेदाङ्गज्योतिषोक्त माघमास तो वास्तविक दिनमान के अथवा शङ्कुच्छाया के निरीक्षण से निश्चित होने वाले दृक्सिद्ध सौर उत्तरायणबिन्दु से नियन्त्रित होने वाला माघमास है। इस मास का राशि से अथवा नक्षत्र से नियन्त्रण नहीं होता है।

है चान्द्र प्रभवादि को अथवा चान्द्र संवत्सर–परिवत्सरादि को जानने का करणसूत्र नहीं। इस तिथिपत्र में चान्द्र संवत्सर-परिवत्सरादि और चान्द्र प्रभव–विभवादि वर्ष दिए गए हैं।

(४) सौरचान्द्र वर्ष

वैदिक परम्परा में मुख्य वर्ष चान्द्र ही है। यह बात लगध मुनि ने भी अपने वेदाङ्गज्योतिष ग्रन्थ में **"माघशुक्लप्रपन्नस्य पौषशुक्लसमापिनः"** (श्लोक ५) इत्यादि श्लोक से पञ्चवर्षात्मक वैदिक युग का **माघशुक्ल में प्रारम्भ और पौषकृष्ण में समाप्ति** बताकर स्पष्ट किया है। वेद, स्मृति, पुराण इत्यादि ग्रन्थों में भी धार्मिक कृत्यों में लिए वर्ष चान्द्र ही होने की बात स्पष्ट है। वेदों में वर्ष के तेरहवें महीने का उल्लेख अनेक स्थलों में होने से भी वर्ष का चान्द्रवर्षत्व अवगत होता है। बारह चान्द्र मासों के दोदो पक्षों को लेकर चौबीस पक्षों का संवत्सर माने जाने की बात से भी वर्ष का चान्द्रत्व स्पष्ट होता है। तथापि वर्तमान काल में प्रचलित सूर्यसिद्धान्त में चान्द्रवर्ष की उपेक्षा करके[३] बार्हस्पत्य संवत्सर का और मेषादि राशि के आधार में मेषमासादि बारह महीनों से एक वर्ष निष्पन्न होने की बात ही प्रमुख रूप में बताई गई है। इस तिथिपत्र में चान्द्र वर्षको मुख्य माना गया है।

---

३. **द्विराशिनाथा ऋतवस् ततोऽपि शिशिरादयः।**
मेषादयो द्वादशैते मासास् तैरेव वत्सरः।—मानाध्याय, श्लोक १०।

(५) सौरचान्द्र अयन

मुख्य वैदिक परम्परा की कालगणना में युग, संवत्सर, अयन ऋतु, मास, पक्ष, तिथि सब ही मुख्य रूप में चान्द्र और सूर्यगतिसापेक्ष भी होने से गौण रूप में सौर भी हैं। अत एव इन सब को सौर–चान्द्र माना जाता है। लगधमुनि ने भी अयन के अन्त में ही अधिमास योजित करने की व्यवस्था का प्रतिपादन करके अयनों में भी सौरचान्द्रत्व स्थापित किया ही है—

द्व्यूनं द्विषष्टिभागेन दिनं सौराच्च पार्वणम्।
यत्कृतावुपजायेते मध्येऽन्ते चाऽधिमासकौ।।—श्लोक ३७।

पुराणादि ग्रन्थों में दी गई अयन–परिभाषा से भी वैदिक परम्परा में अयन भी चान्द्र अथवा सौरचान्द्र ही लिए जाने की बात स्पष्ट होती है। पुराणों में छः चान्द्रमासों से ही एक अयन होने की बात बताई गई है। उक्त शास्त्रीय वस्तुस्थिति में अयन को भास्करादि के कथन का आधार लेकर केवल सौर मानने की हेमाद्रि–माधव–कमलाकरादि धर्मशास्त्रनिबन्धकारों की बात उचित नहीं है। इस तिथिपत्र में धर्मकार्यार्थ अयन को भी सौर सापेक्ष चान्द्र माना गया है।

(६) चान्द्र ऋतु

वैदिक धार्मिक कृत्यों में ऋतुज्ञान की आवश्यकता होती है। शिशिर ऋतु में अग्निका आधान सभी वर्णों के लिए उचित होने की बात और वसन्त में ब्राह्मण के लिए, ग्रीष्म में क्षत्रिय के लिए, शरद् में वैश्य के लिए अग्नि का आधान उचित होने की बात भी काठकसंहिता में (८।१) देखी जाती है। श्रौतसूत्रों में भी उस प्रकार के उल्लेख मिलते हैं। बौधायनगृह्यसूत्र में वसन्त ऋतु में ब्राह्मण बटु का, ग्रीष्म ऋतु में क्षत्रिय बटु का, शरद् ऋतु में वैश्य बटुका और वर्षा ऋतु में रथकार बटुका उपनयन (व्रतबन्ध वा जनेऊ) करने का विधान है। ऋतुसापेक्ष विधान के परिपालन के लिए ऋतुओं का परिचय और गणनाप्रकार आवश्यक होता है।

वेदाङ्गज्योतिष में ऋतुगणना का मुख्य आधार स्पष्ट किया गया है। उससे वर्ष के सबसे छोटे दिन में (सब से न्यून दिनमान वाले दिन में) पडने वाली तिथिको देखकर उसके २४ दिन तक आगे या ५–६ दिन तक पीछे की शुक्लप्रतिपदा से तपोमास का आरम्भ मानना चाहिए। विविध ग्रन्थों में वैदिक धर्मकृत्य के ऋतुओं को चान्द्र बताया है। यह बात हेमाद्रि से चतुर्वर्गचिन्तामणि के परिशेष खण्ड के कालनिर्णय नाम के भाग में (पृ.१४) उद्धृत भास्करमिश्र के अधोलिखित वचन से अवगत होती है—

श्रौतस्मार्तक्रियाः सर्वाः कुर्याच् चान्द्रमसर्तुषु।
तदभावे तु सौरर्तुष्विति ज्योतिर्विदां मतम्॥

उक्त स्थिति में ऋतु को केवल सौर मानने की अर्वाचीन ज्योतिषियों की धारणा भौतिक ऋतुपरक होने से वैदिक धार्मिक ऋतुसिद्धान्तका अनुकूल नहीं है। आधुनिक तिथिपत्रों के (पञ्चाङ्गों के) रचयिता ऋतुओं को केवल सौर रूप में ही ले

रहे हैं, यह उचित नहीं है। इस **वैदिक तिथिपत्रम्** में ऋतुओं को सौरचान्द्र माना गया है।

(७) चान्द्रमासों की प्रधानता

मूल वैदिक परम्परा में मुख्यतया मास चान्द्र ही लिए गए हैं। वेद के मन्त्रसंहिताओं में उल्लिखित तपः, तपस्य, मधु, माधव इत्यादि मास चान्द्र ही हैं। वेदों में अर्धमासों के (पक्षों के) नैरन्तर्य से मासों का उल्लेख किए जाने से भी वैदिक मास मुख्यतया चान्द्र होने की बात अवगत होती है[४]। अंहसस्पति मास (अधिकमास वा मलमास) से साहचर्य देखे जाने से भी मधु, माधव इत्यादि शब्दों का चान्द्रमासवाचकत्व स्पष्ट होता है[५]।

४. **अर्धमासेभ्यः स्वाहा मासेभ्यः स्वाहा।**
—मा.वा.शु.य.वे.२२।२८, तैत्तिरीय संहिता ७।१।१५।
अहोरात्राण्यर्धमासा मासा ऋतवः संवत्सरा विधृताः।
—शतपथब्राह्मण १४।६।८।९।
अधर्मासा मासा ऋतवः संवत्सर ओषधीः पचन्ति।
—तैत्तिरीयसंहिता ५।७।२।५ द्र. ५।७।२।६, ७।५।२५।१।
अर्धमासास् त्वा मासेभ्यः परिददतु।—सामवेद-मन्त्रब्राह्मण १।५।१५।

५. **उपयामगृहीतोऽसि तपस्याय त्वोपयामगृहीतोऽस्यंहसस्पतये त्वा।**
—७।३०, शतपथब्राह्मण ४।३।१।१३-२०।
तपस्याय स्वाहाऽंहसस्पतये स्वाहा।—शु.य.वे.सं. २२।३१।
तपस्याय स्वाहा संसर्पोऽस्यंहस्पत्याय स्वाहा।—मै.सं.३।१२।१३।
तपश् च तपस्यश् चोपयामगृहीतोऽसि संसर्पोऽस्यंहस्पत्याय त्वा।
—तै.सं.१।४।१४।१, द्र. ६।५।३।४।

विवाह में भी चान्द्र मास को ही लेने की बात गृह्यसूत्रों में विवाहकाल बताने वाले वचनों में आपूर्यमाण पक्ष का अथवा पूर्वपक्ष का अथवा शुद्ध पक्ष का अथवा शुक्ल पक्ष का उल्लेख देखे जाने से अवगत होती है[६]।

इस वैदिक शास्त्रीय वस्तुस्थिति में सौर मास को विवाहादि में मान्य मानने की अर्वाचीन धारणा गृह्यसूत्रसम्मत नहीं है। वराहमिहिर ने भी विवाहपटल में[७] विवाह में चान्द्र मास ही ग्राह्य होने की बात सूचित की है। इस स्थिति में विवाह आदि में सौर मास को ग्राह्य मानना उचित नहीं है।

(८) चान्द्रमास की अमावास्यान्तता

मूल वैदिक परम्परा में चान्द्रमास शुक्लपक्षादि कृष्णपक्षान्त है। यह बात लगध मुनि के **"माघशुक्लप्रपन्नस्य पौषकृष्णसमापिनः"** (श्लोक ५) इस वचन से ही स्पष्ट होती है। वेदों में और वेदाङ्गों में शुक्लपक्ष को पूर्वपक्ष और कृष्णपक्ष को अपरपक्ष कहा गया है।

६. **उदगयन आपूर्यमाणपक्षे कल्याणे नक्षत्रे चौडकर्मोपनयन-गोदान-विवाहाः।**— १।४।१।

७. **चैत्रं प्रोज्झ्य पराशरः कथयते दुर्भाग्यदं योषिताम्,**
आषाढादि चतुष्टये न शुभदं कैश्चित् प्रदिष्टं द्विजैः।
श्रेष्ठं पक्षमुशन्ति शुक्लमसितस्याऽद्यं त्रिभागं तथा,
रिक्तां प्रोज्झ्य तिथिं तथा त्वयनयोः सन्धिं च शेषाः शुभाः॥
—पद्य १६,१७।

उपयुक्त प्रकार की शास्त्रीय वस्तुस्थिति होने पर भी मूल वैदिक परम्परा को छोडकर भारतवर्ष के उत्तरभाग के तिथिपत्रकारों ने (पञ्चाङ्गकारों ने) चान्द्रमास को कृष्णादि शुक्लान्त माना है, यह उचित नहीं दीखता। उन्होंने चैत्रकृष्णपक्ष को पूर्ववर्ष में रखकर मास के मध्य से चैत्रशुक्ल प्रतिपदा में वत्सरारम्भ कैसे माना यह भी उचित नहीं दीखता।

(९) अयन के अन्त में ही अधिमास मानने की वैदिक व्यवस्था

वेदों में अधिमास के उल्लेख मिलते हैं। श्रौतसूत्रों में (बौधायन. ७।१६, आपस्तम्ब. ८।२०।८, कात्यायन. ९।१३।१८) भी उक्त मास के उल्लेख मिलते हैं। ऋग्वेदसंहिता में ही[८] अधिकमास का उल्लेख किया गया है। ऋग्वेदियों के ऐतरेयिब्राह्मण में अधिक मास को निन्द्य काल बताने वाला[९] उल्लेख पाया जाता है।

चान्द्र और सौर ऋतुओं के बीच में कभी भी एक महीने के काल से अधिक अन्तर न हो इस लिए चान्द्र अधिकमास की व्यवस्था आवश्यक होने से भी अधिकमास की परिभाषा आवश्यक होती है। अधिकमास (मलमास) की परिभाषा बताने वाला उपलब्ध प्राचीनतम ग्रन्थ लगधमुनिप्रोक्त वेदाङ्गज्योतिष

८. **वेदमासो धृतव्रतो द्वादश प्रजावतः। वेदा य उपजायते।**—१।२५।८।

९. **तं त्रयोदशान् मासादक्रीणँस् तस्मात् त्रयोदशो मासो नाऽनुविद्यते न वै सोमविक्रप्यनुविद्यते पापो हि सोमविक्रयी।**—३।१[१।१२]।

ग्रन्थ है। उसके सैंतीसवें श्लोक में अधिकमास के उत्पत्ति की व्यवस्था स्पष्ट की गई है—

द्व्यूनं द्विषष्टिभागेन दिनं सौराच्च पार्वणम्।
यत्कृतावुपजायेते मध्येन्ते चाधिमासकौ॥

(सौर दिन से पार्वण दिन (तिथि) बासठ भागों में से दो भागों ($\frac{२}{६२}$)से न्यून होता है, जिस कारण से पाँच वर्षों के युग के (आदियुग के) मध्य में (उदगयन के अन्त में शुचिमास में [आर्तव आषाढ में]) और (उस युग के) अन्त में (दक्षिणायन के अन्त में सहस्यमास में [आर्तव पौष में]) दो अधिमास उत्पन्न होते हैं।

यह अधिमास की व्यवस्था महाभारत में विराटपर्व में (चित्रशालासंस्करण ५२।१–३, सातवलेकारसंस्करण ४७।१–३)। और विक्रमपूर्व तीसरी शताब्दी के माने गए ग्रन्थ कौटलीय अर्थशास्त्र में बताई गई है।

ऐसी वेदाङ्गज्योतिष की व्यवस्था होने पर भी हेमाद्रि-प्रभृति अर्वाचीन धर्मशास्त्रनिबन्धकारों ने अधिकमास की वेदाङ्ग-ज्योतिषोक्त और कौटलीयार्थशास्त्र में प्रतिपादित परिभाषा को न लेकर लघुहारीत, ब्रह्मसिद्धान्त, नन्दिपुराण, ज्योतिःशास्त्र, काठक-गृह्यपरिशिष्ट, जाबालि, बार्हस्पत्यज्योतिषग्रन्थ इत्यादि का नाम लेकर अधिकमास और क्षयमास की परिभाषा बताई है। जीमूत-वाहन, हेमाद्रि, माधव, कमलाकरभट्ट इत्यादि धर्मशास्त्रनिबन्धियों ने अर्वाचीन वचन को प्रमाण के रूप में लेकर अधिकमास का निरूपण किया है। उक्त प्रकार की स्थिति भरवर्षीय ज्योतिषियों में और धर्मशास्त्रनिबन्धियों में कैसे आई यह एक बडा ही ज्वलन्त प्रश्न है। इस तिथिपत्र में वेदाङ्गज्योतिष की परिभाषा के अनुसार अयन के अन्त में ही अधिकमास माना गया है। अर्वाचीन पद्धति क-अधिकमास को भी यथास्थान दिखाया गया है।

(१०) क्षयमास कैसे स्वीकारा गया?

क्षयमास का उल्लेख अर्वाचीन ज्योतिषग्रन्थों में पाया जाता है। उनमें तेरहवीं शताब्दी के प्रारम्भ में रचे गए भास्कर के सिद्धान्तशिरोमणि में[१०] एक वचन मिलता है। भास्कर ने वासना में अपने उक्त वचन की व्याख्या में भी[११] एक विलक्षण उल्लेख किया है। उक्त उल्लेख से भास्कर के समय में भी क्षयमास लोक में ही नहीं ज्योतिषियों भी अप्रसिद्ध होने की बात झलकती है। इससे अर्वाचीन ज्योतिषियों में पाई जाने वाली सूर्यराशि-सङ्क्रान्ति में आधृत अधिक-मास और क्षयमास की धारणा बिलकूल अर्वाचीन अवगत होती है। वेदाङ्गज्योतिष में और अन्य प्राचीन ज्योतिषग्रन्थों में भी क्षयमास का उल्लेख नहीं मिलता है।

उक्त स्थिति में अपौरुषेय वेद के वाक्यों के अथवा वेदमूलक वाक्यों को ही धर्म में प्रमाण मानने वाली और अनादि अनपभ्रष्ट परम्परा को ही धर्म के रूप में ग्रहण करने वाली वैदिक परम्परा में ऐसे अवेदमूलक सादि क्षयमास की धारणा कैसै धर्म में मान्य हुई यह भी एक बहूत बडा ज्वलन्त प्रश्न है। इस तिथिपत्र में क्षयमास के सिद्धान्तको नहीं माना गया है। विक्रमसंवत् **२०८५** में पडनेवाला कहा गया **मार्ग महीने का क्षयमास** वैदिक सिद्धान्त में साधारणमास ही माना जाता है (द्र.- यही तिथिपत्र पृ. ४७, ८१)

(११) अहोरात्रात्मक अखण्ड तिथि (वैदिक तिथि)

मूल वैदिक वाङ्मय में तिथि शब्द का प्रयोग दुर्लभ है। जहाँ तिथि शब्द का प्रयोग उचित दिखाई देता है वहाँ पर अहः शब्द का अथवा अहोरात्र शब्द का प्रयोग मिलता है। जैसे **"अहोरात्रेभ्यः स्वाहाऽर्धमासेभ्यः स्वाहा मासेभ्यः स्वाहा"** (माध्यन्दिनीय-वाजसनेयि-शुक्लयजुर्वेद २२।२८) इत्यादि स्थलों में अहोरात्र शब्द अर्धमास से सम्बद्ध दिखाई देने से तिथिवाचक अवगत होता है। ऐसे प्रयोग अनेक हैं[१२]। श्रौतसूत्र, गृह्यसूत्र,

---

१०. **असङ्क्रान्तिमासोऽधिमासः स्फुटं स्याद्। द्विसङ्क्रान्तिमासः क्षयाख्यः कदाचित्॥** (सि.शि. १।६।६)

११. **यस्मिन् शशिमासेऽर्कसङ्क्रान्तिर् नाऽस्ति सोऽधिमास इति प्रसिद्धम्। तथा यत्र मासे सङ्क्रान्तिद्वयं भवति स क्षयमासो ज्ञेयः।** (सि.शि. १।६।६ वासनाभाष्य, पृ.३४)

१२. **पूर्वपक्षाश् चितयोऽपरपक्षाः पुरीषमहोरात्राणीष्टकाः।**—तैत्तिरीयसं ५।७।६।६, तै.ब्रा. ३।१०।४।१-२, तै. आरण्यक ४।१९।१),

स्मृति, महाभारत इत्यादि ग्रन्थों में तिथि शब्द के स्थान में अहोरात्रशब्द, अहश्शब्द, दिवसशब्द, दिनशब्द इत्यादि का प्रयोग पाये जाने से[१३] वैदिक परम्परा में सामान्यतया तिथि अहोरात्रात्मक माने जाने की बात स्पष्ट होती है। लोकव्यवहार में भी वैदिक शास्त्रों के अनुकूल रूप में तिथियों को अहोरात्रात्मक ही मनने की परम्परा रही हुई बात कायस्थों के तिथिपत्रों से अवगत होती है। वेदाङ्ज्योतिष में लगधमुनि से भी तिथियों को अहोरात्रात्मक रूप में ही लिया गया है (श्लोक ९, ११)।

उक्त प्रकार की शास्त्रीय स्थिति में ब्रह्मगुप्तादि से प्रतिपादित स्फुट (स्पष्ट) तिथि का सिद्धान्त क्यों और कैसे वैदिक परम्परा के ज्योतिषियों से और धर्मशास्त्रियों से अपनाया गया यह भी एक बडा प्रश्न है। इस **वैदिकतिथिपत्रम्** में अहोरात्रात्मक तिथि को **वैदिक तिथि** और सिद्धान्तज्योतिष की परिभाषाअनुसार की स्फुट तिथि को **लौकिक तिथि** कहा गया है। लौकिकतिथिका समाप्तिकाल को दृग्गणना के आधार पर दरसाया गया है ।

दृक्सिद्ध नक्षत्र का समाप्तिकाल भी दृक्सिद्ध गणना के अनुसार दिखाया गया है। दृक्सिद्ध गणना के ज्ञान के लिए वेङ्कटेश बापूजी केतकर का **ज्योतिर्गणितम्** ग्रन्थ देखना चाहिए।

(१२) वैदिक नक्षत्रक्रम

नक्षत्रों के नाम वैदिक संहिताओं में और ब्राह्मणग्रन्थ में भी कृत्तिकादि ही रहा हुआ अवगत होता है। ऐसी स्थिति में वर्तमान काल में ज्योतिषियों में प्रचलित अश्विन्यादि क्रम कैसे प्रचलन में आया और कैसे वैदिक ज्योतिषियों को और धर्मशास्त्रियों को मान्य हुआ यह भी विचारणीय है।

(१३) वेदाङ्गज्योतिष में बताई गई नक्षत्र नामकरण की रीति

वैदिक धर्मकृत्यों में सुब्रह्मण्याह्वानादि में यजमानादि का नाम का उच्चारण आवश्यक होता है (द्र.- कौण्डिन्न्यायनशिक्षा, पृ. ३८९-३९१)। उसके लिए नक्षत्रनाम रखने की आवश्यकता होती है। वैदिक परम्परा को ध्यान में रखकर ही लगध मुनि ने वेदाङ्गज्योतिष के **"अग्निः प्रजापतिः सोमः"** इत्यादि श्लोकों (३२–३५) में नक्षत्र की देवताओं के नामों से यज्ञ में प्रयोग के लिए यजमान का नाम रखने की बात कही है। इस वेदाङ्गज्योतिष की अनुकूल नक्षत्रनाम की व्यवस्था आयुर्वेद के अति प्राचीन ग्रन्थ चरकसंहिता में (शारीर. ८।५०) दी गई है। वृद्धवाग्भट के अष्टाङ्गसङ्ग्रह में भी वैसी ही व्यवस्था है। यह व्यवस्था अर्वाचीन कालतक मान्य रहकर चली आ रही अवगत होती है।

वीरमित्रोदयकार, संस्कारकौस्तुभकार, संस्कारत्नमाला-कार, संस्कारभास्करकार, धर्मसिन्धुकार, संस्कारप्रदीपकार इत्यादि अर्वाचीन विद्वानों ने तो अ–व–क–ह–ड–चक्रानुसारी नक्षत्रनामों का भी उल्लेख किया है। निर्णयसिन्धुकार ने तो अवकहडचक्रानुसारी नाम ही रखने की बात की है। इससे अर्वाचीन काल में अवकहडचक्रानुसारी नक्षत्रनाम रखने की प्रथा प्रबल होती हुई प्रतीत होती है। वैदिक संस्कार से सम्बन्ध रखनेवाले नाम के विषय में भी ऐसी स्थिति कैसे आई यह भी

चन्द्रमा वा अकामयताऽहोरात्रानर्धमासान् मासानृतून् संवत्सरमाप्त्वा चन्द्रमसः सायुज्यं सलोकतामाप्नुयाम्।—तै.ब्रा.३।१।६।१।
एत उ वाव लोका यदहोरात्राण्यर्धमासा मासा ऋतवः संवत्सरः।—मा.वा.शु.य.वे. शतपथ ब्राह्मण १०।२।६।७।

१३. **यदहर् मासः पूर्यते तदहरिष्टिं समाप्य।**—आश्वलायनश्रौतसूत्र १२।४।१०। द्र.-बौधायनश्रौतसूत्र ५।१।
यदहः पूर्णश् चन्द्रमाः स्यात् तां पौर्णासीमुपवसेत्।—भारतद्वाजश्रौत १।१।६। द्र.-आस्तम्बश्रौत २४।२।२१)।
शुद्धपक्षस्य पुण्याहे पर्वणि वा।—काठकगृह्यसूत्र ३१।२, ४३।४ द्र. ३७।२, द्र. आपस्तम्बधर्मसूत्र २।७।१।१-७।
एकान्तरेऽह्नि मासे च।—वेदाङ्गज्योतिष श्लो. ११।
युक्षु कुर्वन् दिनर्क्षेषु।—मनुस्मृति ३।२७७।
माघशुक्लस्य वा प्राप्ते पूर्वाऽह्णे प्रथमेऽहनि।—मनुस्मृति ४।९६।
समा-मास-तदर्धाऽहर्-नाम-जात्यादि चिह्नितम्।—याज्ञवल्क्यस्मृति २।६, २।८५।
कृष्णस्य पक्षस्य चतुर्दशाहे।—महाभारत ११।२१।१३।
अद्यैव नक्षत्रमहश् च पुण्यम्।—महाभारत १४।६४।१४।

एक बहुत बडा ही ज्वलन्त प्रश्न है। हमने वेदाङ्गज्योतिषानुसार नक्षत्रनाम रखने की रीति इस **वैदिकतिथिपत्र** में दिखाई है। अन्य पञ्चाङ्गकार भी इसका समावेश अपनेअपने पञ्चाङ्गों में करके इस वैदिक रीतिका पुनर्जागरण में योगदान दें।

(घ) वेदाङ्गज्योतिष

(१) वेदाङ्गज्योतिष ग्रन्थ की महत्ता

वेदाङ्गज्योतिष में वर्णित पञ्चवर्षात्मक युग का वेदों में उल्लेख है। वेदाङ्गज्योतिष में प्रतिपादित सूर्य के उदगयन दक्षिणायन की चर्चा वेदों में प्राप्त है। मैत्रायणीय ब्राह्मणोपनिषद् में[१४] और बौधायनश्रौतसूत्र में भी वेदाङ्गज्योतिष के अयन-निरूपण का आधारभूत[१५] वचन प्राप्त होते हैं। इतिहास के विभिन्न काल के अन्य ग्रन्थों में भी लगधमुनिप्रोक्त वेदाङ्ग-ज्योतिष ग्रन्थ का उल्लेख पाया जाता है। छठी शताब्दी के वराहमिहिर के बृहत्संहिता में वेदाङ्गज्योतिष की ओर सङ्केत है[१६]। ग्यारहवीं शताब्दी के भट्टोत्पल ने बारहवीं शताब्दी के उवट ने, हरदत्त ने भी काशिका की व्याख्या पदमञ्जरी में वेदाङ्गज्योतिष के विषय का सङ्केत किया है। जीमूतवाहन, सूर्यदेव, विष्णुचित्त ने विष्णुपुराण की व्याख्या में लगधाचार्य का नाम ही लेकर वेदाङ्गज्योतिष का श्लोक लिखा है।

कालमाधवकार माधव, सायण, मित्रमिश्र इत्यादि ने भी वेदाङ्गज्योतिष का उल्लेख किया है। संस्कारभास्करकार ऋषिभट्ट[१७], संस्काररत्नमालाकार गोपीनाथभट्ट, धर्मसिन्धुकार काशीनाथोपाध्याय इत्यादि ने भी नामकरण के प्रकरण में “चू चे चो ला अश्विनी” इत्यादि की व्यवस्था को श्रौतग्रन्थों का असम्मत बताकर वेदाङ्गज्योतिषोक्त नक्षत्रनामकरण रीति दिखाई है।

सोमाकर की प्राचीन व्याख्या भी लगधमुनिप्रोक्त वेदाङ्ग-ज्योतिष की महनीयता को और अनुसरणीयता को अच्छी तरह ही प्रकाशित करती है। इसका सम्पादन करके १९६४ संवत् में सुधाकर द्विवेदी ने काशी में प्रकाशित करवाया था। इस का पुनः सम्पादन करके कौण्डिन्न्यायनव्याख्यान के साथ २०६२ संवत् में (२००५ में) मुद्रित करवाया गया है।

उक्त विवरण से अनादि काल से वेदाङ्गज्योतिष में प्रतिपादित विषय वैदिक आर्य परम्परा में मान्य रहे हुए अवगत होते हैं। इस स्थिति में वे विषय अर्वाचीन काल में कैसे पीछे पड गए। वैदिक परम्परा के ज्योतिषियों ने और धर्मशास्त्रियों ने उन विषयों को और **“पञ्चसंवत्सरमयम्”** इत्यादि वेदाङ्ग-ज्योतिषग्रन्थ के विषयों को कैसे भुला दिया, यह भी एक प्रश्न है। **हमने वेदाङ्गज्योतिष की व्याख्या करके उसके अनुसार इस तिथिपत्र को निष्पादित करके प्रकाशित किया है। और यथाशक्ति प्रचारित भी कर रहे हैं। अन्य पञ्चाङ्गकार भी वेदाङ्गज्योतिष-पद्धति के युग, वर्ष, अयन, ऋतु, मास, अधिकमास, तिथि, नक्षत्र और करण को अपने-अपने पञ्चाङ्गों में समावेश करके पञ्चाङ्ग प्रकाशित करेङ्गे तो यह वेद, वेदाङ्ग और वैदिकसनातनवर्णाश्रमधर्म के लिए बहुत बडा काम होगा। एतदर्थ सहयोग करने के लिए हम सदा तत्पर हैं।**

---

१४. **सूर्यो योनिः कालस्य, तस्यैतद् रूपं यन् निमेषादिकालात् सम्भृतं द्वादशात्मकं वत्सरम्। एतस्याऽग्नेयमधमर्धं वारुणम् , मघाद्यं श्रविष्ठार्ध माग्नेयं क्रमेणोत्क्रमेण सार्पाद्यं श्रविष्ठार्धान्तं सौम्यम्।**— मैत्रायणीयोपनिषद् ६।१४।

१५. **षाण्मास्य एष पशुबन्ध उक्तो भवति, अथाऽप्युदाहरन्ति षट्सुषट्सु मासेष्वाहिताग्निना पशुना यष्टव्यं भवति, उभे काष्ठे अंभियजेत माघमासे धनिष्ठाभिरुत्तरेणैति भानुमान्। अर्धाश्लेषस्य श्रावणस्य दक्षिणेनोपनिवर्तते॥ इत्येते काष्ठे भवतः, तदन्ततोऽनीजानस्य संवत्सरो नाऽतीयात्।**—२६।२९।

१६. **आश्लेषार्धाद् दक्षिणमुत्तरमयनं रवेर् धनिष्ठाद्यम्। नूनं कदाचिदासीद् येनोक्तं पूर्वशास्त्रेषु॥**—३।१।

१७. **नाक्षत्रनामानि तु चूचेचोलाऽश्विनी प्रोक्तेत्यादिज्योतिर्ग्रन्थोक्ताऽवकहडाचक्रानुसारेणाऽश्विन्यादिचतुश्चरणेषु चूडामणिश् चेदीशश् चोलेशो लक्ष्मण इत्यादिकानि कुर्वन्ति। कातीयानां कृत्तिकोत्पन्नस्याऽग्निशर्मेति नक्षत्रदेवतासम्बद्धं नाक्षत्रं नाम कुर्यात्।**

—संस्कारभास्कर नामकरण–प्रकरण पत्र १२३, १२४।

(२) वेदाङ्ज्योतिष ग्रन्थ का परिष्कार और व्याख्यान

वेदाङ्गज्योतिष में कालगणना के आधारभूत पञ्चवर्षात्मक युग की कालनिरूपण की पद्धति निदर्शन के रूप में दिखाई गई है। उस युग में शुक्लप्रतिपदा के आरम्भ का और सौर उत्तरायण के आरम्भ का क्षण एक ही था। शुक्लप्रतिपदा के आरम्भ के काल में और सौर उत्तरायण के आरम्भ के काल में कोई अन्तर नहीं था। वेदाङ्गज्योतिष के कालगणना के आरम्भ के इस पञ्च-वर्षात्मक आदर्शयुग को **आदियुग** कहा गया है। ऐसे युग में युग के मध्य में और अन्त में अधिकमास हाते हैं। सभी पञ्चवर्षात्मक युगों में ऐसी स्थिति नहीं हो सकती है। इस लिए लगधमुनि ने स्पष्ट रूप में कहा है कि इस ग्रन्थ में दिखाया गया गणित **दिक्-प्रदर्शनात्मक** है, और युग की वस्तुस्थिति को देखकर इसी प्रकार का गणित अन्य पञ्चवर्षात्मक युगों के लिए भी कल्पित किया जाना चाहिए। उनका वाक्य है **"इत्युपायसमुद्देशो भूयोऽप्येवं प्रकल्पयेत्"** (श्लो. ४२)। इस स्थिति में वैदिक ज्योतिषियों को और धर्मशास्त्रियों का लगध मुनि के मूल निर्देशों को लेकर उसमें आवश्यक परिष्कार करके श्रौत-स्मार्त-धर्म कृत्य के लिए युग, वर्ष, अयन, ऋतु, मास, पक्ष, तिथि, पर्वकाल, नक्षत्र, अधिमास इत्यादि की गणना की व्यवस्था करनी चाहिए। जैसे पाणिनीय व्याकरण में सूत्रों में पाई जाने वाली न्यूनताओं को वार्त्तिकों से और भाष्य से पूर्ण करके पाणिनीय व्याकरण को व्यवहार में लाया गया वैसे ही लगधमुनि के वेदाङ्गज्योतिष में भी पूरण और व्याख्यान तथा स्पष्टीकरण करके उस ग्रन्थ को व्यवहार में लाना चाहिए था। इस प्रकार परिष्कार और व्याख्या करने लिए वेद–वेदाङ्गों के विद्वानों का, वैदिक ज्योतिषियों का और धर्मशास्त्रियों का ध्यान क्यों नहीं गया? उनसे इस पक्ष में प्रयत्न क्यों नहीं हुआ? यह भी एक बहुत ही बडा प्रश्न है।

इस लौकिक और शास्त्रीय वस्तुस्थिति में भारत के स्वतन्त्र होने पर सम्पूर्ण भारत के लिए एक सर्वस्वीकार्य पञ्चाङ्ग बनाने की पद्धति प्रस्तुत करने के लिए १९५२ क्रैस्ताब्द में भारत–सम्प्रशासन (सरकार) से बडे वैज्ञानिक मेघानाद साहा की अध्यक्षता में बडे ज्योतिषी निर्मलचन्द्र लाहिडी (एन्.सी.लाहिरी) के सदस्यसचिवत्व में नाना प्रदेश के अन्य छः विज्ञों को सम्मिलित करके एक समिति बनाई गई। उसके निर्देशों के अनुसार १९५७ क्रैस्ताब्द से (२०१४संवत् से) भारतीय सम्प्रशासन (सरकार) से अनेक संस्कृतसहित विविध भारतीय भाषाओं में और आङ्लभाषा में **राष्ट्रिय पञ्चाङ्ग** नाम से पञ्चाङ्ग प्रकाशित किए जा रहे हैं।

पञ्चाङ्ग–सुधार समिति **(Calendar Reform Committee)** के उन निर्देशों को और प्रकाशित पञ्चाङ्गों के नमूनों को देखने से विदित होता है कि उक्त समिति का लगध-मुनिप्रोक्त वेदाङ्गज्योतिष में समुचित रूप में ध्यान नहीं गया है। यद्यपि वेदाङ्गज्योतिष को समझने के लिए वेबेर, थीबो, जनार्दन बालाजी मोडक, शङ्कर बालकृष्ण दीक्षित, लाला छेटेलाल बार्हस्पत्य, सुधाकर दिवेदी, बालगङ्गाधर तिलक, शामशास्त्री इत्यादि के प्रयास पूर्ण रूप में सफल नहीं हुए थे, तथापि पञ्चाङ्ग सुधार समिति को उसका गौरव अच्छी तरह समझकर और वह ग्रन्थ किसी सम्प्रदाय विशेष से और प्रान्त-विशेष से विशेष रूप से असम्बद्ध और पूरे भारतवर्ष से सम्बद्ध होने से यह ग्रन्थ और उसकी व्यवस्था सभी भारतवर्षीय लोगों को स्वीकार्य होने की बात का अच्छी तरह आकलन करके उस ग्रन्थ के मुख्य बातों में विशेष ध्यान देना ही चाहिए था।

उक्त वस्तुस्थिति का विचार करने पर भारतवर्ष के बडे खगोल वैज्ञानिकों का और भारतीय राष्ट्रिय सम्प्रशासन के नेताओं का भी मूल वैदिक परम्परा के गौरव में और उसकी रक्षा में समुचित ध्यान क्यों नहीं गया और तदनुसार पर्याप्त अध्ययन और प्रयास क्यों नहीं हो सका यह भी एक बहुत ही बडा प्रश्न खडा होता है।

(ङ) उपसंहार

हमारी शास्त्रव्यवस्था का मूल वेद का अध्ययन और अध्यापन है। वेद के अध्ययन-अध्यापन के लिए उपनयन की और ब्रह्मयज्ञ की (स्वाध्यायाध्ययन की) शास्त्रीय व्यवस्था है।

इन व्यवस्थाओं का निर्वहण मुख्य रूप में ब्राह्मणों में निर्भर होता है। वेदविद्या का अपनी रक्षा के लिए ब्राह्मन के समीप में आना वेद में (संहितोपनिषद्ब्राह्मण, तृतीय खण्ड), निरुक्त में (२।१।४) और वासिष्ठधर्मसूत्र में (२।८) भी वर्णित है। इससे वेद विद्या के और वैदिक व्यवस्था के संरक्षण में ब्राह्मणों का विशेष उत्तरदायित्व अवगत होता है। तथापि क्षत्रिय–वैश्यादि की समझदारी और सहायता के विना ब्राह्मणों से उक्त उत्तरदायित्व का वहन अच्छी तरह से नहीं हो सकता है।

आज से प्रायः ५००० वर्षों से पहले कलियुग का प्रारम्भ होने के समय से ही अर्थकामपरायण चार्वाकों की क्रमशः वृद्धि होने से, जैनों के और बौद्धों के उदय से; फारस के कुरुष के सिकन्दर के आक्रमण से और शक, पह्लव, कुषाण, हूण, अरब इत्यादि के आक्रमणों से भारतवर्ष की वर्णाश्रमव्यवस्था में अव्यवस्था की सी स्थिति आ गई थी। भारतवर्ष में अङ्ग्रेजों के शासन के काल में (१८३०–२००४ वै.) भी वर्णाश्रमधर्म को और उसके शास्त्रों को और भी शिथिल करने की भरपूर चेष्टा करने की बात अवगत होती है। इन सब कारणों से वैदिक सनातन वर्णाश्रमधर्म में और आर्ष वेद-वेदाङ्गाऽध्ययन में बहुत शिथिलता आई हुई प्रतीत होती है।

वेदवेदाङ्गों का सन्तुलित अध्ययन की परम्परा बहुत समय से शिथिल रही हुई प्रतीत होती है। अत एव मूल वैदिक धारा के भारतवर्षीय ब्राह्मणों से वेदाङ्गज्योतिष के और स्मृति के प्रतिकूल बातों का भी सम्यक् आकलन नहीं हो सका।

यह सब वेदवेदाङ्गों की अच्छी तरह अध्ययन नहीं करने का और नित्य ब्रह्मयज्ञ का सम्यक् सम्पादन नहीं करने का ही परिणाम है। इस लिए नित्य ब्रह्मयज्ञ में अध्येतव्य ग्रन्थों का विवरण भी देकर **ब्रह्मयज्ञपद्धति** को वाराणसी के चौखम्बा-विद्याभवन से प्रकाशित कराके उसको प्रचारण का प्रयास किया गया है। माध्यन्दिनीयवाजसनेयि**सन्ध्योपासनपद्धति** भी वहीं से प्रकाशित है। साथ में ही वेदाङ्गज्योतिष का भी विस्तृत भूमिका के साथ में **कौण्डिन्न्यायनव्याख्यान** का भी प्रणयन और उसको भी वाराणसीस्थ चौखम्बाविद्याभवन से ही २००५ में प्रकाशित कराया गया है। वेदाङ्गज्योषशास्त्र के विषय में उससे प्रामाणिक और यथार्थ जानकारी मिल सकती है। **"भारतवर्षीय ज्योतिष के ज्वलन्त प्रश्न और वेदाङ्गज्योतिष"** ग्रन्थ भी चौखम्बा विद्याभवन से ही २००८ में प्रकाशित है ।

इन सब बातों का विचार करके भारतवर्षीय द्विजातियों को अपनी मूल परम्परा को अच्छी तरह पहचान करके उनका अध्ययन तथा दृढता से संरक्षण और अनुसरण भी करना चाहिए। **पञ्चाङ्गकारों को इन वेदाङ्गज्योतिषानुसारी विषयों को अपने अपने पञ्चाङ्गों में समावेश करना चाहिए। तथा वैदिक यज्ञ-विवाह-व्रतबन्धादि कृत्यों में इसी वैदिक पद्धतिका आाधार लेना चाहिए सङ्कल्प में भी इसी अनुसार कालका उल्लेख करना चाहिए।**

सभी वैदिकसनातनवर्णाश्रमधर्मानुयायी सज्जन वेदाङ्ग-ज्योतिष के और तदनुसारी वैदिक कालगणनापद्धति के मुख्य विषयों को वर्तमान काल के सभी पञ्चाङ्गों में समाविष्ट करके प्रचार-प्रसार करने में सहायता करें॥

स्वाद्ध्यायशालाकुटुम्ब

ब्रह्मपुरी, हात्तिगौँडा, बुढानीलकण्ठनगरपालिका-६

काठमाण्डु, नेपाल।

☏ **००९७७ ९८४१९६८२६२, ९८४९०९१४६७**

Email : svadhyaya2036@gmail.com

वैदिकतिथिपत्रस्य संस्कृतभूमिका

इदं नम ऋषिभ्यः पूर्वजेभ्यः

(क) तिथिपत्रविलोकनात् पूर्वं ज्ञातव्या विषयाः

प्रस्तुते तिथिपत्रे प्रतिपृष्ठं शिरोभागे प्रथमपङ्क्तौ **वैदिकं वर्षम्, अयनम्, ऋतुः, मासः, पक्षश्चेति विषयाः** स्थूलाक्षरैर् लिखिताः सन्ति। **अन्यमतस्य वर्षम्, मासः इत्यादिविषयाः** द्वितीयपङ्क्तौ सूक्ष्माक्षरैर्लिखिताः।

वैदिकी **तिथिः** आथर्वणज्योतिषोक्तं **करणं** च आरम्भस्य स्तम्भयोर्दत्ते। तदनन्तरं लौकिकी तिथिः, वेदाङ्गज्यातिषानुसारि मध्यमनक्षत्रं दृक्सिद्धं नक्षत्रं च क्रमशः दत्तानि। **वारः, निरयण-सौर-मासस्य दिनम् (गते) तारिकं** च अन्तस्य स्तम्भेषु क्रमशो दत्तानि।

वैदिकश्चान्द्रः संवत्सरः पूर्णे वर्षे एक एव भवति। **बार्हस्पत्यः संवत्सरो** गणितानुसारं मध्ये एव परिवर्तितो भवति।

अयनचलनकारणात् पौराण-पर्वसमयः पूर्वमागतः। कतिपय-पौराणपर्वणां समयः १ मासपूर्वम् कतिपयपौराणपर्वणां समयः मासद्वयपूर्वं वाऽपि भवितुं शक्नोति। प्रमाणानुसारम् एतस्य निश्चयः तदनुसारं परिवतर्तनं चाऽऽवश्यकम्। किन्तु इदानीम् अस्मिन् तिथिपत्रे केषाञ्चन पर्वणामेव संशोधितः ऋत्वनुसारि समय अपि प्रदर्शितः। पौराणिकपर्वाण्यपि **वैदिकतिथौ दत्तानि**, लौकिकतिथावपि दत्तानि चेत् लौ.ति. इत्युत्लेखः कृतः।

विवाह-व्रतबन्धादिपुण्याहानां समावेशः वैदिकसिद्धान्तानुसारं पारस्करगृह्यसूत्र-विधानानुसारं कृतः।

अस्य वैदिकतिथिपत्रस्य गणितं नेपालस्य प्रामाणिक-समयानुसारं कृतमस्ति। भारतस्य कृते १५ निमेषक(मिनट)मित-सयमस्य अन्तरं भवति। सूर्योदयकालः सूर्यास्तमयकालश्चैवाऽपि देशान्तरानुसारं भिद्येते।

प्रस्तुतस्य तिथिपत्रस्य विलोकने एते विषया विशेषेण स्मरणीयाः।

(ख) धर्मः

यो ह्यवगतः सन् स्ववृत्तितयेष्यते स पुरुषार्थः। स च द्विविधः साध्यरूपः साधनरूपश् च। तत्र कामः मोक्षश् च साध्यरूपौ पुरुषार्थौ। **"यतोऽभ्युदयनिश्श्रेयससिद्धिः स धर्मः"** इति कणादो धर्मतटस्थलक्षणमाह वैशेषिकसूत्रे (१।१।२)। जैमिनिः खलु धर्मस्वरूपलक्षणमाह धर्ममीमांसासूत्रे **"चोदनालक्षणोऽर्थो धर्मः"** (१।१।२) इति। **"श्रुतिस्मृतिविहितो धर्मः"** इति धर्मलक्षणं वासिष्ठधर्मसूत्रे (१।४) प्रोक्तम्।

तत्र पुरुषार्थेषु धर्मस्य प्राथम्यमिति लोकेऽपि **"धर्मार्थ-काममोक्षाः"** इति प्रसिद्धिरस्ति। भारतवर्षीय-ज्ञानविज्ञान-विश्व-कोषरूपे महाभारते खलु वेदव्यासः कृष्णो द्वैपायनो मुनिरपि **"ऊर्ध्वबाहुर् विरौम्येष न च कश्चिच् छृणोति मे। धर्मादर्थश् च कामश् च स किमर्थं न सेव्यते।।"** (१८।५।६२) इति रोरूयते। तत्र धर्मान् न केवलं मोक्षः, किन्तु लोकैषणाप्रधानानामीप्सिततमौ अर्थकामौ अपि धर्मादेव सिद्ध्यत इति मुनेरभिप्रायोऽवगम्यते।

(ग) धर्मज्ञानं च प्राधान्येन वेदादेव भवति, वेद-स्वरूपादीनां यथार्थज्ञानं च मुख्यतया वेदाङ्गशास्त्रेभ्य एव भवति

धर्मज्ञानं चाऽस्मादृशानां वेदादेव भवति। वेद-स्वरूप-प्रयोगार्थ-रहस्य-सम्यग्ज्ञानमपि अस्मद्विधानां शिक्षादिभिः षड्भिरङ्गैस् तदनुकूलया गुरुशिष्यपरम्परया यथाविधि वेदस्याऽध्ययनेन चैव भवति। तथाहि आचार्ययास्कोऽपि **"साक्षात्कृतधर्माण ऋषयो बभूवुस् तेऽवरेभ्योऽसाक्षात्कृतधर्मभ्य उपदेशेन मन्त्रान् सम्प्रादुः, उपदेशाय ग्लायन्तोऽवरे बिल्मग्रहणायेमङ् ग्रन्थं समाम्नासिषुर् वेदञ् च वेदाङ्गानि च"** (निरुक्ते १।६।४) इति वदन्नभिप्रैति।

(घ) धर्मरक्षणं वेदरक्षणं च ब्राह्मणैर् मुख्यतया कर्तव्यम्

धर्मरक्षणं ब्राह्मणैर् विशेषतः कर्तव्यमिति **"चतुष्पात् सकलो धर्मो ब्राह्मणस्य विधीयते। पादावकृष्टो राजन्ये तथा धर्मो विधीयते। धर्मो वैश्ये च शूद्रे च पादःपादो विहीयते। विद्यादेवंविधैनैषां गुरुलाघवनिश्चयम्"** इति महाभारतवचनाद् (१२।३५।३२,३३) अपि अवगम्यते। वेदविद्यासंरक्षणं च ब्राह्मणैर् विशेषतः कर्तव्यमिति **"विद्या ह वै ब्राह्मणमाजगाम गोपाय मा शेवधिष् टेऽहमस्मि"** इति श्रुतिवचनाद् (संहितोपनिषद्ब्राह्मणे, तृतीये खण्डे; शाट्यायनीयोपनिषदि, निरुक्ते २।१।४, वासिष्ठधर्मसूत्रे च २।८) अपि ज्ञायते।

उक्तसिद्धान्तानुसारं वेदविद्याधर्मसंरक्षणप्रयासे प्रवर्तमाने स्वाद्ध्यायशालाकुटुम्बजनैः कृतस्य वेदाङ्गज्योतिषाध्ययनस्य विवरणं फलं चाऽत्र सम्पूर्णभूमण्डलस्थानां वेदवेदाङ्गार्थानुशीलनपराणां विज्ञजनानामग्रे वेदाङ्गज्योतिषकौण्डिन्न्यायनव्याख्यानरूपेण प्रस्तुता (चौखम्बाविद्याभवनम्, वाराणसी, सन् २००५)। इदानीं **वैदिकतिथिपत्र**रूपेण प्रस्तूयते।

(ङ) लगधमुनिप्रोक्तस्य "पञ्चसंवत्सरमयम्" इत्यादिकस्य ज्योतिषग्रन्थस्य वेदाङ्गत्वम्

"शिक्षा कल्पो व्याकरणं निरुक्तं छन्दो ज्योतिषम्" इति मुण्डकोपनिषदि (१।१।५) गणितेषु षट्सु वेदाङ्गेषु शिक्षाविषये कोऽपि भ्रमो बहोः कालात् पूर्वत एव प्रवृत्तोऽवगम्यते। तथाऽपि शैशिरीयऋग्वेदप्रातिशाख्यादयः प्रातिशाख्यग्रन्था एव तत्तद्वेदशाखासम्बद्धा **वेदाङ्गशिक्षाग्रन्था** इत्यवगम्यते। एतस्मिन् विषयेऽस्माभिः कौण्डिन्न्यायनशिक्षायाः प्रस्ताविकायां विस्तरेण प्रतिपादितमस्ति। तत् तत्रैव द्रष्टव्यम्। **कल्पग्रन्थास्** तु तत्तद्वेदशाखाविशेषसम्बद्धाः श्रौतसूत्र-गृह्यसूत्ररूपा ग्रन्थाः प्रसिद्धा एव। **व्याकरण**ग्रन्थास्तु पाणिनितः प्राचीनैः शाकटायनादिभिराचार्यैः कृता अपीदानीं तेऽनुपलभ्यमाना इति पाणिनीयव्याकरणाष्टाध्याय्येवेदानीं व्याकरणरूपवेदाङ्गग्रन्थत्वेन स्वीक्रियते शिष्टपरम्परया। मुनिना पतञ्जलिना पाणिनीय-व्याकरण-भाष्य-प्रथमाह्निके पाणिनीयव्याकरणस्याध्येतव्यतायाः प्रतिपादने **"ब्राह्मणेन निष्कारणो धर्मः षडङ्गो वेदोऽध्येयो ज्ञेयः"** इत्यागमवचनं प्रमाणरूपेण प्रस्तुत्य पाणिनीयव्याकरणस्याऽध्येतव्यतायाः प्रतिपादितत्वात् तत्र भवता पाणिनीयव्याकरणग्रन्थस्य वेदाङ्गग्रन्थत्वं प्रतिपादितमेव। **वेदाङ्गनिरुक्तग्रन्थो**ऽपीदानीं निघण्टुपञ्चाध्यायीव्याख्यानरूपो यास्कप्रणीतः प्रसिद्ध एव। **वेदाङ्गच्छन्दशशास्त्रग्रन्थश्** च पिङ्गलकृतः पिङ्गलच्छन्दःसूत्रनाम्ना प्रसिद्ध एव। **वेदाङ्गज्योतिषग्रन्थविषये** त्विदानीं प्रायेणाऽबोधो भ्रम एव वाऽपि लोके प्रचरन् दृश्यते। इदानीं प्रायः सर्वे ज्यौतिषिकाः पण्डिताश् च प्रचलितं सूर्यसिद्धान्तग्रन्थं सिद्धान्तशिरोमणिग्रन्थमेव वाऽपि मुख्यं वेदाङ्गज्योतिषग्रन्थं मन्यमाना विलोक्यन्ते। तस्माद् वेदाङ्गज्योतिषग्रन्थस्य विषये विचारः प्रस्तूयतेऽधस्तात्।

यद्यपि प्रचलिते सूर्यसिद्धान्तग्रन्थे **"अल्पावशिष्टे तु कलौ मयो नाम महासुरः। रहस्यं परमं पुण्यं जिज्ञासुर् ज्ञानमुत्तमम्।। वेदाङ्गमग्र्यमखिलं ज्योतिषां गतिकारणम्। आराधयन् विवस्वन्तं तपस् तेपे सुदुस्तरम्"** (१।२,३) इत्यादिना सन्दर्भेण तस्य ग्रन्थस्य वेदाङ्गज्योतिषग्रन्थत्वं प्रतिपादितम्, सिद्धान्तशिरोमणिग्रन्थे च तस्य ग्रन्थस्य ब्राह्मणैरध्ययनीयतायाः प्रतिपादने **"वेदचक्षुः किलेदं स्मृतं ज्योतिषं *मुख्यता चाऽङ्गमध्येऽस्य* तेनोच्यते। संयुतोपीतरैः कर्णनासादिभिश् चक्षुषाऽङ्गेन हीनो न किञ्चित्करः।। तस्माद् *द्विजैरध्ययनीयमेतत्* पुण्यं रहस्यं परमं च तत्त्वम्। यो ज्यौतिषं वेत्ति नरः स सम्यग् धर्मार्थकामाल्ँ लभते यशश् च"** (१।१।११,१२) इत्युक्त्वा तस्य ग्रन्थस्य वेदाङ्गज्योतिषग्रन्थत्वं प्रतिपादितम्, तथाऽपि सूर्यसिद्धान्त-सिद्धान्तशिरोमण्यादयो ग्रन्था मुख्या वेदाङ्गज्योतिषग्रन्था न सन्ति। इदानीं मुख्यो वेदाङ्गज्योतिषग्रन्थस् तु लगधमुनिप्रोक्तः **"पञ्चसंवत्सरमयम्"** इति प्रारब्धो ग्रन्थ एवास्ति।

"पञ्चसंवत्सरमयम्" इत्यादिकस्य ग्रन्थस्य वेदाङ्गज्योतिषग्रन्थत्वं मुख्यतया नित्यब्रह्मयज्ञकारिणां स्वाध्यायाध्ययनपरायणानां वैदिकानां परम्परातोऽवगम्यते। सा च परम्परा शङ्करबालकृष्णदीक्षितादिलेखेभ्योऽपि ज्ञायते। तथाहि शङ्करबालकृष्णः कथयति– **"भारतस्य सर्वेषु प्रान्तेषु ब्राह्मणानां (वेदाङ्गज्योतिषग्रन्थस्य पाठः) समानोऽस्ति। वैदिका एतं ग्रन्थं साक्षाद् वेदान् न्यूनं न मन्यन्ते। तान् प्रति यदि भवद्भिः पठ्यमाने वेदाङ्गज्योतिषग्रन्थे अयं पाठोऽशुद्धोऽस्ति, तत्स्थाने एतं शुद्धं पाठं कुर्वन्तु भवन्तः**

इत्युच्येत, तदा ते एतं प्रस्तावं स्वीकर्तुं कदाऽपि तत्परा न भविष्यन्ति" इति[१८]। तथैव धूलिपालकुलजः अर्कसोमयाजी आन्ध्रदेशजो वैदिको ज्यौतिषिकश् च **"वेदाङ्गज्यौतिषमिति कश् चिद् ग्रन्थो वर्तते महात्मना लगधेन प्रवर्तित इति प्रतिपादितः। यद्यपि याजुषमार्चं चेति वेदाङ्गज्यौतिषं द्विविधं प्रसिद्धं लोके। यथा वेदस् तथैवेदमद्यापि कण्ठे वर्तते बहूनां वेदपण्डितानाम्"**[१९] इति प्रतिपादयति। इदानीं प्रचरत्सु आह्निक-कृत्यसङ्ग्रहेषु च ब्रह्मयज्ञरूप-स्वाध्यायाध्ययनप्रकरणे षण्णां वेदाङ्गानां मध्ये ज्योतिषरूपस्य वेदाङ्गस्य **"पञ्चसंवत्सरमयम्"** इति प्रतीकः सङ्गृहीतो दृश्यते। १९३७तमे वैक्रमाब्दे षट्चत्वारिंशद्वर्ष-वयस्केन वैद्य-नारायणशर्मणा नागोजिभट्टकृतमाह्निकम्, आचार-मयूखम्, धर्मप्रवृत्तिम्, हलायुधकृतं ब्राह्मणसर्वस्वम्, आचारार्कं च विलोक्य तेभ्योऽन्येभ्यश् च सम्बद्धेभ्यः स्वशाखाश्रुतिसूत्रादि-ग्रन्थेभ्यः सारं सङ्गृह्य रचितत्वेनोक्तायाम्, १९५२तमे वैक्रमेऽब्दे परिष्कृतं रूपं दत्त्वा चतुर्थावृत्तौ मुद्रितायाम्, १९८०तमे वैक्रमेऽब्दे तु नवमावृत्तौ मुद्रितायां **शुक्लयजुर्वेदीय-माध्यन्दिनवाजसनेयिनाम् आह्निकसूत्रावलौ** दिनचतुर्थभागकृत्यरूपेषु मध्याह्नकृत्येषु प्रदर्शिते ब्रह्मयज्ञप्रयोगेऽपि **"पञ्चसंवत्सरमयम्"** इत्येव वेदाङ्ग-ज्योतिषप्रतीकः प्रदर्शितो दृश्यते (पृ.१७७)। सुधाकरद्विवेदेनाऽपि १९६४तमे वैक्रमेऽब्दे वाराणस्यां मेडिकल्हाल्मुद्रायन्त्रालये मुद्रितस्य **"याजुषज्यौतिषम् आर्चज्यौतिषं च"** इत्युक्तस्य ग्रन्थस्य भूमिकायाम् **"षडङ्गपाठः पुण्यपुञ्जोत्पादक इति समवगम्याऽधीयते लोका इदं वेदचक्षूरूपं याजुषमार्चं च ज्यौतिषमपि"** इत्युक्तमस्ति। एतावता च **"पञ्चसंवत्सरमयम्"** इत्यादेर् ग्रन्थस्य परम्पराप्राप्तरूपेण वेदाङ्गज्योतिषग्रन्थत्वं सर्वैरास्तिकैर् जनैः स्वीक्रियत इति सुस्पष्टं भवति।

"पञ्चसंवत्सरमयम्" इत्यादिकस्य वेदाङ्गज्योतिषग्रन्थस्य नित्ये ब्रह्मयज्ञेऽध्ययनीयत्वम्, उपाकर्मणि उत्सर्जनकर्मणि च कर्तव्ये स्वाध्यायप्रवचने प्रवचनीयत्वम्, अलङ्घनीयत्वम्, पुराणादिभ्यो विशिष्टत्वम्, मान्यतरत्वम्, सर्वथाऽलङ्घनीयत्वं च कालीघट्टनगरे मनसुखरायमोरमहाशयेन मुद्रापितस्य स्मृति-सन्दर्भस्य २०१३तमे वैक्रमेऽब्दे मुद्रिते षष्ठे भागे सङ्गृहीतायां लौगाक्षिस्मृतावुक्तम्। तथाहि—

पञ्चसंवत्सरमिति ज्योतिःसूत्रं **च तद् वदेत्।**
मयरेत्यादिकं सूत्रं छन्दोविचितिमध्यगम्।।
अथातो जैमिनेः सूत्रमथातो व्यासभाषितम्।–इति (पृ.२९९),
शास्त्रस्य तत्परं भूयः *पञ्चादिग्रन्थकस्य* **च॥ तस्मादेतानि**
सर्वाणि ह्यलङ्घ्यान्येव सर्वदा॥–इति (पृ.२७५-२७६) च।

"पञ्चसंवत्सरमयम्" इत्यादिकस्य वेदाङ्गज्योतिषग्रन्थस्य नित्ये ब्रह्मयज्ञे स्वाध्यायाध्ययनरूपेऽध्ययनीयत्वं देवीभागवतेऽपि (११।२०।४-१०) उक्तम्।

शिवपुराणस्य कैलाससंहितायाः (१२।८८-९२) वचनेनाऽपि **"पञ्चसंवत्सरमयम्"** इत्यादिकस्य ग्रन्थस्य वेदाङ्गज्योतिषग्रन्थरूपेण नित्यस्वाध्यायाध्ययनेऽप्यध्ययनीयत्वं सूचितमवगम्यते।

एतावता च **"पञ्चसंवत्सरमयम्"** इत्यादिको ग्रन्थ एवेदानीं वेदाङ्गज्योतिषशास्त्रस्य मुख्यो ग्रन्थ इति स्वीकर्तव्यमिति सुस्पष्टं भवति।

(च) वैदिकानां कृते धर्ममोक्षविषये वेद-वेदाङ्गादीनामेव मुख्यतया प्रामाण्यम्

भारतवर्षीयस्य चातुर्वर्ण्यस्य कृते धर्मे मोक्षे च मुख्यं प्रमाणं वेद एव। वेद इति च मुख्यतया मन्त्रसंहिता-ब्राह्मणग्रन्थयोर् ग्रहणं भवति। आरण्यकानि उपनिषदश् च प्रायेण ब्राह्मणग्रन्थेष्वन्तर्भवन्तीति मन्त्र-ब्राह्मणयोर् ग्रहणेनैव तेषामपि ग्रहणं भवति। एतस्मिन् विषये **"मन्त्रब्राह्मणयोर् वेदशब्दः"** इति कौषीतकिगृह्यसूत्रे (३।१२।२३), **"मन्त्रब्राह्मणयोर् वेदनामधेयम्"** इति आपस्तम्बश्रौतसूत्रे (२४।१।३१), सत्याषाढश्रौतसूत्रे (१।१।७), कात्यायनप्रतिज्ञासूत्रे (१।२) च, **"मन्त्रब्राह्मणं वेद इत्याचक्षते"** इति बौधायनगृह्यसूत्रे (२।६।२), **"मन्त्राश्च ब्राह्मणं च वेदः"** इति शबर-स्वामिकृते जैमिनीयधर्ममीमांसासूत्रभाष्ये (२।१।३३), **"आम्नायः पुनर् मन्त्राश् च ब्राह्मणानि च"** इति कौशिकसूत्रे (१।३) दृश्यते इति चाऽत्र स्मरणीयम्। कुमारिलभट्टमहोदयेन च **"यद् वा**

---

१८. भारतीय ज्योतिष, अनु.शिवनाथ झारखण्डी, हिन्दी समिति, लखनऊ, १९७५ क्रै., पृ.९३।

१९. ज्योतिर्विज्ञानम्, अर्कसोमयाजिना श्रीधूलिपालेन विरचितम्, वाराणसेय-संस्कृत-विश्वविद्यालयः, १९६४ क्रै., पृ.५।

प्रयोगशास्त्रत्वमङ्गानामभिधीयते। वेदत्वं वा षडङ्गेऽपि वेदत्वस्मृतिरस्ति हि।। 'मन्त्रब्राह्मणयोर् वेद इति नामधेयम्, षडङ्गमेके' इत्यङ्गान्यपि वेदशब्दवाच्यानि स्मर्यन्ते" इत्यपि तन्त्रवार्तिके(१।३।११, पृ.१५६) प्रोक्तमित्यप्यत्र स्मरणीयम्।

एवं च वेदानां महास्मृतिरूपाणां वेदाङ्गानां च धर्मे मोक्षे च मुख्यं प्रामाण्यमवगन्तव्यम्। अन्येषां परिशिष्टा-ऽनुस्मृति-पुराणोपपुराणादीनां तु वेदवेदाङ्गोपोद्बलकानामेव सतां धर्मे मोक्षे च प्रामाण्यं भवति।

तत्राऽनादेरपौरुषेयस्य वेदस्य गुरुशिष्यपरम्परयाऽविच्छेदेन धारणेन वेदादिशास्त्रयथार्थस्वरूपरक्षायै तदर्थाधिगमनेन धर्ममोक्षसाधनाय चैव द्विजातीनामुपनयनं क्रियते। अत एवोपनयनपूर्वकमुपाकर्मपूर्वकं च विधिनाऽधीतानां हि शास्त्राणां धर्मे मोक्षे च मुख्यं प्रामाण्यम्। अन्येषां ग्रन्थानां तु तथाऽधीत-शास्त्रविहितोक्तसूचितानुवादेन, तथाधीतशास्त्राकाङ्क्षापूरणेन, तथाऽधीतशास्त्रानुकूलार्थसमर्पणेन, तथाऽधीतशास्त्राऽविरोध्यर्थ-प्रतिपादनेन चैव वेदादीनामुपबृंहणेनैव प्रामाण्यं धर्ममीमांसा-शास्त्रेण शिष्टैश्च स्वीक्रियमाणमवगम्यते। एष एव वैदिकानां मुख्यः शास्त्रप्रामाण्यसिद्धान्तः। अत एव च अधीति-बोधा-ऽऽचरण-प्रचारणक्रमो वेदवादिभिर्निर्धारितः।

अध्ययनविधौ हि **"वेदं समाप्य स्नायात्, ब्रह्मचर्यं वाऽष्टा-चत्वारिंशकम्, द्वादशेऽप्येके, गुरुणाऽनुज्ञातः, विधिर् विधेयस् तर्कश्च वेदः, षडङ्गमेके, न कल्पमात्रे, कामन् तु याज्ञिकस्य"** इत्यादिके पारस्करगृह्यसूत्रे (२।६।१, ५-८) अन्यत्र च दृष्टे वेदाङ्गानामप्यध्ययनस्य विधानात् वेदाङ्गेषु ज्योतिषस्याऽप्यध्ययनीयत्वाद् विध्यनुसारमधीतस्य **"पञ्चसंवत्सरमयम्"** इत्यादिकस्य ज्योतिषग्रन्थस्यैव अग्न्याधान-दर्शपूर्णमासयाग-चातुर्मास्ययाग-निरूढपशुबन्धयागा-ऽग्निष्टोम-सोमयागादीनां श्रौतकर्मणाम् अन्नप्राशन-चूडाकरणोपनयन-विवाहादीनां गृह्यकर्मणां च कृते युग-वर्षा-ऽयन-ऋतु-मासा-ऽधिमास-पक्ष-तिथिरूपाणां कालानां निरूपणे परमं प्रामाण्यं स्वीकर्तव्यमेव। एतस्य ग्रन्थस्यैतादृशस्य प्रामाण्यस्याऽस्वीकरणं तु नास्तिक्यं जैन-बौद्धतुल्यतया वैदिकपरम्परायां विद्रोहस्याऽप्रामाण्यस्य चोद्भावनमेवेति निश्चीयते। मेषादिराशि–भौमादिग्रहचार–सूर्यचन्द्रोपराग–ग्रहदशानिरूपण-जन्मपत्रीनिर्माणादिषु तु वेदाङ्ग-ज्योतिषग्रन्थाविरोधेन सूर्यसिद्धान्तादयोऽपि ग्राह्याः स्युः। एतस्य विषयस्य सम्यगाकलने दृश्यमानं पुराणानामाधुनिकानां च गुरु-पुरोहितपण्डितादीनामसामर्थ्यं तु शोच्यमेवाऽस्ति। वैधस्य वेद-वेदाङ्गाध्ययनस्याऽतीव विरलत्वेन लोकेऽश्रूयमाणत्वात्, मुख्यस्य ब्रह्मयज्ञस्याऽपि लुप्तप्रायत्वात्, मुख्यस्य ब्रह्मयज्ञ-स्वरूपस्याऽज्ञानात्, ब्रह्मयज्ञेऽध्येतव्यानां ग्रन्थानां परिचयस्या-ऽभावात्, ब्रह्मयज्ञस्याऽकरणात्, पाश्चात्यप्रवर्तितसंस्कृतशिक्षा-प्रणाल्या अनुसरणात्, आर्षवेदवेदाङ्गशिक्षाप्रणाल्या विलोपनाच् च आधुनिका निकटभूतकालस्थाश् च लोके ख्यातिं गता महान्तो विद्वांसश् चाऽपि तादृशे शोच्यभावे प्राप्ता अवगम्यन्ते। एतादृशी स्थितिश् च कलेः प्रारम्भात् प्रभृत्येव शनैःशनैर् वर्धमाना, भारत-वर्षे मुसलबाणानां शासनस्य प्रारम्भात् प्रभृति तु भृशं वृद्धा, निकटभूतकाले प्रारब्धात् पाश्चात्यशिक्षासंस्कृतीनामत्यधिकात् प्रचारात् प्रभृति तु चरमोत्कर्षं प्राप्ता प्रतीयते। तथापि ब्रह्ममीमांसासूत्रस्य "शाङ्करभाष्यम्" इति प्रथिते शारीरकमीमांसाभाष्ये शङ्करेणोल्लिखितं **"न हि पूर्वजो मूढ आसीदित्यात्मनाऽपि मूढेन भवितव्यमिति किञ्चिदस्ति प्रमाणम्"** इति वाक्यं च (२।१।११) स्मृत्वाऽधुनातनैर् विवेकशीलैर् जनैर् व्यवहरणीयमिति प्रतिभाति।

(छ) लगधमुनिप्रोक्तवेदाङ्गज्योतिषग्रन्थरचनाकालविचारः

अनादिवैदिककालगणनापद्धतिमनुसृत्य मुनिना लगधेन वेदाङ्गज्योतिषं रचितम्। लगधमुनिप्रोक्तवेदाङ्गज्योतिषग्रन्थ-रचनाकालस्य विषये सुधाकरद्विवेदमहाशयेन **"याजुषज्यौतिषं सोमाकर-सुधाकरभाष्यसहितम् आर्चज्यौतिषं च सुधाकरभाष्येण तल्लघुविवरणेन च सहितम्"** इत्युक्तस्य वाराणस्यां मेडिकल्-हल्नाम्नि मुद्रायन्त्रालये १९६४तमे वैक्रमाब्दे मुद्रितस्य ग्रन्थस्य भूमिकायां **"अस्य रचना च भारतात् पूर्वं मन्मते"** इत्युक्तम्।

शङ्करबालकृष्णदीक्षितश् च **"क्रैस्तवर्षारम्भात् पूर्वं १४१० तमे वर्षे धनिष्ठाया भोगः ९ राशय इति (गणिताद्) आगच्छति, अतः सिद्धं यत् तस्मिन् वर्षे धनिष्ठाया आरम्भे उत्तरायणारम्भो-ऽभूदिति। एवं च वेदाङ्गज्योतिषस्याऽयमेव समयो निश्चितो भवति"** इति ब्रवीति स्मेति लखनऊनगरस्थया हिन्दीसमित्या

१९७५तमे क्रैस्ताब्दे प्रकाशितात् शिवनाथ-झारखण्डिनाऽनूदिताद् भारतीयज्योतिष-नामकाद् ग्रन्थाद् (पृ.१२२) ज्ञायते।

वेदाङ्गज्योतिषस्य दीपिकाख्याया व्याख्यायाः कर्ता शामशास्त्री तु दीपिकायाः प्रारम्भे लगधप्रोक्तवेदाङ्गज्योतिष-रचनाकालविषये—

वेदाङ्गज्योतिषं लोके यज्ञकालार्थसिद्धये। प्रणीतं शककालात् प्राग् वत्सराणां सहस्रके। इति ब्रवीति।

एवं चोपलभ्यमानेषु ज्योतिषग्रन्थेषु लगधप्रोक्तो वेदाङ्ग-ज्योतिषग्रन्थ एव प्राचीनतम इति सर्वे स्वीकुर्वन्त्येवेति ज्ञायते।

(ज) वेदाङ्गज्योतिषस्य कौण्डिन्न्यायन-व्याख्यानस्य वैशिष्ट्यम्

वेद-वेदाङ्ग-वेदोपाङ्ग-स्मृति-पुराण-धर्मशास्त्रनिबन्ध-ग्रन्थानां यथाशक्ति सम्यगध्ययनं कृत्वाऽस्माभिर्वेदाङ्गज्योतिषस्य कौण्डिन्न्यायनव्याख्यानं प्रस्तुतम्। अस्माभिर् लगधमुनिप्रोक्त-वेदाङ्गज्योतिषग्रन्थतात्पर्यार्थमादाय तत्र प्रतिपादितानां सिद्धान्तानां यथेदानीमपि श्रौत-स्मार्त-धर्मकृत्याऽपेक्षित-युग-वर्षा-ऽयनर्तु-मास-पक्ष-तिथि-निरूपणे प्रयोगः कर्तुं शक्यते तथा व्याख्यानं कृतमस्ति। एतादृशं व्याख्यानं शङ्करबालकृष्णदीक्षित-सुधाकरद्विवेदि-बालगङ्गाधरतिलक-शामशास्त्र्यादिषु केनाऽपि पूर्वमकृतं ज्ञेयम्। इदानीमपि सूर्यस्योदगयनारम्भस्य तिथौ नक्षत्रे च सम्यङ् निरीक्षणेन निर्धारिते लगधमुनिप्रोक्तकालगणना-पद्धत्यनुसारं युग-वर्षा-ऽयनर्तु-मास-पक्ष-तिथि-पर्व-नक्षत्रादीनां गणना श्रौतस्मार्तधर्मकृत्येषूपयोगाय कर्तुं शक्येति अस्माभिस्तत्र प्रतिपादितम्। आधुनिक-खगोलवित्-कृतान् वास्तविकस्य सूर्योदगयनस्य कालान्, सूर्यचन्द्रयुतिकालाँश् चाऽऽदायाऽपि लगधमुनिप्रोक्तज्योतिषग्रन्थतात्पर्यार्थभूतस्य कालगणना-सिद्धान्तस्य श्रौतस्मार्तधर्मकृत्येषूपयोगाय प्रयोगः कर्तुं शक्य इति चाऽस्माभिस्तस्मिन् व्याख्याने प्रतिपादितमस्ति। तदर्थं लगधमुनि-प्रणीतग्रन्थतात्पर्यं चाऽस्माभिस्तत्र स्पष्टीकृतं श्रुतिस्मृतिपुराण-वचनैर् दृढतया समर्थितं चाऽस्ति। लगधमुनिप्रोक्तो ग्रन्थ आदियुगस्यैव वर्षाऽयनर्तुमासपक्षतिथिपर्वनक्षत्राणां गणितं मुख्य-तया प्रतिपादयति, अन्येषां युगानां गणितं तु उदगयनारम्भतिथि-नक्षत्राणां सम्यङ् निरीक्षणं कृत्वा कार्यमिति च प्रतिपादयतीति चास्माभिः स्पष्टतया प्रतिपादितमस्ति। एतत् तत्त्वमबुद्ध्वाऽन्यैः कृतस्य लगधमुनिग्रन्थे दोषारोपणस्य निराकरणं चाऽस्माभिः कृतमस्ति। सोमाकरेणाऽपि लगधमुनिप्रोक्तकालगणनापद्धतेः सर्वेषु कालेषु सामान्यतया प्रयोक्तुं शक्यता सम्यक् स्पष्टीकृता नास्ति। सर्वेषां श्लोकानामर्थाश् च सोमाकरेण स्पष्टतया प्रतिपादिता न सन्ति। अस्माकं व्याख्याने तु लगधमुनिप्रोक्त-कालगणनापद्धतेः समुचिते परिष्कारे कृते तस्याः सामान्यतया सर्वेषु कालेषु प्रयोक्तुं शक्यता सम्यक् प्रतिपादिता अस्ति। वेदाङ्गज्योतिषस्य प्रायः सर्वेषां श्लोकानामर्था अपि अस्माभिः स्पष्टतया प्रतिपादिताः सन्ति। एवं च लगधमुनिप्रोक्तस्य वेदाङ्ग-ज्योतिषग्रन्थस्य संस्कृतभाषायां समुचितं श्रुतिस्मृतिपुराणादि-वचनपरिपुष्टं सोदाहरणं सम्पूर्णं स्पष्टं च कौण्डिन्न्यायनव्याख्यान-मैदम्प्राथम्येनाऽस्माभिः प्रस्तुतमवगन्तव्यम्। अन्यानि उच्चा-वचानि वैशिष्ट्यानि व्याख्याने एव सुधीभिर् द्रष्टव्यानि। तथापि कानि चन प्रमुखाणि वैशिष्ट्यानि सूत्ररूपेणाऽध उपस्थाप्यन्ते—

१. श्रौतस्मार्त-धर्मकृत्यकाल-निरूपणार्थं लगधमुनिप्रोक्त-वेदाङ्गज्योतिषसिद्धान्तस्य समुचितं परिष्कारं कृत्वा-ऽधुनाऽप्यनुसरणीयत्वस्य प्रदर्शनम्।

२. लगधमुनिप्रोक्तवेदाङ्गज्योतिषग्रन्थतात्पर्यस्य श्रुति-स्मृति-पुराणवचनैः स्पष्टीकरणं समर्थनं च।

३. लगधमुनिप्रोक्त-वेदाङ्गज्योतिषग्रन्थसारांशस्य सर्वेषु कालेषु प्रयोज्यतायाः प्रदर्शनम्।

४. प्रायः सर्वेषां पद्यानां स्पष्टतयाऽर्थस्य प्रतिपादनम्।

५. श्रौत-स्मार्त-धर्मकृत्यार्थकायनर्तुमासादि-निरूपणाऽऽधारभूतस्य प्रकृतिसम्मतस्य वैदिकानां वर्षस्य शिशिरर्तावारम्भस्य समर्थकस्य सोमाकरभाष्यस्य दृढतया समर्थनम्।

६. चान्द्राणां प्रभवादीनां षष्टेः संवत्सराणामेव वैदिक-संवत्सरपरिवत्सरादिभिः सह समन्वयस्य प्रतिपादनम्, वराहमिहिरादिभिः प्रतिपादितस्य बार्हस्पत्यानां षष्टेः संवत्सराणां वैदिकसंवत्सर-परिवत्सरादिभिः सह संयोजनस्य खण्डनं च।

७. कलिवर्षसङ्ख्यामादाय संवत्सरपरिवत्सरादीनां चान्द्राणां प्रभवादीनां च ज्ञानस्योपायस्योहापोहपूर्वकं स्पष्टीकरणम्।

८. आदियुगशब्दस्य बार्हस्पत्य-सुधारकाद्युक्तमर्थं निराकृत्य सोमाकरोक्तस्याऽर्थस्य समर्थनम्।

९. वैदिक-नववर्षारम्भदिनस्य स्पष्टीकरणम्, माघफाल्गुनादीनां तपस्तपस्याद्यभिन्नत्वस्य, ऋतुबद्धत्वस्य, नक्षत्रबद्धत्वस्याऽभावस्य च प्रतिपादनम्।

१०. सप्तमे श्लोके उदगयनस्य मुख्यताया उदगयनारम्भनक्षत्रस्योपलक्षणतायाश् च प्रतिपादनेन लगधप्रोक्तवेदाङ्गज्योतिषग्रन्थस्य वैदिककालगणनोपायप्रदर्शकतया सदोपयोज्यत्वस्य प्रतिपादनम्।

११. एकादशे श्लोके उत्तरार्धस्य पूर्वव्याख्यातृभिरव्याख्यातस्य परम्परागतं पाठमेवादाय सम्यग् व्याख्यानम्।

१२. पूर्वव्याख्यातृभिरन्यथा व्याख्यातस्य द्वादशस्य श्लोकस्य श्रुतिस्मृतिपुराणधर्मशास्त्रसम्मतस्याऽर्थस्य प्रतिपादनम्।

१३. आदियुगस्य सावनदिनानाम् १२४ पर्वान्तानां विस्तृताया व्याख्यासहितायाः सारण्या उपस्थापनम्।

१४. नेपालदेशे सुरक्षितानां शिलालेखानां ग्रन्थानामन्येषां च लेख्यानां चाऽपि साहाय्येन वेदाङ्गज्योतिषोक्ताया अधिमासव्यवस्थाया युक्तियुक्ताया व्यावहारिक्याश् च व्याख्याया उपस्थापनेनाऽन्यैरप्रकाशितस्य वस्तुगतस्य तथ्यस्य प्रकाशनम्, वेदाङ्गज्योतिषोक्ताधिमासपद्धतेः सर्वेषु कालेषूपयोज्यतायाः साधनं च।

१५. श्रौतस्मार्तधर्मकृत्याधिकारिणां द्विजातीनां नाक्षत्रनामकरणे लगधप्रोक्तव्यवस्थाया एवाऽनुसरणीयतायाः प्रतिपादनम्।

१६. हस्तलेखानां युक्तीनां च साहाय्येन मूलग्रन्थस्य कतिपयानां शुद्धतरपाठानां च समावेशनम् (द्रष्टव्याः श्लोकाः ११, १३, १४, १६, २६, २७, ३१, ३७, ३८, ४२)।

१७. लगधस्योल्लेखेन युतस्य त्रिचत्वारिंशस्य श्लोकस्य हस्तलिखितपुस्तकपाठसाहाय्येन च यजुर्वेदिनां वेदाङ्गज्योतिषग्रन्थे पठितत्वस्य साधनम्।

१८. यजुर्वेदिनां वेदाङ्गज्योतिषग्रन्थस्य हस्तलेखयोश् छायाप्रतिलिप्योरपि समावेशनम्।

१९. आदियुगस्य पञ्चानामेव वर्षाणां संवत्सरपञ्जीनां तिथिपञ्जीनां वाऽप्युपस्थापनम्।

२०. यजुर्वेदिनां वेदाङ्गज्योतिषग्रन्थस्य शब्दानामकाराद्यनुक्रमणिकायाश् च समावेशनम्।

२१. विस्तृतायाः वेदाङ्गज्योतिषसम्बद्धविषयाणां प्रतिपादिकायाः संस्कृतभूमिकाया योजनम्।

२२. लगधमुनिप्रोक्तवेदाङ्गज्योतिषप्रतिकूलांशे आर्यभटीयब्राह्मस्फुटसिद्धान्त-सूर्यसिद्धान्तादीनां श्रौतस्मार्तधर्मकृत्यकालनिर्णयेऽप्रमाणत्वस्य स्पष्टीकरणम्। इति।

(फ) श्रौतस्मार्तधर्मकृत्यायावलम्बनीया प्रस्तुते वैदिकतिथिपत्रे आश्रिता वैदिककालगणनाव्यवस्था

अत्र लगधमुनिप्रोक्तवेदाङ्गज्योतिषग्रन्थानुसारं श्रौत-स्मार्तधर्मकृत्यायाऽवलम्बनीयाया वैदिककालगणनाव्यवस्थायाः सारांशः सङ्क्षेपेणोपस्थाप्यते।

वेद-मन्त्रसंहिता-ब्राह्मण-श्रौतसूत्र-गृह्यसूत्रेषु समुल्लिखितानाम्, श्रौतयज्ञविशेषस्वरूपज्ञानायाऽऽवश्यकानाम् (द्र.- लौगाक्षिस्मृतौ, स्मृतिसन्दर्भे षष्ठे भागे, पृ.३७७), मार्कण्डेयस्मृतौ (स्मृतिसन्दर्भे षष्ठे भागे, पृ.१३४) विष्णुधर्मोत्तरपुराणे (३।१२०।२, ३।१५३।१-९, ३।३१७।२,३), हेमाद्रेर् दानखण्डे (पृ.८९०), कालमाधवे संवत्सरनिर्णयप्रकरणे (पृ.३५) च निर्दिष्टस्य तस्मिंस्तस्मिन् वत्सरविशेषे कार्यस्य कृत्यविशेषस्य कृते परमावश्यकानां च संवत्सर-परिवत्सरादीनां पञ्चानां वैदिकानां वत्सराणाम्, पञ्चवर्षात्मकस्य वैदिकस्य युगस्य च प्रतिपादनेन रहिताः मगब्राह्मणत्वाद् मुख्यवैदिकपरम्पराबाह्यत्वेन सम्भावितानाम् आर्यभट-वराहमिहिरब्रह्मगुप्त-नव्यसूर्यसिद्धान्तकारादीनाम् आर्यभटीय–बृहत्संहिता–ब्राह्मस्फुटसिद्धान्त–नव्यसूर्यसिद्धान्तादयो ज्योतिषग्रन्थाः, तदनुयायिनां लल्ल-श्रीपति-भास्कर-कमलाकरादीनां ज्योतिषग्रन्थाश्च वैदिकैर् द्विजवरैर् नित्यपञ्चमहायज्ञान्तर्गते ब्रह्मयज्ञेऽपि पठ्यमानेन **"पञ्चसंवत्सरमयम्"** इत्यादिकेन लगधमुनिप्रोक्तमूलवेदाङ्गज्योतिषग्रन्थेन विरुद्धत्वाद् अर्वाक्कालिकत्वाच्चाऽनादिपरम्परासिद्धश्रौत-स्मार्त-धर्मकृत्यकालानां वत्सराऽयनर्तुमासाऽधिमासपक्ष-

तिथीनां निर्णये प्रमाणत्वं नैव भजन्ते इति **"या वेदबाह्याः स्मृतयः"** (१२।९५,९६) इत्यादिना प्रतिपादिताद् मनुस्मृतिसिद्धान्तादवगम्यते। आर्यभटीयादिग्रन्थाः श्रौतधर्मकृत्यानपेक्षित-मेषादिराशि-भौमादिग्रहचार-सूर्यचन्द्रग्रहणादिविचारे तु मूलवेदाङ्गज्योतिष-ग्रन्थाऽविरोधेन उपयोक्तव्या अपि स्युः। तस्मात् श्रौत-स्मार्त-धर्मकृत्यार्थं कालव्यवस्थाऽधोवर्णितरूपा स्वीकार्या—

(१) वर्षारम्भः

सर्वप्रथमं वैदिक-नववत्सरारम्भदिनं निर्णेयम्। तच्च शङ्कुच्छायादिवेद्यस्य दृक्सिद्धस्य सौरस्योत्तरायणस्याऽऽरम्भस्य दिनात् (सायनमकरसङ्क्रान्तिदिनात्) प्रायेण पूर्वम्, अधिमास-युते वर्षे तु कदाचित् परमपि आसन्नं शुक्लप्रतिपद्दिनं ज्ञेयम्। एतच्च लगधमुनेः याजुषवेदाङ्गज्योतिषस्य **"माघशुक्लप्रपन्नस्य पौषकृष्णसमापिनः"** (श्लो.५), **"उपजायेते मध्ये चाऽन्तेऽधिमासकौ"** (श्लो.३७) इत्यादिभ्यो वचनेभ्य एवार्थात् सिद्धतया ज्ञातं भवति। एतदेव **"माघमासे धनिष्ठाभिरुत्तरेणैति भानुमान्। अर्धाश्लेषस्य श्रावणस्य दक्षिणेनोपनिवर्तते"** (२६।२९) इति बौधायनश्रौत-सूत्रवचनस्याऽप्यनुकूलं वर्तते।

(२) वर्षनिर्णयः

उक्तविधायां शुक्लप्रतिपदि प्रवृत्तो वैदिकवत्सरः संवत्सर-परिवत्सरादिषु पञ्चसु वत्सरेषु कतमो वत्सर इति च विष्णुधर्मोत्तरपुराणस्य **"पञ्चभक्ते तु यच्छेषम्"** (१।८२।५३) इत्यादिकस्य वचनस्य, वराहमिहिरकृत-पञ्चसिद्धान्तिकायाः **"द्व्यूनं शकेन्द्रकालम्"** इत्यादिकस्य वचनस्य च समन्वयेन निर्णेयम्। तदनुसारं चेदानीं वर्तमानः एतस्य (२०१६ क्रैस्तवर्षस्य) नवम्बरमासस्य त्रिंशे दिवसे स्थितायाः शुक्लप्रतिपदः प्रभृति प्रवृत्तो वैदिको वत्सरः वैदिकपञ्चाब्दकयुगद्वादशकचक्रस्य नवमस्य सौम्यस्य युगस्य द्वितीयः परिवत्सराख्यो वत्सरोऽस्तीति ज्ञेयम्। एतस्या एव प्रतिपदः कलियुगाब्दानाम् ५०८२ तमोऽब्दश्च प्रवृत्त इति च बोध्यम्।

उक्तप्रकारेण निर्णीतो वैदिको वत्सरो मुख्यतया चान्द्रोऽस्तीति वेदे (मा.वा.शु.य.वे. ७।३०,२२।३१, तै.कृ.य.वे.सं. १।४।१४।१, ६।५।३।४) त्रयोदशानां मासानामुल्लेखाद् ज्ञायते। कालमाधवे संवत्सरनिर्णयप्रकरणे **"अथ चान्द्रस्याऽवान्तरभेदा उच्यन्ते"** इत्युक्त्वा संवत्सर-परिवत्सरादीनां पञ्चानां वैदिकवत्सराणामुल्लिखितत्वात्, कालमाधवे (उपोद्घाते, श्लो.१३) कोषकल्पतरौ च (पृ.५१) **"चान्द्राणां प्रभवादीनाम्"** इत्यादिकस्य वचनस्य दर्शनाच्च तद् बोद्धुं शक्यते। एतेषां वैदिकानां पञ्चानां वर्षाणां द्वादशभिश् चक्रैर् वैष्णवयुगादिनामकैश् चान्द्राः प्रभवादयः षष्टिः संवत्सरा भवन्तीति च हेमाद्रिकृतश्राद्धकल्पविवरणात् (पृ.११५२-११५३) स्फुटतयाऽवगम्यते। प्रभवादयश्चान्द्राः षष्टिः संवत्सरा निर्णयसिन्धौ धर्मसिन्धौ च प्रतिपादिता एव सन्ति। एतर्हि पञ्चाङ्गपत्रकेषु लिख्यमाना वत्सरास्तु बार्हस्पत्याः सन्ति, न चान्द्राः। चान्द्र-बार्हस्पत्य-वत्सराणां समाननामकत्वेऽपि गणिते प्रारम्भे च स्पष्टो भेदोऽस्ति। संवत्सर-परिवत्सरादीनि वैदिकवत्सरनामानि चान्द्रप्रभवादिषु समन्वितानि भवन्ति, न बार्हस्पत्यप्रभवादिष्विति सम्यग् बोद्धव्यम्, वराहमिहिरादिप्रचारिते भ्रमे नैव पतितव्यम्। एतर्हि वस्तुतो साधारणनामको बार्हस्पत्यो वत्सरोऽस्ति; चान्द्रो वत्सरस्तु उक्तायाः शुक्लप्रतिपदः प्रभृति कीलकनामकः प्रवृत्तोऽस्ति। श्रौत-स्मार्त-कर्मादौ सङ्कल्पे चान्द्रा एव वत्सराः स्मर्तव्या न तु बार्हस्पत्या इति च निर्णयसिन्धौ अब्दनिर्णयप्रकरणे स्थितात् **"स्मरेत् सर्वत्र कर्मादौ चान्द्रं संवत्सरं सदा। नाऽन्यं यस्माद् वत्सरादौ प्रवृत्तिस् तस्य कीर्तिता।"** इत्यार्ष्टिषेणवचनात्, धर्मसिन्धोः प्रारम्भे स्थितात् **"कर्मादौ सङ्कल्पे चान्द्रवत्सर एव स्मर्तव्यो नाऽन्यः"** इति निर्विकल्पात् निर्णयाच्च ज्ञायते। मूलवैदिकपरम्परानुकूलोऽयमेव पक्षो वैदिकैः सदा सर्वत्र चाऽऽश्रयणीयो न तु **"जैवो वा नर्मदोत्तरे"** इत्युक्तः क्वाचित्क आनुकल्पिकः पक्षः, **"प्रथमत्यागे मानाभावात्"** इति न्यायात्। तस्माद् धर्मकृत्यार्थ-पञ्चाङ्गपत्रकेषु प्रथमकल्पतया चान्द्राणामेव संवत्सराणामुल्लेखस्य व्यवस्था वैदिकैर् विद्वद्भिः कार्या। अस्मिन् **वैदिकतिथिपत्रे** तथैव कृतमस्ति।

(३) सौरचान्द्रायनव्यवस्था

अर्वाचीनाऽवैदिकज्योतिषग्रन्थप्रभावाभिभूततया यद्यपि कालमाधवकारेण अयननिरूपणप्रकरणे **"के चित्तु चान्द्रमानेनाऽयनद्वयमभ्युपगच्छन्ति"** इति चान्द्रमयनमुपेक्षणीयतयोक्तम्, तथापि पुराणादिषु च **"त्रिभिर् ऋतुभिरयनम्"** इति चान्द्रैस् त्रिभिर् ऋतुभिरयनस्य निष्पत्तेः प्रतिपादितत्वाद् वैदिकानामृतूनां च चान्द्रत्वात्, सुश्रुतसंहितायामपि **"चन्द्रादित्ययोः कालविभागकरत्वाद् अयने द्वे भवतः"** (१।६।७) इति चन्द्रस्याऽपि अयनविभागहेतुत्वेनो-

ल्लिखितत्वाच् च श्रौतस्मार्तधर्मकृत्येषु अयनमपि सूर्यायन-सापेक्षमपि चान्द्रर्तुत्रयात्मकं चान्द्रमेव ग्राह्यमित्यवगम्यते। तत्र चान्द्रमुदगयनमपि उक्तविधशुक्लप्रतिपदात एव प्रवर्तते। अत एव वैदिकेषु धर्मकृत्यार्थकपञ्चाङ्गपत्रकेषु मुख्यतया तादृशमेव चान्द्रमयनं लेख्यम्।

(४) ऋतूनां चान्द्रत्वम्

वेदोक्ता ऋतवश्चान्द्रा एवेति वेदोक्तमधुमाधवादिमासानां चान्द्रत्वाद्, **"मधुश्च माधवश्च वासन्तिकावृतू"** इत्यादिकाद् वेद-वचनाच् चैव स्पष्टं भवति। एवं च चान्द्रः शिशिर ऋतुरपि उक्त-विधशुक्लप्रतिपदात एव प्रवर्तते। ततो यथायथं क्रमेण वसन्तादयः प्रवर्तन्ते। एवं च सति **"श्रौतस्मार्तक्रियाः सर्वाः कुर्याच् चान्द्र-मसर्तुषु। तदभावे तु सौरर्तुष्विति ज्योतिर्विदां मतम्"** इति निर्णय-सिन्ध्वादिधृतवचनाच्च अपरिहार्यं बलवन् निमित्तं विना प्रथम-कल्पं त्यक्त्वाऽनुकल्पं प्रत्यनुधावने **"प्रभुः प्रथमकल्पस्य यो-ऽनुकल्पेन वर्तते"** (मनुस्मृतौ ११।३०) इत्यादिकाद् मन्वादिवचनाद् ज्ञायमानाद् धर्मकृत्यफललोपस्य प्रसङ्गात् श्रौतस्मार्तक्रियासु प्रथमकल्पतया चान्द्र एव ऋतुर् ग्राह्यः, न तु वेदाङ्गज्योतिष-निन्दकब्रह्मगुप्तानुसरणपरभास्करादीनां **"वर्षायनर्तुयुगपूर्वकमत्र सौरात्"** इत्यादिकैर् वचनैर् वञ्चितैर् वैदिकैः सौर ऋतुः स्वीकर्तव्यः। तस्मात् श्रौतस्मार्त-धर्मकृत्यार्थकपञ्चाङ्गपत्रकेषु मुख्यतया चान्द्र एव ऋतुर् लेख्यः। अस्मिन् **वैदिकतिथिपत्रे** तथैव कृतम्।

नवीनसूर्यसिद्धान्तस्य **"भानोर् मकरसङ्क्रान्तेः"** इत्यादिना (मानाध्याये श्लो.९-१०) वचनेन प्रतिपादिता मेषमासादयः शुद्धाः सौरा मासास्तु मुख्ये वैदिकवाङ्मये मेषादिराशीनामुल्लेखस्यैवा-ऽभावात् सर्वथा अवैदिका ज्ञेयाः। वेदोक्ता मधुमाधवादयो मासास्तु चान्द्रा एवेति वेदे मधुमाधवादिभिः सहैव अंहसस्पतेः संसर्पस्य वाऽपि त्रयोदशस्य मासस्योल्लेखात् (मा.वा.शु.य.वे.म.सं. ७।३०, २२।३१, तै.कृ.य.वे.सं.१।४।१४।१) स्फुटतया बुध्यते। लगधमुनि-प्रोक्तवेदाङ्गज्योतिषग्रन्थस्य **"माघशुक्लप्रपन्नस्य पौषकृष्ण-समापिनः"** इति वचनाच् च वैदिकाश्चान्द्रा मासाः अमान्ताः (शुक्लादयः कृष्णान्ताः) सन्तीति स्पष्टतया ज्ञायते। चैत्रशुक्ल-प्रतिपदि वत्सरारम्भस्य प्रसिद्धिः अधिमासस्य शुक्लादित्वस्य स्थितिश्च वैदिकचान्द्रमासानां शुक्लादिकृष्णान्तत्वं सूचयत एव। एवं च चान्द्रस् तपोमासः (माघः) उक्तविधशुक्लप्रतिपदात एव प्रवर्तते। ततो यथायथं तपस्यादयः (फाल्गुनादयः) मासाः क्रमेण प्रवर्तन्ते। तस्माद् धर्मकृत्यार्थकपञ्चाङ्गपत्रकेषु सार्वत्रिकास् त्रैविद्य-सम्मता अमान्ताश् चान्द्रास् तपोमासादयो (माघमासादयो) मासा एव प्राधान्येन लेख्याः, न तु क्वाचित्काः पूर्णान्ताश्चैत्रादयो मासाः। तत्र पूर्णान्ता मासास्तु गौणत्वेनैवोल्लेखितुमुचिता भवन्ति। अस्मिन् **वैदिकतिथिपत्रे** तथैव कृतम्। प्रथमपङ्क्तौ स्थूलाक्षरैर् वैदिका अमान्ता मासा लिखिताः द्वितीयपङ्क्तौ गौणा मासा लिखिताः।

(५) अधिकमासः

अयनविषुवविज्ञेयशीतोष्णवर्षहेतु-वास्तविकसौरर्तुभिः सह चान्द्राणामृतूनां दूरविप्रकर्षं परिहृत्य सामञ्जस्यस्य स्थापने च मूलवेदाङ्गज्योतिषोक्तायाः कौटलीयार्थशास्त्रानुसृताया हिमवत्-खण्डेतिहासप्रसिद्धायाश् चाऽयनान्ताधिमासव्यवस्थाया एव समर्थतरत्वाच्च वेदाङ्गज्योतिषानुसारी अयनान्तमात्रवर्ती अधिमास एव श्रौतस्मार्तकृत्यार्थकपञ्चाङ्गपत्रकेषु प्रधानतयाऽवलम्बनीयः। अन्योऽधिमासस्तु तत्र गौणतयैव सूचयितुमुचितः। अस्मिन् **वैदिकतिथिपत्रे** तथैव कृतम्।

(६) अहोरात्रात्मिकाः तिथयः

ब्रह्मगुप्तादिप्रचारितः स्फुटतिथिपक्षोऽवैदिकोऽस्तीति सम्यग् बुद्ध्वा वेदाङ्गयाजुषज्योतिषाऽऽथर्वणज्योतिषाऽनुसारिणो वेदोल्लि-खिताऽनुमति-राका-सिनीवाली-कुहू-व्यवस्थानुकूलाश् चाखण्ड-तिथयः श्रौतस्मार्तधर्मार्थपञ्चाङ्गपत्रकेषु मुख्यतया लेख्याः। तत्र पूर्णमासेष्टिदिनं दर्शेष्टिदिनं च तिथि-मास-व्यवस्थास्पष्टत्वार्थ-मप्यवश्यं लेख्यम्।

यवन-शक-हूण-कुषाणादीनामनुकूलैर् मगब्राह्मणैः तदनु-सारिभिरन्यैश्च कृतानां ज्योतिषग्रन्थानां प्रभावेणाऽभिभवाल् लगध-मुनिप्रोक्तवेदाङ्गज्योतिषोक्तमुख्यवैदिककालगणनाव्यवस्थामुपेक्ष्य वेदवेदाङ्गवाङ्मयमनादृत्य धर्मकामैर् द्विजवरैर् नास्तिकत्वं नैवा-ऽनुमोदनीयम्।

५०६७तमस्य कलियुगाब्दस्य तपःशुक्लप्रतिपदि (२०५८।८।३०वै.=२००१-१२-१५क्रै. इत्यङ्कनीये दिने) प्रकाशिता विद्वज्जनेषु प्रचारिता चेयं व्यवस्थाऽत्र समावेशिता बोध्या।

(ञ) उपसंहारः

उक्तविधायां वस्तुस्थितौ सत्यां च वेदानां वेदाङ्गानां च प्रामाण्यं रक्षितुकामैः शिष्टैर् द्विजोत्तमैरस्माकं प्रयासे विचारः कर्तव्यः। वेदाङ्गानां प्रामाण्यस्य रक्षणं विना वेदानां प्रामाण्यस्य रक्षणं दुश्शकमिति वैदिकशिरोमणिभूत आचार्यः कुमारिलभट्ट आह स्म। तथाहि—

परत्राऽविनयं कुर्वन् पितृभ्यां वार्यते सुतः।
तयोरेवाऽविनीतस्य को भवेद् विनिवारकः।।
तथा बहिरसम्बद्धं वदन् वेदेन वार्यते।
साऽङ्गेन तं पुनर् निघ्नन् केनाऽन्येन निवार्यते।।
क्रुद्धो यो नाम यं हन्ति स तस्याऽङ्गानि कृन्तति।
कृत्ताङ्गस्य ततस् तस्य विनाशः कियता भवेत्॥
तेन त्रयीं द्विषन् पूर्वं वेदाङ्गान्येव लुम्पति।
ततस् तेनैव मार्गेण मूलान्यन्यस्य कृन्तति॥ इति।

—तन्त्रवार्तिके (१।३।२७, आनन्दाश्रमसंस्करणे, १९७०, पृ. २२४)।

वेदाङ्गज्योतिषप्रामाण्यदृढीकरणाय च वैदिकैः सार्थस्य वेदाङ्गज्योतिषग्रन्थस्याऽध्ययनाऽध्यापनपरम्परा पुनरुज्जीवनीया। वेद-धर्मशास्त्र-ज्योतिषाध्ययनाध्यापनप्रक्रियायां "पञ्चसंवत्सर-मयम्" इत्यादिकस्य वेदाङ्गज्योतिषग्रन्थस्याऽध्ययनमध्यापनं च प्रचारणीयम्। पञ्चाङ्गपत्रककारैरपि वैदिकसंवत्सराद्यारम्भदिनम्, वैदिकोदगयन-दक्षिणायनारम्भदिने, वैदिकशिशिरर्त्वादिकर्त्वारम्भ-दिनानि, वैदिकतपस्तपस्यादिमासारम्भदिनानि, वैदिकपूर्णमासेष्टि-दर्शेष्टिदिनानि, वैदिकाधिमासप्रारम्भदिनं च स्वस्वपञ्चाङ्गपत्रकेषु वेदाङ्गज्योतिषानुसारं समावेशनीयानि।

अस्माकं वेदाङ्गज्योतिषव्याख्यानस्य तदनुसारिण एतस्य वैदिकतिथिपत्रस्य च निर्मत्सरैः सद्भिर् वेद-वेदाङ्गोपाङ्ग-कुशलैः शास्त्ररसिकैर् वैदिक-सनातन-वर्णाश्रम-धर्मानुयायिभिर् विद्वद्भिः सम्यक् परीक्ष्याऽऽकलनं कार्यम्, अत्राऽस्माकं विवेचने गणिते वाऽपि काऽपि त्रुटिर् दृश्यते तर्हि परया कृपयाऽस्मदीया मतिः शास्त्रयुक्तिप्रदर्शनेन परिशोधनीया च।

अन्ते च वेद-धर्मशास्त्र-ज्योतिषविद्वांसः स्वसमीपस्थान् पञ्चाङ्गकारान् तदीयपञ्चाङ्गपत्रेषु वैदिकयुग-वर्षायनर्तु-वैदिक-मधु-माधवादिमास-पक्ष-तिथ्युल्लेखनं प्रारब्धुम् उद्बोधयन्त्विति प्राथ्र्यन्ते।

"आगमप्रवणश् चाऽहं नाऽपवाद्यः स्खलन्नपि।
न हि सद्वर्त्मना गच्छन् स्खलितेष्वप्यपोद्यते॥"—कुमारिलभट्टपादाः।

वेदवेदाङ्गोपाङ्गस्मृतिपुराणादिशास्त्रवशवँवदम्
स्वाद्ध्यायशालाकुटुम्बम्,
ब्रह्मपुरी, बुढानीलकण्ठनगरपालिका–६
काष्ठमण्डपजनपदः, नेपालदेशः।

☏ ००९७७ ९८४१९६८२६२, ९८४९०९१४६७
Email : svadhyaya@hotmail.com

भारतवर्षीय-नगर-समयान्तर-सारणी (-,+मिनट)

प्रस्तुत वैदिक-तिथपत्र की सूर्योदयादि-गणना नेपाल के काठमाण्डु नगर के समयानुसार की गई है। भारत के विभिन्न नगरों से काठमाण्डु नगर के समय का अन्तर मिनट में इस प्रकार है—

स्थाननाम	अन्तर	स्थाननाम	अन्तर
अमृतसर	–४२	बेङ्गलुरु	–३१
आगरा	–२७	बीकानेर	–४६
इन्दौर	–३६	भोपाल	–३१
उज्जैन	–३६	मुम्बई	–४९
कोलकाता	+१३	मैसुरु	–३३
गोरखपुर	–७	मुलतान	–५३
जगन्नाथपुरी	+२	लखनऊ	–१७
जयपुर	–३६	लाहोर	–४३
त्रिवेन्द्रम्	–३४	वाराणसी	–९
दार्जिलिङ	+१२	श्रीनगर काश्मीर	–४२
दिल्ली	–३२	शृङ्गेरी	–४०
द्वारका	–६५	हरिद्वार	–२८
नागपुर	–२५	हैदराबाद	–२७
पुणे	–४६		

आचार्य-शिवराजकौण्डिन्न्यायनपथिकृत्त्वे प्रारब्धम्

वैदिकतिथिपत्रम्

पञ्चदशं पत्रम् (१५)

व्यवस्थापकः
आमोदवर्धनः कौण्डिन्न्यायनः
शुक्लयजुर्वेदाचार्यः, विद्यावारिधिः, ९८४९-०९१४६७

रचयिता सम्पादकश्च
प्रमोदवर्धनः कौण्डिन्न्यायनः
धर्ममीमांसाचार्यः, एम्.ए., विद्यावारिधिः, ९८४१-९६८२६२

सहयोगी
सुमोदवर्धनः कौण्डिन्न्यायनः
ब्रह्ममीमांसाचार्यः (अद्वैतवेदान्ताचार्यः), विद्यावारिधिः, ९८४३-०३५३९७

स्वाद्ध्यायशाला, ब्रह्मपुरी, काष्ठमण्डपजनपदः, नेपालदेशः ,
वैद्युतसन्देशः svadhyaya2036@gmail.com

सुसङ्गमक-गणना-सहयोगी
रघुनाथः उपाध्यायः ढुङ्गेलः

प्रचारणसंयोजकाः
कृष्णराजः वाग्लेः, व्यासनगरपालिका, तनहुँ, ९८४६-२४५९२२
कृष्णप्रसादः दुवाडीः आत्रेयः, वैदिक प्रज्ञा-प्रतिष्ठान, रत्ननगर–१३
जयमङ्गला, चितवन, ९८४५-१६०२४२, ०५६-५६०९४०
केशवप्रसादः दाहालः, धरान, ९७४९-९२८१३३।

विषयानुक्रमणिका

१. वैदिकतिथिपत्रभूमिका

मन्त्रपादपदसन्धिविधिज्ञो धातुनामवचनप्रकृतिज्ञः । ईदृशो भवति यज्ञविधिज्ञः मासपक्षतिथिचन्द्रगतिज्ञः ॥—परिशिष्टवचनम्।

(क) पात्रो हेर्न भन्दा पैला जान्न पर्ने विषय

प्रस्तुत तिथिपत्रमा प्रत्येक पृष्ठका शिरमा पैलो पङ्क्तिमा **वैदिक वर्ष, अयन, ऋतु , मैना** र **पक्ष** ठुला अक्षरमा दिइएका छन् भने **अन्य मतका वर्ष, मैना इत्यादि** दोस्रो पङ्क्तिमा साना अक्षरमा दिइएका छन्। वैदिक **तिथि** र **करण** अगाडिका स्तम्भमा दिइएका छन्। **वार, गते** र **तारिख** अन्तका स्तम्भमा क्रमशः दिइएका छन्। **वैदिक चान्द्र संवत्सर** वर्षभर एउटै रहन्छ भने **बार्हस्पत्य संवत्सर** गणितानुसार बिचमा नै फेरिन्छ, तेसैले तेसै अनुसार इ संवत्सरहरुको उल्लेख गरिएको छ। पौराणिक चाडपर्व पनि वैदिक मास नमिले पनि **वैदिक तिथि** परेका दिन दिइएको छ। **विवाह-व्रतबन्धादिका दिन (साइत) वैदिकसिद्धान्तअनुसार गृह्यसूत्रका विधानका आधारमा दिइएका छन्।** प्रस्तुत पात्रो हेर्दा एस विषयमा विशेष ध्यान दिन आवश्यक छ। एसै भूमिकाको **"प्रस्तुत तिथिपत्रको परिचय"** भन्ने प्रकरणमा उल्लेख गरिएका वैदिक तिथिपत्रका विशेषताहरुमा पनि ध्यान दिन अनुरोध छ।

(ख) नेपालि भाषाको लेखनका विषयमा बुज्न पर्ने कुरा

एस वैदिक-तिथिपत्रको नेपालि भाषाको लेखन शासकले लादेको कथित नेपालि व्याकरणको अधीनमा छैन। यास्क, पाणिनि, कात्यायन, पतञ्जलि, वररुचि, भर्तृहरि इत्यादि भारतवर्षीय महान् भाषाशास्त्रि वैयाकरणहरुले अँगालेका शाश्वत व्याकरणसिद्धान्तको अनुसरण गर्ने स्वाद्ध्यायशालाकुटुम्बका 'नेपाली वर्णोच्चारणशिक्षा' (साझाप्रकाशन, २०३१), 'जिम्दो नेपालि भासा' (पैलो खण्ड, २०३०; दोस्स्रो खण्ड, २०३७) इत्यादि ग्रन्थहरुमा र **अन्य** लेखहरुमा प्रतिपादित भाषाव्याकरणसिद्धान्तको अनुकूल रूपमा मध्यममार्ग लिएर एस तिथिपत्रमा नेपालि भाषाको लेखन प्रयुक्त गरिएको छ। उक्त अन्य लेखहरुको विवरण **'वैदिक धर्म मूल रूपमा'** भन्ने ग्रन्थमा (द्वि.सं. २०६२, पृ.७९९–८००, तृ.सं. २०८०, पृ. ११८४–११८६) उपलब्ध छ।

(ग) पञ्चाङ्ग कि तिथिपत्र

धर्मकर्मका लागि हेरिने पात्रालाइ आजभोलि लोकमा पञ्चाङ्ग भन्ने गरिएको छ। किन्तु पञ्चाङ्ग भन्ने कुरा प्राचीन वा वैदिक हैन। तिथि, करण, नक्षत्र, योग र वार इ पाँच थोकलाइ पञ्चाङ्गमा लिएर पछिपछि लोकमा पञ्चाङ्ग भन्ने गरिएको हो। तिनमा **तिथि** र **नक्षत्र वेदमा पनि उल्लिखित मूल कुरा** हुन्। करण तिथिको नै आदा भाग भएकाले त्यो तिथिले नै गतार्थ हुञ्छ। **योग** अर्वाचीन कालको कुरा हो। **वार** भन्ने कुरा पनि मूल वैदिक वाङ्मयमा छैन। वार भन्ने कुरा अरबदेशतिरबाट भारतवर्षमा आएको हो भन्ने कुरा सबै इतिहासलेखकले मानेका छन्। वैदिकधर्ममा अनादि कालदेखि चलेका परम्पराका कुरा मात्र मान्य हुञ्छन्। तसर्थ पञ्चाङ्ग भन्ने कुरा वैदिक धर्ममा मान्य वा ग्राह्य हैन। तसर्थ एस प्रकाशनलाइ पञ्चाङ्ग नभनेर **तिथिपत्र** भनिएको हो। एसलाइ **संवत्सरपञ्जी** पनि भन्न सकिञ्छ।

(घ) वैदिक धर्मकर्मका लागि वैदिक कालगणनाज्ञानको आवश्यकता

स्नान-सन्ध्योपासनादि नित्यकर्म गर्दा र अरु नैमित्तिक, काम्य र निष्काम कर्म गर्दा पनि सङ्कल्प गर्ने र तेसमा संवत्सर, अयन, ऋतु, मास, पक्ष, तिथि, नक्षत्र इत्यादिको उल्लेख गर्ने शास्त्रीय विधान र परम्परा छ। **"वसन्ते ब्राह्मणमुपनयीत, ग्रीष्मे राजन्यम्, शरदि वैश्यम्"**

(बौधायनगृह्यसूत्र २।५।६), **"शिशिरे वा सर्वान्"** (भारद्वाजगृह्यसूत्र १।१), **"उदगयन आपूर्यमाणपक्षे पुण्याहे कुमार्याः पाणिं गृह्णीयात्"** (पारस्करगृ.१।४।५), **"उदगयन आपूर्यमाणपक्षे कल्याणे नक्षत्रे चौलकर्मोपनयन-गोदान-विवाहाः"** (आश्वलायनगृ.१।४।१), **"तस्माद् ब्राह्मणो वसन्त आदधीत"** (मा.वा.शतपथब्राह्मण २।१।३।५), **"कृत्तिकास्वग्नी आदधीत"** (मा.वा.शतपथब्राह्मण २।१।२।१), **"वसन्तेवसन्ते ज्योतिषा यजेत", "वसन्ते ज्योतिष्टोमेन यजेत"** (आप.श्रौ.सू. १०।१।१६), **"तेन वसन्तेवसन्ते यजेत"** (सत्याषाढश्रौ.सू. ७।१।४) इत्यादि श्रौत-स्मार्त विधानहरु छन्। वैदिक द्विजातिले स्नान, सन्ध्योपासन इत्यादिका र जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, व्रतबन्ध, विवाह, श्राद्ध इत्यादिका सङ्कल्पहरुमा **"पञ्चसंवत्सरमयम्"** इत्यादि वेदाङ्गज्योतिष-अनुसारका पद्धतिले निश्चित हुने संवत्सर-अयन-ऋतु-मास-पक्ष-तिथिहरुको नै उल्लेख गर्न पर्छ र गृह्यसूत्रअनुसार गरिने व्रतबन्ध, विवाह, श्राद्ध इत्यादिका कालको तथा श्रौतसूत्रअनुसार गरिने अग्न्याधान, दर्श-पौर्णमास, चातुर्मास्य, निरूढपशुबन्ध, सोमयाग इत्यादिका कालको पनि तेसै पद्धतिले नै निर्णय गर्न पर्छ। वैदिक द्विजातिले अन्य विषयमा पनि उक्त कालगणनापद्धति नै अँगाल्न समुचित हुन्छ।

लगधमुनिले वेदअनुसार वेदाङ्गज्योतिषमा बताएका वैदिक संवत्सर, अयन, ऋतु, मास, अधिकमास इत्यादि अरु पात्रामा लेखिएका संवत्सर, अयन, ऋतु, मास, अधिकमास इत्यादिभन्दा फरक छन्। वेदाङ्गज्योतिषअनुसार र वास्तविक तथ्यअनुसार पनि दक्षिणायन लागिसक्ता पनि चल्तिका पात्रामा उत्तरायण नै मानिएको हुन्छ, उत्तरायण लागिसक्ता समेत दक्षिणायन नै मानिएको हुन्छ; ग्रीष्म ऋतु लागिसक्ता पनि वसन्त ऋतु नै मानिएको हुन्छ। लगधप्रोक्त वैदिक चान्द्र मैनाहरु अमान्त हुन् भने चल्तिका अरु पात्रामा लेखिएका चान्द्र मैनाहरु पूर्णिमान्त छन्। श्रौतस्मार्त धर्मकर्मका लागि अमान्त मास नै ग्राह्य हुन्। वैदिक चान्द्रमासमा र चल्तिका पात्राका चान्द्रमासमा धेरै नै फरक पर्नजाञ्छ। प्रायः शुक्लपक्षमा दुइ मास र कृष्णपक्षमा एक मास फरक पर्नजाञ्च। **तपोमास**को (वैदिक आर्तव माघमासको) शुक्लपक्ष लागिसक्ता पनि अरु पात्रामा कैले मार्गशीर्षशुक्लपक्ष भन्ने र कैले पौष-शुक्लपक्ष भन्ने पनि लेखिएको हुन्छ। वैदिक अधिकमास पनि अत्यन्तै फरक छन्। तसर्थ वैदिक श्रौत-स्मार्त धर्मकर्मका लागि वेदोक्त कालको निरूपण गर्न र सङ्कल्पमा कालको उल्लेख गर्न पनि मूल वैदिक कालगणनासिद्धान्तअनुसारका तिथिपत्रको आवश्यकता पर्छ।

वैदिक धर्मका र मोक्षका विषयमा उपनयनपूर्वक वैध रूपमा अध्ययन गरिने वेद-वेदाङ्गग्रन्थहरु नै मूल रूपमा प्रमाण मानिञ्छन्। **पञ्चसंवत्सरमयम्** इत्यादि वेदाङ्गज्योतिषग्रन्थ तेसरि पडिने परमप्रामाणिक वेदाङ्गग्रन्थ हो। वेद-वेदाङ्ग शास्त्रमा र तिनमा प्रतिपादित धर्ममा आस्था भएका विज्ञजनहरुले एस विषयमा राम्ररि ध्यान दिनु र कुनै विमति वा शङ्का भएमा खुला रूपमा लिखित छलफल गर्नु आवश्यक हुन आएको छ। **एस सम्बन्धमा सबै शङ्काहरुको समाधान गर्न र प्रश्नहरुको उत्तर दिन स्वाद्ध्यायशालाकुटुम्ब सदा तत्पर छ।** एस परिस्थितिमा वैदिक तिथिपत्रको (पात्राको) विशेष खाँचो परेको हो। तसर्थ दृक्सिद्ध पञ्चाङ्गको पनि सहायता लिएर वेदाङ्गज्योतिषमा बताइएको मूल वैदिक कालगणनासिद्धान्तअनुसार श्रौत-स्मार्त-धर्मकर्मका लागि संवत्सर-अयन-ऋतु-मास-अधिमासादिको निर्णय गरि प्रस्तुत तिथिपत्र निष्पन्न गरि जनसमक्ष राख्ने काम भएको छ। वर्तमान कालमा लोकले विशेष खोज्ने लोकमा चल्तिमा रहेका केइ विषय पनि अनुबन्धमा सङ्गृहीत गरिएका छन्।

(ङ) वैदिक कालगणनापद्धतिको सङ्क्षिप्त परिचय

कालगणनाको मूल वैदिक पद्धति ऐले लोकमा चल्तिमा रहेको आर्यभट-वराहमिहिर इत्यादिका पुर्खा इरानि मगब्राह्मणहरुले इरानतिरबाट ल्याएर फैलाएको पद्धतिभन्दा फरक छ। वैदिककालगणनापद्धतिको सङ्क्षिप्त वर्णन याँहाँ उपस्थापित गरिञ्छ। कालको सबैभन्दा सानो परिमाणलाइ **त्रुटि** भञ्छन्। दुइ त्रुटिको एक **लव,** दुइ लवको एक **निमेष,** पन्द्र निमेषको एक **इदानि** वा **काष्ठा,** पन्द्र इदानिको एक **एतर्हि,** पन्द्र एतर्हिको एक **क्षिप्र,** पन्द्र क्षिप्रको एक **मुहूर्त** (४८ मिनेट) हुञ्छ। एक मुहूर्तमा बिस **कला र कलाको दश भागको एक भाग** रहेका मानिञ्छन्। तेस्तै एक

मुहूर्तमा दुइ **दण्ड** (**नाडी, घटिका [घडि]**) मानिञ्छन्। एक घटिकालाइ साठि पलामा विभक्त गर्ने कुरा आधुनिक ज्योतिषिहरुमा प्रसिद्ध छ। तिस मुहूर्तको एक **अहोरात्र (दिनरात)** हुञ्छ। अहोरात्रको प्रारम्भ वैदिकपरम्परामा सूर्योदयबाट हुञ्छ। सामान्यतया पन्द्र अहोरात्रको एक **पक्ष** हुञ्छ। शुक्लप्रतिपदाबाट पैलो पक्षको र कृष्णप्रतिपदाबाट दोस्रो पक्षको प्रारम्भ हुञ्छ। दुइ पक्षहरुको एक **चान्द्र मास** (मैना) हुञ्छ। **अधिकमास** पर्दा चार पक्षको एक चान्द्र मास (चान्द्र मैना) मान्ने मत पनि देखिञ्छ। दुइ चान्द्र मासहरुको एक **चान्द्र ऋतु** हुञ्छ। मूल वैदिक-परम्परामा ऋतुको प्रारम्भ पनि शुक्लप्रतिपदाबाटै हुञ्छ। अधिकमासले गर्दा **सौर वर्षको** र **चान्द्र वर्षको** तालमेल मिल्ने हुँदा प्रमुख वार्षिक तिथिपर्वहरु सामान्यतया उइ सौर ऋतुमा पर्ने हुञ्छन्। एसबाट चान्द्र ऋतु कुनै वर्षमा सौर ऋतुका दृष्टिले २५–३० दिनसम्म पनि अगि सर्ने भए पनि त्योभन्दा धेरै अगि सर्दैन। तिन चान्द्र ऋतुहरुको एक **चान्द्र अयन** हुञ्छ। दुइ सौर-चान्द्र अयनहरुको एक **सौर-चान्द्र वर्ष** हुञ्छ। पाँच सौर-चान्द्र वर्षहरुको एक **सौर-चान्द्र युग** हुञ्छ। सामान्यतया एक चान्द्र युगमा सौर आर्तव वर्ष पनि पाँच नै हुञ्छन्। यो वैदिक मूल कालगणनापद्धति हो। एस पद्धतिको प्रयोग वेदाङ्गज्योतिष, पाणिनीय व्याकरणाष्टाध्यायी, सुश्रुतसंहिता, महाभारत, कौटलीय अर्थशास्त्र इत्यादि प्राचीन प्रामाणिक ग्रन्थमा पाँइञ्छ। उक्त प्रकारका पाँचवर्षे बार युगहरु मिलाएर **युगसङ्घ** हुञ्छ। तेस्ता युगसङ्घका आधारमा पनि अगि-अगि कालगणना गर्ने गरिएको पाँइञ्छ। आर्यभटले आँफ्नो वय (उमेर) बताउँदा तेस्तै युगसङ्घलाइ प्रयोगमा ल्याएको पाइञ्छ। एस युगसङ्घलाइ लिएर प्रभवादि षष्टि (साठि) चान्द्र संवत्सरहरु पनि मानिएका छन्। **बार्हस्पत्य** षष्टि संवत्सरको र **चान्द्र** षष्टिसंवत्सरको गणित फरक छ। बार्हस्पत्य संवत्सर संवत्सर-परिवत्सरादिसित टम्म मिल्दैनन्। तिनको आरम्भ सँधैं वैदिक संवत्सरादिसँग हुँदैन। चान्द्र संवत्सर वैदिक संवत्सर-परिवत्सरादिसित टम्म मिल्छन्। चान्द्र षष्टिसंवत्सर वैदिक पञ्चवर्षात्मक युगको नै आर्को रूप हो। श्रौत-स्मार्त धर्म-कर्मका सङ्कल्पमा चान्द्र संवत्सरको नै उल्लेख गर्न पर्ने वैदिक परम्पराको व्यवस्था धर्मसिन्धुका प्रारम्भमा नै पनि स्पष्ट रूपमा दिइएको छ।

स्मृति-पुराणहरुमा तेसै वैदिक कालगणनापद्धतिको विस्तार गरि **युग, चतुर्युगी, मन्वन्तर, कल्प, महाकल्प** इत्यादि कालहरुको वर्णन गरिएको छ। मूल आधार भने उक्त वैदिककालगणनापद्धतिलाइ नै बनाइएको देखिञ्छ। तथापि केइ भेद पनि हुन गएको पाँइञ्छ। प्रक्षेपका आशङ्काले घेरिएका कुनै एकाध पुराणमा चैत्रशुक्लप्रतिपदामा वर्षारम्भ बताइएको पाँइञ्छ। आकरग्रन्थको राम्रो अवलोकन-परीक्षण-विवेचन नगरि लेख्ने धारेश्वर-लक्ष्मीधर-जीमूतवाहन-चण्डेश्वर-हेमाद्रि-माधव-कमलाकरभट्टहरुले पनि कथित पुराणवचन देखाइ तेस्तो कुरा लेखेका छन्। **आर्यभटीय, ब्राह्मस्फुटसिद्धान्त, खण्डखाद्यक, भास्वती, सूर्यसिद्धान्त इत्यादि** अर्वाचीन सिद्धान्तज्योतिषग्रन्थमा पनि तेइ कुरा देखिञ्छ। किन्तु ति ग्रन्थमा पनि अयनारम्भ माघमा नै मानिने वा शुभकर्मका लागि उत्तरायण माघदेखि नै प्रवृत्त भएको मानिने कुरा देखिञ्छ। एसरि अयनारम्भ माघबाट र वर्षारम्भ चैत्रबाट मान्ने एस पद्धतिका गणनामा आन्तरिक सङ्गति नै गडबडिएको देखिञ्छ। एसबाट **दुइ अयनहरुको एक वर्ष हुञ्छ** भन्ने स्मृति-पुराणादि-प्रतिपादित परिभाषामा पनि असामञ्जस्य आउँछ। मानुष (मानिसको) उत्तरायणलाइ देवताको दिन मान्ने तथा मानुष दक्षिणायनलाइ देवताको रात मान्ने र तेसैका आधारमा मानुष वर्षलाइ देवताको अहोरात्र मानि दिव्य वर्षको गणना गर्ने, अनि दिव्य वर्षहरुकै आधारमा युग, चतर्युगी, मन्वन्तर, कल्प, महाकल्प इत्यादिको गणना गर्ने मनुस्मृति इत्यादि ग्रन्थमा प्रतिपादित कालगणनापद्धतिमा पनि उक्त असामञ्जस्यबाट गडबडि पैदा हुञ्छ।

एस्ता विषयमा भारतवर्षका अर्वाचीन कालका वेद-वेदाङ्ग-वेदोपाङ्ग-स्मृति-पुराणादिका विद्वान्हरुको ध्यान नजानु सारै शोचनीय कुरा देखिञ्छ। एस विषयमा स्वाद्ध्यायशालाकुटुम्बबाट धेरै काम भएको छ। २०४५ संवत्मा प्रकाशित **वैदिक धर्म मूल रूपमा** (प्रथम संस्करण) भन्ने ग्रन्थमा वेदाङ्गज्योतिषको विशेषतातिर पाठकहरुको ध्यान आकृष्ट गरिएको थियो (पृ.१५–१७)। २०५२ संवत्मा प्रकाशित **वैदिकमन्त्रसङ्ग्रहग्रन्थ**का परिशिष्टमा (पृ.१३७) वैदिक कालगणनापद्धतिको सारांश श्लोकहरुमा दिइएको थियो। २०५३।१।१ मितिका कान्तिपुर दैनिक पत्रिकामा

"नववर्षारम्भ : केही विचारणीय कुरा" भन्ने लेख प्रकाशित गराइ एस विषयको चर्चा चलाइएको थियो। तेसपछि एस विषयमा धेरै लेख-निबन्ध पुस्तक-पुस्तिकाहरु प्रकाशित गर्ने र प्रवचन, छलफल, प्रदर्शनी इत्यादि गर्ने गरि चर्चा चलाइँदै आइएको छ। ति लेखको सूची **"स्वाद्ध्यायशालाकुटुम्बको स्वधर्मसन्देश (८) : वैदिक धर्म-कर्मका निम्ति वैदिक कालगणनापद्धति नै अँगाल्न पर्छ"** भन्ने पुस्तिकाका अन्तमा दिइएको छ (द्र.– एसै वैदिक-तिथिपत्रको परिशिष्टभाग)। **वेदाङ्गज्योतिष**को विस्तृत भूमिकासहित संस्कृत कौण्डिन्न्यायन-व्याख्यान र हिन्दि व्याख्या वाराणसीका चौखम्बाविद्याभवनबाट २०६२ संवत्मा (२००५ क्रैस्ताब्दमा) प्रकाशित छ। एसै विषयको **भारतवर्षीय ज्योतिष के ज्वलन्त प्रश्न और वेदाङ्गज्योतिष** भन्ने हाम्रो ग्रन्थ पनि २०६५ संवत्मा (२००८ क्रै.) प्रकाशित छ।

(च) वेदाङ्गज्योतिष र वैदिक कालगणनासिद्धान्त

वेदाङ्गज्योतिषग्रन्थ— वेदाङ्गज्योतिष भन्ने ग्रन्थ वैदिकहरुमा प्रसिद्ध रहिआएको ग्रन्थ हो। यो ग्रन्थ वैदिकहरुबाट वैध नित्यस्वाध्यायाध्ययनमा पडिँदैआएको ग्रन्थ हो। एसको वेदसित घनिष्ठ सम्बन्ध छ। एसमा प्रतिपादित विषय वेद-स्मृति-पुराणहरुमा उल्लिखित छन्। एस ग्रन्थको प्राचीन कालदेखि अर्वाचीन कालसम्मका ग्रन्थकारहरुले उल्लेख गरेका छन्। **लौगाक्षिस्मृति**मा **'पञ्चसंवत्सरमयम्'** इत्यादि वेदाङ्गज्योतिषग्रन्थलाइ नित्य ब्रह्मयज्ञमा अध्ययन गर्न पर्ने, उपाकर्ममा र उत्सर्जनकर्ममा गर्न पर्ने स्वाध्यायप्रवचनमा प्रवचन गर्न पर्ने, **अलङ्घनीय** ग्रन्थमा गनिएको छ (स्मृतिसन्दर्भ, षष्ठ भाग, २०१३ वै., पृ.२७५-२७६)। **"पञ्चसंवत्सरमयम्"** इत्यादि वेदाङ्गज्योतिष-ग्रन्थ नित्य ब्रह्मयज्ञमा(स्वाध्यायाध्ययनमा) अध्ययन गर्न पर्ने कुरा **देवीभागवत**मा (११।२०।४-१०)र **शिवपुराण-कैलाससंहिता**मा (१२।८८-९२) पनि भनिएको छ। आह्निकसूत्रावलिमा पनि वेदाङ्ग-ज्योतिषको प्रतीक **"पञ्चसंवत्सरमयम्"** नै दिइएको छ। एस ग्रन्थको प्रामाणिकताका विषयमा **वेदाङ्गज्योतिषको कौण्डिन्न्यायनव्याख्यान**का (२०६२वै.) भूमिकामा प्रकाश पारिएको छ।

अतः सधैँ नै वैदिक ब्राह्मणहरुले र तदनुयायि सबै हिन्दुहरुले लगधमुनिप्रोक्त **"पञ्च-संवत्सरमयम्"** इत्यादि वेदाङ्गज्योतिषग्रन्थलाइ नै मूल ज्योतिषग्रन्थका रूपमा मान्यता दिन पर्ने कुरा स्पष्ट हुञ्छ।

वेदाङ्गज्योतिषको रचनाकाल— ज्योतिषशास्त्रका सिद्धान्तहरुका बीज वेदका मन्त्र-संहिताहरुमा र ब्राह्मणग्रन्थमा पनि पाइञ्छन्। वेदका छ अङ्गहरुको निर्देश माध्यन्दिनीय-वाज-सनेयि-शुक्लयजुर्वेद-शतपथब्राह्मणमा **"अङ्गजिद्ब्राह्मणेषु"** एस शब्दद्वारा (११।४।३।२०) गरिएको छ। षड्विंशब्राह्मणमा (५।७।२) पनि वेदाङ्गहरुको उल्लेख पाइञ्छ। गोपथब्राह्मणमा **"षडङ्गविदस् तत् तथाऽधीमहे"** (१।१।२७) एस वाक्यमा वेदका छ अङ्गहरुको उल्लेख छ। मुण्डकोपनिषद्मा वेदाङ्गहरुको क्रमबद्ध उल्लेख छ (१।१।४–५)। वेदाङ्गज्योतिषमा अनादि वैदिक कालगणनापद्धतिको प्रतिपादन गरिएको हुञ्छ। एसै अनादि वैदिक परम्पराक्रममा वर्तमान कालमा उपलब्ध लगधमुनिप्रोक्त वेदाङ्गज्योतिषग्रन्थको रचना भएको हो। शङ्करबालकृष्ण-दीक्षितले **इ.पू. १४१० औँ वर्षमा धनिष्ठाको आरम्भमा उत्तरायणारम्भ थियो भन्ने सिद्ध हुनाले वेदाङ्गज्योतिषको एइ समय निश्चित हुञ्छ** भनेका छन् (भारतीय ज्योतिष [मराठि संस्करण १९५३ वै.], हिन्दिसंस्करण, २०३२ वै., अनुवादक शिवनाथ झारखण्डी, पृ.१२२)। एसको रचनाकाल सुधाकर द्विवेदिले वेदाङ्गज्योतिषव्याख्याको भूमिकामा **महाभारतभन्दा अगाडि हो** भनेका छन् (मेडिकल्हल्-मुद्रणालय, वाराणसी, १९६४ वै., भूमिका, पृ.१)। वेदाङ्गज्योतिषका आर्का व्याख्याता शामशास्त्रिले दीपिकानामक संस्कृतव्याख्याको प्रारम्भमा लगधमुनिप्रोक्त-वेदाङ्गज्योतिषग्रन्थको रचना **शकान्तसंवत्को प्रारम्भ हुनुभन्दा एक हजार वर्ष पहिले भएको हो** भनेका छन् (मैसुरु, १९३६ क्रै., पृ.१)।

लगधमुनिको देश— लगधमुनिको देश कश्मीर थियो भन्ने अनुमान शङ्करबालकृष्ण-दीक्षितले गरेका छन्। छोटेलाल-बार्हस्पत्यले लगधमुनिको देश बर्बरदेश मान्छन् भनी 'हिन्दुत्व'-नामक ग्रन्थमा रामदासगौडले भनेका छन्। वेदाङ्गज्योतिषमा (श्लो.८, श्लो.४०) प्रतिपादित दिनमानव्यवस्थाको (दिनमान न्यूनतम १२ मुहूर्त र अधिकतम १८ मुहूर्त हुञ्छ भन्ने कुराको)

आधार लिएर ति देशको सम्भावना गरिएको बुजिञ्छ। तर दिनमानका विषयमा 'गोनर्दीय' भनेर प्रसिद्ध पतञ्जलिमुनिले पनि वेदाङ्गज्योतिषमा भनेकै कुरा भनेकाले (पाणिनीयव्याकरणभाष्य २।१।२८) दिनमानको प्रतिपादनका आधारमा देशको निश्चय नहुने बुजिञ्छ। अतः लगधमुनि एसै देशका थिए भनेर निश्चित रूपमा भन्न कठिन छ।

स्वाद्ध्यायशालाकुटुम्बमा शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द र ज्योतिष इ छओटै वेदाङ्गले युक्त वेदको अध्ययन गर्ने क्रममा गरिएका लगधमुनिप्रोक्त मूल वेदाङ्गज्योतिष-ग्रन्थका, अन्य स्मृति-पुराणादिशास्त्रका र नेपालको इतिहासका अध्ययनबाट निस्केका वैदिक कालगणनासिद्धान्त-सम्बन्धि केइ निष्कर्ष तल प्रस्तुत छन्—

१. युगनिर्णय— वैदिक परम्परामा पाँचपाँच वर्षका युग मानिएका छन्। तिनलाइ १२-१२ युगहरुको समूहमा समूहीकृत गरेर ति समूहहरुलाइ **युगसङ्घ** भन्ने परम्परा पनि छ। ति १२ युग इ हुन्— **(१) वैष्णव, (२) बार्हस्पत्य, (३) ऐन्द्र, (४) आग्नेय, (५) त्वाष्ट्र, (६) आहिर्बुध्न्य, (७) पित्र्य, (८) वैश्वदेव, (९) सौम्य, (१०) ऐन्द्राग्न, (११) आश्विन** र **(१२) भाग्य।** इ युग-हरुको श्राद्धका सङ्कल्पमा उल्लेख गर्ने कुरा हेमाद्रिका चतुर्वर्गचिन्तामणिका परिशेषखण्डका श्राद्धकल्पमा (पृ. ११५२) पनि छ। चल्तिका पात्राले गतकलिवर्ष भन्ने गरेका महाभारतयुद्धाब्दका सङ्ख्यामा महाभारतयुद्धपछि ३६ वर्षमा कृष्णको स्वर्गारोहण भएपछि कलियुग लागेको मानिएकाले ३६ घटाइ आएको सङ्ख्यालाइ वर्तमान कलिवर्षसङ्ख्या मानि तेसैलाइ साठिले भाग लिइ शेषलाइ पाँचले भाग लिएर इ युगको निर्णय गर्न पर्छ। युगको आरम्भ तपःशुक्लप्रतिपदामा (वैदिक आर्तव माघशुक्लप्रतिपदामा) हुने र युगको समाप्ति सहस्यकृष्णमा (वैदिक आर्तव पौषकृष्णमा) हुने कुरा वेदाङ्गज्योतिषमा उल्लिखित छ (५ श्लो.)।

२. वर्षनिर्णय र संवत्सरनिर्णय— श्रौत र स्मार्त धर्मकृत्यका लागि युग-वर्ष-अयन-ऋतु-मासहरुको गणनाको प्रारम्भ सूर्यको दृक्सिद्ध उत्तरायणाऽऽरम्भभन्दा अगाडिको वा सँगैको वा ५–६ दिनसम्म परको नजिकैको शुक्ल-प्रतिपदाबाट हुञ्छ। सूर्यको उत्तरायणारम्भको दिन (अर्थात् पात्रामा लेखिएका सबैभन्दा थोरै दिनमान भएका दिनहरुका माजाको दिन) जुन शुक्लप्रतिपदा-देखि अमावास्यासम्मको चान्द्रमासका प्रारम्भका २४ दिनभित्र पर्छ त्यो चान्द्रमास वैदिक **तपोमास** वा **वैदिक आर्तव माघमास** हुञ्छ। पच्चिसौँ-छब्बिसौँ इत्यादि दिनमा त्यो दिन परे तेस्तो चान्द्रमास **वैदिक अधिकमास (मलमास)** हुञ्छ र तेस अधिकमासपछि आउने शुक्लप्रतिपदामा लाग्ने चान्द्र-मास वैदिक तपोमास वा वैदिक आर्तव माघमास हुञ्छ। सजिलोका लागि भन्न पर्दा चल्तिका पात्रामा **"मकरे सायनार्कः (सायनमकरे सूर्यः)"** भन्ने लेखिएका दिनमा अमान्त (अमावास्यामा पूर्ण हुने, शुक्लादि कृष्णान्त) चान्द्रमासको कृष्णनवमीसम्मको कुनै तिथि भए तेसै चान्द्रमासको शुक्लप्रतिपदामा वैदिक नववर्षको आरम्भ हुञ्छ, कृष्णदशमी वा तेसपछिको तिथि भए आउँदो अमावास्यामा पूर्ण हुने मास वैदिक अधिकमास मानिञ्छ र तेसपछिको शुक्लप्रतिपदामा वैदिक नववर्षको आरम्भ हुञ्छ भन्न सकिञ्छ। वैदिक युगका पाँच चान्द्र वर्षहरु **(१) संवत्सर, (२) परिवत्सर, (३) इदावत्सर, (४) इद्वत्सर** र **(५) वत्सर** हुन्। वैदिक वर्षारम्भदिनबाट कलिवर्ष पनि लाग्ने हो। चान्द्र संवत्सरहरु वैदिक पञ्चवर्षात्मकयुगसमूहमूलक हुन्। चान्द्र प्रभवादि संवत्सर ६० छन्। नामहरु उनै भएपनि चान्द्रसंवत्सरहरुको र बार्हस्पत्यसंवत्सरहरुको गणित फरक छ। वर्तमान कलिवर्षसङ्ख्यालाइ साठिले भाग गर्दा शेष १ भए चान्द्र संवत्सर प्रभव हुञ्छ, २ भए विभव हुञ्छ। एसै गरि अरु पनि जान्न पर्छ। श्रौत-स्मार्त-धर्मकृत्यका सङ्कल्पमा चान्द्र संवत्सरको नै उल्लेख गर्ने हो, बार्हस्पत्य संवत्सरको त फलित-ज्योतिषिहरुले वर्षफल बताउन उपयोग गर्ने हो। **यो कुरा हेमाद्रिले पनि लेखेका छन्। धर्मकृत्यका सङ्कल्पमा चान्द्र संवत्सरको नै उल्लेख गर्ने हो भन्ने वैदिक परम्पराको कुरा धर्मसिन्धुका प्रारम्भमा नै पनि छ।**

३. अयननिर्णय— मूल वैदिक परम्परामा श्रौतस्मार्त धर्मकृत्यमा अयनमा पनि **सौरअयनसापेक्ष चान्द्र अयन** नै लिइञ्छ, शुद्ध सौर अयन लिइँदैन। वैदिक वर्षारम्भका दिनमा (**तपश्शुक्लप्रतिपदामा, वैदिक आर्तव माघ-शुक्लप्रतिपदामा**) नै वैदिक सौर-चान्द्र उदगयनको र **वैदिक नभश्शुक्ल-प्रतिपदामा (वैदिक आर्तव श्रावण-शुक्लप्रतिपदामा)** वैदिक सौर-चान्द्र दक्षिणायनको आरम्भ हुञ्छ।

४. ऋतुनिर्णय— श्रौत-स्मार्त धर्मकृत्यमा ऋतु पनि मुख्य रूपमा चान्द्र नै लिइन्छ। यो कुरा निर्णयसिन्धु-धर्मसिन्धुमै पनि प्रारम्भमै छ। वैदिक नववर्षारम्भका दिनमा नै वैदिक चान्द्र **शिशिर** ऋतुको प्रारम्भ हुन्छ। अनि क्रमशः दुइदुइ चान्द्र मैनाका शुक्लप्रतिपदाहरुमा वैदिक **वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद्, हेमन्त** ऋतुहरु क्रमैले आउँछन्। मलमास पर्दा मलमासलाइ गएका दुइ मैनामा मिलाएर तिन मैनाहरुको एक ऋतु मानिन्छ। एस सम्बन्धमा वाराणसीको सम्पूर्णानन्द-संस्कृत-विश्वविद्यालयको अनुसन्धानपत्रिका सारस्वती सुषमामा (५१वर्ष, १-४ अङ्क, २०५३ वै.) प्रकाशित **"जैमिनीयधर्ममीमांसाशास्त्रनिर्णीतानां वैदिककृत्यकालानां चान्द्रमाननियतत्वम्"** भन्ने प्रमोदवर्धन कौण्डिन्न्यायनको निबन्ध (लेख) पनि द्रष्टव्य छ।

५. मासनिर्णय— वैदिक नववर्षारम्भका दिनमा नै **तपोमास**को (चल्तिका पात्राको हैन, **वैदिक आर्तव माघमास**को) पनि प्रारम्भ हुन्छ। अनि क्रमैले शुक्लप्रतिपदाहरुमा वैदिक **तपस्य-मास** (वैदिक आर्तव फाल्गुनमास), **मधुमास** (वैदिक आर्तव चैत्रमास), **माधवमास** (वैदिक आर्तव वैशाखमास), **शुक्रमास** (वैदिक आर्तव ज्येष्ठमास), **शुचिमास** (वैदिक आर्तव आषाढमास), **नभो-मास** (वैदिक आर्तव श्रावणमास), **नभस्यमास** (वैदिक आर्तव भाद्रपदमास), **इषमास** (वैदिक आर्तव आश्विनमास), **ऊर्जमास** (वैदिक आर्तव कार्तिकमास), **सहोमास** (वैदिक आर्तव मार्गमास), **सहस्यमास** (वैदिक आर्तव पौषमास) आउँछन्। वेदमन्त्रसंहितामा उल्लिखित मुख्य वैदिक चान्द्रमासहरुका नाम **तपः, तपस्य** इत्यादि हुन्। मासहरु शुक्लपक्षको प्रतिपदाबाट अर्थात् दर्शश्राद्ध हुने दिनको भोलिपल्टबाट प्रारम्भ भै अमावास्यामा पुरा हुन्छन्। अमान्त चान्द्र मास मान्ने वैदिक परम्परा काठमाण्डु-उपत्यकाका नेवारि परम्परामा ऐले पनि सुरक्षित पाँइन्छ। वेदोक्त विषयका दृष्टिले तपस्-तपस्यादि शब्दले जुनजुन काललाइ बुजाउँछन् माघ-फाल्गुन इत्यादि शब्द पनि तेसैतेसै काललाइ बुजाउन रूढ मानिन्छन्। सूर्यको एक राशिबाट आर्का राशिमा सरेदेखि गनिने अवैदिक सौरमासका नाम त **मकरमास, कुम्भमास, मीनमास, मेषमास, वृषमास, मिथुनमास, कर्कटमास, सिंहमास, कन्यामास, तुलामास, वृश्चिकमास, धनुर्मास** हुन्। ति अवैदिक मासलाइ माघ, फाल्गुन, चैत्र, वैशाख इत्यादि भन्नु अवैदिक वा अशास्त्रीय कुरा हो।

६. अधिकमासनिर्णय— कृष्णपक्षमा नवमी पनि नागेर दशमी-एकादशीहरुमा सूर्य दृक्-सिद्ध आर्को अयनमा जान्छन् भने त्यो अमान्त चान्द्रमास अधिकमास (मलमास) हुन्छ। वैदिक चान्द्र उदगयनका (उत्तरायणका) वा दक्षिणायनका अन्तमा अयनको सातौँ अमान्त चान्द्रमासका रूपमा **वैदिक अधिकमास** पर्छ। उदगयनका अन्तमा परेको अधिकमास **द्वितीय शुचिमास (द्वितीय आषाढमास)** भनिन्छ र दक्षिणायनका अन्तमा परेको अधिकमास **द्वितीय सहस्यमास (द्वितीय पौषमास)** भनिन्छ। द्वितीय शुचिमास (द्वितीय आषाढ) ग्रीष्मऋतुअन्तर्गत हुन्छ र द्वितीय सहस्य-मास (द्वितीय पौष) हेमन्त-ऋतुअन्तर्गत हुन्छ। अधिकमासलाई सप्तम ऋतु मान्ने पनि पक्ष छ। नेपालका इतिहासमा लिच्छविकालमा र मल्लकालका पूर्वभागमा पनि वैदिक कालगणनापद्धतिको प्रभाव रहेको पाइन्छ। तेस वेलाका अभिलेखहरुमा प्रथम आषाढको र द्वितीय आषाढको तथा प्रथम पौषको र द्वितीय पौषको उल्लेख पाँइन्छ, अरु मैनामा अधिकमास परेको उल्लेखै पाइँदैन। वैदिक धर्ममा अनादि अनपभ्रष्ट परम्पराबाट आएका कुरा मात्र मान्य हुने हुँदा अयनलाइ आधार नमानि राशिपरक सौर महिनालाइ आधार मानेर बनाइएको **"असङ्क्रान्तिमासोऽधिमासः स्फुटं स्यात्"** (सिद्धान्तशिरोमणि, ग्रहगणिताध्याय, मध्यमाधिकार, अधिमासादिनिर्णयप्रकरण, पद्य ६) इत्यादि अधिकमासको परिभाषा र गणना मान्य हुँदैन।

७. क्षयमासविचार— वैदिककालगणनासिद्धान्तअनुसार **क्षयमास हुँदैन।** वैदिक अयन-र-नक्षत्रपद्धतिमा आधृत कालगणनामा क्षयमास मान्ने आवश्यकता र औचित्य पनि हुँदैन। **अतः वि.सं. २०८५ मार्गमा पर्ने भनिएको क्षयमास शुद्ध महिना नै हुन्छ** (द्र.- एहि **तिथिपत्र**, पृ.४७, ८१)।

८. पक्षनिर्णय— वैदिक परम्परामा अगिल्लै दिनमा कृष्णपक्षको समाप्ति हुनाले वा तेसै दिनमा पिण्डपितृयज्ञकालरूप अपराह्णको प्रारम्भ हुनुभन्दा अगि नै दृक्सिद्ध गणितबाट कृष्ण-

पक्षको समाप्ति हुनाले दर्शेष्टि परेको दिनबाट शुक्लपक्षको र पूर्णमासेष्टि परेको दिनबाट कृष्ण-पक्षको प्रारम्भ हुञ्छ। **वैदिक चान्द्रमाससमा पैलेइ शुक्लपक्ष अनि कृष्णपक्ष आउँछ।** चल्तिका पात्राका चान्द्र मासमाझैँ पैलेइ कृष्णपक्ष र अनि शुक्लपक्ष आँउँदैन।

९. तिथिनिर्णय– वैदिक तिथि अहोरात्रात्मक हुञ्छ। दर्शेष्टिका दिन शुक्लप्रतिपदा र पूर्णमासेष्टिका दिन कृष्णप्रतिपदा मानिञ्छ। प्रतिपदाको भोलिपल्ट द्वितीया, द्वितीयाको भोलिपल्ट तृतीया हुञ्छ। एसरि टुट्बड् नभै तिथि आउँछन्। एउटा दर्शश्राद्धदिनदेखि गन्दा ३१औँ दिनमा आर्को दर्शश्राद्धदिन परे कुनै पनि तिथि टुट्तैन। एउटा दर्शश्राद्धदिनदेखि गन्दा ३०औँ दिनमा दृक्सिद्ध पक्षसमाप्तिकालका विचारबाट आर्को दर्शश्राद्धदिन परेमा भने शुक्लपक्षको कुनै पनि तिथि टुट्बड् नमानिइकन शुक्लपक्षका तिथि सरासर नै आएका मानिञ्छन् तापनि कृष्णपक्षका अरु तिथि सरासर आएर चतुर्दशी तिथि भने टुटेको मानिञ्छ अथवा चतुर्दशी र औँसि एकैदिन परेको मानिञ्छ, तेसै दिन अपराह्णमा अमावास्यामा गरिने पिण्डपितृयज्ञ गरिञ्छ। **सबै तिथिमा घडिपलाको गणित हुने र जुन पक्षको जुन तिथि पनि टुट्न-बढ्न सक्ने *भौतिक तिथिगणनापद्धति* श्रौत-स्मार्त धर्मकर्ममा काम लाग्दैन।** आधुनिक अनुसन्धानबाट भौतिक तिथिमा अझ बडि घटबढ हुने तथ्य अगाडि आएको छ र त्यो पनि धर्मकर्ममा भने काम लाग्दैन। **सर्खारि पञ्चाङ्गनिर्णायकसमितिले स्वीकृत गरेका पञ्चाङ्गहरुका सूर्यसिद्धान्तानुसारि भनिएका तिथि-नक्षत्रका घडिपला आधुनिक दृक्सिद्धपञ्चाङ्गका तिथि-नक्षत्रका घडि-पलासित मेल नखाएका देखिञ्छन्। अतः ति वैदिकसिद्धान्तअनुसारका पनि नभएका र भौतिक वैज्ञानिक दृष्टिले पनि यथार्थ नदेखिएका कुरामा सबै श्रद्धालु वैदिकजनको विवेकपूर्ण ध्यान जान उचित छ। प्रस्तुत वैदिकतिथिपत्रमा दृक्सिद्धगणनाअनुसारको लौकिक तिथिको समाप्तिकाल दिइएको छ।**

विशेष– माथिका सबै निर्णयहरु **वेदमन्त्रसंहिता**, **ब्राह्मणग्रन्थ** तथा लगधप्रोक्त मूल **वेदाङ्ग-ज्योतिषग्रन्थका** र तिनका अनुकूल अन्य **स्मृति-पुराणवचन**हरुका आधारमा गरिएका हुन्।

(छ) प्रस्तुत वैदिक-तिथिपत्रको परिचय

यो तिथिपत्र मात्र मूल वैदिक कालगणनापद्धतिअनुसारको हुनाले वैदिक हो, ऐले प्रचलनमा रहेका नेपाल-भारतका अरु तिथिपत्र (पञ्चाङ्ग)मा वैदिक काल-गणना-पद्धति-अनुसारका विषयहरु समावेश नभएकाले ति वैदिक हैनन्।

एस वैदिक-तिथिपत्रका मुख्यभागका पृष्ठहरुमा शिरका **पैला पङ्क्तिमा** एस पत्रको नाम, **कलिसंवत्**, द्वादशयुगात्मक युगसङ्घभित्रको वर्तमान **युग**को नाम, कोष्ठभित्र कलियुगमा चलिरहेको युगसङ्घको सङ्ख्या र तेसभित्रको चलिरहेको पञ्चवर्षात्मक युगको सङ्ख्या, तेस युगको **वर्तमान वैदिक वर्ष**को नाम, कोष्ठमा तेसको सङ्ख्या, कोष्ठभित्र चान्द्र ६० वर्षमध्येको **वर्तमान चान्द्रसंवत्सर**को नाम र सङ्ख्या, वर्तमान **अयन** (उदगयन वा दक्षिणायन), **ऋतु**, **मास** र **पक्ष** क्रमशः उल्लिखित गरिएका छन्। प्रस्तुत पक्ष लाग्नुभन्दा अगि बितेको **गतकलिसावनाऽहर्गण** पनि टिप्पणीमा दिइएको छ।

तिथिपत्रका मुख्यभागका पृष्ठहरुमा शिरका **दोस्रा पङ्क्तिमा** विक्रमसंवत्, शकान्तसंवत् (शकसंवत्), बार्हस्पत्य संवत्सरको नाम, कोष्ठमा बार्हस्पत्य षष्टिसंवत्सरमध्ये वर्तमान बार्हस्पत्य-संवत्सरको सङ्ख्या, सम्बद्ध पक्षमा परेको वर्तमान कालमा अवैदिक कालगणना अँगाल्ने अरु-हरुले मान्ने गरेका गते गनिने सौर-मासको संस्कृतनाम, कोष्ठभित्र तेस मासका नेपालिका वर्तमान लोकव्यवहारमा प्रचलित नेपालि नाम, तेस पृष्ठमा उल्लिखित पक्षमा परेको मेष-वृषादि राशिलाइ लिएर अर्वाचीन कालमा परिभाषित गरिएको पूर्णिमान्त चान्द्र मैनाका पक्षका नाम, कोष्ठमा नेपाल-संवत् र विशेषतः काठमाण्डु उपत्यकाका नेवारि परम्परामा आइरहेको कृष्णान्त चान्द्रमासका पक्ष-विशेषको नेवारि नाम र तेसको संस्कृत अनुवाद तथा आर्को कोष्ठभित्र अङ्ग्रेजि मैनाको नाम र वर्ष (क्रैस्ताब्द) क्रमैले दिइएका छन्।

इ दोस्रा पङ्क्तिका उल्लेख वैदिक तिथिपत्रको संवत् अयन, ऋतु, मास तथा पक्ष चल्तिको अवैदिक पञ्चाङ्गमा कुन संवत्, अयन, ऋतु, मास तथा पक्ष मानिएका छन् भनि

सूचित गर्न र दुइथरि पात्राको तुलनात्मक ज्ञान दिन गरिएको हो। वैदिक मूल परम्पराका अनुयायिले एस उल्लेखको उपेक्षा गरिदिने हो।

तिथिपत्रका मुख्य भागका पृष्ठहरुमा पृष्ठका देउरेपट्टिको पैलो ठाडो पङ्क्तिमा वैदिक कालगणनापद्धतिअनुसारका श्रौत-स्मार्त धर्मकर्ममा अँगालिने प्रतिपदा-द्वितीयादि **तिथि**हरु (वै.ति.) छन्। दोस्रो ठाडो पङ्क्तिमा तेसतेस दिनका सूर्योदयदेखि सूर्यास्तसम्म रहने करणहरु दिय्येका छन्। तेसतेस दिनका सूर्यास्तदेखि आर्को सूर्योदय नभइञ्जेल रातभर रहने करण चाहिँ दिनको करणभन्दा पछिल्लो करण हुञ्छ भन्ने जान्न पर्छ। शुक्लपक्षका रातका करणहरूका नाम र कृष्णपक्षका रातका करणहरूका नाम करणचक्रमा छुट्टै दिय्येका छन्। तेसपछिको ठाडो पङ्क्तिमा श्रौत-स्मार्त धर्मकर्ममा नअँगालिने **दृक्सिद्ध गणनाका लौकिक तिथि**हरु (लौ.ति.) दिय्येका छन्। तेसपछि लौकिक तिथिको समाप्ति हुने काल तेस दिनको घण्टा मिनेटमा दिइएको छ। **त्याँहाँ २४ भन्दा माथिका अङ्क भए तेस दिनको रातका १२ बजेपछिको १ घण्टाको समयलाइ २५ घण्टा (बजे) दुइ घण्टाको समयलाइ २६ घण्टा (बजे) इत्यादि भनिएको भन्ने जान्न पर्छ।** लौकिक तिथिका घण्टा-मिनेटको ठाडो पङ्क्तिभन्दा पछिल्लो ठाडो पङ्क्तिमा **वेदाङ्गज्योतिषोक्त नक्षत्रनाम** (वे.न.) दिइएका छन्। तेसपछिको ठाडो पङ्क्तिमा **वेदाङ्गज्योतिषको गणितअनुसारको नक्षत्रकालको समाप्तिको मुहूर्त र कला** दिइएको छ। तेसपछिको ठाडो पङ्क्तिमा **दृक्सिद्ध नक्षत्र** (दृक्.न.) र तेसपछिको ठाडो पङ्क्तिमा उल्लिखित नक्षत्रको समाप्तिकालको **दृक्सिद्ध गणनाअनुसार घण्टा-मिनेट** (बजे) दिइएको छ। तेसपछिको ठाडो पङ्क्तिमा विष्कम्भादि स्थिर २७ योगहरु र तेसपछिको ठाडो पङ्क्तिमा तेसतेस योगको समाप्तिकाल घण्टा-मिनेटमा दिइएको छ। विष्कम्भादि २७ स्थिर योगहरु— **विष्कम्भः, प्रीतिः, आयुष्मान्, सौभाग्यः, शोभनः, अतिगण्डः, सुकर्मा, धृतिः, शूलम्, गण्डः, वृद्धिः, ध्रुवः, व्याघातः, हर्षणः, वज्रम्, सिद्धिः, व्यतीपातः, वरीयान्, परिघः, शिवः, सिद्धिः, साध्यः, शुभः, शुक्लः, ब्रह्मा, ऐन्द्रः, वैधृतिः** इ हुन्। त्यसभन्दा पछिको ठाडो पङ्क्तिमा वारविशेषका र नक्षत्रविशेषका योगले हुने कार्यविशेषमा विशेष विचार गरिने आनन्दादि २८ चर योगहरु दिय्येका छन्। तिनको उल्लिखित लौकिक नक्षत्रको समाप्तिकालमा समाप्ति मान्ने गरिञ्छ। आनन्दादि योग— **आनन्दः, कालदण्डः, धूम्रः (धूम्राक्षः), धाता (प्रजापतिः), सौम्यः, ध्वाङ्क्षः, केतुः (ध्वजः), श्रीवत्सः, वज्रम्, मुद्गरः, छत्रम्, मित्रम्, मानसम्, पद्मम्, लुम्बः, उत्पातः, मृत्युः, काणः, सिद्धिः, अर्थः, शुभः, मुसलम्, गदः, मातङ्गः, राक्षसः (रक्षः), चरः, स्थिरः, वर्धमानः** इ २८ हुन्। आनन्दादियोगको ठाडो पङ्क्तिभन्दा पछिको ठाडो पङ्क्तिमा तेस दिन चन्द्रमा रहने लौकिक नक्षत्रअनुसारका वेदमा नभएका मेष-वृष इत्यादि राशिहरु दिय्येका छन्; कुनै दिनमा तिनको उल्लेख नगरिकन घण्टामिनेटको उल्लेख गरिएको छ भने तेस दिन तेति घण्टा-मिनेटसम्म माथिल्लो कोष्ठमा उल्लिखित राशिमा र तेति घण्टा-मिनेटपछि तल्लो कोष्ठमा उल्लिखित राशिमा चन्द्रमा रहने भन्ने बुज्न पर्छ। तेसपछिको ठाडो पङ्क्तिमा **दिनमान**का घण्टा-मिनेटहरु, तेसपछि **सूर्योदय**को समय (बजे) र तेसपछि **सूर्यास्त**को समय (बजे) दिय्येका छन्। तेसपछि **वैदिक आर्तव (सायन) सौर वर्षको सावनाऽहर्गण** दिइएको छ। वैदिक सौर-चान्द्र नववर्ष लागिसक्ता पनि अगिल्लो दृक्सिद्ध आर्तव (सायन) वैदिक सौर वर्ष बितिसकेको छैन भने तेसैको अहर्गण दिएर त्यो बितिसकेपछि **नवीन दृक्सिद्ध आर्तव (सायन) वैदिक सौर वर्षको अहर्गण** दिइएको छ। तेसपछिको ठाडो पङ्क्तिमा वैदिक मूल ग्रन्थमा नभएका तर आजभोलि लोकमा अत्यन्त प्रसिद्ध **वार**हरु दिय्येका छन्। तेसपछिका ठाडो पङ्क्तिमा वेदमा नभएका अर्वाचीन सूर्यसिद्धान्तअनुसारका राशिमूलक परिभाषाका गत १९६० संवत्देखि राणाशासक चन्द्रसम्सेरले शासकीय व्यवहारमा अनिवार्य गरिएका **मेषमास-वृषमास इत्यादि (वैशाख-जेठ इत्यादि)** सौरमासका **गते**हरु दिय्येका छन्। तेसपछिका ठाडा पङ्क्तिमा क्रिश्चियन (इसाइ) वर्षका जनबरि-फरबरि इत्यादि मैनाका **परराष्ट्र-व्यवहारमा उपयोगि तारिख**हरु दिइएका छन्। तेसपछिका खण्डमा तेसतेस दिनका मुख्य श्रौत, स्मार्त, पौराण इत्यादि व्रतपर्वहरु उल्लिखित छन्। सम्बद्ध तिथिका पङ्क्तिमा व्रतपर्वादिको सबै विवरण नअटाएमा बाँकि विवरण बुट्टा चिह्न दिएर खालि भएका आर्का पङ्क्तिमा दिइएको छ। त्याँहाँ पनि नअटाएमा फेरि आर्को चिह्न दिएर आर्को ठाममा विवरण दिइएको छ। **वास्तवमा पुराणले बताएका वार्षिक व्रत-पर्वहरु पनि वैदिक चान्द्र तपोमास,**

तपस्यमास इत्यादिमा नै मनाउनु समुचित हो तापनि ऐलेलाइ पौराण व्रतपर्वहरु नवीन परिभाषाका माघ-फाल्गुनादि चान्द्रमासमा लेखिएका छन्। **धेरैजसो चाडपर्व धेरैजसो वर्षमा ऋतुअनुसार एक महिना अगाडि सार्नु पर्ने देखिएको छ। एस पात्रामा प्रमुख चाडपर्व ऋतुअनुसार अगाडि सारेर पनि देखाइएका छन्। जनैपूर्णिमा पर्व चाहिँ धेरैजसो वर्ष दुइ महिना र कुनैकुनै वर्ष एक महिना अगाडि सार्नु पर्ने देखिएको छ र एस पात्रामा अगाडि सारेर नै देखाइएको छ।** तिथिपत्रका मुख्य भागका पृष्ठहरुमा तल्लो भागमा गतकलिसावनाऽहर्गण (वर्तमान कलियुग लागेदेखि अहिलेसम्म बितेका जम्माजम्मि दिनहरुको सङ्ख्या) दिइएको छ। अवशिष्ट स्थानमा केइ ज्ञातव्य विषय दिय्येका छन्। ग्रहस्थितिसारणी र ग्रहकुण्डली पनि इनै पृष्ठहरुमा राखिएका छन्।

श्रौति वैदिक भन्नाले श्रौत अग्निको आधान गरेका द्विजहरु बुजिञ्छन्। **स्मार्त वैदिक** भन्नाले गृह्य अग्निको आधान गरेका द्विज बुजिञ्छन्। **उपवसथ**=इष्टिको अगिल्लो दिन, व्रतग्रहण गर्ने दिन, **पूर्णमासेष्टि**=श्रौत अग्निको आधान गरेका ब्राह्मणले पूर्णिमाका र प्रतिपदाका सन्धिमा गर्ने इष्टि, **दर्शेष्टि**=तेस्तै व्यक्तिले अमावास्याका र प्रतिपदाका सन्धिमा गर्ने इष्टि, **वैश्वदेवपर्व**=श्रौत अग्निको आधान गरेका द्विजले गर्ने चातुर्मास्ययज्ञका चार पर्वमध्येको पैलो पर्व, **वरुणप्रघास**= चातुर्मास्ययज्ञका चार पर्वमध्येको दोस्रो पर्व, **साकमेध**=चातुर्मास्ययज्ञका चार पर्वमध्येको तेस्रो पर्व, **शुनासीरीय**=चातुर्मास्ययज्ञका चार पर्वमध्येको चौथो पर्व, **निरूढपशुबन्ध**= श्रौत अग्निको आधान गरेका चातुर्मास्य याग गरिसकेका समर्थ व्यक्तिले गर्ने स्वतन्त्र पशुयाग। इ र एस्ता वैदिक कर्मको वेदमन्त्रसंहिता-ब्राह्मणग्रन्थ-श्रौतसूत्र-गृह्यसूत्र-परिशिष्टका आधारमा दिइएको परिचय स्वाद्ध्यायशालाका **वैदिक धर्म मूल रूपमा** (प्र.सं. २०४५, द्वि.सं. २०६२, तृ.सं. २०८०) भन्ने, **वैदिक हिन्दु धर्म-संस्कृति** (२०६५)भन्ने, **कतिपयवैदिकयज्ञपरिचयः** (२०६७) भन्ने र **वैदिक यज्ञिय उपकरण र वृक्षहरु** (२०७२) भन्ने पुस्तकहरुमा पाँउन सकिञ्छ। इ ग्रन्थमा दिइएको प्रामाणिक परिचयको अध्ययनबाट श्रौत-स्मार्तयज्ञका विषयमा अरुले दिएका विवरणमा रहेका गडबडिका सम्बन्धमा पनि विवेक गर्न सकिञ्छ।

एस तिथिपत्रमा लोकमा प्रचलित व्यवहारका लागि लोकले खोजि गर्ने कतिपय आवश्यक मुख्य कुराहरु **अनुबन्ध**मा जोडिएका छन्।

(ज) प्रस्तुत वैदिक तिथिपत्रको प्रकाशनको आवश्यकता

भारतवर्षमा धेरै अघिदेखि हुँदै आएका विदेशि-विधर्मिहरुका आक्रमणले र शासन-स्थापनले गर्दा आर्षशिक्षा झन्‌झन् शिथिल हुँदै गएको देखिञ्छ। नेपालमा २०११ संवत्‌देखि नै नेपालि शासकहरु नै परम्परागत रूपमा चल्दै आएको वेद-वेदाङ्गादि संस्कृतशिक्षा हटाइ विधर्मि विदेशि शिक्षा-संस्कृतिको अन्धाधुन्द प्रचारप्रसार गर्न अग्रसर हुँदै गएकाले, पाश्चात्त्यहरुलाइ रिजाएर शासन चलाउने विचार भएका शासकद्वारा संस्कृत शिक्षाको विकास विस्तार र सुदृढीकरण गर्ने कार्यक्रम नराखि देखाव्रटका निम्ति २०४३ संवत्‌मा स्थापना गरिएको संस्कृत-विश्वविद्यालयले पनि २०२८ संवत्‌मा गरिएको प्रवेशिकाको (एस्.एल्.सि.को) अनिवार्य संस्कृतभाषा हटाउने संस्कृतमाध्यमिक विद्यालयहरु मास्ने इत्यादि गरि शासकले गरेका संस्कृत शिक्षाको जरो उखेल्ने कामलाइ अगि बडाउँदै पूर्वमध्यमा तहलाइ अन्यथासिद्ध गर्ने गरि सो तहका संस्कृत विषयहरु नपडिकनै ४ मैने प्रशिक्षणबाट उत्तरमध्यमामा र ६ मैने प्रशिक्षणबाट शास्त्रिमा प्रवेश दिने व्यवस्था गरि संस्कृत-शिक्षाको जरो दुर्बल बनाउने काम गर्नाले र संस्कृतविश्वविद्यालयले तथा गोर्खापत्र, रेडियो नेपाल, नेपाल दूरदर्शन (टेलिविजन) इत्यादि शासकीय सञ्चारमाध्यमसमेतका नानाप्रकारका सञ्चारमाध्यमहरुले धर्मका विषयमा समेत वेदशास्त्रव्यवस्थाको प्रतिकूल अप्रामाणिक ग्रन्थलाइ विचारलाइ र व्यवहारलाइ अन्दाधुन्द प्रचारमा ल्याउन थाल्नाले समेत अज्ञानमा, मतिभ्रममा, विपन्नतामा र पतनमा जकडिन पुग्दै गएका ब्राह्मणहरुमा **ब्राह्मणत्वको र वेदवेदाङ्गको आर्षशिक्षाका माहात्म्यको चेतना घट्‌तै गएको देखिञ्छ। साथै कुन देशमा कुन कालमा कस्ता कर्ताले के फल पाउन कुन पद्धतिले स्थापित अग्निमा केके सामग्रीले कुन पदार्थक्रमले कुन शास्त्रका आधारमा कुन विधिवाक्यका आधारमा के कर्म गर्न पर्ने हो इत्यादि कुरा शास्त्रका आधारमा निश्चय गरि धर्मकर्म गर्न गराउन पर्नेमा मूल वेद-वेदाङ्गशास्त्रप्रतिपादित धर्मकृत्यका देश, काल, कर्ता, अधिकारि, अग्नि, हवि, समिधा, अरु**

शास्त्रीय सामग्री, विधि-निषेध, क्रियाक्रम इत्यादिका व्यवस्थापक शास्त्र पढ्न र शास्त्रका कुरा बुझ्न गुरु-पुरोहितको काम गर्ने ब्राह्मणहरुले पनि विविध कारणले आजभोलि नपाउने हुँदै गएको र तिनमा तेस विषयको शास्त्रीय चेतना हराउँदै जान लागेको देखि सो जगाउन स्वाद्ध्याय-शालाकुटुम्ब अनेक प्रकारले यथाशक्ति प्रयत्न गरिरहेको छ। एसै प्रसङ्गमा श्रौत-स्मार्त-धर्म-कर्मका लागि कालगणनाको सिद्धान्त बताउने **"पञ्चसंवत्सरमयम्"** इत्यादि परमप्रामाणिक मूल वेदाङ्गज्योतिषग्रन्थका र अरु वेद-वेदाङ्ग-ग्रन्थका सिद्धान्तमा ध्यान आकृष्ट गर्दै पञ्चाङ्ग-निर्णायक-समितिले स्वीकृत गर्ने पञ्चाङ्गहरुमा वैदिक कालगणनापद्धतिअन्सारका विषय पनि समाविष्ट गर्न अनुरोध गर्दा पनि तेसो गर्ने व्यवस्था नगरि वैदिक मूल कालगणनापद्धतिलाइ प्रचारमा ल्याउनमा विघ्नबाधा उपस्थापित गर्ने पञ्चाङ्ग-निर्णायक-समितिको प्रवृत्ति देखिएको छ। संस्कृत-विश्वविद्यालयले पञ्चाङ्ग प्रकाशित गर्दा पनि मूल वैदिक कालणनापद्धतिमा ध्यान नदिइएको देखिञ्छ। अनि भारततिर पनि प्रान्तैपिच्छे सौरपक्षीय, आर्यपक्षीय, ब्रह्मगुप्तपक्षीय, दृक्सिद्ध, आर्तव इत्यादि नानाप्रकारका पञ्चाङ्गहरु बन्ने र प्रकाशित हुने गर्दा र **राष्ट्रिय पञ्चाङ्ग** भनि पञ्चाङ्ग प्रकाशित गर्दा पनि वास्तविक वैदिक तिथिपत्र बनाउन र प्रकाशित-प्रचारित गर्न ध्यान गएको पाइँदैन। वेद-वेदाङ्गप्रतिपादित धर्मकर्मव्यवस्थालाइ यथाशक्ति प्रकाशनमा र प्रचारणमा ल्याउनु स्वाद्ध्यायशालाकुटुम्बले आँफ्नो प्रमुख कर्तव्य मानेको छ। वेदवेदाङ्गानुयायि सज्जनहरुबाट एस्तो तिथिपत्र (पञ्चाङ्ग) प्रकाशित गर्न स्वाद्ध्यायशालाकुटुम्बलाइ वारंवार अनुरोध गरिँदै आएको पनि हो। एस परिस्थितिमा यो **वैदिक-तिथिपत्र** प्रकाशित गर्ने काम भएको हो। एसबाट वेदवेदाङ्गानुयायि सज्जनहरुलाइ **श्रौत-स्मार्त धर्मकर्म**का लागि श्रुति-स्मृतिले बताएका धर्मकृत्यका निम्ति उचित काल ठम्याउन र श्रौत-स्मार्त धर्मकर्मका सङ्कल्पमा श्रुति-स्मृतिसम्मत रूपमा कालको उल्लेख गर्न सहयोग पुग्नेछ भन्ने आशा राखिएको छ। एस प्रकारका काममा वेदवेदाङ्गानुयायि सज्जनहरुको अरु सहायता प्राप्त हुँदै जानेछ भन्ने पनि आशा गरिएको छ।

केवल पाश्चात्य अनुसन्धाता जर्बिस, कोलब्रुक, म्याक्समुलर, याकोबि, वेबेर, थिबो इत्यादिले मात्र हैन; आर्यावर्तमा शककुषाणादि विदेशि-विधर्मिहरुका आक्रमणादिले मौलिक वैदिक आर्षशिक्षापद्धतिमा पर्न आएका बाधाव्यवधानले गर्दा भारतीय अनुसन्धाता कृष्णशास्त्रि गोडबोले, जनार्दन बालाजी मोडक, शङ्करबालकृष्ण दीक्षित, लाला छोटेलाल (बार्हस्पत्य), सुधाकर द्विवेदी, बालगङ्गाधर तिलक, वेङ्कटेश बापूजी केतकर, गोविन्दगणक, योगेशचन्द्र राय, शामशास्त्रि, गोरखप्रसाद, सत्यप्रकाश, इन्द्रनारायण द्विवेदि, भारत-सर्खारका पञ्चाङ्ग-सुधारसमितिका अध्यक्ष ठुला खगोलवैज्ञानिक मानिएका मेघनाद साहा, सदस्यसचिव निर्मलचन्द्र लाहिडि, अन्य सदस्यहरु, नेपालका ज्योतिषी नयराज पन्त इत्यादिले पनि राम्ररि बुझ्न र व्याख्या गर्न नसकिराखेको वेदाङ्गज्योतिषको मूल कालगणनापद्धतिलाइ वेद-वेदाङ्ग-स्मृति-पुराणेति-हासको गम्भीर अध्ययनका आधारमा वेदाङ्गज्योतिषको कौण्डिन्न्यायनव्याख्यानद्वारा स्पष्ट पारि आँफ्ना मौलिक वैदिक कालगणनापद्धतिका विषयमा २ हजार वर्ष जति अगिदेखि आर्यजनमा फैलिँदै आएका अज्ञानान्धकारलाइ चिर्दै आर्यतपोभूमि एस हिमवत्खण्डस्थ-नेपालबाट यो वैदिक तिथिपत्र प्रकाशित गर्ने काम गरिएको हो। एसको प्रचारप्रसारमा वेदवादि शास्त्रवादि वैदिक-सनातनवर्णाश्रमधर्मवादि न्यायवादि सत्यवादि सबैको सहयोग र सद्भाव अपेक्षित छ।

स्वाद्ध्यायशालामा भएका वेद–वेदाङ्ग–वेदोपाङ्गका अध्ययन-अनुसन्धानका आधारमा वैश्वदेव, सौम्य र ऐन्द्राग्न इ ३ युगका १५ वर्षका वैदिकतिथिपत्रहरु प्रकाशित भएका छन्।

प्रस्तुत तिथिपत्रको गणनाका काममा श्री रघुनाथ उपाध्याय ढुङ्गेलको सुसङ्गमकगणना-(कम्प्युटरप्रोग्राम)बाट सहयोग प्राप्त भएको छ। एस वैदिक पात्रोका प्रकाशनमा र प्रचारणमा सहयोग गर्ने सज्जनहरुका नामहरु गातामा पछाडिपट्टि र प्रचारणसंयोजकहरुका नाम मुखपृष्ठमा मुद्रित गरिँदै आएका छन्। वैदिक विद्याका दृष्टिले र सनातन धर्मका दृष्टिले महत्त्वपूर्ण एस कार्यमा सहयोग पुऱ्याउने सबैलाइ साधुवाद छ। प्रारम्भदेखि यो पन्ध्रौँ पत्रसम्मका सबै तिथिपत्रहरुका प्रकाशन-प्रचारणमा सहयोग पुऱ्याउने महानुभावहरुलाइ विशेष साधुवाद छ। आगामी वर्षदेखि वैदिकतिथिपत्रको भिन्न पद्धतिले सङ्क्षिप्त स्वरूपमा प्रकाशन गर्ने योजना छ।

—स्वाद्ध्यायशालाकुटुम्ब

कलिसंवत् ५०८९ सहस्य-पूर्णिमा (२०८१।८।१)

(क) वेदमा प्राप्त कालगणनाविषयक महत्त्वपूर्ण कतिपय उल्लेखहरु

(१) वेदमा अहोरात्रात्मक तिथि

अहोरात्रेभ्यः स्वाहाऽर्धमासेभ्यः स्वाहा मासेभ्यः स्वाहा ऋतुभ्यः स्वाहाऽऽर्तवेभ्यः स्वाहा संवत्सराय स्वाहा।

—मा.-वा.शुक्लयजुर्वेदमन्त्रसंहिता २२।२८, द्र.- तैत्तिरीय**कृष्णयजुर्वेद**संहिता ७।१।१५।

उषसस्ते कल्पन्ताम**होरात्रास्ते** कल्पन्तामर्धमासास्ते कल्पन्ताम् मासास्ते कल्पन्तामृतवस्ते कल्पन्तां संवत्सरस्ते कल्पताम्।—मा.वा.**शुक्लयजुर्वेद**मन्त्रसंहिता २७।४५।

अहोरात्राण्यर्धमासा मासाऽऋतवः संवत्सरे प्रतिष्ठिताः।—मा.वा.**शुक्लयजुर्वेद-शतपथब्राह्मण** १२।८।३।१४।

अहोरात्राण्यर्धमासा मासा ऋतवः संवत्सरा विधृताः।—मा.वा.शु.य.वे.**शतपथब्राह्मण** १४।६।८।९।

(२) वेदमा मधु , माधव इत्यादि १३ चान्द्र मास (चान्द्र महिना)

मधवे स्वाहा माधवाय स्वाहा शुक्राय स्वाहा शुचये स्वाहा नभसे स्वाहा नभस्याय स्वाहेषाय स्वाहोर्जाय स्वाहा सहसे स्वाहा सहस्याय स्वाहा तपसे स्वाहा तपस्याय स्वाहाऽंहसस्पतये स्वाहा।—मा.वा.शु.य.वे. २२।३१।

(३) वेदमा चान्द्र ऋतु (दुइ-दुइ चान्द्र मासका ऋतु)

मधुश् च माधवश् च वासन्तिकावृतू।... **-मा.वा.शु.य.वे.सं.** १३।२५, १४।६,१५,१६,२७, १५।५७।

अहोरात्राण्यर्धमासा मासाऽऋतवः संवत्सरे प्रतिष्ठिताः।—मा.वा.शु.य.वे.**शतपथब्राह्मण** १२।८।३।१४।

अहोरात्राण्यर्धमासा मासा ऋतवः संवत्सरा विधृताः।—मा.वा.शु.य.वे.**शतपथब्राह्मण** १४।६।८।९।

अर्धमासा मासा ऋतवः संवत्सर ओषधीः पचन्ति।—तैत्तिरीय**कृष्णयजुर्वेदसंहिता** ५।७।२।५।

अर्धमासानेव मासानृतून् संवत्सरं प्रीणाति।—तैत्तिरीय**कृष्णयजुर्वेदसंहिता** ५।७।२।६।

अहोरात्रे निमेषोऽर्धमासाः पर्वाणि मासाः सन्धानान्यृतवोऽङ्गानि संवत्सर आत्मा।

—तैत्तिरीय**कृष्णयजुर्वेदसंहिता** ७।५।२५।१।

स त्वाऽह्ने परिददात्वहस् त्वा रात्रौ परिददातु रात्रिस् त्वाऽहोरात्राभ्यां परिददात्वहोरात्रौ त्वाऽर्धमासेभ्यः परिदत्तामर्धमासास् त्वा मासेभ्यः परिददतु मासास् त्वर्तुभ्यः परिददत्वृतवस् त्वा संवत्सराय परिददतु।

—ताण्डिकौथुमराणायनीय**सामवेदमन्त्रब्राह्मण** १।५।१५।

(४) वेदमा सौरचान्द्र वर्ष

द्वादश वा वै त्रयोदश वा संवत्सरस्य मासाः।—मा.वा.शु.य.वे.**शतपथब्राह्मण** २।२।३।२७।

संवत्सरो वाव विवर्तोऽष्टाचत्वारिंशस् तस्य षड्विंशतिरर्धमासास् त्रयोदश मासाः सप्तर्तवो द्वे अहोरात्रे।

—मा.वा.**शु.य.वे.शतपथब्राह्मण** ८।४।१।२५।

(५) वेदमा पाँचवर्षे युग

संवत्सरोऽसि परिवत्सरोऽसीदावत्सरोऽसीद्वत्सरोऽसि वत्सरोऽसि।

—मा.वा.**शुक्लयजुर्वेदसंहिता** २७।४५, मा.वा.**शु.य.वे.शतपथब्राह्मण** ८।१।४।८, तैत्तिरीय**ब्राह्मण** ३।१०।४।१।

संवत्सराय पर्य्यायिणीम् परिवत्सरायाऽविजातामिदावत्सरायाऽतित्वरीमिद्वत्सरायाऽतिष्कद्वरीं वत्सराय विजर्जरां संवत्सराय पलिक्नीम्।—मा.वा.शुक्लयजुर्वेदमन्त्रसंहिता ३०।१५।

(६) वेदमा नक्षत्र र नक्षत्रदेवताका नाम

अग्निर् देवता कृत्तिका नक्षत्रं प्रजापतिर् देवता रोहिणी नक्षत्रं मरुतो देवतेन्वका नक्षत्रं रुद्रो देवता बाहुर् नक्षत्रमदितिर् देवता पुनर्वसुर् नक्षत्रं बृहस्पतिर् देवता तिष्यो नक्षत्रं सर्पा देवताऽऽश्लेषा नक्षत्रं पितरो देवता मघा नक्षत्रं भगो देवता फल्गुनीर् नक्षत्रमर्यमा देवतोत्तराः फल्गुनीर् नक्षत्रं सविता देवता हस्तौ नक्षत्रं त्वष्टा देवता चित्रा नक्षत्रं वायुर् देवता निष्ट्या नक्षत्रमिन्द्राग्नी देवता विशाखं नक्षत्रं मित्रो देवताऽनूराधा नक्षत्रमिन्द्रो देवता ज्येष्ठा नक्षत्रं निरृतिर् देवता मूलं नक्षत्रमापो देवताऽषाढा नक्षत्रं विश्वेदेवा देवतोत्तरा अषाढा नक्षत्रं विष्णुर् देवताऽश्वत्थो नक्षत्रं वसवो देवता श्रविष्ठा नक्षत्रं वरुणो देवता शतभिषङ् नक्षत्रमज एकपाद् देवता प्रोष्ठपदा नक्षत्रमहिर्बुध्न्यो देवतोत्तरे प्रोष्ठपदा नक्षत्रं पूषा देवता रेवती नक्षत्रमश्विनौ देवताऽश्वयुजौ नक्षत्रं यमो देवताऽपभरणीर् नक्षत्रमग्ने रुचस् स्थ प्रजापतेस् सोमस्य धातुर् भूयासं प्रजनिषीय तेन ब्रह्मणा तेन छन्दसा तया देवतयाऽङ्गिरस्वद् ध्रुवास् सीदत।—काठककृष्णयजुर्वेदसंहिता ३९।१३ [३३।९०]।

प्रस्तुत वेदवचनहरुबाट वेदमा बताइएका अहोरात्रात्मक तिथि, मधु-माधवादि १३ चान्द्रमास, चान्द्र ऋतु, सौरचान्द्र संवत्सर, पाँचवर्षे युग इ कुरा समाविष्ट पात्रो नै वैदिक पात्रो हो भन्ने कुरा स्पष्ट हुन्छ।

(ञ) यजुर्वेदिहरुका परम्पराबाट आएको लगधमुनिप्रोक्त परिष्कृत वेदाङ्गज्योतिषका कतिपय श्लोक

[वैदिक अधिकमासको व्यवस्था]

द्व्यूनं द्विषष्टिभागेन दिनं सौराच् च पार्वणम्।
यत्कृतावुपजायेते मध्येऽन्ते चाऽधिमासकौ ॥३७॥

सौर दिनभन्दा पार्वण दिन (तिथि) ६२ भागमा २ भागले कम हुञ्छ, जसबाट पाँच वर्षका मध्यमा (उत्तरायणका अन्तमा शुचिमासमा [आषाढमा]) र अन्तमा (दक्षिणायनका अन्तमा सहस्यमासमा [पौषमा]) दुइवटा अधिमास उत्पन्न हुञ्छन्। एस श्लोकमा देखाइएको राशिहरुका आधारमा हैन, दृक्सिद्ध सौर अयनहरुका आधारमा अधिकमास मान्ने अर्वाचीन निरयणराशिपद्धतिबाट अप्रभावित **अनादि वैदिक अधिकमासगणनापद्धति** ध्यान दिन योग्य छ॥३७॥

[नाडिका र मुहूर्त तथा दिनगत मुहूर्त र कलाको सङ्ख्या]

कला दश सविंशाः स्यान् नाडिका, ते मुहूर्तकः।
द्यु त्रिंशत्, तत् कलानां तु षट्शती त्र्यधिका भवेत् ॥३८॥

आफ्नो बिसौं भागले सहित दश कलाहरुको एक नाडिका हुञ्छ ($१०\frac{१}{२०}$ कलाहरु=१ नाडिका)। दुइ नाडिकाहरुले एक मुहूर्त हुञ्छ। तिस मुहूर्तको एक दिन (अहोरात्र) हुञ्छ। कलाका विचारले त तीनले अधिक छ सए (६०३) कलाहरु-को एक दिन (अहोरात्र) हुञ्छ।

विशेष– लगधमुनिप्रोक्त कालमानको प्रभाव पुराणादि ग्रन्थहरुमा पनि देखिञ्छ। प्रस्तुत श्लोकका अनुकूल वचनहरु ब्रह्माण्डपुराण, वायुपुराण, महाभारत–शान्तिपर्व, सुश्रुतसंहिता इत्यादि ग्रन्थहरुमा पनि पाइञ्छन्॥३८॥

[दिनमानको ज्ञानको उपाय]

यदुत्तरस्याऽयनतो गतं स्याच्
छेषं तथा दक्षिणतोऽयनस्य।
तदेकषष्ट्या द्विगुणं विभक्तं
सद्वादशं स्याद् दिवसप्रमाणम् ॥४०॥

उत्तरायणमा अयनारम्भ दिनबाट इष्ट दिनसम्म जति दिन बितेका छन् तेतिलाइ दुइ गुना गरेर तेस गुणनफललाइ ६१ ले भाग गर्दा आएका लब्धिमा १२ जोडेपछि इष्ट दिनको मुहूर्तात्मक दिवसप्रमाण (दिनमान) आउँछ। दक्षिणायनमा इष्ट दिनबाट दक्षिणायनसमाप्तिसम्म जति दिन बाँकि हुञ्छन् तेतिलाइ दुइ गुना गरेर गुणनफललाइ ६१ ले भाग गरि लब्धिमा १२ जोड्दा इष्ट दिनको मुहूर्तात्मक दिनमान आउँछ।

उदाहरण– उदगयनारम्भदिनबाट पाँचौं दिनको दिवसमान जान्न पर्दा $१२+\frac{५\times२}{६१}=१२\frac{१०}{६१}$ हुनाले तेस दिनको दिन-मान $१२\frac{१०}{६१}$ मुहूर्त जान्नुपर्छ। यदि दक्षिणायनमा दक्षिणायन-समाप्तिका निम्ति १५ दिन बाँकि हुँदा दिनमान जान्न पर्‍यो भने $१२+\frac{१५\times२}{६१}=१२\frac{३०}{६१}$ हुनाले तेस दिनको दिनमान $१२\frac{३०}{६१}$ मुहूर्त हुने कुरा जान्नुपर्छ। यो दिनमान ल्याउने सर्वसाधारणप्रक्रिया हो। देशअनुसार एसमा शोधन गर्नुपर्छ॥४०॥

[प्रस्तुत ग्रन्थको कालज्ञानोपायप्रदर्शकत्व र अन्यकल्पनाधारत्व]

इत्युपायसमुद्देशो भूयोऽप्येनं प्रकल्पयेत्।
ज्ञेयराशिं गताभ्यस्तं विभजेज् ज्ञातराशिना ॥४२॥

वेदाङ्गज्योतिषग्रन्थमा एउटा पाँचवर्षे **आदियुग**को कालगणनाको रीति देखाएर अरु युगहरुको पनि काल-गणना गर्ने उपायको उपदेश गरिएको छ। एस उपायलाइ वस्तुस्थितिको अनुकूल रूपमा **अरु प्रकारले कल्पित गर्नू**। जानिएको राशिले गुणित ज्ञेय मूल राशिलाइ ज्ञानसाधन ज्ञात राशिले विभक्त गर्नू अर्थात् त्रैराशिकले **अज्ञात राशिलाइ जान्नू**॥४२॥

[वेदाङ्गज्योतिषको प्रतिपाद्य विषय र प्रवक्ताको निर्देशले ग्रन्थोपसंहार]

इत्येतन् मासवर्षाणां मुहूर्तोदयपर्वणाम्।
दिनर्त्वयनमासानां व्याख्यानं लगधोऽब्रवीत् ॥४३॥

उक्त प्रकारको यो चान्द्र वर्षहरुको, मुहूर्तको, धनिष्ठादि नक्षत्रको उदयहरुको, पर्वहरुको, दिनहरुको, ऋतुहरुको, अयनहरुको र महिनाहरुको व्याख्यान **लगधमुनि**ले बताउनुभयो॥४३॥

(ट) पुराण-इतिहासादिमा वैदिक कालगणनापद्धति

श्रवणान्तं धनिष्ठादि युगं स्यात् पञ्चवार्षिकम्।
भानोर्गतिविशेषेण चक्रवत् परिवर्तते॥

—लिङ्गपुराण १।६१।५५-५६।

सर्वग्रहाणामेतेषामादिरादित्य उच्यते।
ताराग्रहाणां शुक्रस् तु केतूनां चैव धूमवान्॥
ध्रुवः कीलो ग्रहाणां तु विभक्तानां चतुर्दिशम्।
नक्षत्राणां श्रविष्ठा स्यादयनानां तथोत्तरम्॥
वर्षाणामपि पञ्चानामाद्यः संवत्सरः स्मृतः।
ऋतूनां शिशिरश् चाऽपि मासानां माघ एव च॥
पक्षाणां शुक्लपक्षश् च तिथीनां प्रतिपत् तथा।
अहोरात्रविभागानामहश् चाऽपि प्रकीर्तितम्॥
मुहूर्तानां तथैवाऽऽदिर् मुहूर्तो रुद्रदैवतः॥

—ब्रह्माण्डपुराण पूर्व. २४।१३९-१४३,
लिङ्गपुराण १।६१।५०-५४, वायुपुराण १।५३।१११-११५।

अहः पूर्वं ततो रात्रिर् मासाः शुक्लादयस् तथा।
श्रविष्ठादीनि ऋक्षाणि ऋतवः शिशिरादयः॥

—महाभारत, आश्वमेधिकपर्व, शोधसंस्करण ४४।२॥

कालमानमत ऊर्ध्वम्। त्रुटो लवो निमेषः काष्ठा कला नाडिका मुहूर्तः पूर्वापरभागौ दिवसो रात्रिः पक्षो मास ऋतुरयनं संवत्सरो युगमिति कालाः। शिशिराद्युत्तरायणम्। वर्षादि दक्षिणायनम्। द्व्ययनः संवत्सरः। पञ्चसंवत्सरो युगम्।

–कौटलीय अर्थशास्त्र २।२ (द्र.- सुश्रुतसंहिता, सूत्रस्थान ६।३-९)

(ठ) विवाह इत्यादिका वैदिक साइतका विषयमा जान्न पर्ने कुरा

(साइतको शुद्धाशुद्धि)

एस पात्रामा दिइएका विवाहादि–पुण्याहहरु अनादि परम्पराबाट **माध्यन्दिनीय–वाजसनेयि–शुक्लयजुर्वेदको अध्ययन गर्ने** कुलीन उपाध्याय–ब्राह्मणहरुका र तेस्ता ब्राह्मणलाइ गुरु–पुरोहित मान्ने **सम्पूर्ण वैदिक-सनातन-वर्णाश्रम-धर्मानुयायि(हिन्दुहरु)का** लागि पारस्करगृह्यसूत्रका विधानअनुसार दिइएका हुन्। गृह्यसूत्र भनेको वेद–समान ग्रन्थ हो। प्रमाणको बलाबलमा (धर्मका प्रमाणमा कुन बलियो कुन निर्बलियो हुञ्छ भनेर छुट्ट्याउँदा) आँफ्ना शाखाको गृह्यसूत्र आफ्ना शाखाका मन्त्रसंहिता, ब्राह्मणग्रन्थ र श्रौतसूत्र–बाहेकका अरु स्मृति–पुराणादि सम्पूर्ण धर्मशास्त्रग्रन्थभन्दा बलियो हुञ्छ। गृह्यसूत्रको अत्यन्त प्रबलता गृह्यसूत्र पनि वेदजस्तै मन्त्रहरु भएको ग्रन्थ हुनाले र वेदजस्तै गुरुपरम्परागत रूपमा गुरुमुखबाट अध्ययन गरिने हुनाले भएको हो। यो कुरा वैदिक परम्परामा आस्था राख्ने सबैले राम्ररि बुझ्न पर्छ। शुक्लयजुर्वेदको गृह्यसूत्रमा भनिएको छ—

"उदगयन आपूर्यमाणपक्षे पुण्याहे कुमार्याः पाणिं गृह्णीयात्"

उदगयने=उत्तरायणमा, आपूर्यमाणपक्षे=शुक्लपक्षमा, पुण्याहे= शुभ दिनमा, कुमार्याः=कुमारीको, पाणिं गृह्णीयात्= पाणिग्रहण गरोस्= विवाह गरोस्।

—पारस्करगृह्यसूत्र, काण्ड १ कण्डिका ४ सूत्र ५।

एसबाट शुक्लयजुर्वेदका अनुयायीहरुका निम्ति दक्षिणायनमा र कृष्णपक्षमा विवाहको समय हुन नसक्ने कुरा जसले पनि स्पष्ट रूपमा बुझ्न सक्छ। पारस्करगृह्यसूत्रको *"अथैनां सूर्यमुदीक्षयति तच् चक्षुरिति"* (अब वधूलाई तच्चक्षुः इत्यादि मन्त्रले सूर्यदर्शन गराउनू, १।८।७) भन्ने वचनले विवाहकर्मका बिचमा नै वधूलाइ सूर्यको दर्शन गराउन पर्ने निर्देशन दिएको हुँदा शुक्लयजुर्वेदका अनुयायीहरुका निम्ति दिनमा नै विवाहको साइत हुन सक्ने रातमा हुन नसक्ने कुरा पनि सबैले बुझ्न सकिञ्छ। मीमांसाशास्त्रको परम प्रामाणिक ग्रन्थ जैमिनीय धर्म–मीमांसासूत्रमा पनि दैव कर्म उत्तरायणमा, शुक्लपक्षमा शुभदिनमा गर्न पर्छ भनिएको छ— **"उदगयन-पूर्वपक्षा-ऽहःपुण्याहेषु दैवानि स्मृतिरूपान्यार्थदर्शनात्। अहनि च कर्मसाकल्यम्। इतरेषु तु पित्र्याणि।"** (जै.ध.मी.सू. ६।८।२३–२५)। याहाँ दक्षिणायनमा र कृष्णपक्षमा पित्र्य कर्म गर्ने निर्देश पनि छ।

अरु वेदका धेरै शाखाहरुमा समेत संस्कारका निम्ति पारस्कर-गृह्यसूत्रमा दिएका जस्तै नियम छन्—

उदगयन आपूर्यमाणपक्षे कल्याणे नक्षत्रे चौलकर्मोपनयन-गोदानविवाहाः। *—आश्वलायनगृह्यसूत्र १।४।१।*

उदगयन आपूर्यमाण-पक्षे पुण्याहे कुमार्यै पाणिं गृह्णी-यात्। *—कौषीतकिगृह्यसूत्र १।१।८।*

अथातो गृह्या कर्माण्युपदेक्ष्यामः। यज्ञोपवीतिनाऽऽचान्तोदकेन कृत्यम्। उदगयने पूर्वपक्षे पुण्येऽहनि प्रागावर्तनादह्नः कालं विद्यात्। *—गोभिलगृह्यसूत्र १।१।१-३।*

(ड) अरु पञ्चाङ्गहरुले देखाएका गणना र ग्रह-स्थितिमा अशुद्धि र पञ्चाङ्ग-संशोधनको बाटो

वैदिकतिथिपत्रम्‌मा **अरु पञ्चाङ्ग(पात्रा)हरुले देखाएका गणना र ग्रह-स्थितिमा रहेका अशुद्धिका सम्बन्धमा** एस्ता आलोचना प्रकाशित भएका थिए—

"अरु पात्राहरुमा दिइने ग्रहहरुका स्थितिमा धेरै अशुद्धि देखिञ्छ। उदाहरण- २०६९ जेठ २४ प्रातः सूर्य र शुक्र ग्रह एकै ठाममा देखिई शुक्रसङ्क्रमण भएको थियो भने अरु पात्रामा तेसको ४ दिन भन्दा बढि पहिले नै सूर्य र शुक्र एकै ठाउँमा हुने भनेकाले अशुद्धि स्पष्ट थियो। २०७३ फागुन ४ राति ११:०० देखि १:१० बजेसम्म आकाशमा हेर्दा चित्रा ताराभन्दा पश्चिमतिर देखिएका बृहस्पतिलाइ तुला राशिमा र पूर्वतिर देखिएका चन्द्रमालाइ कन्या राशिमा भनेर अरु पात्रामा भनिएकाले तिनको अशुद्धि स्पष्ट भएको थियो।" –वैदिकतिथिपत्रम्, कलिसं. ५०८३ (वि.सं. २०७५), पृ. २५।

"२०७४ साउन २३ गतेको चन्द्रग्रहणको अध्ययनबाट तेस दिनको तिथिगणनामा आधा घण्टाभन्दा बढि अशुद्धि रहेको देखिएको थियो।" –वैदिकतिथिपत्रम्, कलिसं. ५०८३ (वि.सं.२०७५), पृ. २३।

*"पञ्चाङ्ग निर्णायक समितिद्वारा स्वीकृत पञ्चाङ्गहरुले **२०७६ कात्तिक २१ गते** बिहान सूर्य र बुधको एकै स्थानमा आगमन हुने भनेर ग्रहस्पष्ट (ग्रहस्थिति) देखाएका थिए। तर वास्तवमा **२०७६।७।२५** मा राति सूर्य र बुध ग्रह एकै स्थानमा आइपुगेका थिए। तेसै समय **बुधसङ्क्रमणको (सूर्यको पृष्ठभूमिमा बुध ग्रहको गमन देखिएको) आकाशीय घटना भएको थियो।** एसरि ति पञ्चाङ्गहरुले भनेका ग्रहस्थितिमा साडे ४ दिनभन्दा पनि बढिको अन्तर देखिएको थियो।"* –वैदिकतिथिपत्रम्, कलिसं. ५०८५ (वि.सं. २०७७), पृ. १५।

"अरु पञ्चाङ्गहरुले देखाएका ग्रहयुतिका समयमा ४१ दिनको अन्तर— *पञ्चाङ्ग निर्णायक समितिद्वारा स्वीकृत पञ्चाङ्गहरुले **२०७७ कात्तिक २५** गते बृहस्पति र शनिको युति हुने अर्थात् एकै स्थानमा आगमन हुने र तेसपछि शनिभन्दा बृहस्पति पूर्वतिर लाग्ने भनेर ग्रहस्पष्ट (ग्रहस्थिति) देखाएका छन्। तर २०७७ मङ्सिरमा आकाशमा बृहस्पतिभन्दा पूर्वमा शनि ग्रह देखिइरहेकै अवस्था छ। यो तथ्य आकाशको अवलोकन गर्ने विज्ञहरुबाट विभिन्न माध्यमबाट प्रकाशित पनि भइरहेको छ। वास्तवमा **२०७७ पुस ६ गते** मात्र बृहस्पति र शनि ग्रह एकै राशि, अंश, कला र विकला (९।०६।२०।२२) मा आइपुगेर युति हुन्छ। तेसपछि मात्र शनिभन्दा पूर्वतिर बृहस्पति ग्रह देखिने अवस्था हुन्छ। एसरि **ग्रहयुतिका** समयमा ४१ दिनको अन्तर (अशुद्धि) देखिएको छ।"* –वैदिकतिथिपत्रम्, कलिसं. ५०८६ (वि.सं. २०७८), पृ. १५।

पञ्चाङ्ग-निर्णायक-विकास-समितिबाट स्वीकृत पञ्चाङ्गहरुमा वैदिक युग, वर्ष, अयन, ऋतु, महिना, पक्ष र तिथिको तथा 'वैदिकनववर्षारम्भ'को पनि उल्लेख गरी परिष्कार गर्न पर्ने आवश्यकता भएजस्तै आकाश-दर्शन गर्दा देखिने ग्रहस्थितिसँग मिल्ने बनाउन **ग्रहहरुको गणितमा पनि धेरै संशोधन गर्न पर्ने आवश्यकता भएको कुरा उपर्युक्त तथ्यबाट** प्रमाणित भएको छ।

आकाशमा देखिने ग्रहहरुको स्थितिसँग मिल्ने विवरण नै शुद्ध हो। जतिखेर जुन ग्रह जाहाँ देखिने भनिएको छ, तेतिखेर त्यो ग्रह त्याहाँ नदेखिएर आर्को स्थानमा देखिएमा त्यो ग्रहस्थिति-विवरण अशुद्ध हो। याहाँ पञ्चाङ्ग-निर्णायक-समितिबाट स्वीकृत पञ्चाङ्गहरुमा छापिएको २०८१ पुस ७ आइतवारको सूर्योदयको ग्रहस्थिति-(ग्रहस्पष्ट)को आकाशमा देखिने ग्रहस्थितिसँग मिल्ने गणना (दृग्गणना) सँग तुलना गरेर देखाइएको छ। एसरि तुलना गरेर हेर्दा अशुद्धि कति रहेछ भन्ने बुझ्न सकिञ्छ।

अरु पात्राहरुले प्रकाशित गरेको २०८१।९।७ को सूर्योदयको ग्रहस्थिति *(राशि, अंश, कला र विकला)*			दृक्सिद्ध (आकाशमा देखिने ग्रहस्थितिसँग मिल्ने) गणना-अनुसारको २०८१।९।७ को सूर्योदयको ग्रहस्थिति			दृक्सिद्ध गणनासँग रहेको अन्तर [अशुद्धि] *(अंश, कला र विकला)*		
(१)	सूर्य	८:०६:०६:५३	(१)	सूर्य	८:०६:२९:१९	सूर्य	–	०:२२:२६
(२)	चन्द्र	४:२६:०३:५१	(२)	चन्द्र	४:२६:५१:०३	चन्द्र	–	०:४७:१२
(३)	मङ्गल	३:०९:५७:२५	(३)	मङ्गल	३:१०:२५:५७	मङ्गल	–	०:२८:३२
(४)	बुध	७:१३:५१:५८	(४)	बुध	७:१४:५३:१३	बुध	–	१:०१:१५
(५)	बृहस्पति	१:२१:०१:२५	(५)	बृहस्पति	१:२०:११:३८	बृहस्पति	+	०:४९:४७
(६)	शुक्र	९:२२:४१:५४	(६)	शुक्र	९:२२:३७:३८	शुक्र	+	०:०४:१६
(७)	शनि	१०:१६:३५:५६	(७)	शनि	१०:१९३९:३०	शनि	–	३:०३:३४
(८)	राहु	११:०७:०६:२५	(८)	राहु	११:७:५०:०१	राहु	–	०:४३:३६

वैदिकतिथिपत्रम्

कलिसंवत् ५०९०, ऐन्द्राग्नं युगम् (८५–१०), वत्सरः (५) (चान्द्रः अनलः संवत्सरः ५०), उत्तरायणम्, शिशिरः ऋतुः, तपाः[माघः]मासः, शुक्लः पक्षः

विक्रमसंवत् **२०८१**, **शकान्तसंवत् (शकसंवत्) १९४६**, बार्हस्पत्यः कालः संवत्सरः (५२), **वृश्चिकमासः** (मङ्सिर), **मार्गशीर्षशुक्लपक्षः** (नेपालसंवत्११४५ थिंलाथ्वः=मार्गशीर्षशुक्लपक्षः) [डिसेम्बर २०२४ क्रै.]

वै.ति.	करणम्	लौ.ति.	घ.प.	घण्टा	वे.न.	मुहूर्तः	दृक्.न.	घण्टा	योगाः	घण्टा	योगाः	चन्द्रराशिः	दिनमा.	सू.उ.	सू.अ.	अहर्ग.	वारः	गते	ता.	२०८१ मङ्सिर १६ – ३०
प्रतिपदा	**कौस्तु.**	**३०**	१३।५५	१२:११	**अनु**	**७।१**	**अनु**	**१४:४०**	सु.	१६:४७	मृत्युः	वृश्चिकः	१०:३१	६:३७	१७:०९	३४६	**आ**	**१६**	**1**	**श्रौतिनां वैदिकानां दर्शेष्टिः, *वैदिकनववर्षारम्भः*, वत्सरारम्भः,☾**
द्वितीया	**बाल.**	**१**	१६।००	१३:०२	**ज्ये**	**७।८**	**ज्ये**	**१६:००**	धृ.	१६:१३	पद्मम्	१६:००	१०:३०	६:३८	१७:०९	३४७	**सो**	**१७**	**2**	ज्येष्ठायां सूर्यः १८:५३ ☾ **चान्द्राऽनल-संवत्सर(५०)प्रारम्भः, उदगयनारम्भः,☽**
तृतीया	**तैति.**	**२**	१६।५७	१३:२५	**मू**	**७।१५**	**मू**	**१६:५५**	शू.	१५:१९	छत्रम्	धनुः	१०:३०	६:३९	१७:०९	३४८	**म**	**१८**	**3**	☽ **वैदिकशिशिरर्तु-प्रारम्भः**, तिब्बतीयानां ह्लोसारः, पौराणिकानामग्निव्रतम्,☼
चतुर्थी	**वाणि.**	**३**	१६।५५	१३:२५	**पूषा**	**८।१**	**पूषा**	**१७:२७**	ग.	१४:०६	श्रीवत्सः	२३:३१	१०:२९	६:४०	१७:०८	३४९	**बु**	**१९**	**4**	☼ **डिसेम्बर**मास-प्रारम्भः (२०२४ क्रै.)
पञ्चमी	**बवम्**	**४**	१५।५९	१३:०४	**उषा**	**८।९**	**उषा**	**१७:३८**	वृ.	१२:३७	सौम्यः	मकरः	१०:२८	६:४०	१७:०८	३५०	**बृ**	**२०**	**5**	सीताविवाहपञ्चमी जनकपुरे मेला✧
षष्ठी	**कौल.**	**५**	१४।१५	१२:२३	**श्र**	**८।१६**	**श्र**	**१७:३१**	ध्रु.	१०:५३	धूम्रः	२९:२०	१०:२८	६:४१	१७:०८	३५१	**शु**	**२१**	**6**	✧ षडानन्दजयन्ती
सप्तमी	**गराजिः**	**६**	११।४४	११:२३	**ध**	**९।३**	**ध**	**१७:०५**	व्या.	८:५४ ६:३९	वर्धमा.	कुम्भः	१०:२७	६:४२	१७:०९	३५२	**श**	**२२**	**7**	
अष्टमी	**विष्टिः**	**७**	८।२२	१०:०३	**शत**	**९।१०**	**शत**	**१६:१९**	व.	२८:०८	राक्षसः	कुम्भः	१०:२७	६:४३	१७:०९	३५३	**आ**	**२३**	**8**	लौ.ति. रविसप्तमी
नवमी	**बाल.**	**८**	४।१० ५९।७	८:२३ ६:२२	**पूभ**	**९।१७**	**पूभ**	**१५:१३**	सि.	२५:२०	मुसल.	९:३२	१०:२६	६:४३	१७:०९	३५४	**सो**	**२४**	**9**	
दशमी	**तैति.**	**१०**	५३।१७	२८:०२	**उभ**	**१०।४**	**उभ**	**१३:४८**	व्य.	२२:१७	सिद्धिः	मीनः	१०:२६	६:४४	१७:०९	३५५	**म**	**२५**	**10**	
एकादशी	**वाणि.**	**११**	४६।४८	२५:२७	**रे**	**१०।११**	**रे**	**१२:०४**	व.	१९:०१	उत्पातः	१२:०४	१०:२५	६:४५	१७:१०	३५६	**बु**	**२६**	**11**	पौराणिकानां मोक्षदा एकादशी, गीताजयन्ती
द्वादशी	**बवम्**	**१२**	३९।५४	२२:४२	**अ**	**१०।१८**	**अ**	**१०:०७**	प.	१५:३५	मानसम्	मेषः	१०:२५	६:४५	१७:११	३५७	**बृ**	**२७**	**12**	♐ धनुषि मूले सूर्यः ३९।२२ (२२:३३)
त्रयोदशी	**कौल.**	**१३**	३२।५३	१९:५५	**भ**	**११।५**	**भ**	**८:०३ २९:५९**	शि.	१२:०४	मुद्गरः	१३:३१	१०:२५	६:४६	१७:१०	३५८	**शु**	**२८**	**13**	प्रदोषव्रतम्, ○ **धान्यपूर्णिमा (योमरिपुह्नि), गैडुपूजा, उधौलीपर्व, माघस्नानप्रारम्भः**♐
चतुर्दशी	**गराजिः**	**१४**	२६।०६	१७:१२	**कृ**	**११।१२**	**रो**	**२८:०५**	सि.	८:३६ २९:१६	श्रीवत्सः	वृषः	१०:२४	६:४६	१७:१०	३५९	**श**	**२९**	**14**	लौ.ति. पूर्णिमाव्रतम्, दत्तात्रेयजयन्ती, नुवाकोट दुप्चेश्वरमेला
पूर्णिमा	**विष्टिः**	**१५**	१९।५५	१४:४५	**रो**	**११।१९**	**मृ**	**२६:३१**	शु.	२६:१२	सौम्यः	१५:१५	१०:२४	६:४७	१७:११	३६०	**आ**	**३०**	**15**	**श्रौतिनां वैदिकानाम् उपवसथः, वैदिक वर्षको र उत्तरायणको पैलो पूर्णिमा,** ○

गतकलिसावनाऽहर्गणः १८५८७१४।

वत्सरमा चाँदि दान गर्न पर्ने नियम

संवत्सरे तिलान् दद्याद् यवाँस्तु परिवत्सरे।
इडापूवे च वस्त्राणि धान्यं चाऽप्यनुवत्सरे॥
इद्वत्सरे तु रजतं क्रमाद् देयानि शक्तितः।

—मार्कण्डेयस्मृति, स्मृतिसन्दर्भ–६, पृ.१३४।

(इडावत्सर=इदावत्सर, अनुवत्सर=इद्वत्सर, इद्वत्सर=वत्सर)

प्रस्तुत वैदिकतिथिपत्रमा **'घण्टा'** भन्नाले **बजे** बुज्न पर्छ। दिउसो १, २, ३, ४, ५ ... बजेको समयलाइ १३, १४, १५, १६, १७ ... घण्टा (बजे) र अर्ध-रात्रिपछिको सूर्योदय नभएसम्मको १, २, ३, ४, ५ ... बजेको समयलाइ २५, २६, २७, २८, २९ ... घण्टा (बजे) भनेर जनाइएको छ। मुहूर्त र कलाका बिचमा तथा घडि र पलाका बिचमा ठाडो धर्सो (।) चिह्न दिइएको छ भने बजेमा घण्टा र मिनेटका बिचमा दुइ थोप्ला (:) चिह्न दिइएको छ। यहाँ नक्षत्रादिको समय दिँदा समाप्तिको समय दिइएको छ। जस्तै– रो २८:०५ को अर्थ रोहिणी नक्षत्र राति ४ बजेर ५ मिनेटमा समाप्त हुन्छ र मृगशीर्ष नक्षत्र लाग्छ भन्ने हो।

शिशिर ऋतुको चर्या– शिशिर ऋतुमा न्याना लुगा लगाउने र मनतातो पानि खाने गर्नुपर्छ। खाना पर्याप्त हुने गरि खानुपर्छ। गुड, तिल इत्यादिको सेवन गर्नुपर्छ।

१ २०८१।८।२२ सूर्योदयसमयको ग्रहको स्थिति र दैनिक गति

सू	७:२१:१३:३५	६०:५५	**शु**	९:०५:३३:४३	६९:२३
म	३:११:५९:३५	०:०१	**श**	१०:१८:५४:४९	२:१४
बु	७:१८:५७:३९	-८१:४६	**रा**	११:०८:३७:४४	३:११
बृ	१:२२:११:२२	-८:११		**८।२६-२२:४५ बुध पू. उदय**	

८।३०-१९:१४ मङ्गल वक्री **९।१-१५:४३ बुध मार्गी**

वैदिकतिथिपत्रे कलिसंवत् ५०९०, ऐन्द्राग्नं युगम् (८५–१०), वत्सरः (५) (चान्द्रः अनलः संवत्सरः ५०), उत्तरायणम्, शिशिरः ऋतुः, तपाः [माघः] मासः, कृष्णः पक्षः

विक्रमसंवत् **२०८१, शकान्तसंवत् (शकसंवत्) १९४६**, बार्हस्पत्यः कालः संवत्सरः (५२), **धनुर्मासः** (पुस), **पौषकृष्णपक्षः** (नेपालसंवत् ११४५ थिंलागाः=मार्गशीर्षकृष्णपक्षः) [डिसेम्बर २०२४ क्रैस्ताब्दः]

वै.ति.	करणम्	लौ.ति.	घ.प.	घण्टा	वे.न.	मुहूर्तः	दृक्.न.	घण्टा	योगाः	घण्टा	योगाः	चन्द्रराशिः	दिनमा.	सू.उ.	सू.अ.	अहर्ग.	वारः	गते	ता.	२०८१ पुस १ – १५
प्रतिपदा	बाल.	१	१४।४५	१२:४१	मृग	१२।६	आर्द्रा	२५:२५	शु.	२३:३२	कालद.	मिथुनम्	१०:२४	६:४८	१७:११	३६१	सो	१	16	**श्रौतिनां वैदिकानां पूर्णमासेष्टिः, निरूढपशुबन्धः,** पौराणिकानामग्निव्रतम्, □
द्वितीया	तैति.	२	१०।५८	११:११	पुन	१३।०	पुन	२४:५७	ब्र.	२१:२१	स्थिरः	१९:००	१०:२४	६:४९	१७:१२	३६२	म	२	17	**□ धनुर्मासप्रारम्भः (पुस) २०८२, उत्तरायणारम्भनजिकको राशिसङ्क्रान्ति**
तृतीया	वाणि.	३	८।५५	१०:२२	पुष्य	१३।८	पुष्य	२५:१२	ऐ.	१९:४५	मातङ्गः	कर्कटः	१०:२४	६:४९	१७:१३	३६३	बु	३	18	
चतुर्थी	बवम्	४	८।४८	१०:२०	अश्ले	१३।१५	अश्ले	२६:१४	वै.	१८:४६	अमृतम्	२६:१४	१०:२४	६:५०	१७:१३	३६४	बृ	४	19	**♐ आदिप्रयाग देवघाटधाममा बाह्र-वर्षे महाकुम्भ-मेला प्रारम्भ**
पञ्चमी	कौल.	५	१०।४४	११:०७	मघा	१४।२	मघा	२८:०२	वि.	१८:२३	काणः	सिंहः	१०:२४	६:५०	१७:१४	३६५	शु	५	20	**☼ सायनमकरे सूर्यः १८।४३ (१४:४१), सौर शिशिर ऋतुको आरम्भ ♐**
षष्ठी	गराजिः	६	१४।३५	१२:४०	पूफ	१४।९	पूफ	३०:२९	प्री.	१८:३४	लुम्बः	सिंहः	१०:२४	६:५१	१७:१५	१	श	६	21	**दृक्सिद्ध-वैदिकसौरोदगयनारम्भः (वास्तविक सौर उत्तरायणको आरम्भ) ☼**
सप्तमी	विष्टिः	७	१९।५९	१४:५०	उफ	१४।१६	उफ	अहोरात्र	आ.	१९:१२	मित्रम्	१३:१०	१०:२४	६:५१	१७:१५	२	आ	७	22	रविसप्तमी
अष्टमी	बाल.	८	२६।२६	१७:२६	ह	१५।४	उफ	९:२३	सौ.	२०:०५	श्रीवत्सः	कन्या	१०:२४	६:५२	१७:१५	३	सो	८	23	**स्मार्तानां वैदिकानाम् एकाष्टका**
नवमी	तैति.	९	३३।१६	२०:१०	चि	१५।११	ह	१२:३१	शो.	२१:०४	सौम्यः	२६:०५	१०:२४	६:५२	१७:१६	४	म	९	24	**स्मार्तानां वैदिकानाम् अन्वष्टका** ✧ (गुरुङ समुदायको नववर्ष)
दशमी	वाणि.	१०	३९।४७	२२:४७	स्वा	१५।१८	चि	१५:३६	अ.	२१:५८	कालद.	तुला	१०:२४	६:५३	१७:१७	५	बु	१०	25	■ निशि बार्ने दिन), **मौनी अमावास्या, गोकर्णक्षेत्रे श्राद्धम्, तमु लोसार** ✧
एकादशी	बवम्	११	४५।२५	२५:०३	वि	१६।५	स्वा	१८:२४	सु.	२२:३५	स्थिरः	तुला	१०:२४	६:५३	१७:१८	६	बृ	११	26	पौराणिकानां सफला एकादशी
द्वादशी	कौल.	१२	४९।४५	२६:४७	अनु	१६।१३	वि	२०:४५	धृ.	२२:५०	मातङ्गः	१४:१३	१०:२५	६:५३	१७:१९	७	शु	१२	27	पूर्वाषाढासु सूर्यः २४:०८ ⦿ दिनम् (हलो, ढिकि, जाँतो, ठेको बार्ने र ■
त्रयोदशी	गराजिः	१३	५२।३१	२७:५४	ज्ये	१७।०	अनु	२२:३१	शू.	२२:३८	अमृतम्	वृश्चिकः	१०:२५	६:५४	१७:१९	८	श	१३	28	प्रदोषव्रतम्, शनित्रयोदशी
चतुर्दशी	गराजिः	१४	५३।४३	२८:२३	ज्ये	१७।०	ज्ये	२३:४०	ग.	२१:५६	काणः	२३:४०	१०:२५	६:५४	१७:१९	९	आ	१४	29	दिसिचह्लेपूजा ● हल-कण्डनी-यन्त्रक-मन्थनीकर्म-सायम्भोजन-परिहार-⦿
अमावास्या	विष्टिः	३०	५३।२६	२८:१६	मू	१७।७	मू	२४:१४	वृ.	२०:४७	लुम्बः	धनुः	१०:२५	६:५४	१७:१९	१०	सो	१५	30	**श्रौतिनां वैदिकानां पिण्डपितृयज्ञः, स्मार्तानां वैदिकानां दर्शश्राद्धम्,** ●

गतकलिसावनाऽहर्गणः १८५८७२९।

देवघट्टस्नान-मन्त्रः (देउघाटमा नुहाउँदा भन्ने मन्त्र)

यत्र विष्णुः प्राङ्मुखश् च शिवः प्रत्यङ्मुखः स्थितः। रक्षार्थं सततं तत्र क्षेत्रे हरिहराभिधे॥
सितासिते सरिच्छ्रेष्ठे देवानामपि दुर्लभे। युवयोः सङ्गमे ह्यादिप्रयागे स्नामि सिद्धये॥

—माध्यन्दिनीय-वाजसनेयि-शुक्लयजुर्वेदाध्यायि-निरग्निकद्विज-सदाचारकर्म-संस्कारकर्म-श्राद्धकर्मादि-
वैदिक–मन्त्रसङ्ग्रहः, स्वाद्ध्यायशाला, २०५२, परिशिष्टम्, पृ.११९।

२ २०८१।९।७ सूर्योदयसमयको ग्रहको स्थिति र दैनिक गति

सू	८:०६:२९:१९	६१:०६	शु	९:२२:३७:३८	६६:५४
म	३:१०:२५:५७	-१२:२७	श	१०:१९:३९:३०	३:४१
बु	७:१४:५३:१३	४६:४७	रा	११:०७:५०:०१	३:११
बृ	१:२०:११:३८	-७:३२			

वैदिकतिथिपत्रे **कलिसंवत् ५०९०, ऐन्द्राग्नं युगम् (८५–१०), वत्सरः (५)(चान्द्रः अनलः संवत्सरः ५०), उत्तरायणम्, शिशिरः ऋतुः, तपस्यः[फाल्गुनः]मासः, शुक्लः पक्षः**

विक्रमसंवत् **२०८१, शकान्तसंवत् (शकसंवत्)१९४६**, बार्हस्पत्यः कालः संवत्सरः (५२), **धनुर्मास-मकरमासौ** (पुस-माघ), **पौषशुक्लपक्षः** (नेपालसंवत् ११४५ पोहेलाथ्वः=पौषशुक्लपक्षः) [डिसेम्बर २०२४-जनबरि २०२५ क्रै.]

वै.ति.	करणम्	लौ.ति.	घ.प.	घण्टा	वे.न.	मुहूर्तः	दृक्.न.	घण्टा	योगाः	घण्टा	योगाः	चन्द्रराशिः	दिनमा.	सू.उ.	सू.अ.	अहर्ग.	वारः	गते	ता.	**२०८१ पुस १६ – माघ १**
प्रतिपदा	**कौस्तु.**	**१**	५१।५५	२७:४०	**पूषा**	**१७।१४**	**पूषा**	**२४:१९**	ध्रु.	१९:१२	मित्रम्	३०:१६	१०:२६	६:५४	१७:२०	११	**म**	**१६**	**31**	**श्रौतिनां वैदिकानां दर्शेष्टिः**, पौराणिकानामग्निव्रतम्, **श्रौतिनां वैदिकानां** ☾
द्वितीया	**बाल.**	**२**	४९।२४	२६:४०	**उषा**	**१८।२**	**उषा**	**२३:५९**	व्या.	१७:१८	वज्रम्	मकरः	१०:२६	६:५५	१७:२०	१२	**बु**	**१७**	**1**	**जनबरि**मास-प्रारम्भः, **२०२५ क्रैस्ताब्दप्रारम्भः**
तृतीया	**तैति.**	**३**	४६।०९	२५:२३	**श्र**	**१८।९**	**श्र**	**२३:२२**	ह.	१५:०८	ध्वजः	मकरः	१०:२७	६:५५	१७:२२	१३	**बृ**	**१८**	**2**	☾ **संवत्सरेप्सूनां शुनासीरीयपर्व,** तोललोसार
चतुर्थी	**वाणि.**	**४**	४२।२४	२३:५३	**ध**	**१८।१६**	**ध**	**२२:३२**	व.	१२:४६	धाता	१०:५९	१०:२७	६:५५	१७:२२	१४	**शु**	**१९**	**3**	
पञ्चमी	**बवम्**	**५**	३८।१८	२२:१४	**शत**	**१९।४**	**शत**	**२१:३४**	सि.	१०:१६	आनन्दः	कुम्भः	१०:२८	६:५५	१७:२२	१५	**श**	**२०**	**4**	
षष्ठी	**कौल.**	**६**	३३।५५	२०:३०	**पूभ**	**१९।११**	**पूभ**	**२०:२९**	व्य.	७:४१ २९:०१	चरः	१४:४६	१०:२८	६:५५	१७:२३	१६	**आ**	**२१**	**5**	
सप्तमी	**गराजिः**	**७**	२९।२०	१८:४०	**उभ**	**१९।१८**	**उभ**	**१९:२०**	प.	२६:१७	गदः	मीनः	१०:२९	६:५६	१७:२४	१७	**सो**	**२२**	**6**	
अष्टमी	**विष्टिः**	**८**	२४।३२	१६:४५	**रे**	**२०।६**	**रे**	**१८:०५**	शि.	२३:२९	शुभः	१८:०५	१०:२९	६:५६	१७:२५	१८	**म**	**२३**	**7**	भौमाष्टमी, श्रीश्वेतमत्स्येन्द्रनाथस्नानम्
नवमी	**बाल.**	**९**	१९।३३	१४:४५	**अ**	**२०।१३**	**ऋ**	**१६:४६**	सि.	२०:३७	मृत्युः	मेषः	१०:३०	६:५६	१७:२५	१९	**बु**	**२४**	**8**	
दशमी	**तैति.**	**१०**	१४।२६	१२:४२	**भ**	**२१।०**	**भ**	**१५:२४**	सा.	१७:४३	पद्मम्	२१:०३	१०:३१	६:५६	१७:२७	२०	**बृ**	**२५**	**9**	☼**माघी,** मकरे सूर्यः ५।५१ (९:१७), त्रिवेणीमेला, **घ्योचाकुसल्हु ,राष्ट्रिय योगदिवस**
एकादशी	**वाणि.**	**११**	९।१७	१०:३९	**कृ**	**२१।८**	**कृ**	**१४:०१**	शु.	१४:५०	छत्रम्	वृषः	१०:३२	६:५६	१७:२७	२१	**शु**	**२६**	**10**	पौराणिकानां पुत्रदा एकादशी, मन्वादिः, उत्तराषाढासु सूर्यः २६:०७
द्वादशी	**बवम्**	**१२**	४।१९ ५९।४५	८:४० ६:५०	**रो**	**२१।१५**	**रो**	**१२:४४**	शु.	१२:०१	श्रीवत्सः	२४:०९	१०:३२	६:५६	१७:२९	२२	**श**	**२७**	**11**	**पृथ्वीजयन्ती,** लौ.ति. शनित्रयोदशी
त्रयोदशी	**कौल.**	**१४**	५५।५७	२९:१९	**मृग**	**२२।३**	**मृग**	**११:३८**	ब्र.	९:२१ ३०:५५	सौम्यः	मिथुनम्	१०:३३	६:५६	१७:३०	२३	**आ**	**२८**	**12**	प्रदोषव्रतम्
चतुर्दशी	**गराजिः**	**१५**	५३।०९	२८:११	**आर्द्रा**	**२२।१०**	**आर्द्रा**	**१०:५०**	वै.	२८:४९	कालद.	२८:३१	१०:३४	६:५६	१७:३०	२४	**सो**	**२९**	**13**	लौ.ति. पूर्णिमाव्रतम् श्रीस्वस्थानीव्रतप्रारम्भः (मिलापुह्हि), माघस्नानसमाप्तिः,
पूर्णिमा	**विष्टिः**	**१**	५१।४०	२७:३६	**पुन**	**२२।१७**	**पुन**	**१०:२८**	वि.	२७:०८	स्थिरः	कर्कटः	१०:३५	६:५६	१७:३१	२५	**म**	**१**	**14**	**श्रौतिनां वैदिकानाम् उपवसथः, वैश्वदेवपर्व, मकरमासप्रारम्भः (माघ) २०८२,** ☼

गतकलिसावनाऽहर्गणः १८५८७४४।

चाडपर्वका दिनको निर्धारण— यस पात्रोमा पुराणले बताएका चाडपर्वको दिन लेख्दा वैदिक तिथि र लौकिक तिथिमा धेरै अन्तर नभएका स्थानमा एक दिन मात्र चाडपर्व लेखिएको छ भने वैदिक र लौकिक तिथिमा धेरै अन्तर भएका स्थानमा वैदिक तिथिअनुसारका दिनमा चाडपर्व लेख्ता **'वै.ति.'** भनेर तथा लौकिक तिथिअनुसारका दिनमा चाडपर्व लेख्ता **'लौ.ति.'** भनेर कुन तिथिअनुसार लेखिएको हो भन्ने जनाएर लेखिएको छ। ऋतु सरेर ब्र आएकाले एक महिना अगाडि नै पर्व मनाउने ऋतुअनुसारको समय भएकामा **'ऋतुअनुसार मनाइने'** र नेपाल-भारतमा कतैकतै मनाइने भनेर प्रसिद्ध भएकामा **'ऋतुअनुसार नेपाल–भारतका कतिपय स्थानमा मनाइने'** भनेर जनाइएको छ ।

३ २०८१।९।२२ सूर्योदयसमयको ग्रहको स्थिति र दैनिक गति

सू	८:२१:४६:३७	६१:०९	**शु**	१०:०८:५२:४८	६२:४६
म	३:०५:५८:१५	-२२:११	**श**	१०:२०:४४:१९	४:५५
बु	८:०२:२७:४४	८३:१४	**रा**	११:०७:०२:१९	३:११
बृ	१:१८:३१:२९	-५:३८		**१०।३-३०:१७ बुध पू. अस्त**	

वैदिकतिथिपत्रे कलिसंवत् ५०९०, ऐन्द्राग्नं युगम् (८५–१०), वत्सरः (५) (चान्द्रः अनलः संवत्सरः ५०), उत्तरायणम्, शिशिरः ऋतुः, तपस्यः[फाल्गुनः] मासः, कृष्णः पक्षः

विक्रमसंवत् २०८१, **शकान्तसंवत् (शकसंवत्) १९४६**, बार्हस्पत्यः कालः संवत्सरः (५२), **मकरमासः** (माघ), **माघकृष्णपक्षः** (नेपालसंवत् ११४५ पोहेलागाः=पौषकृष्णपक्षः)[जनबरि २०२५ क्रैस्ताब्दः]

वै.ति.	करणम्	लौ.ति.	घ.प.	घण्टा	वे.न.	मुहूर्तः	दृक्.न.	घण्टा	योगाः	घण्टा	योगाः	चन्द्रराशिः	दिनमा.	सू.उ.	सू.अ.	अहर्ग.	वारः	गते	ता.	२०८१ माघ २ – १६
प्रतिपदा	बाल.	२	५१।४८	२७:३९	पुष्य	२३।५	पुष्य	१०:४०	प्री.	२५:५६	मातङ्गः	कर्कटः	१०:३६	६:५६	१७:३१	२६	बु	२	15	**श्रौतिनां वैदिकानां पूर्णमासेष्टिः,** पौराणिकानामग्निव्रतम्
द्वितीया	तैति.	३	५३।३९	२८:२३	अश्ले	२३।१२	अश्ले	११:२९	आ.	२५:१७	अमृतम्	११:२९	१०:३७	६:५६	१७:३२	२७	बृ	३	16	
तृतीया	वाणि.	४	५७।१३	२९:४९	मघा	२४।०	मघा	१२:५९	सौ.	२५:०९	काणः	सिंहः	१०:३८	६:५५	१७:३४	२८	शु	४	17	
चतुर्थी	बवम्	५	अहोरात्र	अहोरात्र	पूफ	२४।७	पूफ	१५:०७	शो.	२५:२९	लुम्बः	२१:४४	१०:३९	६:५५	१७:३४	२९	श	५	18	
पञ्चमी	कौल.	५	२।१८	७:५०	उफ	२४।१५	उफ	१७:४६	अ.	२६:१०	मित्रम्	कन्या	१०:४०	६:५५	१७:३४	३०	आ	६	19	सायनकुम्भे सूर्यः ३७।२४(२२:१९)
षष्ठी	गराजिः	६	८।२९	१०:१९	ह	२५।२	ह	२०:४६	सु.	२७:०५	वज्रम्	कन्या	१०:४१	६:५५	१७:३५	३१	सो	७	20	
सप्तमी	विष्टिः	७	१५।११	१२:५९	चि	२५।१०	चि	२३:५२	धृ.	२८:०१	ध्वाङ्क्षः	१०:१९	१०:४२	६:५५	१७:३७	३२	म	८	21	
अष्टमी	बाल.	८	२१।४६	१५:३७	स्वा	२५।१७	स्वा	२६:४९	शू.	२८:४९	धूम्रः	तुला	१०:४३	६:५४	१७:३८	३३	बु	९	22	
नवमी	तैति.	९	२७।३४	१७:५६	वि	२६।५	वि	२९:२३	ग.	२९:१८	वर्धमा.	२२:४७	१०:४४	६:५४	१७:३७	३४	बृ	१०	23	श्रवणे सूर्यः २८:२५
दशमी	वाणि.	१०	३२।०४	१९:४३	अनु	२६।१२	अनु	अहोरात्र	वृ.	२९:२०	राक्षसः	वृश्चिकः	१०:४५	६:५४	१७:३९	३५	शु	११	24	
एकादशी	बवम्	११	३४।५४	२०:५१	ज्ये	२६।२०	अनु	७:२२	ध्रु.	२८:५१	अमृतम्	वृश्चिकः	१०:४६	६:५३	१७:३९	३६	श	१२	25	पौराणिकानां षट्तिला एकादशी
द्वादशी	कौल.	१२	३५।५४	२१:१५	मू	२७।७	ज्ये	८:४२	व्या.	२७:४७	काणः	८:४२	१०:४७	६:५३	१७:४१	३७	आ	१३	26	
त्रयोदशी	गराजिः	१३	३५।०६	२०:५५	पूषा	२७।१५	मू	९:१९	ह.	२६:११	लुम्बः	धनुः	१०:४९	६:५२	१७:४२	३८	सो	१४	27	प्रदोषव्रतम् ✧ (हलो, ढिकि, जाँतो, ठेको बार्ने र निशि बार्ने दिन)
चतुर्दशी	विष्टिः	१४	३२।४१	१९:५७	उषा	२८।२	पूषा	९:१६	व.	२४:०६	मित्रम्	१५:०९	१०:५०	६:५२	१७:४२	३९	म	१५	28	लैचह्रेपूजा ● हल-कण्डनी-यन्त्रक-मन्थनीकर्म-सायम्भोजनपरिहारदिनम् ✧
अमावास्या	चतुष्.	३०	२८।५४	१८:२५	श्र	२८।१०	उषा	८:३७	सि.	२१:३५	वज्रम्	मकरः	१०:५१	६:५२	१७:४३	४०	बु	१६	29	**श्रौतिनां वैदिकानां पिण्डपितृयज्ञः, स्मार्तानां वैदिकानां दर्शश्राद्धम्,** ●

पुराणोक्त चाडपर्व ऋतुसम्बद्ध हुन्

वेदविहित चातुर्मास्यादि यज्ञ ऋतु-अनुसारका छन्। पुराणले विधान गरेका चाडपर्वहरु पनि ऋतुअनुसार मनाइने हुन्। तेसै ऋतुमा उत्पन्न हुने र तेसै ऋतुमा स्वास्थ्यकर हुने खाद्य–पदार्थको सेवन गरेर मनाउने निर्देशले पनि यो कुराको पुष्टि गर्छ। माघे संक्रान्तिमा घिउ-चाकु र तिलका लड्डु दान गर्ने र खाने कुरा शिशिर ऋतुका निम्ति विहित हो। षट्तिला एकादशी एसै समयमा पर्नुको कारण पनि तेइ हो।

गतकलिसावनाऽहर्गणः १८५८७५९।

पर्वान्तसमय र पर्वदिन— वैदिक परम्परामा जुन दिन दर्शश्राद्ध हुन्छ तेइ दिन अमावास्या मानिन्छ। त्यसको भोलिपल्ट प्रतिपदा हुन्छ र श्रौत इष्टि हुन्छ, पर्सिपल्ट द्वितीया मानिन्छ। इ तिथि लगालग निरन्तर आउँछन्। वेदमा आकाशमा हेरेर कर्म गर्ने निर्देश भएकाले आकाशको स्थितिसँग मिल्ने दृक्सिद्ध-गणनाअनुसार अमावास्याको समाप्ति लिन पर्छ। धर्मशास्त्र–निबन्ध अनुसार विचार गर्दा पनि मध्याह्नसम्म पुग्ने पूर्णिमा नभएको दिन पूर्णिमाको अनुष्ठान गर्न ग्राह्य मानिँदैन। वैदिक दृष्टिले चाहिँ पक्षमा तिथिकाल क्षय हुँदै गएका अवस्थामा चाहिँ ग्राह्य हुन्छ, वृद्धि हुँदै गएका अवस्थामा भने अग्राह्य हुन्छ।

४ २०८१।१०।७ सूर्योदयसमयको ग्रहको स्थिति र दैनिक गति

सू	९:०६:०२:१६	६१:०४	शु	१०:२२:५०:२३	५६:२३
म	३:००:२८:०१	-२३:२६	श	१०:२२:००:०७	५:५२
बु	८:२३:०३:४५	९२:२७	रा	११:०६:१७:४८	३:११
बृ	१:१७:२९:३९	-३:०७		१०।२१-२३:२१ गुरु मार्गी	

वैदिकतिथिपत्रे कलिसंवत् ५०९०, ऐन्द्राग्नं युगम् (८५–१०), वत्सरः (५) (चान्द्रः अनलः संवत्सरः ५०), उत्तरायणम्, वसन्तः ऋतुः, मधुः[चैत्रः]मासः, शुक्लः पक्षः

विक्रमसंवत् २०८१, **शकान्तसंवत् (शकसंवत्) १९४६**, बार्हस्पत्यः कालः संवत्सरः (५२), **मकरमास–कुम्भमासौ** (माघ-फागुन), **माघशुक्लपक्षः** (नेपालसंवत् ११४५ सिल्लाथ्वः=माघशुक्लपक्षः) [जनबरि-फरबरि २०२५ क्रै.]

वै.ति.	करणम्	लौ.ति.	घ.प.	घण्टा	वे.न.	मुहूर्तः	दृक्.न.	घण्टा	योगाः	घण्टा	योगाः	चन्द्रराशिः	दिनमा.	सू.उ.	सू.अ.	अहर्ग.	वारः	गते	ता.	२०८१ माघ १७ – फागुन १
प्रतिपदा	कौस्तु.	१	२४।०४	१६:२९	ध	२८।१७	श्र	७:३१ ३०:०५	व्य.	१८:४६	ध्वजः	१८:५०	१०:५२	६:५१	१७:४३	४१	बृ	१७	30	**श्रौतिनां वैदिकानां दर्शेष्टिः, वैदिकवसन्तर्तुप्रारम्भः,** पौराणिकानामग्निव्रतम्, ☾
द्वितीया	बाल.	२	१८।३३	१४:१६	शत	२९।५	शत	२८:२७	व.	१५:४४	सौम्यः	कुम्भः	१०:५४	६:५१	१७:४४	४२	शु	१८	31	☾सोनम-ह्लोसार
तृतीया	तैति.	३	१२।३७	११:५३	पूभ	२९।१२	पूभ	२६:४४	प.	१२:३५	कालद.	२१:१०	१०:५५	६:५०	१७:४५	४३	श	१९	1	**फरबरि**मासप्रारम्भः (२०२५ क्रै.)
चतुर्थी	वाणि.	४	६।३६	९:२८	उभ	अहोरात्र	उभ	२५:०३	शि.	९:२३ ३०:१४	स्थिरः	मीनः	१०:५६	६:५०	१७:४६	४४	आ	२०	2	
पञ्चमी	बवम्	५	०।४१ ५५।३	७:०५ २८:५०	उभ	०।०	रे	२३:२७	सा.	२७:११	मातङ्गः	२३:२७	१०:५८	६:४९	१७:४६	४५	सो	२१	3	**वसन्तपञ्चमी, सरस्वतीपूजा, रतिकामदेवपूजा,** लेले सरस्वतीकुण्डमेला, हल्सारो
षष्ठी	कौल.	७	४९।५०	२६:४५	रे	०।८	अ	२२:००	शु.	२४:१५	अमृतम्	मेषः	१०:५९	६:४८	१७:४७	४६	म	२२	4	**आचार्यकौण्डिन्न्यायनजन्मदिनम् पञ्चाशीतितमम्, स्कन्दषष्ठी**
सप्तमी	गराजिः	८	४५।८	२४:५१	अ	०।१५	भ	२०:४६	शु.	२१:२९	काणः	२६:२९	११:००	६:४८	१७:४९	४७	बु	२३	5	अचला सप्तमी, रथसप्तमी, मन्वादिः
अष्टमी	विष्टिः	९	४०।५९	२३:११	भ	१।३	कृ	१९:४४	ब्र.	१८:५४	लुम्बः	वृषः	११:०२	६:४७	१७:४८	४८	बृ	२४	6	भीष्माष्टमी, साँखु वज्रयोगिनी माधव-नारायण मेला, धनिष्ठासु सूर्यः ७:३४
नवमी	बाल.	१०	३७।२६	२१:४५	कृ	१।१०	रो	१८:५६	ऐ.	१६:३०	मित्रम्	३०:३८	११:०३	६:४६	१७:४९	४९	शु	२५	7	द्रोणनवमी
दशमी	तैति.	११	३४।३५	२०:३६	रो	१।१८	मृग	१८:२४	वै.	१४:१८	वज्रम्	मिथुनम्	११:०५	६:४६	१७:५१	५०	श	२६	8	शल्यदशमी
एकादशी	वाणि.	१२	३२।३०	१९:४५	मृग	२।६	आर्द्रा	१८:१०	वि.	१२:२१	ध्वाङ्क्षः	मिथुनम्	११:०६	६:४५	१७:५२	५१	आ	२७	9	पौराणिकानां भीमा एकादशी (जया एकादशी)
द्वादशी	बवम्	१३	३१।२०	१९:१७	आर्द्रा	२।१३	पुन	१८:१७	प्री.	१०:४०	धूम्रः	१२:१३	११:०८	६:४४	१७:५२	५२	सो	२८	10	पौराणिकानां भीष्मद्वादशी ✧ **कुम्भमासप्रारम्भः (फागुन) २०८२**
त्रयोदशी	कौल.	१४	३१।१४	१९:१४	पुन	३।१	पुष्य	१८:४९	आ.	९:१८	वर्धमा.	कर्कटः	११:०९	६:४४	१७:५३	५३	म	२९	11	प्रदोषव्रतम्, सौभाग्यशूर्पदानम् ○ (सिपुह्नि), कीचकवधमेला झापा ✧
चतुर्दशी	गराजिः	१५	३२।२१	१९:४०	पुष्य	३।८	अश्ले	१९:४९	सौ.	८:१८	राक्षसः	१९:४९	११:१०	६:४३	१७:५४	५४	बु	३०	12	मकरस्नानपूर्तिः, पशुपतेश्छायादर्शनम्, कुम्भे सूर्यः ३८।५१ (२२:१६)
पूर्णिमा	विष्टिः	१	३४।४९	२०:३८	अश्ले	३।१६	मघा	२१:२०	शो.	७:४२	मुसल.	सिंहः	११:१२	६:४२	१७:५४	५५	बृ	१	13	**श्रौतिनां वैदिकानाम् उपवसथः,** माघस्नानसमाप्तिः, श्रीस्वस्थानीव्रतसमाप्तिः ○

गतकलिसावनाऽहर्गणः १८५८७७४।

सुमतितन्त्र, भास्वती र खण्डखाद्यक

नेपालमा चलेका पञ्चाङ्गगणनाका आधारभूत ग्रन्थमा **सुमतितन्त्र**, **भास्वती** र **खण्डखाद्यक** प्रमुख छन्। इ ग्रन्थ पछिपछि प्रसिद्ध हुन गएको र अचेल नेपालको प.नि.वि.स.ले अनुसरण गर्नेगरेको अर्वाचीन सूर्यसिद्धान्तभन्दा छुट्टै प्राचीन सूर्यसिद्धान्तका आधारमा बनेका हुन्। सुमतितन्त्र नेपालमा प्राचीन कालमा चलेको थियो। भास्वतीमा **बलभद्र ज्योतिर्विद्** को संस्कृतव्याख्या पनि पाइन्छ। पैले एसबाट पात्रो बनाउने प्रचलन व्यापक थियो। ज्यो. राजकुमार सुवेदीको भास्वती-अनुसारको पात्रो प्रकाशित हुने गरेका थियो। ज्यो. लक्ष्मीकान्त जोशीको खण्डखाद्यकअनुसारको पात्रो **सुदूर पश्चिमाञ्चल**मा प्रचलित छ।

५ २०८१।१०।२२ सूर्योदयसमयको ग्रहको स्थिति र दैनिक गति

ग्रह	स्थिति	गति	ग्रह	स्थिति	गति
सू	९:२१:१६:३१	६०:५१	**शु**	११:०५:३६:०४	४४:४०
म	२:२५:२६:१४	-१५:३८	**श**	१०:२३:३४:१०	६:३८
बु	९:१७:१९:३७	१०२:०६	**रा**	११:०५:३०:०७	३:११
बृ	१:१७:०५:३४	-०:०५			

वैदिकतिथिपत्रे कलिसंवत् ५०९०, ऐन्द्राग्नं युगम् (८५-१०), वत्सरः (५) (चान्द्रः अनलः संवत्सरः ५०), उत्तरायणम्, वसन्तः ऋतुः, मधुः[चैत्रः] मासः, कृष्णः पक्षः

विक्रमसंवत् **२०८१**, **शकान्तसंवत् (शकसंवत्) १९४६**, बार्हस्पत्यः कालः संवत्सरः (५२), **कुम्भमासः** (फागुन), **फाल्गुनकृष्णपक्षः** (नेपालसंवत् ११४५ सिल्लागाः=माघकृष्णपक्षः)[फरबरि २०२५ क्रैस्ताब्दः]

वै.ति.	करणम्	लौ.ति.	घ.प.	घण्टा	वे.न.	मुहूर्तः	दृक्.न.	घण्टा	योगाः	घण्टा	योगाः	चन्द्रराशिः	दिनमा.	सू.उ.	सू.अ.	अहर्ग.	वारः	गते	ता.	२०८१ फागुन २ – १५
प्रतिपदा	बाल.	२	३८।३९	२२:०९	मघा	४।४	पूफ	२३:२३	अ.	७:३०	सिद्धिः	२९:५८	११:१३	६:४१	१७:५४	५६	शु	२	14	**श्रौतिनां वैदिकानां पूर्णमासेष्टिः,** पौराणिकानामग्निव्रतम्
द्वितीया	तैति.	३	४३।४४	२४:१०	पूफ	४।११	उफ	२५:५४	सु.	७:४३	उत्पातः	कन्या	११:१५	६:४०	१७:५५	५७	श	३	15	
तृतीया	वाणि.	४	४९।४८	२६:३५	उफ	४।१९	ह	२८:४७	धृ.	८:१७	मानसम्	कन्या	११:१६	६:४०	१७:५६	५८	आ	४	16	
चतुर्थी	बवम्	५	५६।२७	२९:१४	ह	५।६	चि	अहोरात्र	शू.	९:०७	मुद्गरः	१८:१९	११:१८	६:३९	१७:५६	५९	सो	५	17	
पञ्चमी	कौल.	६	अहोरात्र	अहोरात्र	चि	५।१४	चि	७:५२	ग.	१०:०५	ध्वाङ्क्षः	तुला	११:२०	६:३८	१७:५७	६०	म	६	18	सायनमीने सूर्यः ८।३ (१०:१९), सौर वसन्त ऋतुको आरम्भ
षष्ठी	गराजिः	६	३।०८	७:५३	स्वा	६।२	स्वा	१०:५६	वृ.	११:०१	धूम्रः	तुला	११:२१	६:३७	१७:५८	६१	बु	७	19	शतभिषजि सूर्यः १२:०४
सप्तमी	विष्टिः	७	९।१५	१०:१८	वि	६।९	वि	१३:४६	ध्रु.	१:४७	वर्धमा.	७:०६	११:२३	६:३६	१७:५९	६२	बृ	८	20	
अष्टमी	बाल.	८	१४।१४	१२:१७	अनु	६।१७	अनु	१६:०९	व्या.	१२:११	राक्षसः	वृश्चिकः	११:२४	६:३५	१८:००	६३	शु	९	21	
नवमी	तैति.	९	१७।३९	१३:३८	ज्ये	७।४	ज्ये	१७:५५	ह.	१२:०८	मुसल.	१७:५५	११:२६	६:३४	१८:०१	६४	श	१०	22	◉ (हलो, ढिकि, जाँतो, ठेकोबार्ने र निशिबार्ने दिन), द्वापरयुगादिः
दशमी	वाणि.	१०	१९।१२	१४:१५	मू	७।१२	मू	१८:५८	व.	११:३१	सिद्धिः	धनुः	११:२७	६:३३	१८:०१	६५	आ	११	23	● हल-कण्डनी-यन्त्रक-मन्थनीकर्म-सायम्भोजन-परिहारदिनम् ◉
एकादशी	बवम्	११	१८।४६	१४:०३	पूषा	८।०	पूषा	१९:१४	सि.	१०:१७	उत्पातः	२५:११	११:२९	६:३२	१८:०२	६६	सो	१२	24	पौराणिकानां विजया एकादशी
द्वादशी	कौल.	१२	१६।२४	१३:०६	उषा	८।७	उषा	१८:४६	व्य.	८:२७ ३०:०३	मानसम्	मकरः	११:३१	६:३२	१८:०२	६७	म	१३	25	
त्रयोदशी	गराजिः	१३	१२।१९	११:२७	श्र	८।१५	श्र	१७:३८	प.	२७:१०	छत्रम्	२८:५२	११:३२	६:३१	१८:०३	६८	बु	१४	26	प्रदोषव्रतम्, **महाशिवरात्रिः** (सिलाचह्रे पूजा)
अमावास्या	चतुष्.	१४	६।४७	९:१३	ध	९।२	ध	१५:५९	शि.	२३:५४	श्रीवत्सः	कुम्भः	११:३४	६:३०	१८:०४	६९	बृ	१५	27	**श्रौतिनां वैदिकानां पिण्डपितृयज्ञः, स्मार्तानां वैदिकानां दर्शश्राद्धम्,** ●

गतकलिसावनाऽहर्गणः १८५८७८९।

वैदिक तिथिव्यवस्थाको विशेष कुरा— वैदिक कालगणनासिद्धान्तमा तिथिहरुका कृत्यहरु एकएक दिनमा क्रमशः गर्न पर्ने व्यवस्था पाइन्छ । **"चतुरहे पुरस्तात् पौर्णमास्यै दीक्षेरन्, तेषामेकाष्टकायां क्रयः सम्पद्यते"** (तैत्तिरीयसंहिता ७।४।८), **"गवामयनायैकाष्टकायां दीक्षा, फल्गुनी–पौर्णमासे, चैत्र्याम्, चतुरहे वा पुरस्तात् प्राक् पौर्णमास्याः"** (कात्यायनश्रौतसूत्र १३।१।२–५) इत्यादि वचनमा विशेष विचार गर्दा इ वचनको विशिष्ट तात्पर्यार्थ र प्रबलता समेत देखिएकाले अमावास्या निश्चित भएपछि तेसभन्दा अगिल्लो तिथिको कर्म तेसका अगिल्ला दिनमा गर्न पर्ने गरी निर्धारित हुने देखिन आएको छ। शासकीय कार्यहरूमा चलेको **कैथी मितिपत्र**मा लोकव्यवहारमा चतुर्दशी टुट्ता अमावास्याका दिनमा चतुर्दशी मान्ने कुरा पाइन्छ। धार्मिक अनुष्ठानका दृष्टिले **पुरस्तात्** भन्ने वचन प्रबल हुने हुँदा अगिल्लो दिन अनुष्ठान गर्न पर्ने देखिन्छ।

६ २०८१।११।७ सूर्योदयसमयको ग्रहको स्थिति र दैनिक गति

सू	१०:०६:२६:२१	६०:३१	शु	११:१४:२३:११	२३:४४
म	२:२२:५९:२७	-३:५२	श	१०:२५:१७:४२	७:०८
बु	१०:१४:११:५२	१११:२९	रा	११:०४:४२:२७	३:११
बृ	१:१७:२७:०४	२:५५			

११।१२-२४:०७ मङ्गल मार्गी

११।१३-१०:२३ बुध प. उदय ११।१७-९:४३ शुक्र वक्री

वैदिकतिथिपत्रे कलिसंवत् ५०९०, ऐन्द्राग्नं युगम् (८५–१०), वत्सरः (५) (चान्द्रः अनलः संवत्सरः ५०), उत्तरायणम्, वसन्तः ऋतुः, माधवः [वैशाखः] मासः, शुक्लः पक्षः

विक्रमसंवत् २०८१, शकान्तसंवत् (शकसंवत्) १९४६, बार्हस्पत्यः कालः संवत्सरः (५२), **कुम्भमास-मीनमासौ** (फागुन-चइत), **फाल्गुनशुक्लपक्षः** (नेपालसंवत् ११४५ चिल्लाथ्वः=फाल्गुनशुक्लपक्षः) [फरबरि-मार्च २०२५ क्रै.]

वै.ति.	करणम्	लौ.ति.	घ.प.	घण्टा	वे.न.	मुहूर्तः	दृक्.न.	घण्टा	योगाः	घण्टा	योगाः	चन्द्रराशिः	दिनमा.	सू.उ.	सू.अ.	अहर्ग.	वारः	गते	ता.	**२०८१ फागुन १६ – चइत १**
प्रतिपदा	कौस्तु.	३०	०।९ ५२।४३	६:३३ २७:३४	शत	९।१०	श	१३:५६	सि.	२०:२०	सौम्यः	३०:१३	११:३५	६:२९	१८:०३	७०	शु	१६	28	**श्रौतिनां वैदिकानां दर्शेष्टिः,** पौराणिकानामग्निव्रतम्, **ग्याल्बो लोसार,** *ऋतुअनुसार* ☾
द्वितीया	बाल.	२	४४।५७	२४:२७	पूभ	९।१८	पूभ	११:३७	सा.	१६:३७	कालद.	मीनः	११:३७	६:२८	१८:०४	७१	श	१७	1	**मार्च**मासप्रारम्भः (२०२५ क्रै.)
तृतीया	तैति.	३	३७।०८	२१:१८	उभ	१०।५	उभ	९:१३	शु.	१२:५१	स्थिरः	मीनः	११:३९	६:२७	१८:०५	७२	आ	१८	2	☾ *नेपाल र भारतका कतिपय स्थानमा मनाइने* ***वासन्त नवरात्रको आरम्भ***
चतुर्थी	वाणि.	४	२९।३७	१८:१७	रे	१०।१३	रे	६:५२ २८:४१	शु.	९:०७ २९:३४	मातङ्गः	६:५२	११:४०	६:२६	१८:०६	७३	सो	१९	3	पूर्वभद्रपदयोः सूर्यः ३०:२२
पञ्चमी	बवम्	५	२२।४३	१५:३०	अ	११।०	भ	२६:४८	ऐ.	२६:१५	मुसल.	मेषः	११:४२	६:२४	१८:०७	७४	म	२०	4	
षष्ठी	कौल.	६	१६।४०	१३:०४	भ	११।८	कृ	२५:१८	वै.	२३:१५	सिद्धिः	८:२३	११:४३	६:२३	१८:०७	७५	बु	२१	5	
सप्तमी	गराजिः	७	११।४१	११:०३	कृ	११।१६	रो	२४:१६	वि.	२०:३७	उत्पातः	वृषः	११:४५	६:२२	१८:०८	७६	बृ	२२	6	↗ ***चैत्राष्टमी*** *[चैते दसैँ]*
अष्टमी	विष्टिः	८	७।५६	९:३२	रो	१२।३	मृग	२३:४४	प्री.	१८:२४	मानसम्	११:५६	११:४७	६:२१	१८:०७	७७	शु	२३	7	चीरोत्थापनं होलिकारम्भः, ***ऋतुअनुसार नेपाल-भारतमा कतिपय स्थानमा मनाइने*** ↗
नवमी	बाल.	९	५।२८	८:३२	मृग	१२।११	आर्द्रा	२३:४३	आ.	१६:३५	मुद्गरः	मिथुनम्	११:४८	६:२०	१८:०८	७८	श	२४	8	☼ **नजिकको राशिसङ्क्रान्ति,** मीने सूर्यः ३२।४ (१९:८)
दशमी	तैति.	१०	४।१९	८:०३	आर्द्रा	१२।१९	पुन	२४:११	सौ.	१५:११	ध्वजः	१८:०१	११:५०	६:१९	१८:०९	७९	आ	२५	9	☐ वैशाखस्नानारम्भः, **मीनमासप्रारम्भः (चइत) २०८२, विषुवत्समयको** ☼
एकादशी	वाणि.	११	४।२५	८:०५	पुन	१३।६	पुष्य	२५:०८	शो.	१४:१०	धाता	कर्कटः	११:५२	६:१८	१८:१०	८०	सो	२६	10	पौराणिकानाम् आमलकी एकादशी
द्वादशी	बवम्	१२	५।४३	८:३५	पुष्य	१३।१४	अश्ले	२६:३२	अ.	१३:३१	आनन्दः	२६:३२	११:५३	६:१७	१८:१०	८१	म	२७	11	गोविन्दद्वादशी ○ **विषुवत्समयको नजिकको पूर्णिमा,** मन्वादिः, ☐
त्रयोदशी	कौल.	१३	८।०९	९:३२	अश्ले	१४।१	मघा	२८:२१	सु.	१३:१३	चरः	सिंहः	११:५५	६:१६	१८:१०	८२	बु	२८	12	प्रदोषव्रतम्, **बार्हस्पत्य-सिद्धार्थि(५३)-संवत्सर-प्रारम्भः**
चतुर्दशी	गराजिः	१४	११।४०	१०:५५	मघा	१४।९	पूफ	अहोरात्र	धृ.	१३:१५	गदः	सिंहः	११:५६	६:१५	१८:११	८३	बृ	२९	13	रात्रौ चीरदाहः, **पाहाडि भागमा होलि, थकाली तोरन्ल पर्व**
पूर्णिमा	विष्टिः	१५	१६।१०	१२:४२	पूफ	१४।१७	पूफ	६:३४	शू.	१३:३५	सिद्धिः	१३:११	११:५८	६:१४	१८:१२	८४	शु	१	14	**श्रौतिनां वैदिकानाम् उपवसथः,** होलाका, फागुपूर्णिमा (होलि पुह्नि), ○

गतकलिसावनाऽहर्गणः १८५८८०३।

अयनहरु नै देवताका दिन-रात

दैवे रात्र्यहनी वर्षं प्रविभागस् तयोः पुनः। अहस्तत्रोदगयनं रात्रिः स्याद् दक्षिणायनम्॥ मानिसको एक वर्ष देवताहरुको रातदिन हो, रात-दिनको विभागमा उदगयन देवताहरुको दिन हो र दक्षिणायन देवताहरुको रात हो। —*मनुस्मृति १।६७।*

<u>वसन्त ऋतुको चर्या</u>— वसन्त ऋतुमा न तातो न चिसो बतास चल्छ। अतः धेरै बाक्लो नभएको ठिक्कको लुगा लगाउनुपर्छ। मनतातो पानि खाने गर्नुपर्छ। हितकारी हल्का भोजन गर्नुपर्छ।

७ २०८१।११।२२ सूर्योदयसमयको ग्रहको स्थिति र दैनिक गति

सू	१०:२१:३०:१७	६०:०५	शु	११:१६:१९:२६	-९:५९
म	२:२३:२५:१७	६:५३	श	१०:२७:०६:४४	७:२२
बु	११:०९:२५:१३	७४:००	रा	११:०३:५४:४८	३:११
बृ	१:१८:३१:२२	५:३६	**१२।१-२१:३५ बुध वक्री**		

१२।३-२४:४० बुध प. अस्त

वैदिकतिथिपत्रे कलिसंवत् ५०९०, ऐन्द्राग्नं युगम् (८५-१०), वत्सरः (५) (चान्द्रः अनलः संवत्सरः ५०), उत्तरायणम्, वसन्तः ऋतुः, माधवः[वैशाखः] मासः, कृष्णः पक्षः

विक्रमसंवत् **२०८१** शकान्तसंवत् (शकसंवत्) १९४६, बार्हस्पत्यः सिद्धार्थी संवत्सरः (५३), **मीनमासः** (चइत), **चैत्रकृष्णपक्षः** (नेपालसंवत् ११४५ चिल्लागाः=फाल्गुनकृष्णपक्षः)[मार्च २०२५ क्रैस्ताब्दः]

वै.ति.	करणम्	लौ.ति.	घ.प.	घण्टा	वे.न.	मुहूर्तः	दृक्.न.	घण्टा	योगाः	घण्टा	योगाः	चन्द्रराशिः	दिनमा.	सू.उ.	सू.अ.	अहर्ग.	वारः	गते	ता.	२०८१ चइत २ – १६
प्रतिपदा	**बाल.**	**१**	२१।३५	१४:५१	**उफ**	**१५।४**	**उफ**	**९:०८**	ग.	१४:११	उत्पातः	कन्या	१२:००	६:१३	१८:१३	८५	**श**	**२**	**15**	**श्रौतिनां वैदिकानां पूर्णमासेष्टिः,** पौराणिकानाम् अग्निव्रतम्, गणगौरपूजाप्रारम्भ, ❍
द्वितीया	**तैति.**	**२**	२७।४१	१७:१७	**ह**	**१५।१२**	**ह**	**११:५९**	वृ.	१५:००	मानसम्	२५:३०	१२:०१	६:१२	१८:१३	८६	**आ**	**३**	**16**	❍ नाला मत्स्येन्द्रनाथस्नान (नालाह्नवँ)
तृतीया	**वाणि.**	**३**	३४।१३	१९:५२	**चि**	**१५।१९**	**चि**	**१५:०२**	ध्रु.	१५:५७	मुद्गरः	तुला	१२:०३	६:१०	१८:१३	८७	**सो**	**४**	**17**	नाला मत्स्येन्द्रनाथरथयात्रा (नालायात्रा), उत्तरभद्रपदयोः सूर्यः २६:४८
चतुर्थी	**बवम्**	**४**	४०।४९	२२:३०	**स्वा**	**१६।७**	**स्वा**	**१८:०८**	व्या.	१६:५६	ध्वजः	तुला	१२:०५	६:०९	१८:१४	८८	**म**	**५**	**18**	मङ्गलचतुर्थी
पञ्चमी	**कौल.**	**५**	४७।०४	२४:५८	**वि**	**१६।१५**	**वि**	**२१:०७**	ह.	१७:५१	धाता	१४:२३	१२:०६	६:०८	१८:१४	८९	**बु**	**६**	**19**	**☼ सायनमेषे सूर्यः ३।५४ (८:९), शुक्रको पश्चिमतिर अस्त ३५।४८ (२०:२६)**
षष्ठी	**गराजिः**	**६**	५२।२८	२७:०७	**अनु**	**१७।२**	**अनु**	**२३:४९**	व.	१८:३३	आनन्दः	वृश्चिकः	१२:०८	६:०७	१८:१६	९०	**बृ**	**७**	**20**	**दृक्सिद्ध-वैदिक-वासन्त-विषुवदिनम् (वसन्त ऋतुको दिन-रात बराबर हुने समय) ☼**
सप्तमी	**विष्टिः**	**७**	५६।३८	२८:४६	**ज्ये**	**१७।१०**	**ज्ये**	**२६:०३**	सि.	१८:५६	चरः	२६:०३	१२:१०	६:०६	१८:१६	९१	**शु**	**८**	**21**	
अष्टमी	**बाल.**	**८**	५९।०८	२९:४५	**मू**	**१७।१८**	**मू**	**२७:४१**	व्य.	१८:५०	गदः	धनुः	१२:११	६:०५	१८:१६	९२	**श**	**९**	**22**	गोरखकालीपूजा, अष्टमीव्रतम्, शीतलाष्टमी (दुदु च्याँच्याँ)
नवमी	**तैति.**	**९**	५९।४५	२९:५८	**पूषा**	**१८।५**	**पूषा**	**२८:३५**	व.	१८:१२	शुभः	धनुः	१२:१३	६:०४	१८:१७	९३	**आ**	**१०**	**23**	
दशमी	**वाणि.**	**१०**	५८।२२	२९:२४	**उषा**	**१८।१३**	**उषा**	**२८:४२**	प.	१६:५७	मृत्युः	१०:४१	१२:१४	६:०३	१८:१७	९४	**सो**	**११**	**24**	**शुक्रको पूर्वतिर उदय २३।१२ (१५:२०)**
एकादशी	**बवम्**	**११**	५५।०१	२८:०३	**श्र**	**१८।०**	**श्र**	**२८:०३**	शि.	१५:०५	लुम्बः	मकरः	१२:१६	६:०२	१८:१८	९५	**म**	**१२**	**25**	पौराणिकानां पापमोचनी एकादशी
द्वादशी	**कौल.**	**१२**	४९।५४	२५:५९	**ध**	**१९।८**	**ध**	**२६:४२**	सि.	१२:३६	मित्रम्	१५:२८	१२:१८	६:००	१८:१९	९६	**बु**	**१३**	**26**	⊙ (हलो, ढिकि, जाँतो, ठेको बार्ने र निशि बार्ने दिन), **अश्वयात्रा (घोडे जात्रा)**
त्रयोदशी	**गराजिः**	**१३**	४३।१७	२३:१९	**शत**	**१९।१६**	**शत**	**२४:४६**	सा.	९:३५	वज्रम्	कुम्भः	१२:१९	५:५९	१८:१८	९७	**बृ**	**१४**	**27**	प्रदोषव्रतम् ● हल-कण्डनी-यन्त्रक-मन्थनीकर्म-सायम्भोजन-परिहारदिनम् ⊙
चतुर्दशी	**विष्टिः**	**१४**	३५।३०	२०:११	**पूभ**	**२०।३**	**पूभ**	**२२:२२**	शु.	६:०६ २६:१७	ध्वाङ्क्षः	१७:००	१२:२१	५:५८	१८:१९	९८	**शु**	**१५**	**28**	पिशाचचतुर्दशी (पाशाचह्रेपूजा)
अमावास्या	**चतुष्.**	**३०**	२६।५५	१६:४४	**एभा**	**२०।११**	**उभ**	**१९:४०**	ब्र.	२२:१४	धूम्रः	मीनः	१२:२३	५:५७	१८:२०	९९	**श**	**१६**	**29**	**श्रौतिनां वैदिकानां पिण्डपितृयज्ञः, स्मार्तानां वैदिकानां दर्शश्राद्धम्, ●**

गतकलिसावनाऽहर्गणः १८५८८१८।

कृच्छ्रहरुका अनुकल्पहरु— वैदिक शास्त्रमा प्रायश्चित्तका निम्ति कृच्छ्रहरु गर्ने निर्देश छ। ति कृच्छ्र गर्न पर्नेमा ति कृच्छ्र गर्न नसकेमा शास्त्रअनुसार गोदान गर्ने निर्देश छ। प्राजापत्य-कृच्छ्र गर्न पर्नेमा एउटा गाइ, सान्तपन-कृच्छ्र गर्न पर्नेमा दुइटा गाइ, पराक-कृच्छ्र वा तप्त-कृच्छ्र गर्न पर्नेमा तिन ओडा गाइ, चान्द्रायण-कृच्छ्र गर्न पर्नेमा आठ ओडा गाइ ब्राह्मणलाइ दान गरिदिए पनि हुञ्छ भन्ने कुरा स्मृतिवचनबाट देखिञ्छ। गाइ नभएमा गाइको मूल्य र त्यो नसकेमा तेसको आदासम्म दिए पनि हुञ्छ भन्ने वचन छ। एक गाइ दिन पर्नेमा बार जाना ब्राह्मणलाइ भोजन गराए पनि हुञ्छ (याज्ञ.स्मृ.-मिताक्षरा ३।३२६)।

८ २०८१।१२।७ सूर्योदयसमयको ग्रहको स्थिति र दैनिक गति

सू	११:०५:२७:४१	५९:३८	**शु**	११:१०:२२:५१	-३६:४५
म	२:२५:५८:१६	१४:३८	**श**	१०:२८:५०:०४	७:२२
बु	११:१३:५५:४७	-३५:२१	**रा**	११:०३:१०:१९	३:११
बृ	१:२०:०५:१५	७:४५	**१२।७-२०:२६ शुक्र प. अस्त**		

१२।११-१५:२० शुक्र पू. उदय १२।१८-२९:१३ बुध पू. उदय

वैदिकतिथिपत्रे कलिसंवत् ५०९०, ऐन्द्राग्नं युगम् (८५-१०), वत्सरः (५) (चान्द्रः अनलः संवत्सरः ५०), उत्तरायणम्, ग्रीष्मः ऋतुः, शुक्रः [ज्येष्ठः] मासः, शुक्लः पक्षः

विक्रमसंवत् **२०८१**, शकान्तसंवत् (शकसंवत्) १९४७, बार्हस्पत्यः सिद्धार्थी संवत्सरः (५३), **मीनमासः** (चइत), **चैत्रशुक्लपक्षः** (नेपालसंवत् ११४५ चौलाथ्वः=चैत्रशुक्लपक्षः) [मार्च-अप्रिल २०२५ क्रैस्ताब्दः]

वै.ति.	करणम्	लौ.ति.	घ.प.	घण्टा	वे.न.	मुहूर्तः	दृक्.न.	घण्टा	योगाः	घण्टा	योगाः	चन्द्रराशिः	दिनमा.	सू.उ.	सू.अ.	अहर्ग.	वारः	गते	ता.	२०८१ चइत १७ – ३१
प्रतिपदा	कौस्तु.	१	१७।५५	१३:०६	रे	२०।१९	रे	१६:४९	ऐ.	१८:०५	वर्धमा.	१६:४९	१२:२४	५:५६	१८:२१	१००	आ	१७	30	**श्रौतिनां वैदिकानां दर्शेष्टिः,** पौराणिकानामग्निव्रतम्, **वैदिकग्रीष्मर्तुप्रारम्भः** ☾
द्वितीया	बाल.	२	८।५३	९:२९	अ	२१।६	अ	१४:००	वै.	१३:५८	राक्षसः	मेषः	१२:२६	५:५५	१८:२०	१०१	सो	१८	31	रेवत्यां सूर्यः १३:३८ ☾ **वासन्त-नवरात्रारम्भः,** चोभार आदिनाथस्नान
तृतीया	तैति.	३	०।१४ ५२।१७	६:०० २६:४९	भ	२१।१४	भ	११:२१	वि.	१०:००	मुसल.	१६:४४	१२:२७	५:५४	१८:२१	१०२	म	१९	1	मत्स्यजयन्ती, कीर्तिपुरे मत्स्यग्रामे (मच्छेगाउँमा) मत्स्यनारायणमेला, □
चतुर्थी	वाणि.	५	४५।३०	२४:०५	कृ	२२।१	कृ	९:०३	प्री.	६:१८ २७:००	सिद्धिः	वृषः	१२:२९	५:५३	१८:२२	१०३	बु	२०	2	□ गौरीव्रतम्, मन्वादिः, लौ.ति. मङ्गलचतुर्थी, **अप्रिल**मासप्रारम्भः (२०२५ क्रै.)
पञ्चमी	बवम्	६	४०।०८	२१:५६	रो	२२।९	रो	७:१४	सौ.	२४:१०	उत्पातः	१८:३३	१२:३१	५:५२	१८:२३	१०४	बृ	२१	3	
षष्ठी	कौल.	७	३६।२८	२०:२६	मृग	२२।१७	मृग	६:०२ २९:३१	शो.	२१:५३	मानसम्	मिथुनम्	१२:३२	५:५१	१८:२२	१०५	शु	२२	4	
सप्तमी	गराजिः	८	३४।३६	१९:४०	आर्द्रा	२३।४	पुन	२९:४३	अ.	२०:१२	छत्रम्	२३:३६	१२:३४	५:५०	१८:२४	१०६	श	२३	5	लौ.ति. चैते दसैँ, शन्यष्टमी ✧ रथयात्रा (**जमया**), लौ.ति. रामनवमी
अष्टमी	विष्टिः	९	३४।३४	१९:३९	पुन	२३।१२	पुष्य	अहोरात्र	सु.	१९:०५	श्रीवत्सः	कर्कटः	१२:३६	५:४८	१८:२३	१०७	आ	२४	6	**वै.ति. चैत्राष्टमी (चैते दसैँ)**, गोरखकालीपूजा, अष्टमीव्रतम्, श्रीश्वेतमत्स्येन्द्रनाथ- ✧
नवमी	बाल.	१०	३६।१५	२०:१८	पुष्य	२३।१९	पुष्य	६:३८	धृ.	१८:३०	धाता	कर्कटः	१२:३७	५:४७	१८:२५	१०८	सो	२५	7	**रामनवमी**
दशमी	तैति.	११	३९।२४	२१:३२	अश्ले	२४।७	अश्ले	८:१०	शू.	१८:२३	आनन्दः	८:१०	१२:३९	५:४६	१८:२६	१०९	म	२६	8	
एकादशी	वाणि.	१२	४३।४६	२३:१६	मघा	२४।१५	मघा	१०:१३	ग.	१८:३९	चरः	सिंहः	१२:४०	५:४५	१८:२५	११०	बु	२७	9	पौराणिकानां कामदा एकादशी
द्वादशी	बवम्	१३	४९।०२	२५:२१	पूफ	२५।२	पूफ	१२:४१	वृ.	१९:१२	गदः	१९:२१	१२:४२	५:४४	१८:२६	१११	बृ	२८	10	
त्रयोदशी	कौल.	१४	५४।५६	२७:४२	उफ	२५।१०	उफ	१५:२७	ध्रु.	१९:५८	शुभः	कन्या	१२:४३	५:४३	१८:२६	११२	शु	२९	11	प्रदोषव्रतम्, महावीरजयन्ती
चतुर्दशी	गराजिः	१५	अहोरात्र	अहोरात्र	ह	२५।१८	ह	१८:२४	व्या.	२०:५३	मृत्युः	कन्या	१२:४४	५:४२	१८:२७	११३	श	३०	12	लौ.ति. पूर्णिमाव्रतम् ○ (ह्लुतिपुह्नि), मेषे अश्वयुजोः सूर्यः ५४।४७ (२७:३६)
पूर्णिमा	विष्टिः	१५	१।१६	६:१२	चि	२६।५	चि	२१:२६	ह.	२१:५१	पद्मम्	७:५५	१२:४६	५:४२	१८:२७	११४	आ	३१	13	**श्रौतिनां वैदिकानामुपवसथः,** मन्वादिः, हनुमज्जयन्ती, **बालाजुबाइसधारामेला** ○

गतकलिसावनाऽहर्गणः १८५८८३३।

प्रायश्चित्त गरेपछि भावना पनि शुद्ध हुनुपर्छ— कुनै शास्त्रनिषिद्ध काम गर्नेले प्रायश्चित्त गर्न पर्छ। वेदमा पनि प्रायश्चित्तको व्यवस्था पाइन्छ। प्रायश्चित्त गरि भावना शुद्ध भएमा शुद्ध हुन्छन्, भावना शुद्ध नभएमा त शुद्ध हुँदैनन् भन्ने कुरा शास्त्रमा पाँइन्छ। एस कुरामा सबै सनातनिहरुले ध्यान दिन पर्छ। एस कुरामा स्मृति-पुराणहरुले अत्यन्तै जोड दिएका छन्—

विशुद्धभावे शुद्धाः स्युरशुद्धे तु सरागिणः।—वासिष्ठधर्मसूत्र २७।१५।

यथायथा मनस् तस्य दुष्कृतं कर्म गर्हति। तथातथा शरीरं तत् तेनाऽधर्मेण मुच्यते॥—मनुस्मृति ११।२२९।

१ २०८१।१२।२२ सूर्योदयसमयको ग्रहको स्थिति र दैनिक गति

सू	११:२०:१७:४०	५९:०८	**शु**	११:०२:०५:५८	-२१:४५
म	३:००:२५:३५	२०:३९	**श**	११:००:३८:५३	७:०७
बु	११:०३:११:२५	-१९:०४	**रा**	११:०२:२२:३९	३:११
बृ	१:२२:१६:०७	९:३८		**१२।२६-२४:५१ बुध मार्गी**	

१२।३०-१८:२३ शुक्र मार्गी

वैदिकतिथिपत्रे कलिसंवत् ५०९०, ऐन्द्राग्नं युगम् (८५-१०), वत्सरः (५) (चान्द्रः अनलः संवत्सरः ५०), उत्तरायणम्, ग्रीष्मः ऋतुः, शुक्रः [ज्येष्ठः] मासः, कृष्णः पक्षः

विक्रमसंवत् २०८२, शकान्तसंवत् (शकसंवत्) १९४७, बार्हस्पत्यः सिद्धार्थी संवत्सरः (५३), **मेषमासः** (वैशाख), **वैशाखकृष्णपक्षः** (नेपालसंवत् ११४५ चौलागाः=चैत्रकृष्णपक्षः) [अप्रिल २०२५ क्रैस्ताब्दः]

वै.ति.	करणम्	लौ.ति.	घ.प.	घण्टा	वे.न.	मुहूर्तः	दृक्.न.	घण्टा	योगाः	घण्टा	योगाः	चन्द्रराशिः	दिनमा.	सू.उ.	सू.अ.	अहर्ग.	वारः	गते	ता.	२०८२ वैशाख १-१४
प्रतिपदा	बाल.	१	७।४०	८:४५	स्वा	२६।१२	स्वा	२४:२९	व.	२२:५०	छत्रम्	तुला	१२:४७	५:४१	१८:२८	११५	सो	१	14	**श्रौतिनां वैदिकानां पूर्णमासेष्टिः,** पौराणिकानाम् अग्निव्रतम्, ☼
द्वितीया	तैति.	२	१३।५९	११:१५	वि	२६।२०	वि	२७:२६	सि.	२३:४५	श्रीवत्सः	१६:४२	१२:४९	५:४०	१८:२८	११६	म	२	15	☼ **मेषमासप्रारम्भः (वैशाख) २०८२**
तृतीया	वाणि.	३	१९।५६	१३:३७	अनु	२७।७	अनु	अहोरात्र	व्य.	२४:३०	सौम्यः	वृश्चिकः	१२:५१	५:३८	१८:२९	११७	बु	३	16	साँखुयात्रा (सकोयाः)
चतुर्थी	बवम्	४	२५।१६	१५:४४	ज्ये	२७।१५	अनु	६:११	व.	२५:०३	आनन्दः	वृश्चिकः	१२:५२	५:३७	१८:३०	११८	बृ	४	17	
पञ्चमी	कौल.	५	२९।४१	१७:२९	मू	२८।२	ज्ये	८:३८	प.	२५:१७	चरः	८:३८	१२:५४	५:३६	१८:३०	११९	शु	५	18	
षष्ठी	गराजिः	६	३२५२	१८:४४	पूषा	२८।१०	मू	१०:३९	शि.	२५:०७	गदः	धनुः	१२:५५	५:३६	१८:३१	१२०	श	६	19	सायनवृषे सूर्यः ३३।४ (१९:१३), सौर ग्रीष्म ऋतुको आरम्भ
सप्तमी	विष्टिः	७	३४।३३	१९:२४	उषा	२८।१७	पूषा	१२:०७	सि.	२४:२८	शुभः	१८:२३	१२:५७	५:३५	१८:३१	१२१	आ	७	20	रविसप्तमी
अष्टमी	बाल.	८	३४।२९	२०:२१	श्र	२९।५	उषा	१२:५६	सा.	२३:१६	मृत्युः	मकरः	१२:५८	५:३४	१८:३२	१२२	सो	८	21	**छन्द-दिवस**
नवमी	तैति.	९	३२।३३	१८:३४	ध	२९।१२	श्र	१३:०२	शु.	२१:२७	लुम्बः	२४:४८	१३:००	५:३३	१८:३२	१२३	म	९	22	■ **(आमाको मुख हेर्ने दिन)**, भरणीषु सूर्यः १८:४७
दशमी	वाणि.	१०	२८।४५	१७:०२	शत	अहोरात्र	ध	१२:२३	शु.	१९:०३	मित्रम्	कुम्भः	१३:०१	५:३२	१८:३३	१२४	बु	१०	23	⊙ (हलो, ढिकि, जाँतो, ठेको बार्ने र निशि बार्ने दिन), **मातृसम्मानदिवस** ■
एकादशी	बवम्	११	२३।१३	१४:४८	शत	०।१	शत	११:०२	ब्र.	१६:०५	वज्रम्	२७:३७	१३:०३	५:३१	१८:३३	१२५	बृ	११	24	पौराणिकानां वरूथिनी एकादशी
द्वादशी	कौल.	१२	१६।११	११:५८	पूभ	०।८	पूभ	९:०४	ऐ.	१२:३९	ध्वाङ्क्षः	मीनः	१३:०४	५:३०	१८:३४	१२६	शु	१२	25	● हल-कण्डनी-यन्त्रक-मन्थनीकर्म-सायम्भोजन-परिहारदिनम् ⊙
त्रयोदशी	गराजिः	१३	७।५९ ५८।५३	८:४० २९:०३	उभ	०।१५	उभ	६:३७ २७:४९	वै.	८:४९ २८:४३	धूम्रः	२७:४९	१३:०६	५:२९	१८:३५	१२७	श	१३	26	प्रदोषव्रतम्, शनित्रयोदशी
अमावास्या	चतुष्.	३०	४९।२४	२५:१५	रे	१।३	अ	२४:५०	प्री.	२४:२८	वर्धमा.	मेषः	१३:०७	५:२८	१८:३५	१२८	आ	१४	27	**श्रौतिनां वैदिकानां पिण्डपितृयज्ञः, स्मार्तानां वैदिकानां दर्शश्राद्धम्,** ●

गतकलिसावनाऽहर्गणः १८५८८४८।

प्रस्तुत वैदिकतिथिपत्रमा **'घण्टा'** भन्नाले बजे बुज्न पर्छ। दिउसो १, २, ३, ४, ५ ... बजेको समयलाइ १३, १४, १५, १६, १७ ... घण्टा (बजे) र अर्ध-रात्रिपछिको सूर्योदय नभएसम्मको १, २, ३, ४, ५ ... बजेको समयलाइ २५, २६, २७, २८, २९ ... घण्टा (बजे) भनेर जनाइएको छ। मुहूर्त र कलाका बिचमा तथा घडि र पलाका बिचमा ठाडो धर्सो (।) चिह्न दिइएको छ भने बजेमा घण्टा र मिनेटका बिचमा दुइ थोप्ला (:) चिह्न दिइएको छ। एस तिथिपत्रमा नक्षत्र इत्यादिको समय दिँदा समाप्तिको समय दिइएको छ। जस्तै- स्वा २४:२९ को अर्थ स्वाति नक्षत्र राति १२ बजेर २९ मिनेटमा समाप्त हुञ्छ र विशाखा नक्षत्र लाग्छ भन्ने हो।

१० २०८२।१।७ सूर्योदयसमयको ग्रहको स्थिति र दैनिक गति

सू	०:०५:५८:४१	५८:३६	शु	११:०१:२२:०७	१५:२१
म	३:०६:३४:०९	२५:११	श	११:०२:२८:४५	६:३५
बु	११:०८:४५:३५	५३:३५	रा	११:०१:३१:४९	३:११
बृ	१:२५:०३:१६	११:१२			

वैदिकतिथिपत्रे **कलिसंवत् ५०९०, ऐन्द्राग्नं युगम् (८५–१०), वत्सरः (५) (चान्द्रः अनलः संवत्सरः ५०), उत्तरायणम्, ग्रीष्मः ऋतुः, प्रथमशुचिः [प्रथमाषाढः] मासः, शुक्लः पक्षः**

विक्रमसंवत् **२०८२, शकान्तसंवत् (शकसंवत्) १९४७**, बार्हस्पत्यः सिद्धार्थी संवत्सरः (५३), **मेषमासः** (वैशाख), **वैशाखशुक्लपक्षः** (नेपालसंवत् ११४५ वछलाथ्वः=वैशाखशुक्लपक्षः) [अप्रिल-मे २०२५ क्रैस्ताब्दः]

वै.ति.	करणम्	लौ.ति.	घ.प.	घण्टा	वे.न.	मुहूर्तः	दृक्.न.	घण्टा	योगाः	घण्टा	योगाः	चन्द्रराशिः	दिनमा.	सू.उ.	सू.अ.	अहर्गः	वारः	गते	ता.	२०८२ वैशाख १५ – २९
प्रतिपदा	कौस्तु.	१	४०।०	२१:२७	अ	१।१०	भ	२१:५१	आ.	२०:१३	राक्षसः	२७:०७	१३:०९	५:२७	१८:३६	१२९	सो	१५	28	**श्रौतिनां वैदिकानां दर्शेष्टिः,** पौ. अग्निव्रतम्, ल.पु. मत्स्येन्द्रनाथरथारोहणम्
द्वितीया	बाल.	२	३०।५७	१७:४९	भ	१।१८	कृ	१९:०२	सौ.	१६:०६	मुसल.	वृषः	१३:१०	५:२६	१८:३६	१३०	म	१६	29	
तृतीया	तैति.	३	२२।४४	१४:३१	कृ	२।६	रो	१६:३४	शो.	१२:१५	सि.:	२७:३१	१३:११	५:२५	१८:३	१३१	बु	१७	30	**अक्षयतृतीया, धर्मघटदानम्,** त्रेतायुगादिः, **परशुरामजयन्ती, हयग्रीवजयन्ती**
चतुर्थी	वाणि.	४	१५।४६	११:४३	रो	२।१३	मृग	१४:३७	अ.	८:४७	उत्पातः	मिथुन	१३:१३	५:२५	१८:३	१३२	बृ	१८	1	**मे**मासप्रारम्भः (२०२५ क्रै.)
पञ्चमी	बवम्	५	१०।२४	९:३३	मृग	३।१	आर्द्रा	१३:१९	सु.	५:५१ २७:३२	मानस	मिथुन	१३:१४	५:२४	१८:३	१३३	शु	१९	2	**शङ्करभगवत्पादजयन्ती**
षष्ठी	कौल.	६	६।५७	८:१०	आर्द्रा	३।८	पुन	१२:४८	शू.	२५:५२	छत्रम्	६:५१	१३:१६	५:२३	१८:३९	१३४	श	२०	3	
सप्तमी	गराजिः	७	५।३४	७:३६	पुन	३।१६	पुष्य	१३:०७	ग.	२४:५२	श्रीवत्स	कर्कटः	१३:१७	५:२२	१८:३९	१३५	आ	२१	4	गङ्गासप्तमी, रविसप्तमी
अष्टमी	विष्टिः	८	६।१८	७:५३	पुष्य	४।४	अश्ले	१४:१५	वृ.	२४:३१	सौम्यः	१४:१५	१३:१८	५:२१	१८:४०	१३६	सो	२२	5	
नवमी	बाल.	९	८।५९	८:५६	अश्ले	४।११	मघा	१६:०६	ध्रु.	२४:४२	कालद.	सिंहः	१३:२०	५:२१	१८:४०	१३७	म	२३	6	सीतानवमी
दशमी	तैति.	१०	१३।१७	१०:३९	मघा	४।१९	पूफ	१८:३३	व्या.	२५:१७	स्थिरः	२५:१३	१३:२१	५:२०	१८:४१	१३८	बु	२४	7	**किरात-समाजसुधार-दिवस**
एकादशी	वाणि.	११	१८।४५	१२:४९	पूफ	५।६	उफ	२१:२३	ह.	२६:१०	मातङ्गः	कन्या	१३:२२	५:१९	१८:४	१३९	बृ	२५	8	पौराणिकानां मोहिनी एकादशी
द्वादशी	बवम्	१२	२४।५७	१५:१७	उफ	५।१४	ह	२४:२६	व.	२७:१२	अमृतम्	कन्या	१३:२४	५:१९	१८:४	१४०	शु	२६	9	
त्रयोदशी	कौल.	१३	३१।२५	१७:५२	ह	६।२	चि	२७:३३	सि.	२८:१५	काणः	२:००	१३:२५	५:१८	१८:४३	१४१	श	२७	10	प्रदोषव्रतम्, शनित्रयोदशी ○ **गौतमबुद्धजयन्ती, किरात उभौली पर्व**
चतुर्दशी	गराजिः	१४	३७।४८	२०:२४	चि	६।९	स्वा	अहोरात्र	व्य.	२७:१५	लुम्ब	तुला	१३:२६	५:१७	१८:४३	१४२	आ	२८	11	नृसिंहजयन्ती, कृत्तिकासु सूर्यः १२:५६
पूर्णिमा	विष्टिः	१५	४३।४७	२२:४८	स्वा	६।१७	स्वा	६:३५	व.	अहोरात्र	छत्रम्	२६:४५	१३:२७	५:१७	१८:४	१४३	सो	२९	12	**श्रौतिनां वैदिकानामुपवसथः, वरुणप्रघासपर्व** कूर्मजयन्ती, **चण्डीपूर्णिमा,** ○

विषुवद्-दिन र नववर्षको आरम्भ

आजभन्दा १५०० वर्ष जति अगि मेषमास (वैशाख) १ मा वासन्त विषुवत् (वसन्त ऋतुको दिनरात बराबर हुने समय) हुन्थ्यो। आजभोलि मीनमास (चइत) ६ वा ७ गते **विषुवद्दिन** पर्छ। वेदाङ्गज्योतिषअनुसार नववर्षको आरम्भ वासन्त-विषुवद्दिनबाट नभएर उत्तरायणको आरम्भसँगैको शुक्ल-प्रतिपदाबाट हुन्छ।

गतकलिसावनाऽहर्गणः १८५८८६२।

ब्रह्मैव वसन्तः क्षत्रं ग्रीष्मो विडेव वर्षास् तस्माद् ब्राह्मणो वसन्त (अग्नीन्) आदधीत ...क्षत्रियो ग्रीष्म आदधीत ...वैश्यो वर्षासु आदधीत ...।

—माध्यन्दिनीय-वाजसनेयि-शुक्लयजुर्वेद-शतपथब्राह्मण २।१।३।४।

अक्षयतृतीयामा ब्राह्मणलाइ धर्मघटको दान गर्ने मन्त्र— **एष धर्मघटो दत्तो ब्रह्मविष्णुहरात्मकः। अस्य प्रदानात् तृप्यन्तु पितरोऽपि पितामहाः॥ गन्धोदकतिलैर् मिश्रं साऽन्नं कुम्भं फलान्वितम्। पितृभ्यः सम्प्रदास्यामि अक्षय्यमुपतिष्ठतु॥**

११ २०८२।१।२२ सूर्योदयसमयको ग्रहको स्थिति र दैनिक गति

सू	०:२०:३३:३३	५८:०८	शु	११:०८:२२:१९	३८:३३
म	३:१३:१५:३८	२८:१४	श	११:०४:०२:१०	५:५१
बु	११:२७:०१:४२	८९:५४	रा	११:००:४४:०९	३:११
बृ	१:२७:५९:४०	१२:१७	२।४–२६:०४ बुध पू. अस्त		

***वैदिकतिथिपत्रे* कलिसंवत् ५०९०, ऐन्द्राग्नं युगम् (८५–१०), वत्सरः (५) (चान्द्रः अनलः संवत्सरः ५०), उत्तरायणम्, ग्रीष्मः ऋतुः, प्रथमशुचिः [प्रथमाषाढः] मासः, कृष्णः पक्षः**

विक्रमसंवत् २०८२, शकान्तसंवत् (शकसंवत्) १९४७, बार्हस्पत्यः सिद्धार्थी संवत्सरः (५३), **मेषमास-वृषमासौ** (वैशाख-जेठ), **ज्येष्ठकृष्णपक्षः** (नेपालसंवत् ११४५ वछलागाः=वैशाखकृष्णपक्षः) [मे २०२५ क्रैस्ताब्दः]

वै.ति.	करणम्	लौ.ति.	घ.प.	घण्टा	वे.न.	मुहूर्तः	दृक्.न.	घण्टा	योगाः	घण्टा	योगाः	चन्द्रराशिः	दिनमा.	सू.उ.	सू.अ.	अहर्ग.	वारः	गते	ता.	२०८२ वैशाख ३० – जेठ १२
प्रतिपदा	बाल.	१	४९।२	२४:५७	वि	७।४	वि	९:२७	व.	६:०७	श्रीवत्सः	वृश्चिकः	१३:२८	५:१६	१८:४४	१४४	म	३०	13	**श्रौतिनां वैदिकानां पूर्णमासेष्टिः,** पौराणिकानामग्निव्रतम्, ✧
द्वितीया	तैति.	२	५३।५४	२६:४९	अनु	७।१२	अनु	१२:०४	प.	६:४७	सौम्यः	वृश्चिकः	१३:३०	५:१५	१८:४५	१४५	बु	३१	14	वृषे सूर्यः ४७।५७ (२४:२६) ✧ अगस्त्यास्तमय १५।५८ (११:४१)
तृतीया	वाणि.	३	५७।४८	२८:२२	ज्ये	८।०	ज्ये	१४:२३	शि.	७:१४	कालद.	१४:२३	१३:३१	५:१५	१८:४६	१४६	बृ	१	15	**वृषमासप्रारम्भः (जेठ) २०८२, मिथुने गुरुः (बृहस्पतिः) १।५५ (६:०३)**
चतुर्थी	बवम्	४	अहोरात्र	अहोरात्र	मू	८।७	मू	१६:२३	सि.	७:२६	स्थिरः	धनुः	१३:३२	५:१४	१८:४६	१४७	शु	२	16	
पञ्चमी	कौल.	४	०।४७	५:३३	पूषा	८।१५	पूषा	१७:५९	सा.	७:२१	मातङ्गः	धनुः	१३:३३	५:१४	१८:४७	१४८	श	३	17	
षष्ठी	गराजिः	५	२।४१	६:१८	उषा	९।२	उषा	१९:०९	शु.	६:५५	अमृतम्	**२४:२०**	१३:३४	५:१३	१८:४७	१४९	आ	४	18	
सप्तमी	विष्टिः	६	३।२१	६:३३	श्र	९।१०	श्र	१९:४८	शु.	६:०७ २८:५१	सिद्धिः	मकरः	१३:३५	५:१३	१८:४८	१५०	सो	५	19	
अष्टमी	बाल.	७	२।३५	६:१४	ध	९।१८	ध	१९:५१	ऐ.	२७:०५	उत्पातः	७:५४	१३:३६	५:१२	१८:४९	१५१	म	६	20	**सायनमिथुने सूर्यः ३६।१३ (२०:७),** भौमाष्टमी
नवमी	तैति.	८	०।१५ ५६।१५	५:१८ २७:४२	शत	१०।५	शत	१९:१६	वै.	२४:४९	मानसम्	कुम्भः	१३:३७	५:१२	१८:४९	१५२	बु	७	21	◆ वटसावित्रीव्रतम्
दशमी	वाणि.	१०	५०।४७	२५:३०	पूभ	१०।१३	पूभ	१८:०३	वि.	२२:०१	मुद्गरः	१२:२४	१३:३८	५:११	१८:५०	१५३	बृ	८	22	⊙ (हलो, ढिकि, जाँतो, ठेको बार्ने र निशि बार्ने/सायम्भोजन नगर्ने दिन) ◆
एकादशी	बवम्	११	४३।५४	२२:४५	उभ	११।०	उभ	१६:१५	प्री.	१८:४६	ध्वजः	मीनः	१३:३९	५:११	१८:५०	१५४	शु	९	23	पौराणिकानाम् अपरा एकादशी
द्वादशी	कौल.	१२	३५।५५	१९:३३	रे	११।८	रे	१३:५८	आ.	१५:०८	धाता	१३:५८	१३:४०	५:११	१८:५१	१५५	श	१०	24	● हल-कण्डनी-यन्त्रक-मन्थनीकर्म-सायम्भोजन-परिहारदिनम् ⊙
त्रयोदशी	गराजिः	१३	२७।११	१६:०३	अ	११।१६	अ	११:२१	सौ.	११:१३	आनन्दः	मेषः	१३:४१	५:१०	१८:५१	१५६	आ	११	25	प्रदोषव्रतम्, सिठिचह्नेपूजा, रोहिण्यां सूर्यः ९:०८
अमावास्या	चतुष्.	१४	१८।०४	१२:२३	भ	१२।३	भ	८:३३	शो.	७:०८ २७:०३	चरः	१३:५०	१३:४२	५:१०	१८:५२	१५७	सो	१२	26	**श्रौतिनां वैदिकानां पिण्डपितृयज्ञः, स्मार्तानां वैदिकानां दर्शश्राद्धम्,** ●

बृहस्पतिको राशिसञ्चार

बृहस्पति (गुरु) को २०८२ जेठ १ गते **मिथुन** राशिमा र २०८२ कात्तिक १ गते **कर्कट** राशिमा प्रवेश हुन्छ। वक्री भई २०८२ मङ्सिर १९ गते पुनः **मिथुन** राशिमा प्रवेश हुन्छ। २०८३ जेठ १८ गते **कर्कट** राशिमा प्रवेश हुन्छ।

गतकलिसावनाऽहर्गणः १८५८८७७।

वैदिक सनातन वर्णाश्रमधर्ममा परीक्षा नगरिएका मानिसलाई याजन, वेदाध्यापन र उपनयन गर्न निषेध—

नाऽपरीक्षितं याजयेन् नाऽध्यापयेन् नोपनयेत्।—विष्णुधर्मसूत्र २९।४,५,६।

ग्रीष्म ऋतुको चर्या—**ग्रीष्ममा तातो बतास चल्ने र ऊष्मा हुने हुँदा घाममा छाता ओड्नु स्वास्थ्यका दृष्टिले आवश्यक हुन्छ। एस ऋतुमा गुलिया र चिल्ला अन्न र पान हितकारी हुन्छन्। ग्रीष्म ऋतुमा चिसा र झोलिला खाने कुरा खानु राम्रो हुन्छ।**

१२ २०८२।२।७ सूर्योदयसमयको ग्रहको स्थिति र दैनिक गति

सू	१:०५:५९:५७	५७:४४	शु	११:२०:३८:०६	५२:०४
म	३:२१:०७:१५	३०:३८	श	११:०५:२७:४२	४:४९
बु	०:२५:१३:४३	१२१:२१	रा	१०:२९:५३:१८	३:११
बृ	२:०१:२२:५१	१३:०४			

वैदिकतिथिपत्रे कलिसंवत् ५०९०, ऐन्द्राग्नं युगम् (८५–१०), वत्सरः (५) (चान्द्रः अनलः संवत्सरः ५०), उत्तरायणम्, ग्रीष्मः ऋतुः, द्वितीयशुचिः [द्वितीयाषाढः] मासः, शुक्लः पक्षः

विक्रमसंवत् २०८२, शकान्तसंवत् (शकसंवत्) १९४७, बार्हस्पत्यः सिद्धार्थी संवत्सरः (५३), **वृषमासः** (जेठ) **ज्येष्ठशुक्लपक्षः** (नेपालसंवत् ११४५ तछलाथ्वः=ज्येष्ठशुक्लपक्षः) [मे–जुन २०२५ क्रैस्ताब्दः]

वै.ति.	करणम्	लौ.ति.	घ.प.	घण्टा	वे.न..	मुहूर्तः	दृक्.न.	घण्टा	योगाः	घण्टा	योगाः	चन्द्रराशिः	दिनमा.	सू.उ.	सू.अ.	अहर्ग.	वारः	गते	ता.	२०८२ जेठ १३ – २७
प्रतिपदा	कौस्तु.	३०	८।५९	८:४५	कृ	१२।११	कृ	५:४३ २७:०३	सु.	२३:०४	गदः	वृषः	१३:४३	५:१०	१८:५२	१५८	म	१३	27	गङ्गा-दशहरा-स्नानारम्भः, गोस्वामिकुण्ड(गोसाइँकुण्ड)स्नानारम्भः **वैदिक ☾**
द्वितीया	बाल.	१	०।२२ ५२।३५	५:१८ २६:१२	रो	१२।१९	मृग	२४:४४	धृ.	१९:२०	अमृतम्	१३:५०	१३:४४	५:०९	१८:५३	१५९	बु	१४	28	**☾ अधिकमासको प्रारम्भ (अंहसस्पतिमासप्रारम्भः)**
तृतीया	तैति.	३	४६।१३	२३:३८	मृग	१३।६	आर्द्रा	२२:५५	शू.	१६:००	काणः	मिथुनम्	१३:४४	५:०९	१८:५४	१६०	बृ	१५	29	रम्भातृतीया
चतुर्थी	वाणि.	४	४१।२८	२१:४४	आर्द्रा	१३।१४	पुन	२१:४७	ग.	१३:११	लुम्बः	१६:००	१३:४५	५:०९	१८:५४	१६१	शु	१६	30	
पञ्चमी	बवम्	५	३८।४२	२०:३७	पुन	१४।१	पुष्य	२१:२६	वृ.	१०:५९	मित्रम्	कर्कटः	१३:४६	५:०९	१८:५५	१६२	श	१७	31	झाँक्रिपूजा (रोल्पा)
षष्ठी	कौल.	६	३८।०३	२०:२१	पुष्य	१४।९	अश्ले	२१:५५	ध्रु.	९:२७	वज्रम्	२१:५५	१३:४७	५:०८	१८:५५	१६३	आ	१८	1	**कुमारषष्ठी (सिठिनखः),** ❑
सप्तमी	गराजिः	७	३९।३०	२०:५६	अश्ले	१४।१७	मघा	२३:१३	व्या.	८:३५	ध्वाङ्क्षः	सिंहः	१३:४७	५:०८	१८:५६	१६४	सो	१९	2	कुमारयात्रा
अष्टमी	विष्टिः	८	४२।५३	२२:१७	मघा	१५।४	पूफ	२५:१६	ह.	८:२३	धूम्रः	सिंहः	१३:४८	५:०८	१८:५६	१६५	म	२०	3	अष्टमीव्रत, वायु-अष्टमी, ✧
नवमी	बाल.	९	४७।४७	२४:१५	पूफ	१५।१२	उफ	२७:५२	व.	८:४३	वर्धमा.	७:५२	१३:४९	५:०८	१८:५७	१६६	बु	२१	4	✧ गोरखकालीपूजा, भौमाष्टमी
दशमी	तैति.	१०	५३।४२	२६:३६	उफ	१५।१९	ह	अहोरात्र	सि.	९:२७	राक्षसः	कन्या	१३:४९	५:०८	१८:५७	१६७	बृ	२२	5	गङ्गादशहरा (गङ्गादशमी), गोस्वामिकुण्ड-(गोसाइँकुण्ड)स्नानसमाप्तिः, खप्तडमेला
एकादशी	वाणि.	११	अहोरात्र	अहोरात्र	ह	१६।७	ह	६:५०	व्य.	१०:२७	मुसल.	२०:२४	१३:५०	५:०८	१८:५७	१६८	शु	२३	6	पौराणिकानां निर्जला एकादशी, तुलसीबीजरोपणम्, त्रिविक्रमपूजा
द्वादशी	बवम्	११	०।४	५:०९	चि	१६।१५	चि	९:५७	व.	११:३२	सिद्धिः	तुला	१३:५०	५:०८	१८:५८	१६९	श	२४	7	❑ विन्ध्यवासिनीपूजा, भ.पु.चण्डीभगवती जात्रा, **जुन**मासप्रारम्भः(२०२५ क्रै.)
त्रयोदशी	कौल.	१२	६।२१	७:४०	स्वा	६।१७	स्वा	१३:००	प.	१२:३३	लुम्बः	तुला	१३:५१	५:०८	१८:५८	१७०	आ	२५	8	प्रदोषव्रतम्, मन्वादिः, भूमिरजः, मृगशिरसि सूर्यः ६:४९
चतुर्दशी	गराजिः	१३	१२।०९	९:५९	वि	७।४	वि	१५:५१	शि.	१३:२५	मित्रम्	९:१०	१३:५१	५:०८	१८:५९	१७१	सो	२६	9	
पूर्णिमा	विष्टिः	१४	१७।०९	११:५९	अनु	७।१२	अनु	१८:२१	सि.	१४:०१	वज्रम्	वृश्चिकः	१३:५२	५:०८	१८:५९	१७२	म	२७	10	**मष्टपूर्णिमा, गैडु-पूजा, (ज्यापुह्नि) वटसावित्रीव्रतम्**

अधिकमासको जन्मतिथिका विषयमा

वैदिक पद्धतिमा अन्य महिना पनि शुक्लादि अमान्त मानिञ्छन् र अधिकमास पनि शुक्लादि अमान्त नै मानिञ्छ। अतः वैदिक पद्धतिअनुसार अधिकमासका शुक्लपक्षमा जन्मनेको वर्षाभिवृद्धि अर्को वर्ष तेसै महिनाको शुक्लपक्षमा र अधिकमासका कृष्णपक्षमा जन्मनेको पनि अर्को वर्ष तेसै महिनाको कृष्णपक्षमा हुञ्छ; कुनै भिन्नता हुँदैन।

गतकलिसावनाऽहर्गणः १८५८८९१।

वैदिक अधिकमास— कृष्णपक्षमा नवमी पनि नागेर दशमी-एकादशीहरुमा सूर्यको दृक्सिद्ध अयनारम्भ हुञ्छ भने त्यो अमान्त चान्द्रमास अधिकमास (मलमास) हुञ्छ। उदगयनका (उत्तरायणका) वा दक्षिणायनका अन्तमा अयनको सातौं अमान्त चान्द्रमासका रूपमा वैदिक अधिकमास पर्छ। उदगयनका अन्तमा परेको अधिकमास द्वितीय शुचिमास (द्वितीय आषाढमास) भनिञ्छ र दक्षिणायनका अन्तमा परेको अधिकमास द्वितीय सहस्यमास (द्वितीय पौषमास) भनिञ्छ। नेपालमा लिच्छविकालमा र मल्लकालमा एस्तै अधिकमास मान्ने प्रचलन थियो। एस वर्ष उत्तरायणका अन्तमा (२०८२ जेठ १३ गते शुक्लप्रतिपदादेखि असार ११ गते औंसि-सम्म) वैदिक अधिकमास (द्वितीयशुचिमास) परेको छ। अधिकमासमा नित्य र नैमित्तिक कर्म गर्ने काम्य कर्म नगर्ने नियम छ।

१३ २०८१।२।२२ सूर्योदयसमयको ग्रहको स्थिति र दैनिक गति

सू	१:२०:२३:२८	५७:२६	शु	०:०४:३६:२३	५९:०७
म	३:२९:००:१८	३२:२३	श	११:०६:३१:१८	३:३८
बु	१:२७:३०:०७	१२८:३०	रा	१०:२९:०५:३७	३:११
बृ	२:०४:४२:३५	१३:३१			

२।२६–१९:४१ बुध प. उदय

२।२९–२६:१० गुरु प. अस्त

वैदिकतिथिपत्रे कलिसंवत् ५०९०, ऐन्द्राग्नं युगम्(८५–१०), वत्सरः (५) (चान्द्रः अनलः संवत्सरः ५०), उत्तरायणम्, ग्रीष्मः ॠतुः, द्वितीयशुचिः [द्वितीयाषाढः] मासः, कृष्णः पक्षः

विक्रमसंवत् २०८२, शकान्तसंवत् (शकसंवत्) १९४७, बार्हस्पत्यः सिद्धार्थी संवत्सरः (५३), **वृषमास-मिथुनमासौ** (जेठ-असार), **आषाढकृष्णपक्षः** (नेपालसंवत् ११४५ तछलागाः=ज्येष्ठकृष्णपक्षः) [जुन २०२५ क्रै.]

वै.ति.	करणम्	लौति	घ.प.	घण्टा	वे.न.	मुहूर्तः	दृक्.न.	घण्टा	योगाः	घण्टा	योगाः	चन्द्रराशिः	दिनमा.	सू.उ.	सू.अ.	अहर्ग.	वार	गते	ता.	२०८२ जेठ २८ – असार ११
प्रतिपदा	बाल.	१५	२१।१२	१३:३६	ज्ये	८।०	ज्ये	२०:२९	सा.	१४:१९	ध्वाङ्क्षः	२०:२९	१३:५२	५:०८	१९:००	१७३	बु	२८	11	**श्रौतिनां वैदिकानां पूर्णमासेष्टिः**, पौराणिकानामग्निव्रतम्
द्वितीया	तैति.	१	२४।१३	१४:४९	मू	८।७	मू	२२:१४	शु.	१४:१९	धूम्रः	धनुः	१३:५२	५:०८	१९:००	१७४	बृ	२९	12	**गुरु (बृहस्पति) पश्चिमतिर अस्त ५२।३५ (२६:१०)**
तृतीया	वाणि.	२	२६।१५	१५:३८	पूषा	८।१५	पूषा	२३:३५	शु.	१४:००	वर्धमा.	धनुः	१३:५३	५:०८	१९:००	१७५	शु	३०	13	**आर्द्रा नक्षत्रमा गुरु (बृहस्पति) ३८।२० (२०:२८)**
चतुर्थी	बवम्	३	२७।२१	१६:०४	उषा	९।२	उषा	२४:३५	ब्र.	१३:२४	राक्षसः	५:५२	१३:५३	५:०८	१९:०१	१७६	श	३१	14	
पञ्चमी	कौल.	४	२७।३०	१६:०८	श्र	९।१०	श्र	२५:१३	ऐ.	१२:३०	गदः	मकरः	१३:५३	५:०८	१९:०१	१७७	आ	१	15	**मिथुनमासप्रारम्भः (असार) २०८२,** मिथुने सूर्यः ४।४२ (७:१) ☼
षष्ठी	गराजि	५	२६।४३	१५:४९	ध	९।१८	ध	२५:२८	वै.	११:१८	शुभः	१३:२४	१३:५३	५:०८	१९:०१	१७८	सो	२	16	☼ **दक्षिणायनारम्भको नजिकको राशिसङ्क्रान्ति**
सप्तमी	विष्टिः	६	२४।५३	१५:०५	शत	१०।५	शत	२५:१८	वि.	९:४६	मृत्युः	कुम्भः	१३:५३	५:०८	१९:०२	१७९	म	३	17	
अष्टमी	बाल.	७	२१।५७	१३:५५	पूभ	१०।१३	पूभ	२४:४०	प्री.	७:५४	पद्मम्	१८:५२	१३:५४	५:०८	१९:०२	१८०	बु	४	18	
नवमी	तैति.	८	१७।४९	१२:१६	उभ	११।०	उभ	२३:३४	आ.	५:३८ २७:००	छत्रम्	मीनः	१३:५४	५:०८	१९:०२	१८१	बृ	५	19	❖ **वैदिक-उदगयन-(उत्तरायण-)समाप्तिः**
दशमी	वाणि.	९	१२।३१	१०:०९	रे	१५।१२	रे	२२:००	शो.	२३:५९	श्रीवत्सः	२२:००	१३:५४	५:०९	१९:०२	१८२	शु	६	20	⌂ **वैदिक-अधिकमास-समाप्तिः (अंहसस्पतिमाससमाप्तिः),** ❖
एकादशी	बवम्	१०	०।९ ५८।५५	७:३६ २८:४३	अ	१५।१	अ	२०:०४	अ.	२०:४०	सौम्यः	मेषः	१३:५४	५:०९	१९:०३	१८३	श	७	21	पौराणिकानां योगिनी एकादशी, **सायनकर्कटे सूर्यः ७।५० (८:४३)** ❑
द्वादशी	कौल.	१२	५।१६	२५:३५	भ	१६।७	भ	१७:५०	सु.	१९:०६	कालद.	२३:१४	१३:५४	५:०९	१९:०३	१८४	आ	८	22	आर्द्रायां सूर्यः ५:५९ ❑ **सौर वर्षा ॠतुको आरम्भ**
त्रयोदशी	गराजि	१३	४।३२	२२:२२	कृ	१६।१५	कृ	१५:२७	धृ.	१३:२५	स्थिरः	वृषः	१३:५४	५:०९	१९:०३	१८५	सो	९	23	प्रदोषव्रतम् ◆ (हलो, ढिकि, जाँतो, ठेको बार्ने र निशि बार्ने दिन), ⌂
चतुर्दशी	विष्टिः	१४	३५।६	१९:१२	रो	१७।२	रो	१३:०४	शू.	९:४३	मातङ्गः	२३:५५	१३:५४	५:०९	१९:०३	१८६	म	१०	24	दिलाचह्रेपूजा ● हल-कण्डनी-यन्त्रक-मन्थनीकर्म-सायम्भोजनपरिहारदिनम् ◆
अमावास्या	चतुष्.	३०	२७।४२	१६:१४	मृग	१७।१०	मृग	१०:५१	ग.	६:०८ २६:४८	अमृतम्	मिथुनम्	१३:५४	५:१०	१९:०३	१८७	बु	११	25	**श्रौतिनां वैदिकानां पिण्डपितृयज्ञः, स्मार्तानां वैदिकानां दर्शश्राद्धम्,** ●

गतकलिसावनाऽहर्गणः १८५८९०६।

❖ **दृक्सिद्ध-वैदिक-सौर-दक्षिणायनारम्भः (वास्तविक सौर दक्षिणायनको आरम्भ),** सौर वर्षा ॠतुको आरम्भ, अन्तरराष्ट्रिय योगदिवस

वैदिक अहोरात्रात्मक तिथि र नेपालको संस्कृति

पूर्वाह्न अथवा मध्याह्नमा पर्व (औँसि) सकिएमा (दृक्सिद्धगणनाअनुसार सूर्य र चन्द्रमाको कोणीय अन्तर ० अंश/डिग्रि हुने समय परेमा) तेसै दिन प्रतिपदा मानेर अनुष्ठान गर्न पर्छ, अपराह्न अथवा राति पर्व (औँसि) सकिएमा तेस दिन औँसि नै हुन्छ, तेसको भोलिपल्ट प्रतिपदाको अनुष्ठान हुन्छ भन्ने वैदिक मान्यता छ। प्रतिपदाको भोलिपल्ट द्वितीया, द्वितीयाको भोलिपल्ट तृतीया इत्यादि क्रमले अरु तिथि एकएक दिनमा क्रमशः आउँछन्। एसरि तिथि मान्दा चाडपर्वमा समस्या आउँदैन। प्राचीन सभ्यताको केन्द्र काठमाण्डु उपत्यकामा **दसैँका ३ दिन र तिहारका ३ दिन अखण्डित रूपमा गर्नु पर्छ** भन्ने मान्यता छ । यसका निम्ति वैदिकतिथिसिद्धान्तमा ध्यान दिन आवश्यक छ *(विस्तृत द्रष्टव्य– वैदिकतिथिपत्रम् २०७७, पृ. ६९)*।

१४ २०८२।३।७ सूर्योदयसमयको ग्रहको स्थिति र दैनिक गति

सू	२:०५:४०:५५	५७:१५	शु	०:२१:००:५९	६३:३६
म	४:०७:५०:५८	३३:५४	श	११:०७:१८:०८	२:१२
बु	२:२७:२७:०९	९३:३२	रा	१०:२८:१४:४५	३:११
बृ	२:०८:२०:४३	१३:४२	२।२९-२६:१०- गुरु प. अस्त		

वैदिकतिथिपत्रे **कलिसंवत् ५०९०, ऐन्द्राग्नं युगम् (८५-१०), वत्सरः (५) (चान्द्रः अनलः संवत्सरः ५०), दक्षिणायनम्, वर्षाः ऋतुः, नभाः [श्रावणः] मासः, शुक्लः पक्षः**

विक्रमसंवत् **२०८२, शकान्तसंवत् (शकसंवत्) १९४७**, बार्हस्पत्यः सिद्धार्थी संवत्सरः (५३), **मिथुनमासः** (असार), **आषाढशुक्लपक्षः** (नेपालसंवत् ११४५ दिल्लाथ्वः=आषाढशुक्लपक्षः) [जुन-जुलाइ २०२५ क्रैस्ताब्दः]
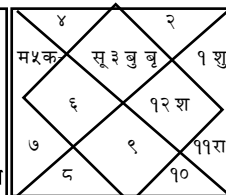
वै.ति.	करणम्	लौ.ति	घ.प.	घण्टा	वे.न.	मुहूर्तः	दृक्.न.	घण्टा	योगाः	घण्टा	योगाः	चन्द्रराशिः	दिनमा.	सू.उ.	सू.अ.	अहर्ग.	वारः	गते	ता.	२०८२ असार १२ - २६
प्रतिपदा	कौस्तु.	१	२१।१४	१३:४०	आर्द्रा	१७।१७	आर्द्रा	८:५९	ध्रु.	२३:५१	काणः	२५:५३	१३:५३	५:१०	१९:०३	१८८	बृ	१२	26	**श्रौतिनां वैदिकानां दर्शेष्टिः, वैदिकदक्षिणायनारम्भः , वैदिकवर्षर्तुप्रारम्भः**☾
द्वितीया	बाल.	२	१६।७	११:३७	पुन	१८।४	पुन	७:३६	व्या.	२१:२३	लुम्बः	कर्कटः	१३:५३	५:१०	१९:०३	१८९	शु	१३	27	☾**(दक्षिणायनको र वैदिक वर्षा ऋतुको प्रारम्भ)**, पौराणिकानामग्निव्रतम्
तृतीया	तैति.	३	१२।३८	१०:१४	पुष्य	१८।१२	पुष्य	६:५२	ह.	१९:३०	मित्रम्	कर्कटः	१३:५३	५:११	१९:०४	१९०	श	१४	28	
चतुर्थी	वाणि.	४	११।४	९:३७	अश्ले	१८।१९	अश्ले	६:५३	व.	१८:१५	वज्रम्	६:५३	१३:५३	५:११	१९:०४	१९१	आ	१५	29	
पञ्चमी	बवम्	५	११।३०	९:४८	मघा	१९।७	मघा	७:४१	सि.	१७:३८	ध्वाङ्क्ष	सिंहः	१३:५२	५:११	१९:०४	१९२	सो	१६	30	**वै. नागपञ्चमी (वर्षा ऋतुको पहिलो शुक्लपञ्चमी)**
षष्ठी	कौल.	६	१३।५३	१०:४५	पूफ	१९।१४	पूफ	९:१४	व्य.	१७:३६	धूम्रः	१५:४४	१३:५२	५:१२	१९:०४	१९३	म	१७	1	**जुलाइ**मासप्रारम्भः(२०२५ क्रै.)
सप्तमी	गराजि	७	१७।५५	१२:२२	उफ	२०।१	उफ	११:२७	व.	१८:०३	वर्धमा.	कन्या	१३:५२	५:१२	१९:०४	१९४	बु	१८	2	
अष्टमी	विष्टिः	८	२३।११	१४:२९	ह	२०।९	ह	१४:०९	प.	१८:५१	राक्षसः	२७:३७	१३:५१	५:१२	१९:०४	१९५	बृ	१९	3	
नवमी	बाल.	९	२९।९	१६:५३	चि	२०।१६	चि	१७:०७	शि.	१९:५०	मुसल.	तुला	१३:५१	५:१३	१९:०४	१९६	शु	२०	4	☼ पुनर्वस्वोः सूर्यः ५:३३, **गुरु (बृहस्पति)को पूर्वतिर उदय २८।० (१६:२६)**
दशमी	तैति.	१०	३५।१४	१९:१९	स्वा	२१।४	स्वा	२०:०८	सि.	२०:५०	सिद्धिः	तुला	१३:५०	५:१३	१९:०३	१९७	श	२१	5	मन्वादिः
एकादशी	वाणि.	११	४०।५४	२१:३५	वि	२१।११	वि	२२:५९	सा.	२१:४१	उत्पातः	१६:१७	१३:५०	५:१४	१९:०३	१९८	आ	२२	6	**पौराणिकानां हरिशयनी एकादशी**, तुलसीरोपणम् (तुलसीपियेगु), ☼
द्वादशी	बवम्	१२	४५।४३	२३:३२	अनु	२१।१८	अनु	२५:३०	शु.	२२:१८	मानसम्	वृश्चिकः	१३:४९	५:१४	१९:०३	१९९	सो	२३	7	⍓ पौराणिकानां चातुर्मास्यव्रतारम्भः, **दक्षिणायनको पहिलो पूर्णिमा**
त्रयोदशी	कौल.	१३	४९।२५	२५:०१	ज्ये	२२।६	ज्ये	२७:३४	शु.	२२:३३	मुद्गरः	२७:३४	१३:४८	५:१५	१९:०३	२००	म	२४	8	○ **अध्यायोपाकर्म (जनैपूर्णिमा), गुरुपूर्णिमा, व्यासजयन्ती,** ⍓
चतुर्दशी	गराजिः	१४	५१।५१	२६:००	मू	२२।१३	मू	२९:०९	ब्र.	२२:२५	ध्वजः	धनुः	१३:४८	५:१५	१९:०३	२०१	बु	२५	9	प्रायश्चित्तानुष्ठानदिनम् (जनै लगाउनेले मुण्डन र प्रायश्चित्तकर्म अनुष्ठान गर्ने दिन)
पूर्णिमा	विष्टिः	१५	५३।१	२६:२८	पूषा	२३।०	पूषा	अहोरात्र	ऐ.	२१:५३	धाता	धनुः	१३:४७	५:१६	१९:०३	२०२	बृ	२६	10	**श्रौतिनां वैदिकानामुपवसथः, स्मार्तानां वैदिकानां श्रवणाकर्म (सर्पबलिः)**, ○

गतकलिसावनाऽहर्गणः १८५८९२१। अध्यायोपाकर्मको विधान— **अथातोऽध्यायोपाकर्म। ओषधीनां प्रादुर्भावे श्रवणेन श्रावण्यां पौर्णमास्यां श्रावणस्य पञ्चमीं हस्तेन वा॥**—पारस्करगृ.सू. २।१०।१-२। द्र.- याज्ञ.स्मृ. १।१४२, मनु. ४।९५।

यज्ञोपवीतधारणमन्त्रः—**यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात्। आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥** अथवा **ओ३म् भूर्भुवःस्वः।** क्षत्रिय-वैश्यका निम्ति जनै लगाउने मन्त्र— **उपवीतं नवं सूत्रं त्रिगुणं च पवित्रकम्। सर्वसत्कर्मसिद्ध्यर्थमुपवीतमहं दधे॥** पुराणयज्ञोपवीतत्यागमन्त्रः— **एतावद्दिनपर्यन्तं ब्रह्म त्वं धारितं मया। जीर्णत्वात् त्वत्परित्यागो गच्छ सूत्र यथा-सुखम्।** अथवा **ओ३म् समुद्द्रङ्गच्छ स्वाहा।**

अध्यायोपाकर्म / उपाकर्म (जनैपूर्णिमा)को समय

उपाकर्म वर्षा ऋतु लागेर ओषधि-वनस्पतिहरु उम्रन थालेपछिको पूर्णिमामा गर्न पर्ने निर्देश छ (पारस्करगृह्यसूत्र २।१०।१-२)। अतः एस वर्ष **२०८२ असार २६ गतेका पूर्णिमामा** पर्छ ।

१५ २०८२।३।२२ सूर्योदयसमयको ग्रहको स्थिति र दैनिक गति

सू	२:१९:५९:२४	५७:१२	**शु**	१:०७:१६:५५	६६:२०
म	४:१६:२८:५०	३५:०६	**श**	११:०७:४०:०४	०:४३
बु	३:१५:५०:०१	५१:१७	**रा**	१०:२७:२७:०३	३:११
बृ	२:११:४५:५३	१३:३७	**३।२२-१६:२६ गुरु पू. उदय**		

३।२८- २४:२२ शनि वक्री

वैदिकतिथिपत्रे **कलिसंवत् ५०९०, ऐन्द्राग्नं युगम् (८५-१०), वत्सरः (५) (चान्द्रः अनलः संवत्सरः ५०), दक्षिणायनम्, वर्षाऋतुः, नभाः [श्रावणः] मासः, कृष्णः पक्षः**

विक्रमसंवत् २०८२, **शकान्तसंवत् (शकसंवत्) १९४७**, बार्हस्पत्यः सिद्धार्थी संवत्सरः (५३), **मिथुनमास-कर्कटमासौ** (असार-साउन), **श्रावणकृष्णपक्षः** (नेपालसंवत् ११४५ दिल्लागाः=आषाढकृष्णपक्षः) [जुलाइ २०२५ क्रै.]

वै.ति.	करणम्	लौ.ति.	घ.प.	घण्टा	वे.न.	मुहूर्तः	दृक्.न.	घण्टा	योगाः	घण्टा	योगाः	चन्द्रराशिः	दिनमा.	सू.उ.	सू.अ.	अहर्ग.	वारः	गते	ता.	२०८२ असार २७ - साउन ८
प्रतिपदा	बाल.	१	५३।००	२६:२८	उषा	२३।८	पूषा	६:१४	वै.	२०:५९	वर्धमा.	१२:२६	१३:४७	५:१६	१९:०३	२०३	शु	२७	11	**श्रौतिनां वैदिकानां पूर्णमासेष्टिः**, पौराणिकानामग्निव्रतम्, **निरूढपशुबन्धः**
द्वितीया	तैति.	२	५१।५८	२६:०४	श्र	२३।१५	उषा	६:५२	वि.	१९:४४	चरः	मकरः	१३:४६	५:१६	१९:०२	२०४	श	२८	12	
तृतीया	वाणि.	३	५०।२	२५:१८	ध	२४।२	श्र	७:०७	प्री.	१८:११	गदः	१९:०६	१३:४५	५:१७	१९:०२	२०५	आ	२९	13	आदिकवि भानुभक्त आचार्यको जन्मजयन्ती [२१२औं]
चतुर्थी	बवम्	४	४७।२१	२४:१४	शत	२४।९	ध	७:०१	आ.	१६:२३	शुभः	कुम्भः	१३:४४	५:१७	१९:०२	२०६	सो	३०	14	
पञ्चमी	कौल.	५	४३।५९	२२:५४	पूभ	२४।१७	शत	६:३८	सौ.	१४:२२	मृत्युः	२४:१०	१३:४४	५:१८	१९:०२	२०७	म	३१	15	
षष्ठी	गराजिः	६	३९।५८	२१:१८	उभ	२५।४	पूभ	५:५९ २९:०४	शो.	१२:०७	पद्मम्	मीनः	१३:४३	५:१८	१९:०१	२०८	बु	३२	16	कर्कटे सूर्यः ३१।२१ (१७:५२)
सप्तमी	विष्टिः	७	३५।१८	१९:२६	रे	२५।११	रे	२७:५४	अ.	९:४०	[illegible]	२७:५४	१३:४२	५:१९	१९:०१	२०९	बृ	१	17	**कर्कटमासप्रारम्भः (साउन) २०८२,** लुतो फाल्ने दिन
अष्टमी	बाल.	८	३०।१	१७:२०	अ	२५।१८	अ	२६:२९	सु.	७:०१ २८:०९	वज्रम्	मेषः	१३:४१	५:२०	१९:००	२१०	शु	२	18	लौकिकानां तिथ्यनुसारिणी भानुजयन्ती (नभःकृष्णाष्टमी)
नवमी	तैति.	९	२४।११	१५:०१	भ	२६।६	भ	२४:५३	शू.	२५:०८	ध्वाङ्क्षः	मेषः	१३:४०	५:२०	१९:००	२११	श	३	19	पुष्ये सूर्यः २९:०५
दशमी	वाणि.	१०	१७।५६	१२:३१	कृ	२६।१३	कृ	२३:०८	ग.	२२:००	धूम्रः	६:२७	१३:३९	५:२१	१९:००	२१२	आ	४	20	⦿ परिहार-दिनम् (हलो, ढिकि, जाँतो, ठेको बार्ने र निशि बार्ने दिन)
एकादशी	बवम्	११	११।२७	९:५६	रो	२७।०	रो	२१:२०	वृ.	१८:५०	वर्धमा.	वृषः	१३:३८	५:२१	१८:५	२१३	सो	५	21	पौराणिकानां कामिका एकादशी ● हलकण्डनीयन्त्रक-मन्थनीकर्म-सायम्भोजन-⦿
द्वादशी	कौल.	१२	४।५९ ५८।५०	७:२१ २८:५४	मृग	२७।७	मृग	१९:३७	ध्रु.	१५:४३	राक्षसः	८:२८	१३:३७	५:२२	१८:५	२१४	म	६	22	**सायनसिंहे सूर्यः ४३।३४ (२३:११)**
त्रयोदशी	गराजिः	१४	५३।२२	२६:४३	आर्द्रा	२७।१४	आर्द्रा	१८:०६	व्या.	१२:४४	मुसल.	मिथुनम्	१३:३६	५:२२	१८:५	२१५	बु	७	23	प्रादोषव्रतम्, घण्टाकर्णचतुर्दशी (गथामुगचह्रे, गठेमङ्गल)
अमावास्या	चतुष्.	३०	४८।५१	२४:५५	पुन	२८।२	पुन	१६:५५	ह.	१०:००	सिद्धिः	११:११	१३:३५	५:२३	१८:५	२१६	बृ	८	24	**श्रौतिनां वैदिकानां पिण्डपितृयज्ञः, स्मार्तानां वैदिकानां दर्शश्राद्धम्,** ●

गतकलिसावनाऽहर्गणः १८५८९३६।

वर्षा ऋतुको चर्या— **वर्षा ऋतुमा विशेष गरेर धेरै वर्षा भएका र हुरि चलेका दिन अमिला, नुनिला र चिल्ला अन्नपानको सेवन गर्न पर्छ। एस ऋतुमा पुरानो अन्न हितकर हुञ्छ; दिवास्वाप (दिउसो सुत्ने काम), व्यायाम र घाम हितकर हुँदैनन्।**

अनध्यायहरु (वेदादि शास्त्रको गुरुबाट अध्ययन गर्न नहुने दिनहरु)— **वातेऽमावास्यायां सर्वानध्यायः।**—पारस्करगृह्यसूत्र २।११।१।

अमावास्या गुरुं हन्ति शिष्यं हन्ति चतुर्दशी। ब्रह्माऽष्टमी-पौर्णमास्यौ तस्मात् ताः परिवर्जयेत्॥ (अमावास्यामा वेदको ग्रहणाध्ययन अर्थात् नपढेको भाग गुरुसित पढ्ने काम गर्नाले गुरुलाइ क्षति हुञ्छ, चतुर्दशीमा पढ्नाले शिष्यलाइ हानि पुग्छ, अष्टमी र पूर्णिमामा पढ्नाले वेदलाई क्षति पुग्छ। अतः इ तिथिहरु वेदको ग्रहणाध्ययनमा वर्जित गर्नु पर्छ।)—मनुस्मृति ४।११४।

१६ २०८२।४।७ सूर्योदयसमयको ग्रहको स्थिति र दैनिक गति

सू	३:०६:१२:३९	५७:१७	शु	१:२६:२४:२६	६८:३१
म	४:२६:३६:२९	३६:२०	श	११:०७:३७:४२	-०:५९
बु	३:२०:२७:०३	-२३:००	रा	१०:२६:३२:५८	३:११
बृ	२:१५:३४:१६	१३:१२	**४।७- ११:२९ बुध वक्री**		

४।७- बुध प. अस्त

वैदिकतिथिपत्रे **कलिसंवत् ५०९०, ऐन्द्राग्नं युगम् (८५–१०), वत्सरः (५) (चान्द्रः अनलः संवत्सरः ५०), दक्षिणायनम्, वर्षाःऋतुः, नभस्यः [भाद्रः] मासः , शुक्लः पक्षः**

विक्रमसंवत् २०८२, शकान्तसंवत् (शकसंवत्) १९४७, बार्हस्पत्यः सिद्धार्थी संवत्सरः (५३), **कर्कटमासः** (साउन), **श्रावणशुक्लपक्षः** (नेपालसंवत् ११४५ गुंलाथ्वः=श्रावणशुक्लपक्षः) [जुलाइ–अगष्ट २०२५ क्रै.]

वै.ति.	करणम्	लौ.ति	घ.प.	घण्टा	वे.न.	मुहूर्तः	दृक्.न.	घण्टा	योगाः	घण्टा	योगाः	चन्द्रराशिः	दिनमा	सू.उ.	सू.अ.	अहर्ग.	वार	गते	ता.	२०८२ साउन ९ – २३
प्रतिपदा	कौस्तु.	१	४५।३७	२३:३८	पुष्य	२८।९	पुष्य	१६:१३	व.	७:३८	उत्पातः	कर्कटः	१३:३४	५:२३	१८:५७	२१७	शु	९	25	**श्रौतिनां वैदिकानां दर्शेष्टिः,** पौराणिकानामग्निव्रतम्
द्वितीया	बाल.	२	४३।५८	२२:५९	अश्ले	२८।१६	अश्ले	१६:०६	सि.	५:४३ २८:१८	मानसम्	१६:०६	१३:३३	५:२४	१८:५७	२१८	श	१०	26	
तृतीया	तैति.	३	४४।२	२३:०१	मघा	२९।३	मघा	१६:३९	व.	२७:२८	मुद्गरा	सिंहः	१३:३२	५:२४	१८:५६	२१९	आ	११	27	**वराहजयन्ती,** मधुश्रावणीपर्वसमाप्तिः
चतुर्थी	वाणि.	४	४५।५३	२३:४६	पूफ	२९।१०	पूफ	१७:५४	प.	२७:१०	ध्वजः	२४:१९	१३:३१	५:२५	१८:५५	२२०	सो	१२	28	
पञ्चमी	बवम्	५	४९।२२	२५:१०	उफ	२९।१७	उफ	१९:४७	शि.	२७:२२	धाता	कन्या	१३:३०	५:२५	१८:५५	२२१	म	१३	29	**लौ.नागपञ्चमी, कल्किजयन्ती**
षष्ठी	कौल.	६	५४।९	२७:०६	ह	अहोरात्र	ह	२२:१४	सि.	२७:५८	आनन्दः	कन्या	१३:२	५:२६	१८:५४	२२२	बु	१४	30	
सप्तमी	गराजि	७	५९।४७	२९:२१	ह	०।४	चि	२५:०१	सा.	२८:४९	चरः	११:३६	१३:२	५:२६	१८:५४	२२३	बृ	१५	31	
अष्टमी	विष्टिः	८	अहोरात्र	अहोरात्र	चि	०।१२	स्वा	२७:५८	शु.	अहोरात्र	गदः	तुला	१३:२६	५:२७	१८:५३	२२४	शु	१६	1	**अगष्ट**मासप्रारम्भः(२०२५ क्रै.)
नवमी	बाल.	८	५।४१	७:४४	स्वा	०।१९	वि	अहोरात्र	शु.	५:४५	शुभः	२४:०९	१३:२५	५:२८	१८:५२	२२५	श	१७	2	अश्लेषासु सूर्यः २७:५८
दशमी	तैति.	९	११।२१	१०:०१	वि	१।६	वि	६:५१	शु.	६:३८	उत्पातः	वृश्चिकः	१३:२३	५:२८	१८:५२	२२६	आ	१८	3	
एकादशी	वाणि.	१०	१६।१६	११:५९	अनु	१।१३	अनु	९:२७	ब्र.	७:१७	मानसम्	वृश्चिकः	१३:२२	५:२९	१८:५१	२२७	सो	१९	4	पौराणिकानां पुत्रदा एकादशी
द्वादशी	बवम्	११	२०।२	१३:३०	ज्ये	२।०	ज्ये	११:३८	ऐ.	७:३७	मुद्गरा	११:३८	१३:२१	५:२९	१८:५०	२२८	म	२०	5	
त्रयोदशी	कौल.	१२	२२।२३	१४:२७	मू	२।७	मू	१३:१६	वै.	७:३१	ध्वजः	धनुः	१३:२०	५:३०	१८:४९	२२९	बु	२१	6	प्रदोषव्रतम्
चतुर्दशी	गराजि	१३	२३।१३	१४:४७	पूषा	२।१४	पूषा	१४:१८	वि.	६:५६	धाता	२०:२८	१३:१८	५:३०	१८:४९	२३०	बृ	२२	7	○ **(पृषातकाः),** हयग्रीवोत्पत्तिः, **सामवेदिनाम् उपाकर्म, रक्षाबन्धनम्**
पूर्णिमा	विष्टिः	१४	२२।३३	१४:३२	उषा	३।१	उषा	१४:४५	प्री.	५:५४ २८:२३	कालद.	मकरः	१३:१७	५:३१	१८:४८	२३१	शु	२३	8	**श्रौतिनां वैदिकानाम् उपवसथः, स्मार्तानां वैदिकानाम् इन्द्रयज्ञः** ○

कथाको तात्पर्य

वेद तथा पुराणका कथाहरुको आध्यात्मिक , आधिदैविक, आधि–भौतिक इत्यादि विविध अर्थ हुने हुनाले कथाको तात्पर्य बुज्न प्रयास गर्न पर्छ। कथाबाट धर्मशास्त्र–विपरीत अर्थ लिन हुँदैन। कथा-वाचक ब्राह्मणले धर्मशास्त्रका नियम पनि बुझेर तेसको विपरीत नहुने गरेर कथा भन्न पर्छ।

गतकलिसावनाऽहर्गणः १८५८९५०।

रक्षाबन्धनमन्त्रः सर्वेषां कृते– **येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबलः। तेन त्वां प्रतिबध्नामि रक्षे मा चल मा चल॥**

कुलीनानां शुद्धानाम् अधीतवेदानां माध्यन्दिनीयवाजसनेयिशुक्लयजुर्वेदाध्यायिनां ब्राह्मणानां कृते रक्षाबन्धनमन्त्रः–

ओ३म् **त्वयँ यविष्ठ दाशुषो नॄः पाहि शृणुधी गिरः। रक्षा तोकमुत त्मना॥**–मा.सं. १३।५२, १८।७७।

१७ २०८२।४।२२ सूर्योदयसमयको ग्रहको स्थिति र दैनिक गति

सू ३:२०:३३:३८ ५७:२९ शु २:१३:४४:१३ ७०:०२
म ५:०५:४९:२० ३७:२० श ११:०७:१२:०३ -२:२४
बु ३:११:०२:२५ -२६:२४ रा १०:२५:४५:१६ ३:११
बृ २:१८:४७:४२ १२:३३ ४।२४-२२:२३ बुध पू. उदय
४।२७-२८:१६ बुध मार्गी

वैदिकतिथिपत्रे **कलिसंवत् ५०९०, ऐन्द्राग्नं युगम् (८५-१०), वत्सरः (५) (चान्द्रः अनलः संवत्सरः ५०), दक्षिणायनम्, वर्षाःऋतुः, नभस्यः [भाद्रः] मासः , कृष्णःपक्षः**

विक्रमसंवत् २०८२, **शकान्तसंवत् (शकसंवत्) १९४७**, बार्हस्पत्यः सिद्धार्थी संवत्सरः (५३), **कर्कटमास-सिंहमासौ** (साउन-भदौ), **भाद्रकृष्णपक्षः** (नेपालसंवत् ११४५ गुंलागाः=श्रावणकृष्णपक्षः) [अगष्ट २०२५ क्रैस्ताब्दः]

वै.ति.	करणम्	लौ.ति.	घ.प.	घण्टा	वे.न.	मुहूर्तः	दृक्.न.	घण्टा	योगाः	घण्टा	योगाः	चन्द्रराशिः	दिनमा.	सू.उ.	सू.अ.	अहर्ग.	वारः	गते	ता.	२०८२ साउन २४ – भदौ ६
प्रतिपदा	बाल.	१५	२०।३२	१३:४४	श्र	३।८	श्र	१४:४०	सौ.	२६:२९	स्थिरः	२६:२७	१३:१६	५:३१	१८:४७	२३२	श	२४	9	**श्रौतिनां वैदिकानां पूर्णमासेष्टिः,** पौराणिकानामग्निव्रतम्, गोयात्रा (गाइजात्रा) ❍
द्वितीया	तैति.	१	१७।२१	१२:२८	ध	३।१५	ध	१४:०८	शो.	२४:१५	मातङ्गः	कुम्भः	१३:१४	५:३२	१८:४६	२३३	आ	२५	10	रोपैँजात्रा, दथुसाया यलमतया, लौ.ति. गोयात्रा गाइजात्रा (सापारु), ☐
तृतीया	वाणि.	२	१३।१५	१०:५१	शत	४।२	शत	१३:१४	अ.	२१:४५	अमृतम्	कुम्भः	१३:१३	५:३२	१८:४५	२३४	सो	२६	11	देवीयात्रा ☐ ***नेपालका कतिपय स्थानमा सोरश्राद्धको आरम्भ***
चतुर्थी	बवम्	३	८।२८	८:५६	पूभ	४।९	पूभ	१२:०५	सु.	१९:०४	काणः	६:२३	१३:१२	५:३३	१८:४४	२३५	म	२७	12	बाघजात्रा, वै.ति. मङ्गलचतुर्थी, **पुनर्वसु नक्षत्रमा गुरु (बृहस्पति) ५०।२० (२५:४०)**
पञ्चमी	कौल.	४	३।१२ ५७।३८	६:५० २८:३७	उभ	४।१६	उभ	१०:४४	धृ.	१६:१५	लुम्बः	मीनः	१३:१०	५:३३	१८:४४	२३६	बु	२८	13	ललितपुर नृसिंहयात्रा ❍ लौ.ति. रक्षाबन्धनम्
षष्ठी	गराजिः	६	५१।५७	२६:२१	रे	५।३	रे	९:१७	शू.	१३:२१	मित्रम्	९:१७	१३:०९	५:३४	१८:४३	२३७	बृ	२९	14	✧ लौकिकानां **जनकसम्मानदिवसः (बाबुको मुख हेर्ने दिन)**
सप्तमी	विष्टिः	७	४६।१५	२४:०४	अ	५।१०	अ	७:४७	ग.	१०:२६	वज्रम्	मेषः	१३:०७	५:३४	१८:४२	२३८	शु	३०	15	लौ.ति. श्रीकृष्णजन्माष्टमी
अष्टमी	बाल.	८	४०।३८	२१:५०	भ	५।१७	भ	६:१८ २८:५२	वृ.	७:३१ २८:४०	ध्वाङ्क्षः	११:५६	१३:०६	५:३५	१८:४१	२३९	श	३१	16	**स्मार्तानां वैदिकानाम् अष्टका, वै.ति.श्रीकृष्णजन्माष्टमी** (जर्मठि), हिलेजात्रा
नवमी	तैति.	९	३५।१४	१९:४१	कृ	६।४	रो	२७:३२	व्या.	२५:५३	धाता	वृषः	१३:०४	५:३५	१८:४०	२४०	आ	१	17	**सिंहमासप्रारम्भः(भदौ) २०८२,** सिंहे मघासु सूर्यः ५१।४४ (२६:१७) ❖
दशमी	वाणि.	१०	३०।११	१७:४०	रो	६।११	मृग	२६:२१	ह.	२३:१३	आनन्दः	१४:५५	१३:०३	५:३६	१८:३९	२४१	सो	२	18	■ निशिबार्ने दिन), लघुस्मृतिपुराणानुसारिणां **कुशग्रहणम् (कुशेऔँसि),** ✧
एकादशी	बवम्	११	२५।३६	१५:५१	मृग	६।१८	आर्द्रा	२५:२३	व.	२०:४३	चरः	मिथुनम्	१३:०१	५:३६	१८:३८	२४२	म	३	19	पौराणिकानाम् अजा एकादशी ❖ **स्मार्तानां वैदिकानाम् अन्वष्टका**
द्वादशी	कौल.	१२	२१।४०	१४:१७	आर्द्रा	७।५	पुन	२४:४२	सि.	१८:२७	गदः	६:५१	१३:००	५:३७	१८:३७	२४३	बु	४	20	⦿ सायम्भोजनपरिहारदिनम् (हलो, ढिकि, जाँतो, ठेको बार्ने र ■
त्रयोदशी	गराजिः	१३	१८।३३	१३:०३	पुन	७।१२	पुष्य	२४:२३	व्य.	१६:२७	शुभः	कर्कटः	१२:५८	५:३७	१८:३६	२४४	बृ	५	21	प्रदोषव्रतम् ● हल-कण्डनी-यन्त्रक-मन्थनीकर्म-⦿
अमावास्या	चतुष्.	१४	१६।२७	१२:१३	पुष्य	७।१९	अश्ले	२४:३०	व.	१४:४७	मृत्युः	२४:३०	१२:५७	५:३८	१८:३५	२४५	शु	६	22	**श्रौतिनां वैदिकानां पिण्डपितृयज्ञः, स्मार्तानां वैदिकानां दर्शश्राद्धम्,** मन्वादिः,●

गतकलिसावनाऽहर्गणः १८५८९६५।

कुशग्रहण— **विरिञ्चिना सहोत्पन्न परमेष्ठिनिसर्गज। नुद सर्वाणि पापानि दर्भ स्वस्तिकरो भव॥ हुम् फट्।** ***ततो दात्रेण पूर्वास्य उदगास्योऽथवा कुशान्। मुष्टिमात्रोपरिष्टात् तु च्छिन्द्यात् प्रणवमुच्चरन्॥ प्रेतक्रियार्थं पित्र्र्थमभिचारार्थमेव च। दक्षिणाभिमुखश् छिन्द्यात् प्राचीनावीतिको द्विजः॥*** —स्मृतिसन्दर्भ, पृ.३१९९।

कुशका भेद— **अप्रसूतास् तु वै दर्भाः प्रसूतास्तु कुशाः स्मृताः। समूलाः कुतपा ज्ञेया इत्येषा नैगमी श्रुतिः॥** —द्वितीय यज्ञपार्श्व, श्लो.४-५।

दक्षिणपूर्वी आकाशमा अगस्त्यको उदय भएका एक सप्ताह(हप्ता)सम्ममा अगस्त्य र लोपामुद्रालाइ अर्घ दिने पौराण मन्त्रहरु—

१. काशपुष्पप्रतीकाश वह्निमारुतसम्भव। मित्रावरुणयोः पुत्र कुम्भयोने नमो-ऽस्तु ते॥

२. राजपुत्रि महाभागे ऋषिपत्नि वरानने। लोपामुद्रे नमस्तुभ्यमर्घं मे प्रतिगृह्यताम्॥

(येषु देशेष्वगस्त्यर्षेः पूजनं क्रियते जनैः। तेषु देशेषु पर्जन्यः कामवर्षी प्रजायते॥)—भविष्योत्तरपुराण ११८।८०, भारद्वाजस्मृति, स्मृतिसन्दर्भ,पृ. ३१९९।

वैदिकतिथिपत्रे कलिसंवत् ५०९०, ऐन्द्रागनं युगम् (८५-१०), वत्सरः (५) (चान्द्रः अनलः संवत्सरः ५०), दक्षिणायनम्, शरद् ऋतुः, इषः [आश्विनः] मासः , शुक्लः पक्षः

विक्रमसंवत् **२०८२, शकान्तसंवत् (शकसंवत्) १९४७**, बार्हस्पत्यः सिद्धार्थी संवत्सरः (५३), **सिंहमासः** (भदौ), **भाद्रशुक्लपक्षः** (नेपालसंवत् ११४५ अलाथ्वः=भाद्रशुक्लपक्षः) [अगष्ट-सेप्टेम्बर २०२५ क्रै.]

वै.ति.	करणम्	लौ.ति.	घ.प.	घण्टा	वे.न.	मुहूर्तः	दृक्.न.	घण्टा	योगाः	घण्टा	योगाः	चन्द्रराशिः	दिनमा.	सू.उ.	सू.अ.	अहर्ग.	वारः	गते	ता.	२०८२ भदौ ७ – २१
प्रतिपदा	कौस्तु.	३०	१५।३४	११:५२	अश्ले	८।६	मघा	२५:०८	प.	१३:३१	पद्मम्	सिंहः	१२:५५	५:३८	१८:३४	२४६	श	७	23	**श्रौतिनां वैदिकानां दर्शेष्टिः,** पौराणिकानामग्निव्रतम्, **वैदिकशरदृतुप्रारम्भः,** सायन- ☐
द्वितीया	बाल.	१	१६।४	१२:०४	मघा	८।१३	पूफ	२६:२०	शि.	१२:४१	छत्रम्	सिंहः	१२:५४	५:३९	१८:३३	२४७	आ	८	24	*नेपालका कतिपय स्थानमा मनाइने **नवरात्र**को आरम्भ, **घटस्थापना***
तृतीया	तैति.	२	१८।१	१२:५२	पूफ	९।०	उफ	२८:०५	सि.	१२:१९	श्रीवत्सः	८:४३	१२:५२	५:३९	१८:३२	२४८	सो	९	25	वै.ति. **हरितालिकाव्रतम्**(तिज) ☐ **कन्यायां सूर्यः ७।११ (८:५४), सौर शरद् ऋतुको आरम्भ**
चतुर्थी	वाणि.	३	२१।२५	१४:१४	उफ	९।७	ह	अहोरात्र	सा.	१२:२३	सौम्यः	कन्या	१२:५१	५:४०	१८:३१	२४९	म	१०	26	वै.ति. **गणेशचतुर्थी,** मङ्गलचतुर्थी, लौ.ति. हरितालिकाव्रतम् (तिज)
पञ्चमी	बवम्	४	२६।३	१६:०६	ह	९।१४	ह	६:२२	शु.	१२:५०	आनन्दः	१८:४०	१२:४९	५:४०	१८:३०	२५०	बु	११	27	**ऋषिपञ्चमी (श्रौती र स्मार्त वैदिकका निम्ति पनि ग्राह्य),**वै.ति.**विरूढ(विरुडा)पञ्चमी** ❖
षष्ठी	कौल.	५	३१।३६	१८:१९	चि	१०।१	चि	९:०३	शु.	१३:३५	चरः	तुला	१२:४८	५:४१	१८:२९	२५१	बृ	१२	28	सूर्यषष्ठी, लौ.ति. ऋषिपञ्चमी, लौ.ति. विरूढ(विरुडा)पञ्चमी ❖ लौ.ति.गणेशचतुर्थी
सप्तमी	गराजिः	६	३७।३६	२०:४४	स्वा	१०।८	स्वा	११:५८	ब्र.	१४:३०	गदः	तुला	१२:४६	५:४१	१८:२८	२५२	शु	१३	29	
अष्टमी	विष्टिः	७	४३।३३	२३:०७	वि	१०।१५	वि	१४:५५	ऐ.	१५:२५	शुभः	८:११	१२:४५	५:४२	१८:२७	२५३	श	१४	30	महालक्ष्मीव्रतारम्भः, मन्वादिः, पूर्वफल्गुन्योः सूर्यः २१:३७, वै.ति. **दूर्वाष्टमी, गोरापर्व**
नवमी	बाल.	८	४८।५३	२५:१६	अनु	११।२	अनु	१७:४३	वै.	१६:१३	मृत्युः	वृश्चिकः	१२:४३	५:४२	१८:२५	२५४	आ	१५	31	लौ.ति. दूर्वाष्टमी, गोरापर्व ○ *नेपालका कतिपय स्थानमा मनाइने **कोजागरपूर्णिमा***
दशमी	तैति.	९	५३।१०	२६:५९	ज्ये	११।९	ज्ये	२०:०९	वि.	१६:४३	पद्मम्	२०:०९	१२:४२	५:४३	१८:२४	२५५	सो	१६	1	**सेप्टेम्बर**मासप्रारम्भः (२०२५ क्रै.) ✧ *कतिपय स्थानमा मनाइने **विजयादशमी (टिका)***
एकादशी	वाणि.	१०	५६।०२	२८:०८	मू	११।१६	मू	२२:०४	प्री.	१६:५०	छत्रम्	धनुः	१२:४०	५:४३	१८:२३	२५६	म	१७	2	पौराणिकानां हरिपरिवर्तिनी एकादशी, *नेपालका* ✧
द्वादशी	बवम्	११	५७।१३	२८:३७	पूषा	१२।३	पूषा	२३:२१	आ.	१६:२८	श्रीवत्सः	२९:३४	१२:३८	५:४४	१८:२२	२५७	बु	१८	3	**इन्द्रध्वजोत्थापनम् (मतछोयके),** वामनद्वादशी, वामनजयन्ती
त्रयोदशी	कौल.	१२	५६।४०	२८:२४	उषा	१२।१०	उषा	२३:५७	सौ.	१५:३३	ध्वाङ्क्षः	मकरः	१२:३७	५:४४	१८:२१	२५८	बृ	१९	4	प्रदोषव्रतम्, अगस्त्योदयः ४२।५८ (२२:५५)
चतुर्दशी	गराजिः	१३	५४।२४	२७:३०	श्र	१२।१७	श्र	२३:५३	शो.	१४:०५	धूम्रः	मकरः	१२:३५	५:४५	१८:२०	२५९	शु	२०	5	अनन्तचतुर्दशी, **इन्द्रयात्रा (इन्द्रजात्रा),** लौकिकानां कुमारीयात्रा
पूर्णिमा	विष्टिः	१४	५०।३६	२६:००	ध	१३।३	ध	२३:११	अ.	१२:०५	वर्धमा.	११:३७	१२:३४	५:४५	१८:१९	२६०	श	२१	6	**श्रौतिनां वैदिकानाम् उपवसथः, स्मार्तानां वैदिकानाम् आश्वयुजीकर्म,** ○

गतकलिसावनाऽहर्गणः १८५८९७९।

भाद्रशुक्लचतुर्थीमा चन्द्रदर्शन नगर्ने प्रचलन छ। तेस दिन साँझमा चन्द्रमा नअस्ताइञ्जेल झ्यालढोका थुनेर बस्ने पनि प्रचलन छ । तेस दिन चन्द्रमा देखिएमा मिथ्या (झुटो) अपवाद लाग्छ भनिएको छ। मिथ्या अपवादको निराकरणका निम्ति यो पौराण मन्त्र जप्नु पर्छ भन्ने निर्देश छ– **सिंहः प्रसेनमवधीत् सिंहो जाम्बवता हतः। सुकुमारक मा रोदीस् तव ह्येष स्यमन्तकः॥**

शरद् ऋतुको चर्या– **शरद् ऋतुमा शालि धानको चामल र गहुँको सेवन गर्न पर्छ। शरद् ऋतुमा फुल्ने फुलका माला र साँज चन्द्रकिरणको सेवन हितकर हुन्छ। दिवास्वाप (दिउसो सुत्ने काम), दहि र क्षारको सेवन अहितकर छ।**–चरकसंहिता १।६।४०-४७।

१८ २०८२।५।७ सूर्योदयसमयको ग्रहको स्थिति र दैनिक गति

सू	४:०५:५६:१३	५७:४९	**शु**	३:०२:३६:०५	७१:२३
म	५:१५:५५:२०	३८:२२	**श**	११:०६:२३:१५	३:३८
बु	३:१८:००:४०	७९:१६	**रा**	१०:२४:५४:२२	३:११
बृ	२:२२:००:४२	११:३१	**५।१४–२४:३४ बुध पू. अस्त**		

वैदिकतिथिपत्रे कलिसंवत् ५०९०, ऐन्द्राग्नं युगम् (८५-१०), वत्सरः (५) (चान्द्रः अनलः संवत्सरः ५०), दक्षिणायनम्, शरद् ऋतुः, इषः [आश्विनः] मासः, कृष्णः पक्षः

विक्रमसंवत् २०८२, **शकान्तसंवत् (शकसंवत्) १९४७**, बार्हस्पत्यः सिद्धार्थी संवत्सरः (५३), **सिंहमास-कन्यामासौ** (भदौ-असोज), **आश्विनकृष्णपक्षः** (नेपालसंवत् ११४५ ञलागाः=भाद्रकृष्णपक्षः)[सेप्टेम्बर २०२५ क्रै.]

वै.ति.	करणम्	लौ.ति.	घ.प.	घण्टा	वे.न.	मुहूर्तः	दृक्.न.	घण्टा	योगाः	घण्टा	योगाः	चन्द्रराशिः	दिनमा.	सू.उ.	सू.अ.	अहर्ग.	वारः	गते	ता.	२०८२ भदौ २२ – असोज ५
प्रतिपदा	बाल.	१५	४५।३०	२३:५८	शत	१३।१०	शत	१:५८	सु.	९:३७	राक्षसः	कुम्भः	१२:३२	५:४५	१८:१८	२६१	आ	२२	7	**श्रौतिनां वैदिकानां पूर्णमासेष्टिः,** श्राद्धषोडशकारम्भः [सोर-श्राद्धको आरम्भ] ❍
द्वितीया	तैति.	१	३९।२३	२१:३१	पूभ	१३।१७	पूभ	२०:१९	धृ.	६:४५ २७:३५	मुसल.	१४:४६	१२:३०	५:४६	१८:१६	२६२	सो	२३	8	द्वितीयाश्राद्धम् ❍ (प्रतिमैना औँसिमा श्राद्ध गर्न नसक्ने स्मार्त वैदिकहरुका निम्ति ✧
तृतीया	वाणि.	२	३२।३४	१८:४८	उभ	१४।४	उभ	१८:२४	ग.	२४:१३	सिद्धिः	मीनः	१२:२९	५:४६	१८:१५	२६३	म	२४	9	तृतीयाश्राद्धम् ✧ पनि ग्राह्य), **प्रतिपदाश्राद्धम्**, पौराणिकानामग्निव्रतम्, ❖
चतुर्थी	बवम्	३	२५।२२	१५:५६	रे	१४।११	रे	१६:१८	वृ.	२०:४४	उत्पातः	१६:१८	१२:२७	५:४७	१८:१४	२६४	बु	२५	10	चतुर्थीश्राद्धम्, **इन्द्रध्वजपातनम् ☐ समय), याज्ञवल्क्यस्मृत्युक्तः श्राद्धकालविशेषः**
पञ्चमी	कौल.	४	१८।६	१३:०२	अ	१४।१८	अ	१४:१२	ध्रु.	१७:१६	मानसम्	मेषः	१२:२६	५:४७	१८:१३	२६५	बृ	२६	11	पञ्चमीश्राद्धम्, उत्तरफल्गुन्योः सूर्यः ९:१९ ❖ खग्रासचन्द्रग्रहणम्
षष्ठी	गराजिः	५	११।३	१०:१३	भ	१५।५	भ	१२:११	व्या.	१३:५४	मुद्गरः	१७:४२	१२:२४	५:४८	१८:१२	२६६	शु	२७	12	षष्ठीश्राद्धम्, **दृक्सिद्धवैदिकशारदविषुवम् (शरद् ऋतुको दिनरात बराबर हुने ☐**
सप्तमी	विष्टिः	६	४।३० ५८।४२	७:३६ २९:१७	कृ	१५।१२	कृ	१०:२२	ह.	१०:४१	ध्वजः	वृषः	१२:२२	५:४८	१८:११	२६७	श	२८	13	सप्तमीश्राद्धम्, महालक्ष्मीव्रतसमाप्ति ⍓ **विषुवत्को नजिक पर्ने राशिसङ्क्रान्ति**
अष्टमी	बाल.	८	५३।४७	२७:१९	रो	१५।१९	रो	८:५१	व.	७:४४ २९:०४	धाता	२०:१४	१२:२१	५:४९	१८:१०	२६८	आ	२९	14	अष्टमीश्राद्धम्, **जीवत्पुत्रिका**व्रतम् (जितियापर्व)
नवमी	तैति.	९	४९।५३	२५:४६	मृग	१६।६	मृग	७:४३	व्य.	२६:४५	आनन्दः	मिथुनम्	१२:१९	५:४९	१८:०८	२६९	सो	३०	15	नवमीश्राद्धम्, ☼ **२०८२,** कन्यायां सूर्यः ५०।५९ (२६:१४) **शरद् ऋतुको** ⍓
दशमी	वाणि.	१०	४७।४	२४:३९	आर्द्रा	१६।१३	आर्द्रा	६:५९	व.	२४:४६	चरः	२४:४३	१२:१८	५:५०	१८:०७	२७०	म	३१	16	दशमीश्राद्धम् 🕯 ***लक्ष्मीपूजा, दीपावली*** *(नेपालका कतिपय स्थानमा मनाइने)*
एकादशी	बवम्	११	४५।२२	२३:५९	पुन	१७।०	पुन	६:४१	प.	२३:०९	गदः	कर्कटः	१२:१६	५:५०	१८:०६	२७१	बु	१	17	एकादशीश्राद्धम्, पौराणिकानाम् इन्दिरा एकादशी, **कन्यामासप्रारम्भः (असोज)** ☼
द्वादशी	कौल.	१२	४४।४६	२३:४५	पुष्य	१७।७	पुष्य	६:४९	शि.	२१:५२	शुभः	कर्कटः	१२:१४	५:५०	१८:०५	२७२	बृ	२	18	द्वादशीश्राद्धम् ⊙ परिहार-दिनम् (हलो, ढिकि, जाँतो, ठेको बार्ने दिन) 🕯
त्रयोदशी	गराजिः	१३	४५।१५	२३:५७	अश्ले	१७।१४	अश्ले	७:२३	सि.	२०:५६	मृत्युः	७:२३	१२:१३	५:५१	१८:०४	२७३	शु	३	19	त्रयोदशीश्राद्धम्, प्रदोषव्रतम्, कलियुगादिः
चतुर्दशी	विष्टिः	१४	४६५२	२४:३६	मघा	१८।०	मघा	८:२३	सा.	२०:२१	पद्मम्	सिंहः	१२:११	५:५१	१८:०३	२७४	श	४	20	चतुर्दशीश्राद्धम्, नःलास्वनेचह्रेपूजा, ● हल-कण्डनी-यन्त्रक-मन्थनीकर्म- ⊙
अमावास्या	चतुष्.	३०	४९।३५	२५:४२	पूफ	१८।७	पूफ	९:४८	शु.	२०:०६	छत्रम्	१६:१३	१२:१०	५:५२	१८:०२	२७५	आ	५	21	**श्रौतिनां वैदिकानां पिण्डपितृयज्ञः, स्मार्तानांवैदिकानां दर्शश्राद्धम्,** ●

गतकलिसावनाऽहर्गणः १८५८९९४।

यमदंष्ट्राका समयमा स्वस्थ रहन ठिक्क भोजन गर्न पर्ने नियम— **कार्त्तिकस्य दिनान्यष्टावष्टाऽऽग्रहायणस्य च। यमदंष्ट्रोदिता ह्यत्र योऽल्पाहारः स जीवति॥ वैद्यानां तु शरन् माता पिता च कुसुमाकरः। यमदंष्ट्रा स्वसा प्रोक्ता हितभुङ् मितभुग् रिपुः॥**

सोरश्राद्ध— प्रत्येक मैना औँसिमा पार्वणश्राद्ध गर्न नसकिएमा तेसको अनुकल्पका रूपमा वर्षभरिमा ३ ऋतुमा ३ पटक र त्यो पनि नसके १ पटक मत्रै भए पनि पार्वणश्राद्ध गर्न पर्ने कुरा शास्त्रमा आएको छ— **अनेन विधिना श्राद्धं त्रिरब्दस्येह निर्वपेत्। हेमन्त-ग्रीष्म-वर्षासु पाञ्चयज्ञिकमन्वहम्॥**–मनुस्मृति ३।२८१। **हंसे वर्षासु कन्यास्थे शाकेनापि गृहे वसन्। पञ्चम्या उत्तरे दद्यादुभयोर्वंशयोर्ऋणम्॥**-भविष्यपुराणवचन, स्मृतितत्त्व-१, पृ.२५४। एसै अनुरूप परम्परा चलेर आएको देखिन्छ। सोरश्राद्धमा शुक्लयजुर्वेदिहरुले पिता, पितामह, प्रपितामह; मातामह, प्रमातामह र वृद्धप्रमातामहलाइ गरि जम्मा ६ पिण्ड दिनुपर्छ।

१९ २०८२।५।२२ सूर्योदयसमयको ग्रहको स्थिति र दैनिक गति

सू	४:२०:२६:३८	५८:१३	शु	३:२०:३५:२९	७२:२८
म	५:२५:३८:२१	३९:२०	श	११:०५:२२:२५	-४:२३
बु	४:१४:२३:४१	११६:१८	रा	१०:२४:०६:४०	३:११
बृ	२:२४:४४:०६	१०:१२			

वैदिकतिथिपत्रे कलिसंवत् ५०९०, ऐन्द्राग्नं युगम् (८५-१०), वत्सरः (५) (चान्द्रः अनलः संवत्सरः ५०), दक्षिणायनम्, शरद् ऋतुः, ऊर्जः [कार्त्तिकः] मासः , शुक्लः पक्षः

विक्रमसंवत् **२०८२, शकान्तसंवत् (शकसंवत्) १९४७**, बार्हस्पत्यः सिद्धार्थी संवत्सरः (५३), **कन्यामासः** (असोज), **आश्विनशुक्लपक्षः** (नेपालसंवत् ११४५ कौलाथ्वः=आश्विनशुक्लपक्षः) [सेप्टेम्बर-अक्टोबर २०२५ क्रै.]

वै.ति.	करणम्	लौ.ति.	घ.प.	घण्टा	वे.न.	मुहूर्तः	दृक्.न.	घण्टा	योगाः	घण्टा	योगाः	चन्द्रराशिः	दिनमा.	सू.उ.	सू.अ.	अहर्ग.	वारः	गते	ता.	**२०८२ असोज ६ – २०**
प्रतिपदा	कौस्तु.	१	५३।२३	२७:१४	उफ	१८।१४	उफ	११:३९	शु.	२०:१२	श्रीवत्सः	कन्या	१२:०८	५:५२	१८:००	२७६	सो	६	22	**श्रौतिनां वैदिकानां दर्शेष्टिः**, नवरात्रारम्भः, **घटस्थापना**, ☾
द्वितीया	बाल.	२	५८।१२	२९:१०	ह	१९।१	ह	१३:५५	ब्र.	२०:३६	सौम्यः	२७:११	१२:०६	५:५३	१७:५९	२७७	म	७	23	चन्द्रदर्शनम्, ***भ्रातृद्वितीया*** *(नेपालका कतिपय स्थानमा मनाइने)*, ☼
तृतीया	तैति.	३	अहोरात्र	अहोरात्र	चि	१९।८	चि	१६:३२	ऐ.	२१:१६	कालद.	तुला	१२:०५	५:५३	१७:५८	२७८	बु	८	24	तृतीया तिथि बढेको कुरा अमान्य हुँदा वैदिकपद्धतिमा **फुलपाति, महाष्टमी, महानवमी**
चतुर्थी	वाणि.	३	३।४९	७:२५	स्वा	१९।१५	स्वा	१९:२६	वै.	२२:०८	स्थिरः	तुला	१२:०३	५:५४	१७:५७	२७९	बृ	९	25	र **विजयादशमी** अगिल्ला दिन पर्छन्। लौकिक तिथिअनुसार चाहिँ भोलिपल्ट पर्छन्।
पञ्चमी	बवम्	४	९।५८	९:५३	वि	२०।२	वि	२२:२७	वि.	२३:०६	मातङ्गः	१५:४१	१२:०२	५:५४	१७:५६	२८०	शु	१०	26	उपाङ्गललिताव्रतम्, हस्ते सूर्यः ६:५९, ☾ पौराणिकानामग्निव्रतम्
षष्ठी	कौल.	५	१६।१४	१२:२४	अनु	२०।९	अनु	२५:२६	प्री.	२४:०१	अमृतम्	वृश्चिकः	१२:००	५:५५	१७:५५	२८१	श	११	27	विल्वनिमन्त्रणम् ☼**सायनतुलायां सूर्यः १।२३ (६:४९) दृक्सिद्ध-वैदिक-** ❑
सप्तमी	गराजिः	६	२२।१०	१४:४७	ज्ये	२०।१६	ज्ये	२८:११	आ.	२४:४६	काणः	२८:११	११:५८	५:५५	१७:५४	२८२	आ	१२	28	**नवपत्रिकाप्रवेशः (फुलपाति)**, सरस्वतीको आवाहन, रविसप्तमी
अष्टमी	विष्टिः	७	२७।१६	१६:५०	मू	२१।३	मू	अहोरात्र	सौ.	२५:१३	लुम्बः	धनुः	११:५७	५:५६	१७:५२	२८३	सो	१३	29	**महाष्टमी** (कुछिभ्वे), कालरात्रिः
नवमी	बाल.	८	३१।७	१८:२३	पूषा	२१।१०	मू	६:३२	शो.	२५:१५	छत्रम्	धनुः	११:५५	५:५६	१७:५१	२८४	म	१४	30	**महानवमी (स्याको ट्याको)**, मन्वादिः ⍓ **अक्टोबर**मासप्रारम्भः (२०२५ क्रै.)
दशमी	तैति.	९	३३।१९	१९:१६	उषा	२१।१७	पूषा	८:२०	अ.	२४:४५	श्रीवत्सः	१४:४०	११:५४	५:५७	१७:५०	२८५	बु	१५	1	देवीविसर्जन, शमीदर्शन, **विजयादशमी (टिका)**, खड्गयात्रा (चालँ) ⍓
एकादशी	वाणि.	१०	३३।४१	१९:२५	श्र	२२।४	उषा	९:२६	सु.	२३:३९	ध्वाङ्क्ष	मकरः	११:५२	५:५७	१७:४९	२८६	बृ	१६	2	पौराणिकानां पापाङ्कुशा एकादशी, अन्नपूर्णयात्रा (असँ चालँ)
द्वादशी	बवम्	११	३२।५	१८:४७	ध	२२।११	श्र	९:४६	धृ.	२१:५६	धूम्रः	२१:४०	११:५०	५:५७	१७:४८	२८७	शु	१७	3	प्रदोषव्रतम् ❑ **शारदविषुवद्दिनम् (शरद् ऋतुको दिनरात बराबर हुने समय)**
त्रयोदशी	कौल.	१२	२८।३६	१७:२४	शत	२२।१७	ध	९:२२	शू.	१९:३८	वर्धमा.	कुम्भः	११:४९	५:५८	१७:४७	२८८	श	१८	4	शनित्रयोदशी ✧ **शरद् ऋतुको विषुवत्समयको नजिकको पूर्णिमा**
चतुर्दशी	गराजिः	१३	२३।२४	१५:२०	पूभ	२३।४	शत	८:१५	ग.	१६:४६	राक्षसः	२५:००	११:४७	५:५८	१७:४६	२८९	आ	१९	5	अखिलबलिपूर्ति (सिघया) ○ **वृषोत्सर्गः, कोजागरपूर्णिमा**, ✧
पूर्णिमा	विष्टिः	१४	१६।४७	१२:४२	उभ	२३।११	पूभ	६:३१ २८:१९	वृ.	१३:२७	मुसल.	मीनः	११:४६	५:५९	१७:४५	२९०	सो	२०	6	**श्रौतिनां वैदिकानामुपवसथः, साकमेधपर्व, स्मार्तानां वैदिकानां पायसश्रपणयज्ञः**, ○

गतकलिसावनाऽहर्गणः १८५९००९ । विजयादशमीमा दिइने आशीर्वचन— **आयुर्द्रोणसुते श्रियो दशरथे शत्रुक्षयो राघवे, ऐश्वर्यं नहुषे गतिश्च पवने मानश्च दुर्योधने। शौर्यं शान्तनवे बलं हलधरे सत्यं च कुन्तीसुते, विज्ञानं विदुरे भवन्तु भवतः कीर्तिश्च नारायणे॥ आयुर्वृद्धिर् यशोवृद्धिर् वृद्धिः प्रज्ञा-सुख-श्रियाम्। धर्म-सन्तानयोर् वृद्धिः सन्तु ते सप्त वृद्धयः॥ अव्याधिना शरीरेण मनसा च निराधिना। पूरयन्नर्थिनामाशास् त्वं जीव शरदां शतम्॥**

भद्रमस्तु शिवं चास्तु महालक्ष्मीः प्रसीदतु। रक्षन्तु त्वां सदा देवाः सम्पदः सन्तु सुस्थिराः॥
महाकाली महालक्ष्मीस् तथा महासरस्वती। त्वयि नित्यं प्रसन्नाश्च सन्तु कल्याणदायिकाः॥

स्त्रीहरुका निम्ति आशीर्वचन— **जयन्ती मङ्गला काली भद्रकाली कपालिनी। दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोस्तु ते॥ सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके। शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोस्तु ते॥ शरणागतदीनार्त-परित्राणपरायणे। सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोस्तु ते॥ भद्रमस्तु शिवं चास्तु महालक्ष्मीः प्रसीदतु। रक्षन्तु त्वां सदा देवाः सम्पदः सन्तु सुस्थिराः॥ महाकाली महालक्ष्मीस्तथा महासरस्वती। त्वयि नित्यं प्रसन्नाश्च सन्तु कल्याणदायिकाः॥**

२० २०८२।६।७ सूर्योदयसमयको ग्रहको स्थिति र दैनिक गति

सू	५:०६:०२:१८	५८:४३	शु	४:१०:०३:३३	७३:२८
म	६:०६:१५:५९	४०:२१	श	११:०४:०९:१९	-४:३८
बु	५:१३:४९:४४	१०२:३४	रा	१०:२३:१५:४७	३:११
बृ	२:२७:१३:३३	८:२४	**६।१४-१७:३१ बुध प. उदय**		

वैदिकतिथिपत्रे कलिसंवत् ५०९०, ऐन्द्राग्नं युगम् (८५–१०), वत्सरः (५) (चान्द्रः अनलः संवत्सरः ५०), दक्षिणायनम्, शरद् ऋतुः, ऊर्जः [कार्त्तिकः] मासः, कृष्णः पक्षः

विक्रमसंवत् २०८२, शकान्तसंवत् (शकसंवत्) १९४७, बार्हस्पत्यः सिद्धार्थी संवत्सरः (५३), **कन्यामास-तुलामासौ** (असोज-कात्तिक), **कार्त्तिककृष्णपक्षः** (नेपालसंवत् ११४५ कौलागाः=आश्विनकृष्णपक्षः) [अक्टोबर २०२५ क्रै.]

वै.ति.	करणम्	लौ.ति.	घ.प.	घण्टा	वे.न.	मुहूर्तः	दृक्.न.	घण्टा	योगाः	घण्टा	योगाः	चन्द्रराशिः	दिनमा.	सू.उ.	सू.अ.	अहर्ग.	वारः	गते	ता.	२०८२ असोज २१ – कात्तिक ४
प्रतिपदा	बाल.	१५	९।४	९:३७	रे	२३।१८	रे	२५:४६	ध्रु.	९:४७ २१:५२	शुभः	२५:४६	११:४४	५:५९	१७:४४	२९१	म	२१	7	**श्रौतिनां वैदिकानां पूर्णमासेष्टिः,** पौराणिकानामग्निव्रतम्
द्वितीया	तैति.	१	०।३७ ५१।५०	६:१५ २६:४४	अ	२४।५	अ	२३:०४	ह.	२५:५०	मृत्युः	मेषः	११:४२	६:००	१७:४२	२९२	बु	२२	8	
तृतीया	वाणि.	३	४३।८	२३:१६	भ	२४।१२	भ	२०:२१	व.	२१:४९	पद्मम्	२५:४२	११:४१	६:०१	१७:४१	२९३	बृ	२३	9	
चतुर्थी	बवम्	४	३४।५२	१९:५८	कृ	२४।१९	कृ	१७:४८	सि.	१७:५६	छत्रम्	वृषः	११:३९	६:०१	१७:४०	२९४	शु	२४	10	करकचतुर्थीव्रतम् (करवाचौथ), चित्रायां सूर्यः २०:०१
पञ्चमी	कौल.	५	२७।२६	१७:००	रो	२५।६	रो	१५:३४	व्य.	१४:१९	श्रीवत्सः	२६:३७	११:३८	६:०२	१७:३९	२९५	श	२५	11	
षष्ठी	गराजिः	६	२१।१२	१४:३१	मृग	२५।१३	मृग	१३:४८	व.	११:०५	सौम्यः	मिथुनम्	११:३६	६:०२	१७:३८	२९६	आ	२६	12	
सप्तमी	विष्टिः	७	१६।२५	१२:३७	आर्द्रा	२६।०	आर्द्रा	१२:३७	प.	८:१९ ३०:०२	कालद.	मिथुनम्	११:३४	६:०३	१७:३७	२९७	सो	२७	13	✧ **धन्वन्तरिजयन्ती, धनत्रयोदशी**
अष्टमी	बाल.	८	१३।१६	११:२२	पुन	२६।७	पुन	१२:०४	सि.	२८:२०	स्थिरः	६:०८	११:३३	६:०३	१७:३६	२९८	म	२८	14	भौमाष्टमी, **यमदंष्ट्राको आरम्भ** (आयुर्वेद) 🕯 **दीपावली, गाइतिहार, लक्ष्मीपूजा,** सुखरात्रिः
नवमी	तैति.	९	११।४९	१०:४८	पुष्य	२६।१४	पुष्य	१२:११	सा.	२७:०८	मातङ्गः	कर्कटः	११:३१	६:०४	१७:३५	२९९	बु	२९	15	◉ परिहारदिनम् (हलो, ढिकि, जाँतो, ठेको बार्ने दिन), 🕯
दशमी	वाणि.	१०	१२।०	१०:५२	अश्ले	२७।१	अश्ले	१२:५६	शु.	२६:२४	अमृतम्	१२:५६	११:३०	६:०४	१७:३४	३००	बृ	३०	16	● **स्मार्तानां वैदिकानां दर्शश्राद्धम्,** हल-कण्डनी-यन्त्रक-मन्थनीकर्म-◉
एकादशी	बवम्	११	१३।३७	११:३२	मघा	२७।८	मघा	१४:१४	शु.	२६:०४	काणः	सिंहः	११:२८	६:०५	१७:३३	३०१	शु	३१	17	पौराणिकानां रमा एकादशी, तुलायां सूर्यः २०।१७ (१४:१२) ❁ **१३।४३ (११:३५)**
द्वादशी	कौल.	१२	१६।२७	१२:४०	पूफ	२७।१५	पूफ	१६:००	ब्र.	२६:०४	लुम्बः	२२:३०	११:२७	६:०५	१७:३२	३०२	श	१	18	गोवत्सद्वादशी, **तुलामासप्रारम्भः (कात्तिक) २०८२, कर्कटे गुरुः (बृहस्पतिः)** ❁
त्रयोदशी	गराजिः	१३	२०।१७	१४:१३	उफ	२८।२	उफ	१८:०८	ऐ.	२६:२०	मित्रम्	कन्या	११:२५	६:०६	१७:३१	३०३	आ	२	19	प्रदोषव्रतम्, काकबलिदानम् (**कागतियार**), सायंकाले द्वारबहिर्भागे **यमदीपदानम्**, ✧
चतुर्दशी	विष्टिः	१४	२४।५७	१६:०५	ह	२८।९	ह	२०:३४	वै.	२६:४९	वज्रम्	कन्या	११:२४	६:०७	१७:३०	३०४	सो	३	20	**नरकचतुर्दशी,** (स्वन्तिचह्रेपूजा), श्वानबलिदानम् (**कुकुरतियार**), बलिराज्यत्रिरात्रारम्भः
अमावास्या	चतुष्.	३०	३०।१७	१८:१४	चि	२८।१६	चि	२३:१५	वि.	२७:३०	ध्वाङ्क्षः	९:५३	११:२२	६:०७	१७:२९	३०५	म	४	21	**कौमुदीमहोत्सवारम्भः, श्रौतिनां वैदिकानां पिण्डपितृयज्ञः,** ●

गतकलिसावनाऽहर्गणः १८५८९०२४

३ गते (सोमवार) साँझ औँसि लागे पनि पर्वकालभन्दा धेरै टाढा पर्छ। अतः अमावास्यान्तकालको समीप रहने साँझको समयमा कात्तिक ४ गते मङ्गलवार नै लक्ष्मीपूजा गर्नु उचित छ।

आश्विन-कृष्णत्रयोदशीमा बेलुका यमदीपदान गर्ने पुराणको मन्त्र– **मृत्युना पाश-दण्डाभ्यां कालेन श्यामया सह। त्रयोदश्यां दीपदानात् सूर्यजः प्रीयतां मम॥**–स्कन्दपुराण, वैष्णवखण्ड ४।९।२३।

कृष्णचतुर्दशीमा प्रातःस्नान गर्दा अपामार्ग (दतिउन) घुमाउने मन्त्र– **सीतालोष्टसमायुक्त सकण्टकदलान्वित। हर पापमपामार्ग भ्राम्यमाण पुनःपुनः॥ आपदं किल्बिषं चाऽपि ममाऽपहर सर्वशः। अपामार्ग नमस् तेऽस्तु शरीरं मम शोधय॥** कृष्णचतुर्दशीमा प्रातःस्नानपछि नरकप्रीतिका निम्ति दीपदानको मन्त्र (बत्ति बगाउने मन्त्र)– **दत्तो दीपश् चतुर्दश्यां नरकप्रीतये मया। चतुर्वर्तिसमायुक्तः सर्वपापापनुत्तये॥** नरकचतुर्दशीमा माषपत्रशाकसँग भोजन गर्ने कुराको माहात्म्य– **माषपत्रस्य शाकेन भुक्त्वा तस्मिन् दिने नरः। प्रेताख्यायां चतुर्दश्यां सर्वपापैः प्रमुच्यते॥**–कार्त्तिकमाहात्म्य १३।१९। कृष्णचतुर्दशीमा राति दीपदान गर्ने मन्त्र– **नमः पितृभ्यः प्रेतेभ्यो नमो धर्माय विष्णवे॥ नमो यमाय रुद्राय कान्तारपतये नमः॥**–कार्त्तिकमाहात्म्य १०।६५।

२१ २०८२।६।२२ सूर्योदयसमयको ग्रहको स्थिति र दैनिक गति

सू	५:२०:४७:०२	५९:१३	**शु**	४:२८:३१:३४	७४:१२
म	६:१६:२८:२३	४१:१७	**श**	११:०३:०१:३७	-४:१७
बु	६:०७:४६:४९	८९:२८	**रा**	१०:२२:२८:०४	३:१
बृ	२:२९:०४:१०	६:१७			

वैदिकतिथिपत्रे कलिसंवत् ५०९०, ऐन्द्राग्नं युगम् (८५–१०), वत्सरः (५) (चान्द्रः अनलः संवत्सरः ५०), दक्षिणायनम्, हेमन्तः ऋतुः, सहाः [मार्गः] मासः, शुक्लः पक्षः

विक्रमसंवत् २०८२, **शकान्तसंवत् (शकसंवत्) १९४७**, बार्हस्पत्यः सिद्धार्थी संवत्सरः (५३), **तुलामासः** (कात्तिक), **कार्त्तिकशुक्लपक्षः** (नेपालसंवत् ११४६ कछलाथ्वः=कार्त्तिकशुक्लपक्षः) [अक्टोबर–नोवेम्बर २०२५ क्रै.]

वै.ति.	करणम्	लौ.ति.	घ.प.	घण्टा	वे.न.	मुहूर्तः	दृक्.न.	घण्टा	योगाः	घण्टा	योगाः	चन्द्रराशिः	दिनमा.	सू.उ.	सू.अ.	अहर्ग.	वारः	गते	ता.	२०८२ कात्तिक ५ – १९
प्रतिपदा	कौस्तु.	१	३६।८	२०:३५	स्वा	२९।२	स्वा	२६:०७	प्री.	२८:१९	धूम्रः	तुला	११:२१	६:०८	१७:२८	३०६	बु	५	22	**श्रौतिनां वैदिकानां दर्शेष्टिः**, पौराणिकानामग्निव्रतम्, **वैदिकहेमन्तर्तुप्रारम्भः**, ☾
द्वितीया	बाल.	२	४२।२१	२३:०५	वि	२९।९	वि	२९:०६	आ.	२९:१३	वर्धमा.	२२:२१	११:१९	६:०८	१७:२७	३०७	बृ	६	23	**यमद्वितीया (भ्रातृद्वितीया)**, सायनवृश्चिके सूर्यः **२१।३१ (१४:४५)**, ☼
तृतीया	तैति.	३	४८।४१	२५:३७	अनु	२९।१६	अनु	अहोरात्र	सौ.	३०:०८	राक्षसः	वृश्चिकः	११:१७	६:०९	१७:२७	३०८	शु	७	24	स्वातौ सूर्यः ६:३१ ☾कार्त्तिक-व्रतिनां पौराणिकानां च **गोवर्धनपूजा**,विन्ध्यावली-✧
चतुर्थी	वाणि.	४	५४।५२	२८:०६	ज्ये	अहोरात्र	अनु	८:०७	शो.	अहोरात्र	अमृतम्	वृश्चिकः	११:१६	६:१०	१७:२६	३०९	श	८	25	✧ **सहित-बलिराजपूजा, दीपोत्सव, आत्मपूजा (ह्मपूजा), नेपालसंवत् ११४६**
पञ्चमी	बवम्	५	अहोरात्र	अहोरात्र	ज्ये	०।३	ज्ये	११:०२	शो.	६:५९	काणः	११:०२	११:१४	६:१०	१७:२५	३१०	आ	९	26	☼ **सौर हेमन्त ऋतुको आरम्भ**
षष्ठी	कौल.	५	०।३०	६:२३	मू	०।१०	मू	१३:४३	अ.	७:४०	लुम्बः	धनुः	११:१३	६:११	१७:२४	३११	सो	१०	27	**सूर्यषष्ठी (छठपर्व)**
सप्तमी	गराजिः	६	५।१६	८:१८	पूषा	०।१७	पूषा	१६:००	सु.	८:०४	मित्रम्	२०:३०	११:१२	६:१२	१७:२३	३१२	म	११	28	
अष्टमी	विष्टिः	७	८।४२	९:४१	उषा	१।४	उषा	१७:४५	धृ.	८:०४	मुद्गरः	मकरः	११:१०	६:१२	१७:२२	३१३	बु	१२	29	पौराणिकानां गोपाष्टमी, **यमदंष्ट्राको समाप्ति** (आयुर्वेद)
नवमी	बाल.	८	१०।२७	१०:२४	श्र	१।११	श्र	१८:४८	शू.	७:३४	ध्वजः	मकरः	११:०९	६:१३	१७:२२	३१४	बृ	१३	30	कूष्माण्डनवमी, कृतयुगादिः (सत्ययुगादिः), हेटौँडा कूष्माण्डसरोवरमेला
दशमी	तैति.	९	१०।१५	१०:२०	ध	१।१८	ध	१९:०४	ग.	६:२८ २८:४३	धाता	७:०२	११:०७	६:१४	१७:२१	३१५	शु	१४	31	
एकादशी	वाणि.	१०	८।०१	९:२७	शत	२।५	शत	१८:३३	ध्रु.	२६:२०	आनन्दः	कुम्भः	११:०६	६:१४	१७:२०	३१६	श	१५	1	पौराणिकानां **हरिबोधिनी एकादशी**, तुलसीविवाहः, **नोवेम्बर**मासप्रारम्भः (२०२५ क्रै.)
द्वादशी	बवम्	११	३।४७ ५६।७	७:४६ २९:०९	पूभ	२।१२	पूभ	१७:१५	व्या.	२३:२१	चरः	११:३९	११:०४	६:१५	१७:१९	३१७	आ	१६	2	मन्वादिः
त्रयोदशी	कौल.	१३	५०।१३	२६:२१	उभ	२।१९	उभ	१५:१८	ह.	१९:५०	गदः	मीनः	११:०३	६:१६	१७:१९	३१८	सो	१७	3	प्रदोषव्रतम्
चतुर्दशी	गराजिः	१४	४१।३२	२२:५३	रे	३।६	रे	१२:४८	व.	१५:५५	शुभः	१२:४८	११:०२	६:१६	१७:१८	३१९	म	१८	4	वैकुण्ठचतुर्दशी ○**स्रस्तरारोहणकर्म**, पौराणिकानां चातुर्मास्यव्रतसमाप्तिः, मन्वादिः
पूर्णिमा	विष्टिः	१५	३२।८	१९:०८	अ	३।१३	अ	९:५६	सि.	११:४२	मृत्युः	मेषः	११:००	६:१७	१७:१७	३२०	बु	१९	5	**श्रौतिनां वैदिकानाम् उपवसथः, स्मार्तानां वैदिकानाम् आग्रहायणीकर्म**, ○

गतकलिसावनाऽहर्गणः १८५९०३९ ।

बिहान उठ्ने समय— **ब्राह्मे मुहूर्ते उत्तिष्ठेत् स्वस्थो रक्षार्थमायुषः ।** (स्वस्थ मानिसले आँफ्नो आयुका रक्षाका निम्ति ब्राह्म मुहूर्तमा अर्थात् सूर्योदयभन्दा अगाडि [रातको उपान्त्य मुहूर्तमा] उठ्ने गर्नुपर्छ।)—अष्टाङ्गहृदय, सूत्रस्थान २।१।

शुक्लप्रतिपदामा राति दीपदान गर्ने वाक्य— **बलिराज नमस् तुभ्यं दैत्यदानववन्दित। कृता त्वद्राज्यकौमुद्यां गृह्यतां दीपमालिका॥**

भ्रातृद्वितीयामा दाजु-भाइलाइ भोजन दिँदा भन्ने वाक्य— **भ्रातस् तवाऽग्र(नु)जाताऽहं भुङ्क्ष्वाऽपूपादिकं शुभम्। प्रीतये यमराजस्य यमुनाया विशेषतः॥** (दिदिले भाइलाइ भोजन दिँदा **भ्रातस् तवाऽग्रजाताऽहम्** भन्नुपर्छ, बहिनिले दाजुलाइ भोजन दिँदा **भ्रातस् तवाऽनुजाताऽहम्** भन्नुपर्छ।)

२२ २०८२।७।७ सूर्योदयसमयको ग्रहको स्थिति र दैनिक गति

सू	६:०६:३९:१५	५९:४५	शु	५:१८:२४:१७	७४:४७
म	६:२७:३७:१२	४२:१७	श	११:०१:५९:४०	-३:२१
बु	६:२९:४१:१६	७२:४२	रा	१०:२१:३७:१०	३:११
बृ	३:००:२३:३९	३:३५	**७।२०-२६:३५ मङ्गल अस्त**		

विक्रमसंवत् २०८२, **शकान्तसंवत् (शकसंवत्) १९४७**, बार्हस्पत्यः सिद्धार्थी संवत्सरः (५३), **तुलामास-वृश्चिकमासौ** (कात्तिक-मङ्सिर), **मार्गशीर्षकृष्णपक्षः** (नेपालसंवत् ११४६ कछलागाः=कार्त्तिककृष्णपक्षः) [नोवेम्बर २०२५ क्रै.]

वै.ति.	करणम्	लौ.ति.	घ.प.	घण्टा	वे.न.	मुहूर्तः	दृक्.न.	घण्टा	योगाः	घण्टा	योगाः	चन्द्रराशिः	दिनमा.	सू.उ.	सू.अ.	अहर्ग.	वारः	गते	ता.	२०८२ कात्तिक २० – मङ्सिर ३
प्रतिपदा	बाल.	१	२२।२६	१५:१६	भ	४।०	भ	६:५२ २७:४८	व्य.	७:२१ २६:५९	पद्मम्	१२:०६	१०:५९	६:१८	१७:१७	३२१	बृ	२०	6	**श्रौतिनां वैदिकानां पूर्णमासेष्टिः,** पौराणिकानाम् अग्निव्रतम्, त्रिजटार्घदानम् ✧
द्वितीया	तैति.	२	१२।५५	११:२८	कृ	४।७	रो	२४:५४	प.	२२:४५	मित्रम्	वृषः	१०:५७	६:१८	१७:१६	३२२	शु	२१	7	✧विशाखयोः सूर्यः १४:४१
तृतीया	वाणि.	३	४।० ५६।१२	७:५५ २८:४७	रो	४।१४	मृग	२२:२१	शि.	१८:४९	वज्रम्	११:३४	१०:५६	६:१९	१७:१५	३२३	श	२२	8	
चतुर्थी	बवम्	५	४९।४५	२६:१४	मृग	५।१	आर्द्रा	२०:२१	सि.	१५:१७	ध्वाङ्क्षः	मिथुनम्	१०:५५	६:२०	१७:१५	३२४	आ	२३	9	
पञ्चमी	कौल.	६	४५।८	२४:२४	आर्द्रा	५।८	पुन	१९:०२	सा.	१२:१७	धूम्रः	१३:१८	१०:५४	६:२१	१७:१४	३२५	सो	२४	10	
षष्ठी	गराजिः	७	४२।३३	२३:२३	पुन	५।१५	पुष्य	१८:२९	शु.	९:५५	वर्धमा.	कर्कटः	१०:५२	६:२१	१७:१४	३२६	म	२५	11	
सप्तमी	विष्टिः	८	४२।५	२३:१२	पुष्य	६।१	अश्ले	१८:४६	शु.	८:११	राक्षसः	१८:४६	१०:५१	६:२२	१७:१३	३२७	बु	२६	12	**स्मार्तानां वैदिकानाम् अष्टका**
अष्टमी	बाल.	९	४३।३५	२३:४९	अश्ले	६।८	मघा	१९:५०	ब्र.	७:०७	मुसल.	सिंहः	१०:५०	६:२३	१७:१३	३२८	बृ	२७	13	**स्मार्तानां वैदिकानाम् अन्वष्टका**
नवमी	तैति.	१०	४६।४९	२५:०७	मघा	६।१५	पूफ	२१:३५	ऐ.	६:३८	सिद्धिः	२८:०६	१०:४९	६:२४	१७:१२	३२९	शु	२८	14	◉(हलो, ढिकि, जाँतो, ठेको बार्ने र निशि बार्ने दिन), अनुराधासु सूर्यः २०:४४
दशमी	वाणि.	११	५१।२१	२६:५७	पूफ	७।२	उफ	२३:५१	वै.	६:३८	उत्पातः	कन्या	१०:४७	६:२४	१७:१२	३३०	श	२९	15	● हल-कण्डनी-यन्त्रक-मन्थनीकर्म-सायम्भोजनपरिहारदिनम् ◉
एकादशी	बवम्	१२	५६।४८	२९:०९	उफ	७।९	ह	२६:२८	वि.	७:००	मानसम्	कन्या	१०:४६	६:२५	१७:११	३३१	आ	३०	16	पौराणिकानाम् उत्पत्तिका एकादशी, वृश्चिके सूर्यः १९।१ (१४:२)
द्वादशी	कौल.	१३	अहोरात्र	अहोरात्र	ह	७।१६	चि	२९:१९	प्री.	७:३८	मुद्गरः	१५:५३	१०:४५	६:२६	१७:११	३३२	सो	१	17	प्रदोषव्रतम् **वृश्चिकमासप्रारम्भः (मङ्सिर) २०८२**
त्रयोदशी	गराजिः	१३	२।४६	७:३३	चि	८।३	स्वा	अहोरात्र	आ.	८:२४	ध्वजः	तुला	१०:४४	६:२७	१७:११	३३३	म	२	18	बालाचतुर्दशी, शतबीजरोपणम्, बालाचह्रेपूजा
अमावास्या	चतुष्.	१४	९।१	१०:०४	स्वा	८।१०	स्वा	८:१६	सौ.	९:१५	धूम्रः	२८:३०	१०:४३	६:२८	१७:१०	३३४	बु	३	19	**श्रौतिनां वैदिकानां पिण्डपितृयज्ञः, स्मार्तानां वैदिकानां दर्शश्राद्धम्,**●

गतकलिसावनाऽहर्गणः १८५९०५४।

अध्यायोत्सर्जन– **पौषस्य रोहिण्यां मध्यमायां वाऽष्टकायामध्यायानुत्सृजेरन्।**—पारस्करगृह्यसूत्र २।१२।१।

हेमन्त ऋतुको चर्या– आयुर्वेदशास्त्रअनुसार हेमन्त ऋतुमा दहि, दुध, घिउ, मास, तिल, नयाँ शालिधानको भात, मनतातो पानि खाने गर्न पर्छ; अमिला र गुलिया खाने कुरा अधिक मात्रामा खान पर्छ। जाडोमा स्वास्थ्य राम्रो राख्न तेल घस्ने कार्य पनि अधिक मात्रामा गर्न पर्छ।

माघ-वैशाख-कार्त्तिकस्नानादि व्रत गर्ने पौराणिकहरुले मार्गकृष्णप्रतिपदामा (कार्त्तिककृष्णप्रतिपदामा) त्रिजटाको पूजा गरेर त्रिजटालाइ नवीनफलादिसहित अर्घ दिने पौराण मन्त्र– **रावणाऽवरजे देवि सीतायाः प्रियवादिनि। गृहाणाऽर्घं मया दत्तं त्रिजटायै नमोनमः॥**

२३ २०८२।७।२२ सूर्योदयसमयको ग्रहको स्थिति र दैनिक गति

सू	६:२१:३९:३४	६०:१४	**शु**	६:०७:०९:३२	७५:०९
म	७:०८:१८:२९	४३:११	**श**	११:०१:१८:३२	-२:०४
बु	७:१२:२६:२२	१४:३४	**रा**	१०:२०:४९:२८	३:११
बृ	३:००:५६:११	०:४३	**७।२३–८:२८ बुध वक्री**		
७।२७–२९:५९ गुरु वक्री			**७।२८–२४:२५ बुध प. अस्त**		

कलिसंवत् ५०९०, ऐन्द्राग्नं युगम् (८५–१०), वत्सरः (५) (चान्द्रः अनलः संवत्सरः ५०), दक्षिणायनम्, हेमन्तः ऋतुः, सहस्यः [पौषः] मासः, शुक्लः पक्षः

विक्रमसंवत् २०८२, **शकान्तसंवत् (शकसंवत्) १९४७**, बार्हस्पत्यः सिद्धार्थी संवत्सरः (५३), **वृश्चिकमासः** (मङ्सिर), **मार्गशीर्षशुक्लपक्षः** (नेपालसंवत्११४६ थिंलाथ्वः=मार्गशीर्षशुक्लपक्षः) [नोवेम्बर–डिसेम्बर २०२५ क्रै.]

वै.ति.	करणम्	लौ.ति.	घ.प.	घण्टा	वे.न.	मुहूर्तः	दृक्.न.	घण्टा	योगाः	घण्टा	योगाः	चन्द्रराशिः	दिनमा.	सू.उ.	सू.अ.	अहर्ग.	वारः	गते	ता.	२०८२ मङ्सिर ४ – १८
प्रतिपदा	कौस्तु.	३०	१५।१८	१२:३६	वि	८।१७	वि	११:१५	शो.	१०:०६	वर्धमा.	वृश्चिकः	१०:४२	६:२८	१७:१०	३३५	बृ	४	20	**श्रौतिनां वैदिकानां दर्शेष्टिः,** पौराणिकानामग्निव्रतम्
द्वितीया	बाल.	१	२१।२९	१५:०५	अनु	९।४	अनु	१४:१०	अ.	१०:५६	राक्षसः	वृश्चिकः	१०:४१	६:२९	१७:१०	३३६	शु	५	21	
तृतीया	तैति.	२	२७।२३	१७:२७	ज्ये	९।११	ज्ये	१७:००	सु.	११:४१	मुसल.	१७:००	१०:४०	६:३०	१७:०९	३३७	श	६	22	सायनधनुषि सूर्यः ७।४४ (१०:००)
चतुर्थी	वाणि.	३	३२।५२	१९:४०	मू	९।१८	मू	१९:४०	धृ.	१२:१९	सिद्धिः	धनुः	१०:३९	६:३१	१७:०९	३३८	आ	७	23	
पञ्चमी	बवम्	४	३७।४४	२१:३७	पूषा	१०।५	पूषा	२२:०६	शू.	१२:४७	उत्पातः	२८:३९	१०:३८	६:३१	१७:०९	३३९	सो	८	24	सीताविवाहपञ्चमी जनकपुरे मेला, षडानन्दजयन्ती
षष्ठी	कौल.	५	४१।४१	२३:१३	उषा	१०।१२	उषा	२४:११	ग.	१३:००	मानसम्	मकरः	१०:३७	६:३२	१७:०९	३४०	म	९	25	
सप्तमी	गराजिः	६	४४।२६	२४:१९	श्र	१०।१९	श्र	२५:४७	वृ.	१२:५४	छत्रम्	मकरः	१०:३६	६:३३	१७:०९	३४१	बु	१०	26	
अष्टमी	विष्टिः	७	४५।३७	२४:४९	ध	११।६	ध	२६:४८	ध्रु.	१२:२२	श्रीवत्सः	१४:२३	१०:३५	६:३४	१७:०९	३४२	बृ	११	27	
नवमी	बाल.	८	४४।५९	२४:३४	शत	११।१३	शत	२७:०६	व्या.	११:१९	सौम्यः	कुम्भः	१०:३४	६:३५	१७:०९	३४३	शु	१२	28	
दशमी	तैति.	९	४२।२३	२३:३३	पूभ	११।२०	पूभ	२६:३७	ह.	९:४१	कालद.	२०:४९	१०:३३	६:३५	१७:०८	३४४	श	१३	29	
एकादशी	वाणि.	१०	३७।५२	२१:४५	उभ	१२।६	उभ	२५:२४	व.	७:२५ २८:३३	स्थिरः	मीनः	१०:३२	६:३६	१७:०८	३४५	आ	१४	30	पौराणिकानां मोक्षदा एकादशी, गीताजयन्ती
द्वादशी	बवम्	११	३१।३५	१९:१५	रे	१२।१३	रे	२३:३०	व्य.	२५:०८	मातङ्गः	२३:३०	१०:३२	६:३७	१७:०८	३४६	सो	१५	1	**डिसेम्बर**मासप्रारम्भः (२०२५ क्रै.)
त्रयोदशी	कौल.	१२	२३।५१	१६:१०	अ	१३।०	अ	२१:०२	व.	२१:१७	अमृतम्	मेषः	१०:३१	६:३८	१७:०८	३४७	म	१६	2	प्रदोषव्रतम्, ज्येष्ठायां सूर्यः २५:०३
चतुर्दशी	गराजिः	१३	१५।२	१२:३९	भ	१३।७	भ	१८:११	प.	१७:०७	काणः	२३:२६	१०:३०	६:३८	१७:०८	३४८	बु	१७	3	दत्तात्रेयजयन्ती, नुवाकोट दुप्चेश्वरमेला,
पूर्णिमा	विष्टिः	१४	५।३३ ५५।५८	८:५२ २९:०१	कृ	१३।१४	कृ	१५:०७	शि.	१२:४५	लुम्बः	वृषः	१०:२९	६:३९	१७:०९	३४९	बृ	१८	4	**श्रौतिनां वैदिकानाम् उपवसथः धान्यपूर्णिमा (योमरिपुह्नि), गैडुपूजा, उँधौलीपर्व**

धर्मशास्त्र र पुराण— धर्मशास्त्रका नियम नबुझी पुराणका कथा भन्नु उचित हुँदैन, भनेमा एक थोकको अर्को थोक भनिने हुन सक्छ। वैदिक सनातन धर्मका नियमबारे स्पष्ट भएर मात्र पुराणका कथा भन्न उचित हुन्छ । अतः कथावाचक ब्राह्मणले गौतमधर्मसूत्र, वासिष्ठधर्मसूत्र, मनुस्मृति, याज्ञवल्क्यस्मृति इ ग्रन्थको अध्ययन गरेर सनातन धर्मका विधि-निषेध बुझ्नुपर्छ।

गतलिसावनाऽहर्गणः १८५९०६८।

आधारभूत वैदिक शास्त्र

माध्यन्दिनीय-वाजसनेयि-शुक्लयजुर्वेदका अनुयायी नेपालका वैदिकहरुले आफ्ना शाखाका **वेदमन्त्रसंहिता, शतपथब्राह्मण, कात्यायनश्रौतसूत्र, पारस्करगृह्यसूत्र, कातीय-त्रिकण्डिकस्नानसूत्र, कात्यायनश्राद्धकल्पसूत्र** इ शास्त्र-अनुसार धर्मकर्म गर्न पर्छ। वेदअनुसारको लगध मुनि-प्रोक्त **ज्योतिषग्रन्थ** नै **मूल वेदाङ्गज्योतिषग्रन्थ** हुनाले वैदिक धार्मिक कुराका निम्ति वेदाङ्गज्योतिषअनुसारको कालगणनाको प्रयोग गर्न पर्छ।

२४ २०८२।८।७ सूर्योदयसमयको ग्रहको स्थिति र दैनिक गति

सू	७:०६:४६:३६	६०:३८	शु	६:२५:५९:१९	७५:२३
म	७:१९:१३:१३	४४:०३	श	११:००:५८:४३	-०:३२
बु	७:००:४०:३०	-७१:०६	रा	१०:२०:०१:४४	३:११
बृ	३:००:४४:२८	-२:१६	८।१०-१०:३० बुध पू. उदय		

८।११-१४:४६ शनि मार्गी **८।१३-२५:४१ बुध मार्गी**

वैदिकतिथिपत्रे कलिसंवत् ५०९० ऐन्द्राग्नं युगम् (८५-१०), वत्सरः (५) (चान्द्रः अनलः संवत्सरः ५०), दक्षिणायनम्, हेमन्तः ऋतुः, सहस्यः [पौषः] मासः, कृष्णः पक्षः

विक्रमसंवत् २०८२, **शकान्तसंवत् (शकसंवत्) १९४७**, बार्हस्पत्यः सिद्धार्थी संवत्सरः (५३), **वृश्चिकमास-धनुर्मासौ** (मङ्सिर–पुस), **पौषकृष्णपक्षः** (नेपालसंवत् ११४६ थिंलागाः=मार्गशीर्षकृष्णपक्षः) [डिसेम्बर २०२५ क्रैस्ताब्दः]

वै.ति.	करणम्	लौ.ति.	घ.प.	घण्टा	वे.न.	मुहूर्तः	दृक्.न.	घण्टा	योगाः	घण्टा	योगाः	चन्द्रराशिः	दिनमा.	सू.उ.	सू.अ.	अहर्ग.	वारः	गते	ता.	२०८२ मङ्सिर १९ – पुस ४
प्रतिपदा	बाल.	१	४६।२९	२५:१६	रो	१४।१	रो	१२:०२	सि.	८:२१ २८:०४	मित्रम्	२२:३२	१०:२९	६:४०	१७:०९	३५०	शु	१९	5	**श्रौतिनां वैदिकानां पूर्णमासेष्टिः**, पौराणिकानामग्निव्रतम्, ❁
द्वितीया	तैति.	२	३७।४७	२१:४७	मृग	१४।८	मृग	९:०६ ३०:३३	शु.	२४:०२	वज्रम्	मिथुनम्	१०:२८	६:४१	१७:०९	३५१	श	२०	6	❁ **पुनः मिथुने वक्री गुरुः (बृहस्पतिः) ४४।३५ (२४:३०)**, ✧
तृतीया	वाणि.	३	३०।१५	१८:४७	आर्द्रा	१४।१५	पुन	२८:३१	शु.	२०:२४	ध्वजः	२२:५८	१०:२८	६:४१	१७:०९	३५२	आ	२१	7	✧ **अध्यायोत्सर्जनम्**
चतुर्थी	बवम्	४	२४।१८	१६:२५	पुन	१५।२	पु	२७:११	ब्र.	१७:१७	धाता	कर्कटः	१०:२७	६:४२	१७:०९	३५३	सो	२२	8	
पञ्चमी	कौल.	५	२०।१६	१४:४९	पुष्य	१५।९	अ	२६:३९	ऐ.	१४:४८	आनन्दः	२६:३९	१०:२७	६:४३	१७:०९	३५४	म	२३	9	□ **[राक्षससंवत्सर]-समाप्तिः, वैदिक-ऐन्द्राग्नयुगसमाप्तिः**
षष्ठी	गराजिः	६	१८।२४	१४:०५	अश्ले	१५।१५	मघा	२६:५९	वै.	१२:५९	चरः	सिंहः	१०:२६	६:४३	१७:१०	३५५	बु	२४	10	❖ **वैदिकवर्षसमाप्तिः, वत्सराख्य-वैदिक-पञ्चमचान्द्रसंवत्सर**-□
सप्तमी	विष्टिः	७	१८।४६	१४:१४	मघा	१६।२	पूफ	२८:०९	वि.	११:५२	गदः	सिंहः	१०:२६	६:४४	१७:१०	३५६	बृ	२५	11	■ निशि बार्ने दिन), **मौनी अमावास्या, गोकर्णक्षेत्रे श्राद्धम्**, ❖
अष्टमी	बाल.	८	२१।१३	१५:१४	पूफ	१६।९	उफ	३०:०४	प्री.	११:२३	शुभः	१०:३४	१०:२५	६:४५	१७:१०	३५७	शु	२६	12	**स्मार्तानां वैदिकानाम् अष्टका, वैकल्पिकम् अध्यायोत्सर्जनदिनम्**
नवमी	तैति.	९	२५।२६	१६:५६	उफ	१६।१६	ह	अहोरात्र	आ.	११:२८	मृत्युः	कन्या	१०:२५	६:४५	१७:१०	३५८	श	२७	13	**स्मार्तानां वैदिकानाम् अन्वष्टका**
दशमी	वाणि.	१०	३०।५६	१९:०८	ह	१७।३	ह	८:३३	सौ.	११:५७	मानसम्	२१:५७	१०:२५	६:४६	१७:११	३५९	आ	२८	14	**शुक्र पूर्वतिर अस्त ४।३५ (८:३६)**
एकादशी	बवम्	११	३७।१२	२१:३९	चि	१७।१०	चि	११:२४	शो.	१२:४३	मुद्गरः	तुला	१०:२४	६:४७	१७:११	३६०	सो	२९	15	पौराणिकानां सफला एकादशी, धनुषि मूले सूर्यः ५४।४७ (२८:४३)
द्वादशी	कौल.	१२	४३।४५	२४:१७	स्वा	१७।१७	स्वा	१४:२६	अ.	१३:३६	ध्वजः	तुला	१०:२४	६:४७	१७:११	३६१	म	१	16	**धनुर्मासप्रारम्भः (पुस) २०८२, उत्तरायणारम्भनजिकको राशिसङ्क्रान्ति**
त्रयोदशी	गराजिः	१३	५०।११	२६:५२	वि	१८।४	वि	१७:२८	सु.	१४:३०	धाता	१०:४३	१०:२४	६:४८	१७:१२	३६२	बु	२	17	प्रदोषव्रतम् ⦿ परिहार-दिनम् (हलो, ढिकि, जाँतो, ठेको बार्ने र ■
चतुर्दशी	गराजिः	१४	५६।१४	२९:१८	अनु	१८।१०	अनु	२०:२३	धृ.	१५:१९	आनन्दः	वृश्चिकः	१०:२४	६:४८	१७:१२	३६३	बृ	३	18	दिसिचह्लेपूजा, ● हल-कण्डनी-यन्त्रक-मन्थनीकर्म-सायम्भोजन-⦿
अमावास्या	विष्टिः	३०	अहोरात्र	अहोरात्र	ज्ये	१८।१७	ज्ये	२३:०६	शू.	१५:५९	चरः	२३:०६	१०:२४	६:४९	१७:१३	३६४	शु	४	19	**श्रौतिनां वैदिकानां पिण्डपितृयज्ञः, स्मार्तानां वैदिकानां दर्शश्राद्धम्**, ●

गतकलिसावनाऽहर्गणः १८५९०८३।

॥ पञ्चवर्षात्मकवैदिकयुगसमाप्तिः (दशमस्य ऐन्द्रग्नयुगस्य समाप्तिः) ॥

दिन र रातको एक अहोरात्रात्मक तिथि, पन्ध्र अथवा चौध तिथिको एक पक्ष, दुइ पक्षको एक महिना, दुइ महिनाको एक ऋतु, तिन ऋतुको एक अयन, दुइ अयनको एक वर्ष र पाँच वर्षको एक युग हुन्छ भन्न-वैदिक सिद्धान्त छ। पुराणहरुमा पनि यो कुरा बताइएको छ। (द्र.– माध्यन्दिनीय-वाजसनेयि-शुक्लयजुर्वेदाध्यायि-निरग्निकद्विज-सदाचारकर्म-संस्कारकर्म-श्राद्धकर्मादि-**वैदिक–मन्त्रसङ्ग्रहः**, २०५२, पृ.१३७)।

२५ २०८२।८।२२ सूर्योदयसमयको ग्रहको स्थिति र दैनिक गति

सू	७:२१:५८:५४	६०:५६	शु	७:१४:५१:२९	७५:२९
म	८:००:२०:३३	४४:५२	श	११:०१:०२:३९	१:०४
बु	७:०१:२२:३६	६१:०४	रा	१०:१९:१४:०१	३:११
बृ	२:२९:४९:०३	५:०२		८।२८-८:३६ **शुक्र पू. अस्त**	

एघारौं आश्विन युग अन्तर्गतको कलिसवत् ५०९१ संवत्सरको उदगयनको (उत्तरायणको) संक्षिप्त तिथिपत्र (पात्रो)

कलिसंवत् ५०९१, आश्विनं युगम्, संवत्सरः १ (चान्द्रः पिङ्गलः संवत्सरः ५१), उदगयनम्, शिशिर ऋतुः, तपाः [माघः] मासः
विक्रमसंवत् २०८२, बार्हस्पत्यः सिद्धार्थी संवत्सरः (५३) **धनुर्मास-मकरमासौ** (पुस-माघ) **पौषशुक्लपक्षः, माघकृष्णपक्षः** च

वै.ति.	लौ.ति.	घ.प.	बजे	न.	घ.मि. (बजेसम्म)	सू.उ. (बजे)	अहर्गणः	वारः	गते	ता.	२०८२ पुस ५ – माघ ४
शु.प्रतिपदा	३०	१।४१	७:३०	मू	२५:३४	६:४९	३६५	श	५	20	श्रौतिवैदिकानां दर्शेष्टिः, आश्विनयुग(११)-प्रारम्भः, ☾
द्वितीया	१	६।३०	९:२६	पूषा	२७:४७	६:५०	१	आ	६	21	सायनमकरे सूर्यः ३३।१५ (२०:३०), दृक्सिद्धवैदिक-◻
तृतीया	२	१०।३५	११:०५	उषा	२९:४२	६:५१	२	सो	७	22	☾वैदिकसंवत्सरारम्भः, तोललोसार, उदगयनारम्भः, ✧
चतुर्थी	३	१३।५४	१२:२५	श्र	अहोरात्र	६:५१	३	म	८	23	वै.ति.मङ्गलचतुर्थी
पञ्चमी	४	१६।२०	१३:२४	श्र	७:१७	६:५१	४	बु	९	24	✧ चान्द्रपिङ्गल(५१)संवत्सरप्रारम्भः, ❖
षष्ठी	५	१७।४३	१३:५७	ध	८:३०	६:५२	५	बृ	१०	25	◻ सौरोदगयनारम्भः (वास्तविक सौर उत्तरायणको ⌘
सप्तमी	६	१७।५१	१४:०१	शत	९:१४	६:५२	६	शु	११	26	❖ वैदिकशिशिरर्तुप्रारम्भः, पौराणिकानामग्निव्रतम्
अष्टमी	७	१६।३१	१३:२९	पूभ	९:२६	६:५३	७	श	१२	27	पूर्वाषाढासु सूर्यः ३०:१८
नवमी	८	१३।३६	१२:१९	उभ	९:००	६:५३	८	आ	१३	28	⌘ आरम्भ), सौर शिशिर ऋतुको आरम्भ
दशमी	९	९।५	१०:३१	रे	७:५७ ६:१९	६:५३	९	सो	१४	29	
एकादशी	१०	३६ ५५।५५	८:०८ २१:१५	भ	२८:११	६:५४	१०	म	१५	30	पौराणिकानां पुत्रदा एकादशी, तमुलोसार
द्वादशी	१२	४७।४८	२६:०१	कृ	२५:४१	६:५४	११	बु	१६	31	♐ पौराणिकानामग्निव्रतम्
त्रयोदशी	१३	३९।१२	२२:३५	रो	२२:५९	६:५४	१२	बृ	१७	1	प्रदोषव्रतम्, **जनबरि २०२६ क्रैस्ताब्दः**
चतुर्दशी	१४	३०।३२	१९:०८	मृग	२०:१६	६:५५	१३	शु	१८	2	○ श्रीस्वस्थानीव्रतप्रारम्भः (मिलापुह्नि)
पूर्णिमा	१५	२२।१३	१५:४८	आर्द्रा	१७:४१	६:५५	१४	श	१९	3	**श्रौतिनां वैदिकानाम् उपवसथः**○
कृ.प्रतिपदा	१	१४।४२	१२:४८	पुन	१५:२७	६:५५	१५	आ	२०	4	**श्रौतिनां वैदिकानां पूर्णमासेष्टिः**:, ♐
द्वितीया	२	८।२२	१०:१६	पुष्य	१३:४२	६:५५	१६	सो	२१	5	
तृतीया	३	३।३८	८:२३	अश	१२:३५	६:५५	१७	म	२२	6	
चतुर्थी	४	०।४६	७:१४	मघा	१२:१४	६:५६	१८	बु	२३	7	
पञ्चमी	६	अहोरात्र	अहोरात्र	पूफ	१२:४२	६:५६	१९	बृ	२४	8	
षष्ठी	६	१।१५	७:२६	उफ	१३:५७	६:५६	२०	शु	२५	9	
सप्तमी	७	४।२९	८:४३	ह	१५:५५	६:५६	२१	श	२६	10	❖ उत्तराषाढासु सूर्यः ८:१७
अष्टमी	८	९।१८	१०:३९	चि	१८:२७	६:५६	२२	आ	२७	11	**स्मार्तवैदिकानाम् एकाष्टका, पृथ्वीजयन्ती,** ❖
नवमी	९	१५।१२	१३:०१	स्वा	२१:१९	६:५६	२३	सो	२८	12	**स्मार्तवैदिकानाम् अन्वष्टका** ♎ योगदिवस
दशमी	१०	२१।३९	१५:३५	वि	२४:२०	६:५६	२४	म	२९	13	◉**हलो, ढिकि, जाँतो इत्यादि बार्ने दिन**
एकादशी	११	२८।६	१८:१०	अनु	२७:१८	६:५६	२५	बु	३०	14	पौराणिकानां षट्तिला एकादशी, ☼
द्वादशी	१२	३४।७	२०:३४	ज्ये	३०:०२	६:५६	२६	बृ	१	15	**मकरमासप्रारम्भः(माघ) २०८२, माघी,** ♎
त्रयोदशी	१३	३९।२०	२२:४०	मू	अहोरात्र	६:५६	२७	शु	२	16	प्रदोषव्रतम् ☼ मकरे सूर्यः २१।१६ (१५:२७)
चतुर्दशी	१४	४३।३४	२४:२१	मू	८:२७	६:५५	२८	श	३	17	लैचह्नेपूजा ●**स्मार्तवैदिकानां दर्शश्राद्धम्** ◉
अमावास्या	३०	४६।४४	२५:३७	पूषा	१०:२८	६:५५	२९	आ	४	18	**श्रौतिनां वैदिकानां पिण्डपितृयज्ञः,** ●

संवत्सरमा तिलको दान गर्न पर्ने विधान
स्मृतिमा छ—
संवत्सरे तिलान् दद्यात्।
—मार्कण्डेयस्मृति, पृ.१३४।

कलिसंवत् ५०९१, आश्विनं युगम्, संवत्सरः १ (चान्द्रः पिङ्गलः संवत्सरः ५१), उदगयनम्, शिशिरः ऋतुः, तपस्यः [फाल्गुनः] मासः
विक्रमसंवत् २०८२, बार्हस्पत्यः सिद्धार्थी संवत्सरः (५३) **मकरमास-कुम्भमासौ** (माघ-फागुन) **माघशुक्लपक्षः, फाल्गुनकृष्णपक्षः** च

वै.ति.	लौ.ति.	घ.प.	बजे	न.	घ.मि.	सू.उ.	अहर्ग.	वारः	गते	ता.	२०८२ माघ ५ – फागुन ५
शु.प्रतिपदा	१	४८।५१	२६:२८	उषा	१२:०४	६:५५	३०	सो	५	19	**श्रौतिवैदिकानां दर्शेष्टिः, संवत्सरेप्सूनां** ☾
द्वितीया	२	४९।५८	२६:५४	श्र	१३:१६	६:५५	३१	म	६	20	☾**शुनासीरीयपर्व** पौराणिकानाम् ✧
तृतीया	३	५०।८	२६:५८	ध	१४:०७	६:५५	३२	बु	७	21	✧ अग्निव्रतम्, सोनमलोसार, ◻
चतुर्थी	४	४९।२४	२६:४०	शत	१४:३५	६:५४	३३	बृ	८	22	◻ **सायनकुम्भे सूर्यः ५१।५६ (२८:८)**
पञ्चमी	५	४७।४५	२६:००	पूभ	१४:४३	६:५४	३४	शु	९	23	श्रीपञ्चमी, रतिकामदेवपूजा, वसन्तश्रवण, हल्सारो
षष्ठी	६	४५।७	२४:५७	उभ	१४:२९	६:५४	३५	श	१०	24	श्रवणे सूर्यः १०:३५
सप्तमी	७	४१।३०	२३:२९	रे	१३:५१	६:५४	३६	आ	११	25	अचला सप्तमी, रथसप्तमी, रविसप्तमी
अष्टमी	८	३६।५३	२१:३९	अ	१२:५०	६:५३	३७	सो	१२	26	
नवमी	९	३१।२३	१९:२६	भ	११:२७	६:५३	३८	म	१३	27	♐ **३८।४८ (२२:२२)**
दशमी	१०	२५।९	१६:५६	कृ	९:४४	६:५२	३९	बु	१४	28	○वै.ति. श्रीस्वस्थानीव्रतसमाप्तिः (सिपुह्नि)
एकादशी	११	१८।२४	१४:१४	रो	७:४८ २९:४४	६:५२	४०	बृ	१५	29	पौराणिकानां भीमा एकादशी
द्वादशी	१२	११।२७	११:२६	आर्द्रा	२७:४१	६:५१	४१	शु	१६	30	**शुक्रको पश्चिमतिर उदय** ♐
त्रयोदशी	१३	४।३८ ५८।१५	८:४२ ३०:०९	पुन	२५:४८	६:५१	४२	श	१७	31	प्रदोषव्रतम्, शनित्रयोदशी
चतुर्दशी	१५	५२।४३	२७:५६	पुष्य	२४:१२	६:५०	४३	आ	१८	1	**श्रौतिनां वैदिकानां शुनासीरीयपर्व,** ❖
पूर्णिमा	१	४८।२०	२६:१०	अश्ले	२३:०२	६:५०	४४	सो	१९	2	**श्रौतिनां वैदिकानामुपवसथः, वैश्वदेवपर्व,** ○
कृ.प्रतिपदा	२	४५।२५	२४:५९	मघा	२२:२६	६:४९	४५	म	२०	3	**श्रौतिनां वैदिकानां पूर्णमासेष्टिः,** ✧
द्वितीया	३	४४।११	२४:२९	पूफ	२२:२९	६:४९	४६	बु	२१	4	✧ पौराणिकानामग्निव्रतम्
तृतीया	४	४४।४७	२४:४३	उफ	२३:१४	६:४८	४७	बृ	२२	5	❖ फरबरि (२०२६क्रै.) ♎
चतुर्थी	५	४७।१०	२५:३९	ह	२४:४१	६:४८	४८	शु	२३	6	धनिष्ठासु सूर्यः १३:४४
पञ्चमी	६	५१।९	२७:१५	चि	२६:४५	६:४७	४९	श	२४	7	♎ लौ.ति. श्रीस्वस्थानीव्रतसमाप्तिः (सिपुह्नि)
षष्ठी	७	५६।२४	२९:२०	स्वा	२९:१८	६:४६	५०	आ	२५	8	
सप्तमी	८	अहोरात्र	अहोरात्र	वि	अहोरात्र	६:४६	५१	सो	२६	9	◉ **हलो, ढिकि, जाँतो इत्यादि बार्ने दिन**
अष्टमी	८	२।२८	७:४४	वि	८:०८	६:४५	५२	म	२७	10	भौमाष्टमी
नवमी	९	८।४५	१०:१४	अनु	११:०४	६:४४	५३	बु	२८	11	☼ **कुम्भमासप्रारम्भः(फागुन) २०८२**
दशमी	१०	१४।४४	१२:३७	ज्ये	१३:५४	६:४३	५४	बृ	२९	12	कुम्भे सूर्यः ५४।१६ (२८:२६)
एकादशी	११	१९।५७	१४:४१	मू	१६:२५	६:४३	५५	शु	१	13	पौराणिकानां विजया एकादशी, ☼
द्वादशी	१२	२४।०	१६:१८	पूषा	१८:२९	६:४२	५६	श	२	14	●**स्मार्तवैदिकानां दर्शश्राद्धम्**, ◉
त्रयोदशी	१३	२६।४१	१७:२२	उषा	२०:०२	६:४१	५७	आ	३	15	प्रदोषव्रतम्
चतुर्दशी	१४	२७।५६	१७:५१	श्र	२१:०१	६:४०	५८	सो	४	16	**महाशिवरात्रिः (सिलाचह्नेपूजा)**
अमावास्या	३०	२७।४७	१७:४६	ध	२१:२८	६:३९	५९	म	५	17	**श्रौतिनां वैदिकानां पिण्डपितृयज्ञः,** ●

कलिसंवत् ५०९१, आश्विनं युगम्, संवत्सरः १ (चान्द्रः पिङ्गलः संवत्सरः ५१), उदगयनम्, वसन्तः ऋतुः, मधुः [चैत्रः] मासः

विक्रमसंवत् २०८२, बार्हस्पत्यः सिद्धर्थी संवत्सरः (५३) **कुम्भमास-मीनमासौ** (फागुन-चइत) **फाल्गुनशुक्लपक्षः, चैत्रकृष्णपक्षः** च [२०२६ क्रै.]

वै.ति.	लौ.ति.	घ.प.	बजे	न.	घ.मि.	सू.उ.	अहर्ग.	वारः	गते	ता.	२०८२ फागुन ६ – चइत ४
शु.प्रतिपदा	१	२६।२२	१७:१२	शत	२१:२७	६:३९	६०	बु	६	18	**श्रौतिवैदिकानां दर्शेष्टिः**, पौराणिकानामग्निव्रतम्, **वैदिक-**
द्वितीया	२	२३।५५	१६:१२	पूभ	२१:०२	६:३८	६१	बृ	७	19	शतभिषजि सूर्यः १८:१४
तृतीया	३	२०।३५	१४:५१	उभ	२०:१७	६:३७	६२	शु	८	20	✧ **वसन्तर्तुप्रारम्भः**, सायनमीने सूर्यः २२।३५ (१६:८)
चतुर्थी	४	१६।३५	१३:१४	रे	१९:१८	६:३६	६३	श	९	21	◻ सौर वसन्त ऋतुको आरम्भ
पञ्चमी	५	१२।३	११:२४	अ	१८:०७	६:३५	६४	आ	१०	22	**वैदिकवसन्तपञ्चमी (श्रीपञ्चमी)**
षष्ठी	६	७।९	९:२५	भ	१६:४८	६:३४	६५	सो	११	23	आचार्य-कौण्डिन्न्यायन-जन्मदिनम् (पञ्चाशीतितमम्)
सप्तमी	७	१।५८ ५६।३५	७:२० २९:१२	कृ	१५:२३	६:३३	६६	म	१२	24	*कतिपय स्थानमा मनाइने* ***चैत्राष्टमी (चैते दसैँ)***
अष्टमी	९	५१।१६	२७:०३	रो	१३:५६	६:३२	६७	बु	१३	25	पौराणिकानां चीरोत्थापनम्, होलिकारम्भः
नवमी	१०	४६।२	२४:५६	मृग	१२:३०	६:३१	६८	बृ	१४	26	
दशमी	११	४१।४	२२:५६	आर्द्रा	११:०८	६:३०	६९	शु	१५	27	
एकादशी	१२	३६।३१	२१:०६	पुन	९:५४	६:२९	७०	श	१६	28	पौराणिकानाम् आमलकी एकादशी
द्वादशी	१३	३२।३६	१९:३१	पुष्य	८:५३	६:२८	७१	आ	१७	1	**मार्च** (२०२६ क्रै.), गोविन्दद्वादशी
त्रयोदशी	१४	२९।३१	१८:१६	अश्ले	८:०९	६:२७	७२	सो	१८	2	प्रदोषव्रतम्
चतुर्दशी	१५	२७।३०	१७:२६	मघा	७:४७	६:२६	७३	म	१९	3	ग्रस्तोदितचन्द्रग्रहणम्
पूर्णिमा	१	२६।४५	१७:०७	पूफ	७:५४	६:२५	७४	बु	२०	4	**श्रौतिनां वैदिकानामुपवसथः, स्मार्तानां वैदिकानां** ○
कृ.प्रतिपदा	२	२७।२४	१७:२२	उफ	८:३२	६:२४	७५	बृ	२१	5	**श्रौतिनां वैदिकानां पूर्णमासेष्टिः**, पौराणिकानामग्निव्रतम्
द्वितीया	३	२९।३२	१८:१२	ह	९:४४	६:२३	७६	शु	२२	6	○ **चैत्रीकर्म, फागुपूर्णिमा (होलि)** ❖
तृतीया	४	३३।५	१९:३६	चि	११:३१	६:२२	७७	श	२३	7	**बार्हस्पत्य-रौद्र(५४)संवत्सर-प्रारम्भः**
चतुर्थी	५	३७।५२	२१:३०	स्वा	१३:४७	६:२१	७८	आ	२४	8	❖ पूर्वभद्रपदयोः सूर्यः १२:३२
पञ्चमी	६	४३।३२	२३:४५	वि	१६:२६	६:२०	७९	सो	२५	9	
षष्ठी	७	४९।३८	२६:१०	अनु	१९:१८	६:१९	८०	म	२६	10	
सप्तमी	८	५५।४०	२८:३४	ज्ये	२२:११	६:१८	८१	बु	२७	11	⌘ **वासन्त-विषुवद्दिनको समीपको राशिसङ्क्रान्ति**
अष्टमी	९	अहोरात्र	अहोरात्र	मू	२४:५३	६:१७	८२	बृ	२८	12	शीतलाष्टमी
नवमी	९	१।७	६:४२	पूषा	२७:१३	६:१६	८३	शु	२९	13	☼ **मीनमासप्रारम्भः (चइत) २०८२,** ⌘
दशमी	१०	५।२५	८:२४	उषा	२९:००	६:१५	८४	श	३०	14	मीने सूर्यः ४७।३९ (२५:१८) ◉ **अश्वयात्रा (घोडे जात्रा)**
एकादशी	११	८।१४	९:३१	श्र	३०:०८	६:१३	८५	आ	१	15	पौराणिकानां पापमोचनी एकादशी, ☼
द्वादशी	१२	९।२०	९:५६	ध	अहोरात्र	६:१२	८६	सो	२	16	● **दर्शश्राद्धम्, हलो, ढिकि, जाँतो इत्यादि बार्ने दिन**
त्रयोदशी	१३	८।४०	९:३९	ध	६:३५	६:११	८७	म	३	17	प्रदोषव्रतम्, पिशाचचतुर्दशी (पाशाचह्रे)
अमावास्या	१४	६।२०	८:४२	शत	६:२३ २९:३५	६:१०	८८	बु	४	18	**श्रौतिनां वैदिकानां पिण्डपितृयज्ञः, स्मार्तानां वैदिकानां**

कलिसंवत् ५०९१, आश्विनं युगम्, संवत्सरः १ (चान्द्रः पिङ्गलः संवत्सरः ५१), उदगयनम्, वसन्तः ऋतुः, माधवः [वैशाखः] मासः

वि.सं. २०८२-८३, बार्हस्पत्यः रौद्रः संवत्सरः (५४) **मीनमास-मेषमासौ** (चइत-वैशाख) **चैत्रशुक्लपक्षः, वैशाखकृष्णपक्षः** च [२०२६ क्रै.]

वै.ति.	लौ.ति.	घ.प.	बजे	न.	घ.मि.	सू.उ.	अहर्ग.	वारः	गते	ता.	२०८२ चइत ५ – २०८३ वैशाख ४
शु.प्रतिपदा	३०	२।३२ ५७।३२	७:१० २९:०९	उभ	२८:१८	६:०९	८९	बृ	५	19	**श्रौतिवैदिकानां दर्शेष्टिः**, पौराणिकानामग्निव्रतम् ☾
द्वितीया	२	५१।३९	२६:४७	रे	२६:४१	६:०८	९०	शु	६	20	**सायनमेषे सूर्यः १८।२६ (१३:५८),** ♎
तृतीया	३	४५।१४	२४:१३	अ	२४:५१	६:०७	९१	श	७	21	♎ **वासन्त-विषुवत्-सूर्यसङ्क्रमः** ⌘
चतुर्थी	४	३८।३७	२१:३२	भ	२२:५५	६:०६	९२	आ	८	22	⌘ **दृक्सिद्धवैदिकवासन्तविषुवदिनम्** ✧
पञ्चमी	५	३२।४	१८:५४	कृ	२१:०२	६:०५	९३	सो	९	23	✧ **(वसन्त ऋतुको दिनरात बराबर हुने समय)** ◻
षष्ठी	६	२५।५१	१६:२४	रो	१९:१८	६:०४	९४	म	१०	24	◻गौरीव्रतम्, मत्स्यजयन्ती, मत्स्यनारायणमेला ❖
सप्तमी	७	२०।१२	१४:०७	मृग	१७:४८	६:०२	९५	बु	११	25	☾वासन्तनवरात्रप्रारम्भः, उत्तरभद्रपदयोः सूर्यः ८:५८
अष्टमी	८	१५।१७	१२:०८	आर्द्रा	१६:३५	६:०१	९६	बृ	१२	26	**चैत्राष्टमी (चैते दसैँ)**
नवमी	९	११।१०	१०:२८	पुन	१५:४३	६:००	९७	शु	१३	27	श्रीरामनवमी
दशमी	१०	७।५६	९:०९	पुष्य	१५:१०	५:५	९८	श	१४	28	❖ **याज्ञवल्क्यस्मृत्युक्तः श्राद्धकालविशेषः**
एकादशी	११	५।३३	८:११	अश्ले	१४:५९	५:५	९९	आ	१५	29	पौराणिकानां कामदा एकादशी
द्वादशी	१२	४।४	७:३५	मघा	१५:०९	५:५	१००	सो	१६	30	
त्रयोदशी	१३	३।२९	७:१९	पूफ	१५:४०	५:५६	१०१	म	१७	31	प्रदोषव्रतम्, रेवत्यां सूर्यः १९:४८
चतुर्दशी	१४	३।५२	७:२८	उफ	१६:३४	५:५	१०२	बु	१८	1	**अप्रिल** (२०२६ क्रै.)
पूर्णिमा	१५	५।१७	८:००	ह	१७:५३	५:५४	१०३	बृ	१९	2	**श्रौतिनां वैदिकानाम् उपवसथः** हनुमज्जयन्ती, ○
कृ.प्रतिपदा	१	७।४८	९:००	चि	१९:३८	५:५३	१०४	शु	२०	3	**श्रौतिनां वैदिकानां पूर्णमासेष्टिः,**
द्वितीया	२	११।२६	१०:२६	स्वा	२१:४८	५:५१	१०५	श	२१	4	○बालाजु बाइसधारा-मेला
तृतीया	३	१६।६	१२:१७	वि	२४:२१	५:५०	१०६	आ	२२	5	
चतुर्थी	४	२१।३६	१४:२७	अनु	२७:०९	५:४	१०७	सो	२३	6	
पञ्चमी	५	२७।३७	१६५१:	ज्ये	अहोरात्र	५:४	१०८	म	२४	7	
षष्ठी	६	३३।४५	१९:१७	ज्ये	६:०६	५:४	१०९	बु	२५	8	
सप्तमी	७	३९।३१	२१:३४	मू	९:००	५:४६	११०	बृ	२६	9	■ मातृसम्मानदिवसः (आमाको मुख हेर्ने दिन)
अष्टमी	८	४४।२१	२३:२९	पूषा	११:३८	५:४५	१११	शु	२७	10	◉ **हलो ढिकि जाँतो इत्यादि बार्ने दिन** ■
नवमी	९	४७।४९	२४:५१	उषा	१३:५०	५:४४	११२	श	२८	11	⍓ टोखा सपनतीर्थस्नानम्
दशमी	१०	४९।३०	२५:३१	श्र	१५:२४	५:४३	११३	आ	२९	12	☼ मेषे अश्वयुजोः सूर्यः १०।१२ (९:४६) ⍓
एकादशी	११	४९।१४	२५:२३	ध	१६:१४	५:४२	११४	सो	३०	13	पौराणिकानां वरूथिनी एकादशी
द्वादशी	१२	४६।५८	२४:२८	शत	१६:१८	५:४१	११५	म	१	14	**वैशाखमासप्रारम्भः(वैशाख) २०८३,** ☼
त्रयोदशी	१३	४२।५०	२२:४८	पूभ	१५:३५	५:४०	११६	बु	२	15	प्रदोषव्रतम् ● **स्मार्तवैदिकानां दर्शश्राद्धम्,** ◉
चतुर्दशी	१४	३७।०६	२०:२९	उभ	१४:१३	५:३९	११७	बृ	३	16	मातातिचह्रेपूजा
अमावास्या	३०	३०।०६	१७:४०	रे	१२:१८	५:३८	११८	शु	४	17	**श्रौतिनां वैदिकानां पिण्डपितृयज्ञः,** ●

कलिसंवत् ५०९१, आश्विनं युगम्, संवत्सरः १ (चान्द्रः पिङ्गलः संवत्सरः ५१), उदगयनम्, ग्रीष्मः ऋतुः, शुक्रः [ज्येष्ठ] मासः

विक्रमसंवत् २०८३, बार्हस्पत्यः रौद्रः संवत्सरः (५४) **मेषमास-वृषमासौ** (वैशाख-जेठ) **वैशाखशुक्लपक्षः, शुद्धज्येष्ठकृष्णपक्षः** च [२०२६ क्रै.]

वै.ति.	लौ.ति.	घ.प.	बजे	न.	घ.मि.	सू.उ.	अहर्ग.	वारः	गते	ता.	२०८३ वैशाख ५ — जेठ २
शु.प्रतिपदा	१	२२।१५	१४:३१	अ	९:५९	५:३७	११९	श	५	18	**श्रौतिवैदिकानां दर्शेष्टिः, वैदिकग्रीष्मर्तुप्रारम्भः** ☾
द्वितीया	२	१३।५६	११:१०	भ	७:२७ २८:५२	५:३६	१२०	आ	६	19	☾पौराणिकानामग्निव्रतम्, ल.पु.मत्स्येन्द्रनाथरथारोहण
तृतीया	३	५।३३ ५७।२५	७:४८ २८:३४	रो	२६:२५	५:३५	१२१	सो	७	20	अक्षयतृतीया, परशुरामजयन्ती, हयग्रीवजयन्ती ⌘
चतुर्थी	५	५०।११	२५:३८	मृग	२४:१४	५:३४	१२२	म	८	21	वै.ति. मङ्गलचतुर्थी, लौ.ति. शङ्करभगवत्पादजयन्ती
पञ्चमी	६	४३।५	२३:०७	आर्द्रा	२२:२७	५:३३	१२३	बु	९	22	**वै.ति. शङ्करभगवत्पादजयन्ती**
षष्ठी	७	३८।५६	२१:०६	पुन	२१:१२	५:३२	१२४	बृ	१०	23	**⌘ सायनवृषे सूर्यः ४७।३६ (२५:२) ❖**
सप्तमी	८	३५।२३	१९:४०	पुष्य	२०:२९	५:३१	१२५	शु	११	24	गङ्गासप्तमी **❖ सौर ग्रीष्म ऋतुको आरम्भ**
अष्टमी	९	३३।१६	१८:४८	अश	२०:२२	५:३०	१२६	श	१२	25	
नवमी	१०	३२।३१	१८:२९	मघा	२०:४६	५:२९	१२७	आ	१३	26	सीताजयन्ती
दशमी	११	३२।५	१८:४०	पूफ	२१:३८	५:२८	१२८	सो	१४	27	लौ.ति.पौराणिकानां मोहिनी एकादशी
एकादशी	१२	३४।३०	१९:१५	उफ	२२:५५	५:२७	१२९	म	१५	28	वै.ति.पौराणिकानां मोहिनी एकादशी, ◻
द्वादशी	१३	३६।५७	२०:१३	ह	२४:३४	५:२७	१३०	बु	१६	29	◻भरणीषु सूर्यः २४:५७
त्रयोदशी	१४	४०।१६	२१:३२	चि	२६:३२	५:२६	१३१	बृ	१७	30	प्रदोषव्रतम्
चतुर्दशी	१५	४४।२३	२३:१०	स्वा	२८:४८	५:२५	१३२	शु	१८	1	**नृसिंहजयन्ती, मे** (२०२६ क्रै.), लौ.ति. चण्डीपूर्णिमा
पूर्णिमा	१	४९।१	२५:०६	वि	अहोरात्र	५:२४	१३३	श	१९	2	**श्रौतिनां वैदिकानाम् उपवसथः,** ○
कृ.प्रतिपदा	२	५४।४	२७:१७	वि	७:२२	५:२३	१३४	आ	२०	3	**श्रौतिनां वैदिकानां पूर्णमासेष्टिः,** पौराणिकानामग्निव्रतम्
द्वितीया	३	अहोरात्र	अहोरात्र	अनु	१०:०९	५:२२	१३५	सो	२१	4	○वै.ति.चण्डीपूर्णिमा, कूर्मजयन्ती, बुद्धजयन्ती, ♎
तृतीया	३	०।४५	५:३९	ज्ये	१३:०६	५:२२	१३६	म	२२	5	♎ किरात उभौली पर्व
चतुर्थी	४	६।५४	८:०७	मू	१६:०५	५:२१	१३७	बु	२३	6	
पञ्चमी	५	१२।५३	१०:२९	पूषा	१८:५७	५:२०	१३८	बृ	२४	7	
षष्ठी	६	१८।१५	१२:३७	उषा	२१:३२	५:१९	१३९	शु	२५	8	
सप्तमी	७	२२।३०	१४:१९	श्र	२३:३७	५:१९	१४०	श	२६	9	**■ वटसावित्रीव्रतम्**
अष्टमी	८	२५।११	१५:२३	ध	२५:०२	५:१८	१४१	आ	२७	10	**⦿ हलो ढिकि जाँतो इत्यादि बार्ने दिन ■**
नवमी	९	२५।५	१५:४०	शत	२५:४१	५:१७	१४२	सो	२८	11	**●स्मार्तानां वैदिकानां दर्शश्राद्धम्, ⦿**
दशमी	१०	२४।३	१५:०८	पूभ	२५:२९	५:१७	१४३	म	२९	12	कृत्तिकासु सूर्यः १९:०६
एकादशी	११	२१।११	१३:४५	उभ	२४:२९	५:१६	१४४	बु	३०	13	पौराणिकानाम् अपरा एकादशी,
द्वादशी	१२	१५।५०	११:३५	रे	२२:४६	५:१६	१४५	बृ	३१	14	☼वृषे सूर्यः ३।२२ (६:३६), सिठिचह्रेपूजा
त्रयोदशी	१३	८।५०	८:४७	अ	२०:२८	५:१५	१४६	शु	१	15	प्रदोषव्रतम्, **वृषमासप्रारम्भः (जेठ) २०८३** ☼
अमावास्या	१४	०।३६ ५१।२८	५:२९ २५:५०	भ	१७:४६	५:१४	१४७	श	२	16	**श्रौतिनां वैदिकानां पिण्डपितृयज्ञः,** ●

कलिसंवत् ५०९१, आश्विनं युगम्, संवत्सरः १ (चान्द्रः पिङ्गलः संवत्सरः ५१), उदगयनम्, ग्रीष्मः ऋतुः, शुचिः [आषाढः] मासः

विक्रमसंवत् २०८३, बार्हस्पत्यः रौद्रः संवत्सरः (५४) **वृषमासः** (जेठ) **अधिकज्येष्ठशुक्लपक्षः, अधिकज्येष्ठकृष्णपक्षः** च [२०२६ क्रै.]

वै.ति.	लौ.ति.	घ.प.	बजे	न.	घ.मि.	सू.उ.	अहर्ग.	वारः	गते	ता.	२०८३ जेठ ३ —३१
शु.प्रतिपदा	१	४२।२	२२:०३	कृ	१४:५०	५:१४	१४८	आ	३	17	**श्रौतिवैदिकानां दर्शेष्टिः,** ☾
द्वितीया	२	३२।३७	१८:१६	रो	११:५१	५:१३	१४९	सो	४	18	☾पौराणिकानामग्निव्रतम्, ✧
तृतीया	३	२३।४३	१४:४२	मृग	९:०२	५:१३	१५०	म	५	19	✧गङ्गादशहरास्नानारम्भः
चतुर्थी	४	१५।४२	११:२९	आर्द्रा	६:३१ २८:३०	५:१२	१५१	बु	६	20	**सायनमिथुने सूर्यः ५०।४५ (२५:५६)**
पञ्चमी	५	८।५९	८:४८	पुष्य	२७:०६	५:१२	१५२	बृ	७	21	
षष्ठी	६	३।५१	६:४४	अश्ले	२६:२३	५:१२	१५३	शु	८	22	
सप्तमी	७	०।२९ ५८।५५	५:२३ २८:४६	मघा	२६:१४	५:११	१५४	श	९	23	
अष्टमी	९	५९।८	२८:५०	पूफ	२७:०७	५:११	१५५	आ	१०	24	
नवमी	१०	अहोरात्र	अहोरात्र	उफ	२८:२५	५:१०	१५६	सो	११	25	रोहिण्यां सूर्यः १५:१८
दशमी	१०	०।५३	५:३१	ह	अहोरात्र	५:१०	१५७	म	१२	26	गङ्गादशहरा
एकादशी	११	३।५२	६:४३	ह	६:१४	५:१०	१५८	बु	१३	27	पौराणिकानां पद्मिनी एकादशी
द्वादशी	१२	७।५०	८:१७	चि	८:२५	५:०९	१५९	बृ	१४	28	
त्रयोदशी	१३	१२।३२	१०:१०	स्वा	१०:५३	५:०९	१६०	शु	१५	29	प्रदोषव्रतम्
चतुर्दशी	१४	१७।४७	१२:१६	वि	१३:३४	५:०९	१६१	श	१६	30	**○ वरुणप्रघासपर्व**
पूर्णिमा	१५	२३।२६	१४:३१	अनु	१६:२४	५:०९	१६२	आ	१७	31	**श्रौतिनां वैदिकानामुपवसथः,** ○
कृ.प्रतिपदा	१	२९।२०	१६:५३	ज्ये	१९:२०	५:०८	१६३	सो	१८	1	**श्रौतिनां वैदिकानां पूर्णमासेष्टिः** ◻
द्वितीया	२	३५।१९	१९:१६	मू	२२:१७	५:०८	१६४	म	१९	2	◻पौराणिकानामग्निव्रतम्, ✧
तृतीया	३	४१।९	२१:३६	पूषा	२५:११	५:०८	१६५	बु	२०	3	✧ **जुन** (२०२६ क्रै.) ❀
चतुर्थी	४	४६।३४	२३:४५	उषा	२७:५३	५:०८	१६६	बृ	२१	4	❀ **गुरु (बृहस्पति) कर्कट** ⌘
पञ्चमी	५	५१।११	२५:३६	श्र	अहोरात्र	५:०८	१६७	शु	२२	5	**⌘ राशिमा ४५।१० (२३:१२)**
षष्ठी	६	५४।३७	२६:५९	श्र	६:१६	५:०८	१६८	श	२३	6	
सप्तमी	७	५६।२९	२७:४३	ध	८:१०	५:०८	१६९	आ	२४	7	रविसप्तमी
अष्टमी	८	५६।२७	२७:४२	शत	९:२५	५:०८	१७०	सो	२५	8	मृगशिरसि सूर्यः १२:५९
नवमी	९	५४।२२	२६:५२	पूभ	९:५४	५:०८	१७१	म	२६	9	**■ उदगयन-(उत्तरायण-)समाप्तिः**
दशमी	१०	५०।१६	२५:१४	उभ	९:३५	५:०८	१७२	बु	२७	10	**⦿ हलो, ढिकि, जाँतो इत्यादि बार्ने दिन ■**
एकादशी	११	४४।१९	२२:५१	रे	८:२९	५:०८	१७३	बृ	२८	11	पौराणिकानां परमा एकादशी
द्वादशी	१२	३६।४८	१९:५१	अ	६:४० २८:१७	५:०८	१७४	शु	२९	12	**● स्मार्तानां वैदिकानां दर्शश्राद्धम्** ⦿
त्रयोदशी	१३	२८।८	१६:२३	कृ	२५:३०	५:०८	१७५	श	३०	13	प्रदोषव्रतम्, शनित्रयोदशी, दिलाचह्रेपूजा
अमावास्या	१४	१८।४२	१२:३६	रो	२२:२९	५:०८	१७६	आ	३१	14	**श्रौतिनां वैदिकानाम् पिण्डपितृयज्ञः,** ●

कलिसंवत् ५०९१ को उत्तरायणमा पर्ने ग्रहस्थिति (सूर्योदयकालको) र ग्रहको दैनिक गति

मिति	सूर्य	गति	मङ्गल	गति	बुध	गति	बृहस्पति	गति	शुक्र	गति	शनि	गति	राहु	गति
२०८२														
२०८२।९।७	८:०६:१३:४०	६१:०६	८:१०:५३:४९	४५:३३	७:१९:३६:०१	८७:०५	२:२८:२३:४२	-७:०१	८:०२:२९:०५	७५:३१	११:०१:२७:५७	२:३२	१०:१८:२९:२९	३:११
२०८२।९।२२	८:२१:३०:५८	६१:०९	८:२२:२२:०४	४६:११	८:१२:१४:१५	९३:२१	२:२६:२९:०३	-८:०३	८:२१:२२:०	७५:३०	११:०२:१६:४९	३:५७	१०:१७:४१:४७	३:११
२०८२।१०।७	९:०६:४७:४१	६१:०३	९:०३:५८:४१	४६:४१	९:०६:२३:५१	१००:२४	२:२४:२८:५०	-७:४५	९:१०:१३:५०	७५:२५	११:०३:२५:३१	५:१०	१०:१६:५४:०६	३:११
२०८२।१०।२२	९:२२:०१:४४	६०:५०	९:१५:४१:३७	४७:०३	१०:०२:२६:४५	१०६:११	२:२२:४३:०८	-६:१०	९:२९:०३:२८	७५:१५	११:०४:५०:३६	६:०८	१०:१६:०६:२५	३:११
२०८२।११।७	१०:०६:१०:५२	६०:३१	९:२६:४१:२५	४७:१४	१०:२४:१४:५५	६४:३६	२:२१:३२:१०	-३:५३	१०:१६:३४:५४	७५:०१	११:०६:२१:२६	६:४८	१०:१५:२१:५६	३:११
२०८२।११।२२	१०:२१:१४:५३	६०:०६	१०:०८:२९:५९	४७:१७	१०:२४:०५:४४	-५७:१६	२:२०:५५:१७	-१:००	११:०५:१६:५८	७४:४१	११:०८:०७:१४	७:१६	१०:१४:३४:१६	३:११
२०८२।१२।७	११:०६:११:५९	५९:३७	१०:२०:१७:४९	४७:०९	१०:१४:१७:२७	७४:३३	२:२१:०२:१५	१:५५	११:२३:५३:१४	७४:१५	११:०९:५७:५८	७:२८	१०:१३:४६:३७	३:११
२०८३।१२।२२	११:२१:०१:३५	५९:०६	११:०२:०२:२५	४६:५१	१०:२३:१७:२३	६२:२७	२:२१:५१:२६	४:३६	०:१२:२२:२१	७३:४४	११:११:४९:४९	७:२५	१०:१२:५८:५७	३:११
२०८३														
२०८३।१।७	०:०५:४३:४०	५८:३६	११:१३:४१:२८	४६:२४	११:१२:५८:५१	९२:५८	२:२३:१८:१३	६:५५	१:००:४३:१२	७३:०८	११:१३:३९:०३	७:०७	१०:१२:११:१८	३:११
२०८३।१।२२	०:२०:१८:३९	५८:०९	११:२५:१२:४८	४५:४९	०:०९:२६:५२	११८:५१	२:२५:१६:४७	८:५०	१:१८:५४:३२	७२:२७	११:१५:२२:०४	६:३५	१०:११:२३:३८	३:११
२०८३।२।७	१:०५:४५:१०	५७:४४	०:०७:१९:३५	४५:०४	१:१३:२८:१९	१२८:०४	२:२७:५१:३४	१०:२७	२:०८:०६:२९	७१:३५	११:१७:०१:१०	५:४६	१०:१०:३२:४७	३:११
२०८३।२।२२	१:२०:०८:४४	५७:२६	०:१८:२९:२३	४४:१५	२:११:२४:३६	९१:४७	३:००:३७:१९	११:३६	२:२५:५२:४१	७०:३४	११:१८:२०:२३	४:४६	१०:०९:४५:०६	३:११

२०८२।९।१४–२५:०७ बुध पू. अस्त, १०।१६–२२:२२ शुक्र प. उदय, १०।२५–१५:२४ बुध प. उदय, ११।१४–१३:१४ बुध वक्री, ११।१६–११:२५ बुध प. अस्त, ११।२४–२९:०९ गुरु मार्गी, ११।३०–२९:४० बुध पू. उदय. १२।११–२७:१८ मङ्गल उदय। २०८३।१।२०–६:०७ बुध पू. अस्त, २।११–२०:३९ बुध प. उदय।

करणचक्रम् (करण[तिथिको आधा]को विवरण)

तिथयः (तिथिहरु)	शुक्लपक्षे		कृष्णपक्षे		तिथयः (तिथिहरु)
	दिने (दिवा)	रात्रौ (राति)	दिने (दिवा)	रात्रौ (राति)	
१	कौस्तुभम्	बवम्	बालवम्	कौलवम्	१
२	बालवम्	कौलवम्	तैतिलम्	गराजिः	२
३	तैतिलम्	गराजिः	वाणिजम्	विष्टिः	३
४	वाणिजम्	विष्टिः	बवम्	बालवम्	४
५	बवम्	बालवम्	कौलवम्	तैतिलम्	५
६	कौलवम्	तैतिलम्	गराजिः	वाणिजम्	६
७	गराजिः	वाणिजम्	विष्टिः	बवम्	७
८	विष्टिः	बवम्	बालवम्	कौलवम्	८
९	बालवम्	कौलवम्	तैतिलम्	गराजिः	९
१०	तैतिलम्	गराजिः	वाणिजम्	विष्टिः	१०
११	वाणिजम्	विष्टिः	बवम्	बालवम्	११
१२	बवम्	बालवम्	कौलवम्	तैतिलम्	१२
१३	कौलवम्	तैतिलम्	गराजिः	वाणिजम्	१३
१४	गराजिः	वाणिजम्	विष्टिः	शकुनिः	१४
१५	विष्टिः	बवम्	चतुष्पात्	नागम्	३०

वैदिक मासगणनाअनुसारका चाडपर्व-समयका सम्बन्धमा जानकारि

हाम्रा वेद-स्मृति-पुराणहरुबाट निर्दिष्ट चाडपर्वहरु ऋतुअनुसार मनाइने हुन् भन्ने कुरा शास्त्रहरुको अध्ययन गर्दा बुजिञ्छ। चाडपर्वहरुको नक्षत्रसम्बद्ध महिनामा विधान हुँदैमा ति चाडपर्व ऋतुनिरपेक्ष हुन् भन्न मिल्दैन। अधिकमास मानेर सबै चाडपर्वलाइ ऋतुसँग सँधैं सम्बद्ध बनाउने नै हाम्रो अनादि परम्परा हो। नत्र अधिकमास मान्नुको औचित्य नै रहँदैन। अतः चाडपर्वका निम्ति चान्द्रऋतु, पक्ष र तिथि नै मुख्य हुन् भन्ने बुजिञ्छ। चाडपर्वको समयसँग नक्षत्रको संयोग कादाचित्क मात्र हो। तर पछिल्लो समयमा नाक्षत्र वर्षलाइ मात्र आधार मानेर नक्षत्रबद्ध महिनाको मात्र गणना गरि पात्रो बनाउने परम्परा चल्नाले आजभोलि चलेको मासगणना र वैदिक आर्तव मासगणनामा अन्तर आएको छ। कुन पर्वका निम्ति कुन ऋतु निर्धारित छ भनेर चाडपर्वहरुका शास्त्रनिर्धारित ऋतुहरुका विषयमा अध्ययन गर्दा आजभोलि मनाइने विभिन्न चाडपर्वहरु वैदिक ऋतुबद्ध मासहरुमा एस प्रकार पर्ने कुरा बुझ्नुपर्छ।

क्र.सं.	चाड-पर्व	नक्षत्रबद्ध मासगणना-अनुसारको समय	वैदिक आर्तव मासगणना-अनुसारको समय
१	वासन्त-नवरात्र-प्रारम्भदिन	चैत्रशुक्लप्रतिपदा	माधवशुक्लप्रतिपदा
२	अक्षयतृतीया	वैशाखशुक्लतृतीया	शुक्रशुक्लतृतीया
३	हरिशयनी एकादशी	आषाढशुक्ल-एकादशी	नभःशुक्ल-एकादशी
४	उपाकर्म (जनैपूर्णिमा)	श्रावणपूर्णिमा	नभोमासपूर्णिमा
५	हरितालिका तृतीया (तिज)	भाद्रशुक्लतृतीया	इषशुक्लतृतीया
६	ऋषिपञ्चमी	भाद्रशुक्लपञ्चमी	इषशुक्लपञ्चमी
७	दूर्वाष्टमी	भाद्रशुक्ल-अष्टमी	इषशुक्ल-अष्टमी
८	शारद-नवरात्र-प्रारम्भदिन	आश्विनशुक्लप्रतिपदा	ऊर्जशुक्लप्रतिपदा
९	विजयादशमी	आश्विनशुक्लदशमी	ऊर्जशुक्लदशमी
१०	लक्ष्मीपूजा	कार्तिकामावास्या	ऊर्जामावास्या
११	भाइटिका	कार्तिकशुक्लद्वितीया	सहःशुक्लद्वितीया
१२	हरिबोधिनी एकादशी	कार्तिकशुक्ल-एकादशी	सहःशुक्ल-एकादशी

वैदिकतिथिपत्रनिर्माणपद्धति

वेदहरु, छवटा वेदाङ्गहरु, मीमांसाशास्त्र एवं स्मृति-पुराणका वचनहरुको र दृक्सिद्ध गणनाको समन्वय गरेर प्रयोगात्मक रूपमा **वैदिकतिथिपत्रको निर्माण गर्ने पद्धति** एस प्रकारको छ। चल्तिको मङ्सिरको उत्तरार्ध र पुस महिनाको पूर्वार्धका दिनहरुमा मध्याह्नको छाया नापेर **सबैभन्दा लामो छाया हुने दिन** पत्ता लगाएर **सौर उत्तरायण लाग्ने दिन** निश्चित गर्नुपर्छ। यो दिन तेस वर्षको सबैभन्दा कम दिनमान हुने दिन हुञ्छ। आजभोलि यो समय पुसको ६-७ गते चल्तिका पात्रामा **'मकरे सायनार्कः' (मकरे दृश्यार्कः)** लेखेका दिनमा पर्छ। तेसभन्दा २४ दिन अगाडि वा ६ दिनसम्म पछाडि परेको शुक्लप्रतिपदा नै वैदिक **तपः महिना** (द्र.-मा.शुक्लयजुर्वेद २२।३१) को शुक्लपक्षको प्रतिपदा मान्नुपर्छ।

अरुले भनेका कलिसंवत्मा ३६ घटाएर ६० ले भाग गर्दा आएका शेषबाट षष्टिसंवत्सरको ज्ञान गर्नुपर्छ। विक्रमसंवत् २०३२ को मङ्सिर १७ गते परेको तपःशुक्ल प्रतिपदाबाट वर्तमान **चान्द्र षष्टि-संवत्सर-चक्र** प्रारम्भ भएको छ। यो चक्र २०९२।८।१३ सहस्यकृष्णअमावास्यामा पूर्ण हुञ्छ।

विक्रमसंवत् २०८२ पुस ५ गते परेको तपःशुक्लप्रतिपदाबाट **वैदिक पञ्चवर्षात्मक आश्विन युग** प्रारम्भ हुञ्छ। यो वैदिक युग २०८७।९।९ सहस्यकृष्णअमावास्यामा पूर्ण हुञ्छ।

दृक्सिद्ध गणना भएको पात्रामा हेर्दा अमावास्या-समाप्तिको समय पूर्वाह्णमा अथवा मध्याह्नमा परे तेसै दिन प्रतिपदा मान्ने (औँसि अगिल्लै दिन मान्ने) र अपराह्ण वा राति परे त्यो दिन अमावास्या र भोलिपल्ट प्रतिपदा मान्ने गर्नुपर्छ। चन्द्रमा नदेखिने दिन औँसि (कुहू अमावास्या) हुञ्छ। सूर्य उदाउनै लाग्दा अत्यन्त सानो आकारमा चन्द्रमा देखिएमा पनि औँसि (सिनीवाली अमावास्या) हुञ्छ। औँसिको भोलिपल्ट शुक्लपक्षको **प्रतिपदा**, पर्सिपल्ट **द्वितीया**, निकपर्सिपल्ट **तृतीया** एस प्रकार तिथिहरु मान्नुपर्छ। शुक्लप्रतिपदादेखिको १५ औँ दिन **पूर्णिमा** अथवा **पञ्चदशी** मानिञ्छ। कृष्णपक्षमा चतुर्दशी टुटेमा १५ को सट्टा १४ दिन हुञ्छन्। जुन दिन चन्द्रमा जुन नक्षत्रका योगताराका नजिक रहञ्छन्, तेस दिन त्यो नक्षत्र हुञ्छ। शुक्ल र कृष्ण पक्षको १ महिना हुञ्छ। तपः र तपस्य महिनाको **शिशिर**, मधु र माधवको **वसन्त**, शुक्र र शुचिको **ग्रीष्म** सौरचान्द्र ऋतु हुञ्छन्। इ **उत्तरायण**मा पर्छन्। नभः र नभस्यको **वर्षा**, इष र ऊर्जको शरद्, सहः र सहस्यको **हेमन्त** ऋतु हुञ्छन्। इ **दक्षिणायन**मा पर्छन्। २ सौरचान्द्र अयनको एक सौरचान्द्र **वर्ष** हुञ्छ। एस्ता ५ वर्षहरुको एक **पञ्चवर्षात्मक युग** हुञ्छ।

वैदिक अधिकमास र लौकिक अधिकमासहरु

अरु पात्रामा अधिकमास मानिएका महिना लौकिक अधिकमास हुन्। लौकिक अधिकमास पनि निरयण र सायन गरेर दुइ प्रकारका छन्। वैदिकतिथिपत्रम्-मा मूलतः वैदिक सिद्धान्तअनुसारका अधिकमास दिएर लौकिक अधिकमास पनि देखाइएका छन्। एस विषयको विशेष ज्ञान सबैलाइ आवश्यक हुञ्छ। अतः वर्तमान ६० संवत्सर भित्र पर्ने वेदाङ्गज्योतिषअनुसारका वैदिक अधिकमास र अर्वाचीन मतअनुसारका निरयण लौकिक अधिकमासहरुको विवरण तल दिइञ्छ—

विक्रम-संवत्	वैदिक अधिकमास	विक्रम-संवत्	लौकिक अधिकमास	विक्रम-संवत्	वैदिक अधिकमास	विक्रम-संवत्	लौकिक अधिकमास
२०३३	**सहस्य** (पौष)	२०३४	आषाढ	२०६३	**शुचि** (आषाढ)	२०६४	ज्येष्ठ
२०३६	**शुचि** (आषाढ)	२०३७	ज्येष्ठ	२०६६	**शुचि** (आषाढ)	२०६७	वैशाख
२०३८	**सहस्य** (पौष)	२०३९	आश्विन	२०६८	**सहस्य** (पौष)	२०६९	भाद्र
		२०३९	फाल्गुन	२०७१	**सहस्य** (पौष)	२०७२	आषाढ
२०४१	**सहस्य** (पौष)	२०४२	श्रावण	२०७४	**शुचि** (आषाढ)	२०७५	ज्येष्ठ
२०४४	**शुचि** (आषाढ)	२०४५	ज्येष्ठ	२०७६	**सहस्य** (पौष)	२०७७	आश्विन
२०४७	**शुचि** (आषाढ)	२०४८	वैशाख	२०७९	**सहस्य** (पौष)	२०८०	श्रावण
२०४९	**सहस्य** (पौष)	२०५०	भाद्र	२०८२	**शुचि** (आषाढ)	२०८३	ज्येष्ठ
२०५२	**सहस्य** (पौष)	२०५३	आषाढ	२०८४	**सहस्य** (पौष)	२०८५	कार्त्तिक
२०५५	**शुचि** (आषाढ)	२०५६	ज्येष्ठ			२०८५	चैत्र
२०५७	**सहस्य** (पौष)	२०५८	आश्विन	२०८७	**सहस्य** (पौष)	२०८८	भाद्र
२०६०	**सहस्य** (पौष)	२०६१	श्रावण	२०९०	**सहस्य** (पौष)	२०९१	आषाढ

वैदिक कालगणना–सिद्धान्तमा **अधिकमास हुञ्छ**, तर **क्षयमास हुँदैन**। वैदिक कालगणनापद्धति अयन र नक्षत्रमा आधृत पद्धति भएकाले राशिपद्धतिमा जस्तो क्षयमास मान्ने कुरा वैदिक पद्धतिमा हुँदैन। तेसैले क्षयमास भनिएका **२०३९ पौष** र **२०८५ मार्गशीर्ष** पनि साधारण महिना नै मानिञ्छन्। **दृक्सिद्ध केतकी गणनामा २०८५ कार्त्तिकमा अधिकमास र मार्गशीर्षमा क्षयमास छैन; ति साधारण महिना नै मानिएका छन्; चैत्रमा मात्र अधिकमास छ।**

वैदिक तिथिपत्र (कलिसंवत् ५०९०)

अनुबन्ध

(१) वैदिक अनुष्ठानका निम्ति शुभ दिनहरु

आजभोलि लोकमा वैदिक कर्मभन्दा तान्त्रिक र पौराणिक कर्म बडि चलेकाले वैदिक अनुष्ठानका विषयमा प्रचारको खाँचो देखिञ्छ। तेसैले याहाँ केइ वैदिक अनुष्ठान र तिनका कालका विषयमा बताइञ्छ।

शतरुद्रियमन्त्र-पाठ— माध्यन्दिनीयवाजसनेयि-शुक्लयजुर्वेदमन्त्रसंहिताका सौरौँ अध्यायका मन्त्रलाइ शतरुद्रियमन्त्र भञ्छन्। श्रौत कर्मका प्रसङ्गमा चयन यागमा इनको प्रयोग हुञ्छ। एसको पाठ विधिवत् गुरुसँग वेदमन्त्रसंहिता पडेका उपाध्याय-ब्राह्मणद्वारा **अरिष्टको शान्ति, आयुको वृद्धि, आरोग्य, लक्ष्मी, समृद्धि, स्वर्ग, मोक्ष इत्यादिको प्राप्ति** जस्ता विभिन्न उद्देश्यले गराउने विधानहरु यजुर्विधानमा छन्। एसका लागि दिनहरु दैवकर्मका लागि शुभ मानिएका तिथि-नक्षत्र परेका दिनहरु लिन सकिञ्छन्। अरिष्टशान्ति-रोगशान्ति इत्यादि उद्देश्यका लागि गर्न पर्दा ति कुराको विशेष आकाङ्क्षा भएका दिनमा अथवा अवसरमा यो काम गर्न हुञ्छ।

मन्त्र-पाठ— जन्मोत्सवमा आफुले गुरुमुख गरेर वेद पडेको भए आँफैले नभए तेसरि वेद पडेका सदाचारि शुद्धकुलीन ब्राह्मणद्वारा **"विभ्राड्"** इत्यादि मन्त्र १०८ पटक अथवा १००८ पटक वा यथाशक्ति त्योभन्दा धेरै पटक पाठ गर्नु आयुर्वृद्धिका लागि राम्रो हुञ्छ। एसमा जति वर्षको व्यक्तिको जन्मोत्सव हो तेति जाना ब्राह्मणद्वारा प्रतिब्राह्मण १००८ पटक पाठ गराउन उचित हुञ्छ।

वेद-मन्त्रसंहिता-पारायण— वेदमन्त्रसंहितापारायण सम्पूर्ण पापको नाश गर्ने र भुक्ति-मुक्ति (भोग र मोक्ष) दिने मानिएको छ। मनुस्मृतिबाट पनि (११।२६२) यो कुरा ज्ञात हुञ्छ। एस्तो पारायण आँफै गर्न नसक्नेले गुरुमुखबाट सुनेर तदनुसार उच्चारण गरेर राम्ररि वेद पडेका शुद्धकुलीन सदाचारि उपाध्याय-ब्राह्मणबाट सुन्न जाति हुञ्छ। एसका लागि शुचिशुक्लपूर्णिमादेखि (आर्तव आषाढशुक्लपूर्णिमादेखि तपश्शुक्लप्रतिपदासम्मको (आर्तव माघशुक्लप्रतिपदासम्मको) समय विशेष समुचित हुञ्छ। सामान्यतया जैलेसुकै पनि वेद प्रति श्रद्धा जागेका अवस्थामा यो कर्म गर्न हुञ्छ।

पिता माता इत्यादि अगति परेका हुन सक्ने लागेका अवस्थामा ब्राह्मणका मुखबाट वेदपाठ सुन्नु समुचित हुने कुरा मूलगरुडपुराणको **"सच्छास्त्रश्रवणं विष्णोः पूजा सज्जनसङ्गतिः। प्रेतयोनिविनाशाय भवन्तीति मया श्रुतम्"** (२।२७।४२–४३) भन्ने वचनबाट पनि देखिञ्छ।

विविध काम्य कर्महरु— पुष्य नक्षत्रमा गरेको काम सिद्ध हुने हुनाले **'सिद्ध्य'** भन्ने नाम रहेको तथा उत्तरायण र शुक्लपक्ष दैवकर्मकाल भएकले **पुष्य नक्षत्र परेका उत्तरायणका शुक्लपक्षका दिन** विभिन्न काम्य कर्मका लागि उत्तम शुभ दिन हुञ्छन्। एस वर्षका तेस्ता दुर्लभ विशिष्ट शुभ दिन—

तपःकृष्णतृतीया **(२०८१ पुस ३)**, तपस्यशुक्लपूर्णिमा **(२०८१ माघ १)**, मधुशुक्लत्रयोदशी **(२०८१ माघ २९)**, माधवशुक्ल-एकादशी **(२०८१ फागुन २६)**, शुक्रशुक्लअष्टमी **(२०८१ चइत २४)**, प्रथमशुचिशुक्लसप्तमी **(२०८२ वैशाख २१)**

२०८२ पुस २१, माघ १८, फागुन १६, १७, चइत १४, २०८३ वैशाख ११, जेठ ७।

(२) विवाह-व्रतबन्धादिका लागि गोत्र-प्रवरज्ञान

गोत्र-प्रवरज्ञान व्रतबन्ध-विवाहादिका लागि अत्यावश्यक हो। नेपालि थरहरुको वा पदहरुको शास्त्रमा उल्लेख नहुने हुँदा शास्त्रबाट यो थरको यो गोत्र हुञ्छ भन्ने कुरा जानिँदैन। गोत्र कुलवृद्ध-व्यवहार-परम्पराबाट मात्र जानिञ्छ। लोकमा गोत्रको उच्चारण पनि शुद्ध रूपमा नभैरहेको पनि पाँइञ्छ। तथापि अशुद्ध उच्चारणबाट पनि गोत्रको शुद्ध शास्त्रीय रूपको अनुमान हुञ्छ।

(३) विवाहमा गोत्रको, प्रवरको र गणको विचार

द्विजातिका लागि र विशेष गरि ब्राह्मणका लागि आँफ्नो गोत्र-प्रवरको ज्ञान अत्त्यावश्यक छ। प्रवराध्यायनामक-शास्त्रअनुसार **विवाहमा गोत्रको, प्रवरको र गणको पनि विशेष विचार हुञ्छ।**

गोत्र— नेपालि समाजमा सगोत्रमा (एउटै गोत्रमा) विवाह गर्न हुँदैन भन्ने कुरा सम्म सामान्यतया प्रसिद्धै भएपनि तेसलाइ पनि ठुलै अज्ञानले गर्दा कतैकतै मिच्ने गरेको पनि देखिन आएको छ। कोइ ‘कश्यप र काश्यप दुइ गोत्र हुन्’ भनेर भ्रमैमा भौँतारिएर भ्रमै फैलाइरहेका पनि देखिञ्छन्, कतिपय अधिकारीहरुले केइ वर्ष अगि आँफ्नो परम्परागत **“काश्यप आवत्सार नैध्रुव”** प्रवरलाइ फेरेर नमिल्दो प्रवर अँगालेको बुजिएको छ। एस विषयमा धार्मिक समाजमा शास्त्रीय चर्चा चलाउनु, अज्ञान हटाउनु र **शास्त्र-सम्मत नभएका एस्ता व्यवहारलाइ ब्राह्मणसमाजले रोक्नु उचित हुञ्छ।** समान प्रवरमा र समान गणमा पनि बिया गर्न हुँदैन। नेपालि ब्राह्मणमा अत्यन्त प्रसिद्ध गोत्रहरुमध्ये—**१.**वत्सगोत्र **भृगुगण**को हो; **२.**मौद्गल्यगोत्र **अङ्गिरोगण**को हो; **३.**भारद्वाजगोत्र[1] र गर्गगोत्र[2] **भरद्वाजगण**का हुन्; **४.**कौशिकगोत्र[1], घृतकौशिकगोत्र[2], धनञ्जयगोत्र[3] र माण्डव्यगोत्र[4] **विश्वामित्रगण**का हुन्; **५.**वसिष्ठगोत्र[1], कौण्डिन्यगोत्र[2], उपमन्युगोत्र[3] र पराशरगोत्र[4] **वसिष्ठगण**का हुन्; **६.**कश्यपगोत्र वा काश्यपगोत्र[1] र शाण्डिल्यगोत्र[2] **कश्यपगण**का हुन्; **७.**अत्रिगोत्र वा आत्रेयगोत्र **अत्रिगण**को हो; **८.**अगस्त्यगोत्र **अगस्त्यगण**को हो।

गण	भृगुगण	अङ्गिरोगण	भरद्वाजगण	विश्वामित्रगण	वसिष्ठगण	कश्यपगण	अत्रिगण	अगस्त्यगण
गण-भित्र पर्ने गोत्र	वत्सगोत्र इत्यादि	मौद्गल्यगोत्र इत्यादि	भरद्वाजगोत्र गर्गगोत्र इत्यादि	कौशिकगोत्र घृतकौशिकगोत्र धनञ्जयगोत्र माण्डव्यगोत्र	वसिष्ठगोत्र कौण्डिन्यगोत्र उपमन्युगोत्र पराशरगोत्र	कश्यपगोत्र (काश्यपगोत्र) शाण्डिल्यगोत्र इत्यादि	अत्रिगोत्र (आत्रेयगोत्र) इत्यादि	अगस्त्यगोत्र इत्यादि

एउटै गणभित्र पर्ने गोत्र भएकाहरुको परस्परमा विवाहसम्बन्ध सामान्यतया शास्त्रनिषिद्ध छ। यो कुरा मूल शास्त्रमा छ र निर्णयसिन्धुमा र धर्मसिन्धुमा पनि लेखिएको छ। **ब्राह्मणसमाजले शास्त्रानुकूल व्यवहार गर्ने गर्नु र शास्त्रसँग नमिल्ने व्यवहार छोड्ने गर्नु आवश्यक देखिञ्छ।** क्षत्रिय र वैश्यको गुरु-पुरोहितको गोत्र-प्रवर हुने हुनाले *(**पुरोहितप्रवरावेव राजन्य-वैश्याविति ह विज्ञायते**।-कातीय प्रावरिकासूत्र १।१९)* उनिहरुलाइ गुरुपुरोहितका सगोत्र र समानप्रवर कन्या विवाह नगर्ने निर्देश छ *(**गुरोः समानप्रवरा नोद्वाह्या क्षत्रविड्जनैः**।–कातीय प्रावरिकासूत्र, श्लोककाण्ड २५, विवाहपद्धति, २०८०, पृ. ६५५)*।

समान-प्रवरमा पनि सामान्यतया परस्पर विवाहसम्बन्ध हुँदैन। तेसमा **भृगुगणमा** र **अङ्गिरोगण**मा ५ प्रवर भएकामा ३ प्रवर मिलेमा र ३ प्रवर भएकामा २ प्रवर मिलेमा समान प्रवर भएको मानिञ्छ र तेस्तामा बिया फुक्तैन। त्योभन्दा कम प्रवर मिले बिहा फुक्छ। **अत्रिगणमा, विश्वामित्रगणमा, कश्यपगणमा, वसिष्ठगणमा** र **अगस्त्यगण**मा भने ५ प्रवर भएकामा वा ३ प्रवर भएकामा पनि एउटै मत्रै प्रवर मिलेपनि समान प्रवर भएको मानिञ्छ र सामान्यतया बिया फुक्तैन भन्ने शुक्लयजुर्वेदिहरुको कातीय प्रावरिका-सूत्रमा *(श्लोककाण्ड, श्लो. ५०)* व्यवस्था छ—

पञ्चानां त्रिषु सामान्यादविवाहस् त्रिषु द्वयोः।
भृग्वङ्गिरोगणेष्वेवं शेषेष्वेकोऽपि वारयेत्॥ *(विवाहपद्धति, २०८०, पृ. ६५६)*

एस कुरामा पनि नेपालका ब्राह्मणहरुको ध्यान गएजस्तो देखिँदैन। तसर्थ एस विषयमा पनि नेपालि धर्मशास्त्रिहरुको र ब्राह्मणहरुको ध्यान जानपर्छ। अरु जातिका व्यक्तिहरुले पनि आँ-आँफ्ना जातिको परम्परागत विवाहमर्यादाको पालना गर्न पर्छ।

(४) आमाका (मातामहका) गोत्रकि कन्न्या विवाहगर्न निषेध

आमाका (मावलिका) गोत्रकि कन्न्या विवाहगर्न नहुने शास्त्रव्यवस्था छ। कातीय-प्रावरिकासूत्रमा *(श्लोककाण्ड, श्लो. ४८, विवाहपद्धति, २०८०, पृ. ६५६)* र स्मृति-पुराणहरुमा आमाका गोत्रकि अर्थात् मातामहका गोत्रकि कन्न्या तथा समान प्रवर भएकि कन्न्या बिया गर्न नहुने कुरा प्रतिपादित छ—

मातुलस्य सुतामूढ्वा मातृगोत्रां तथैव च।
समानप्रवरां चैव त्यक्त्वा चान्द्रायणं चरेत्॥

यो वचन निर्णयसिन्धुमा पनि उद्धृत छ। मनुस्मृतिका वचनबाट पनि यो कुरा बुजिने भन्ने व्याख्याताहरुको भनाइ छ। किन्तु नेपालि ब्राह्मणहरुले एस विषयमा राम्रो ध्यान नपुऱ्याएको पाइएको छ। एस विषयमा ध्यान पुऱ्याउन आवश्यक देखिञ्छ।

(५) विवाहमा सापिण्ड्यको (नातासम्बन्धको) विचार

नाता-लाग्ने (सापिण्ड्य निवृत्त नभएका) कन्न्याको र वरको पनि विवाह गर्न हुँदैन। विश्वरूपले याज्ञवल्क्यस्मृतिव्याख्या बालक्रीडामा (१।५३) **“पञ्चमीं वोभयतः”** भन्ने शङ्खलिखितको वचन उद्धृत गरि पितापट्टिबाट पनि पाँचौं पुस्ताकि र आमापट्टिबाट पनि पाँचौ पुस्ताकि कन्न्यासित पनि विवाह खुल्ने कुरा लेखेका छन्। **एकापट्टिबाट पुस्ता नपुगे पनि आर्कापट्टिबाट पुस्ता पुगे विवाह खुलाउने शास्त्रसम्मत प्रचलन पनि नेपालिहरुमा चलेको छ।** तिनओटा गोत्रले बिचमा छेकेमा पुस्ता नपुगेका

कन्याको र वरको पनि विवाह हुन सक्छ भन्ने वचन र तेस्तो प्रचलन पनि छ। पुस्ता गन्दा दुबैको नाता जोडिने **साझा मूल पुरुष पहिलो** पुस्ता, उसका छोरा-छोरि **दोस्रो** पुस्ता, मूल पुरुषका नाति-नातिनि अथवा दौहित्र-दौहित्री **तेस्रो** पुस्ता, तिनका छोरा-छोरि **चौथो** पुस्ता, तिनका पनि छोरा-छोरि **पाँचौं** पुस्ता, एस प्रकारले गनिञ्छ।

(६) विवाह, व्रतबन्ध इत्यादि संस्कारको पुण्याह (शुभ दिन)

संस्कार-कर्मको विधान गर्ने मूलग्रन्थ गृह्यसूत्रहरुमा **"उदगयन आपूर्यमाणपक्षे कल्याणे नक्षत्रे चौलकर्मोपनयनगोदानविवाहाः"** (आश्वलायनगृ.१।४।१), **"उदगयन आपूर्यमाणपक्षे पुण्याहे कुमार्यै पाणिं गृह्णीयात्"** (कौषीतकिगृ.१।१।८), **"उदगयन आपूर्यमाणपक्षे पुण्याहे कुमार्याः पाणिं गृह्णीयात्"** (पारस्करगृ.१।४।५) इत्यादि वचन छन्। वैदिक धर्मको निर्णय गर्ने मीमांसाशास्त्रमा **"उदगयन-पूर्व-पक्षा-ऽहःपुण्याहेषु दैवानि स्मृतिरूपान्यार्थदर्शनात्। अहनि च कर्मसाकल्यम्। इतरेषु तु पित्र्याणि।"** (जै.ध.मी.सू.६।८।२३–२५) भनिएको छ। त्याँहाँ लग्नहरुको उल्लेख छैन। तेसैले वैदिकहरुलाइ विवाह-व्रतबन्धादि संस्कार कर्म गर्न उत्तरायणका शुक्लपक्षको पुण्याह (राम्रो तिथि र राम्रो नक्षत्र भएको दिन) भए पुग्छ, लग्नादिको अरु विचार गर्न पर्दैन। इच्छा हुनेले लग्नको पनि विचार गरेर काम गरे हुञ्छ। **गृह्यसूत्रका प्रतिकूल कालको (दक्षिणायनको र कृष्णपक्षको) लग्न भने कथमपि लिन हुँदैन।**

(७) विवाह-दिन (साइत)

उदगयने तपसि [आर्तवे माघे] मासे शुक्ले पक्षे— पञ्चमी, *षष्ठी,* सप्तमी, दशमी, एकादशी, पूर्णिमा **(२०८१ मङ्सिर[1] २०, *२१,* २२, २५, २६, ३०)।** *नक्षत्रस्योग्रत्वात् षष्ठ्याः (मङ्सिर २१) क्षत्रियग्राह्यत्वम्[2]।*

उदगयने तपस्ये [आर्तवे फाल्गुने] मासे शुक्ले पक्षे— द्वितीया, *तृतीया,* चतुर्थी, सप्तमी, *नवमी,* द्वादशी **(२०८१ पुस १७, *१८,* १९, २२, *२४,* २७)।** *तत्र नक्षत्रस्योग्रत्वात् तृतीयायाः नवम्याश्च (पुस १८, २४) क्षत्रियग्राह्यत्वम् ।*

उदगयने मधौ[3] [आर्तवे चैत्रे] मासे शुक्ले पक्षे— चतुर्थी, पञ्चमी, *षष्ठी,* नवमी, दशमी **(२०८१ माघ २०, २१, *२२,* २५, २६)।** *तत्र नक्षत्रस्योग्रत्वात् षष्ठ्याः (माघ २२) क्षत्रियग्राह्यत्वम् ।*

उदगयने माधवे [आर्तवे वैशाखे] मासे शुक्ले पक्षे— तृतीया, *चतुर्थी,* सप्तमी, पूर्णिमा **(२०८१ फागुन १८, *१९,* २२, चइत[3] १)।** *तत्र नक्षत्रस्योग्रत्वात् चतुर्थ्याः (फागुन १९) क्षत्रियग्राह्यत्वम्।*

उदगयने शुक्रे [आर्तवे ज्येष्ठे] मासे शुक्ले पक्षे— द्वितीया, पञ्चमी, त्रयोदशी, *पूर्णिमा* **(२०८१ चइत *१८,* २१, २९, *३१*)।** *तत्र द्वितीयायाः पूर्णिमायाश्च (चइत १८, ३१) क्षत्रियग्राह्यत्वम्।*

उदगयने प्रथमशुचौ [आर्तवे प्रथमाषाढे] मासे शुक्ले पक्षे— तृतीया, चतुर्थी, एकादशी, द्वादशी, *त्रयोदशी* **(२०८२ वैशाख १७, १८, २५, २६, *२७*)।** *तत्र त्रयोदश्याः (वैशाख २७) क्षत्रियग्राह्यत्वम्।*

[वैदिक गणनाअनुसार २०८२ वैशाख ३० गतेदेखि जेठ १२ गते सम्म कृष्णपक्ष छ। जेठ १३ गतेदेखि असार ११ सम्म वैदिक अधिकमास (द्वितीयशुचिमास) पर्छ। असार १२ गते शुक्लप्रतिपदादेखि पुस ४ गते औँसिसम्म सौरचान्द्र दक्षिणायन पर्छ। कृष्णपक्ष र दक्षिणायन विवाहका निम्ति शुभ मानिएका छैनन्। अतः तेस समयमा विवाहको पुण्याह (साइत) नदिइएको हो।]

२०८२ पुस ७, ८, ९, १३, १७; माघ ७, ८, ११, १२, १५; फागुन ८, ९, १०, १४; चइत ६, ७, १०, ११; २०८३ वैशाख ७, ८, १५, १६, *१७*; जेठ ४, ११, १२, १३, *१५*।

[याहाँ दिइएका विवाह-पुण्याहहरु (साइतहरु) **माध्यन्दिनीय-वाजसनेयि-शुक्लयजुर्वेदका अनुयायिहरुका लागि** पारस्करगृह्यसूत्रका विधानअनुसार दिइएका हुन्। **पारस्करगृह्यसूत्रमा** विवाहका

---

१. वेदाङ्गज्योतिषको गणनाअनुसार **२०८१ मङ्सिर १६ गते शुक्लप्रतिपदा**बाट सौरचान्द्र **उत्तरायण लाग्ने** तथा वैदिक गणनाअनुसार **तपोमास (आर्तव माघमास) लाग्ने हुँदा** आजभोलि **पुस भनिने** महिनामा (धनुर्मासमा) पनि मूल वेदाङ्गशास्त्र वेदाङ्गज्योतिषअनुसार विवाहदिन दिइएका हुन्।

२. वेदाङ्गज्योतिषअनुसार **आर्द्रा, चित्रा, विशाखा, श्रवण, अश्विनी** इ नक्षत्र **उग्र नक्षत्र** र मघा, स्वाति, ज्येष्ठा, मूल (मूलबर्हणी) र **भरणी क्रूर नक्षत्र** हुन्। **इ नक्षत्रमध्येका विवाहका निम्ति ग्राह्य नक्षत्र परेका दिन** क्षत्रियहरुका निम्ति र क्षत्रियको जस्तो **शूरता-वीरता चाहनेहरु**का निम्ति ग्राह्य हुञ्छन्।

३. हाम्रो वेदशाखाको गृह्यसूत्र (विवाहपद्धति बताउने मुख्य शास्त्र) **पारस्करगृह्यसूत्र**मा मधुमासमा अथवा चैत्रमा अथवा मीनमासमा (आजभोलि चइत भनिने गरेका महिनामा) **विवाहको निषेध नभएकाले उत्तरायण**मा पर्ने वैदिक **मधुमास**मा र आजभोलि **चइत भनिने** गरेका महिनामा पनि **शुक्लपक्षमा मूल वेदाङ्गशास्त्र गृह्यसूत्र**अनुसार विवाहदिन दिइएका हुन् भन्ने कुरा ज्ञातव्य छ।

लागि शुभ नक्षत्रको निर्देश गर्दा **"त्रिषुत्रिषूत्तरासु स्वातौ मृगशिरसि रोहिण्यां वा"** (१।४।५-७) भनिएको छ। (वारको विचार गर्नेले आइत-सोम-मङ्गल-शनिवारका दिन विवाह नगर्नु भञ्छन्।)]

(८) चूडाकरण-दिन

दैवकर्मका लागि विहित उदगयनका (उत्तरायणका) शिशिर-वसन्त-ग्रीष्म ऋतुका शुक्लपक्षका शुभतिथिहरु चूडाकरणका लागि पुण्याह हुने देखिञ्छ। **व्रतबन्धकै दिन चूडाकरण गर्दा छुट्टै विचार गरिंदैन, छुट्टै चूडाकरण गर्दा इ कुराको विचार गरिञ्छ।** (वारको पनि विचार गर्नेहरुले आइत-मङ्गल-शनि-वारमा चूडाकरण नगर्नु भञ्छन्। तेसमा ब्राह्मणका लागि आइतवार, क्षत्रियका लागि मङ्गलवार र वैश्यका लागि सन्सरवार ग्राह्य नै हुञ्छन् पनि भञ्छन्।)

उदगयने तपसि मासे शुक्ले पक्षे— षष्ठी, सप्तमी, एकादशी **(२०८१ मङ्सिर २१, २२, २६)**।
तपस्ये मासे शुक्ले पक्षे— तृतीया, पञ्चमी, त्रयोदशी **(२०८१ पुस १८, २०, २८)**।
मधौ मासे शुक्ले पक्षे— पञ्चमी, दशमी, त्रयोदशी **(२०८१ माघ २१, २६, २९)**।
माधवे मासे शुक्ले पक्षे—सप्तमी, दशमी, एकादशी, त्रयोदशी **(२०८१ फागुन २२, २५, २६, २८)**।
उदगयने शुक्रे मासे शुक्ले पक्षे— पञ्चमी, सप्तमी **(२०८१ चइत २१, २३)**।
उदगयने प्रथमशुचौ मासे शुक्ले पक्षे— षष्ठी, सप्तमी, त्रयोदशी **(२०८२ वैशाख २०, २१, २७)**।
२०८२ पुस ९, १०; माघ ७, ८, १२, १८; फागुन १६; चइत ६, ११, १४; २०८३ वैशाख १०, ११, १७; जेठ ७, १२, १३, १५ इ.।

(९) व्रतबन्ध-दिन (उपनयन-दिन)

उपनयनको पुण्याहका विषयमा पारस्करगृह्यसूत्रमा विशेष वचन छैन तापनि वैदिकहरुले श्रौत अग्न्याधानकालनिर्देशको अनुकूल **"वसन्ते ब्राह्मणमुपनयीत, ग्रीष्मे राजन्यम्, शरदि वैश्यम्, वर्षासु रथकारमिति, सर्वानेव वा वसन्ते"** भन्ने बौधायनगृह्यसूत्रको वचन र **"शिशिरे वा सर्वान्"** भन्ने भारद्वाज-गृह्यसूत्रको वचन भएकाले याँहाँ सामान्यतया दैवकर्मका लागि विहित उदगयनका (उत्तरायणका) शिशिर-वसन्त-ग्रीष्म ऋतुका शुक्लपक्षका शुभतिथिहरु व्रतबन्धका लागि पुण्याह मान्न उचित हुञ्छ। (वारको पनि विचार गर्नेले मङ्लवारमा र सन्सरवार उपनयन नगर्नु भञ्छन्। आइतवारमा र सउँवारमा पनि उपनयन नगर्नु जाति हो भञ्छन्। सामवेदिका लागि र क्षत्रियका लागि मङ्गलवार पनि ग्राह्यै हो पनि भञ्छन्। अस्ताएका वा पापग्रहयुक्त बुधको वार पनि शुभ हैन पनि भञ्छन्।)

उदगयने तपसि मासे शुक्ले पक्षे— षष्ठी, सप्तमी, एकादशी, **(२०८१ मङ्सिर २१, २२, २६)**। *षष्ठ्याः (मङ्सिर २१) क्षत्रियग्राह्यत्वम्।*
उदगयने तपस्ये मासे शुक्ले पक्षे— तृतीया, चतुर्थी, पञ्चमी, द्वादशी **(२०८१ पुस[1] १८, १९, २०, २७)**। *तृतीयायाः (पुस १८) क्षत्रियग्राह्यत्वम्।*
उदगयने मधौ मासे शुक्ले पक्षे— द्वितीया, पञ्चमी, नवमी, दशमी, द्वादशी, त्रयोदशी **(२०८१ माघ १८, २१, २५, २६, २८, २९)**।
उदगयने माधवे मासे शुक्ले पक्षे— सप्तमी, दशमी, एकादशी **(२०८१ फागुन २२, २५, २६)**।
उदगयने शुक्रे मासे शुक्ले पक्षे— पञ्चमी **(२०८१ चइत २१)**।
उदगयने प्रथमशुचौ मासे शुक्ले पक्षे— तृतीया, षष्ठी, सप्तमी, द्वादशी, *त्रयोदशी* **(२०८२ वैशाख १७, २०, २१, २६, २७)**। *त्रयोदश्याः (वैशाख २७) क्षत्रियग्राह्यत्वम्।*
[२०८२ वैशाख ३० गतेदेखि जेठ १२ गते सम्म कृष्णपक्ष छ। जेठ १३ गतेदेखि असार ११ सम्म वैदिक अधिकमास (द्वितीयशुचिमास) पर्छ। असार १२ गते शुक्लप्रतिपदादेखि पुस ४ गते औँसिसम्म सौरचान्द्र दक्षिणायन पर्छ। अतः उपनयन (व्रतबन्ध) को साइत दिइएको छैन।]
२०८२ पुस ९, १०, १७; माघ ७, ८, १२, १५, १८; फागुन १६; चइत ६, १०, ११, १४; २०८३ वैशाख ७, १०, ११, १६, १७; जेठ ४, ७, १२, १४ गते इ.।

(१०) वेदारम्भ-दिन

उपनयन भएपछि वा समावर्तन पनि भएपछि वर्षा ऋतुको पैलो पूर्णिमामा वेदारम्भ (अध्यायोपाकर्म)

---

१. दृक्सिद्ध गणनाअनुसार **२०८१ पुस ६** गते सौर उत्तरायण लाग्ने, वेदाङ्गज्योतिषको गणनापद्धति-अनुसार २०८१ मङ्सिर १६ गते शुक्लप्रतिपदाबाट सौरचान्द्र **उत्तरायण लाग्ने** तथा वैदिक गणनाअनुसार वास्तवमा **तपोमास (आर्तव माघमास) लाग्ने र शुद्ध महिना हुने हुँदा** आजभोलि **पुस भनिने** महिनामा पनि मूल शास्त्र वेदाङ्गज्योतिषअनुसार उपनयनदिन दिइएका हुन्।

गर्ने विधान पारस्करगृह्यसूत्रमा छ। पहिलो पटकको अध्यायोपाकर्म अथवा उपाकर्म नै वेदारम्भसंस्कार हो। उपाकर्म गरिने **नभोमासको पूर्णिमा** एस वर्ष **२०८२।३।२६ गते** (बिहिवार) परेको छ। वैकल्पिक दिन **नभोमासका पञ्चमी**मा (**२०८२।३।१६ गते सोमवार**) पनि उपाकर्म गर्न सकिञ्छ।

एस दिन उपाकर्म गरेर अनध्यायका दिन[1] छोडेर गुरुमुखबाट आँफ्नो शाखाका वेदको अध्ययन गर्दै गइ सकेजति वेदको अध्ययन गरिसकेपछि अध्यायोत्सर्जन गर्ने (वेदको ग्रहणाध्ययनको विराम गर्ने) नियम छ। अध्यायोत्सर्जनदिन अर्थात् **सहस्यमासको रोहिणी नक्षत्र परेको दिन** २०८२।८।१९ शुक्रवार परेको छ। अध्यायोत्सर्जन गर्ने वैकल्पिक दिन अर्थात् **सहस्यकृष्णाष्टमी** २०८२।८।२६ शुक्रवार परेको छ।

(११) अन्नप्राशन-दिन (भातख्वाइ/पास्नि गर्ने दिन)

अन्नप्राशनको पुण्याहका विषयमा **"उदगयन-पूर्वपक्षा-ऽहःपुण्याहेषु दैवानि स्मृतिरूपाऽन्यार्थ-दर्शनात्। अहनि च कर्मसाकल्यम्"** (जैमिनीयधर्ममीमांसासूत्र ६।८।२३-२४) इत्यादि वचन विचारमा राखि कर्म गर्नु उचित देखिञ्छ। (वारको पनि विचार गर्नेले आइत, मङ्गल र शनिवार अन्नप्राशन नगर्नु भञ्छन्। कसैले सोमवार र शुक्रवार पनि त्याज्य तथा आइतवार ग्राह्य पनि भनेका छन्।)

तपसि मासे— शु. पञ्चमी, सप्तमी, दशमी **(२०८१ मङ्सिर २०, २२, २५)**।

तपस्ये मासे— शु. द्वितीया, तृतीया, पञ्चमी, सप्तमी, त्रयोदशी **(२०८१ पुस १७, १८, २०, २२, २८)**।

मधौ मासे— शु. द्वितीया, पञ्चमी, दशमी **(२०८१ माघ १८, २१, २६)**।

माधवे मासे— शु. तृतीया, सप्तमी, दशमी **(२०८१ फागुन १८, २२, २५)**।

शुक्रे मासे— शु. द्वितीया, पञ्चमी, सप्तमी, त्रयोदशी **(२०८१ चइत १८, २१, २३, २९)**।

प्रथमशुचौ मासे— शु. तृतीया, सप्तमी, त्रयोदशी **(२०८२ वैशाख १७, २१, २७)**।

द्वितीयशुचौ मासे— शु. द्वितीया, पञ्चमी, दशमी, त्रयोदशी **(२०८२ जेठ १४, १७, २२, २५)**।

नभसि मासे— शु. द्वितीया, सप्तमी, दशमी **(२०८२ असार १३, १८, २१)**।

नभस्ये मासे— शु. पञ्चमी, सप्तमी **(२०८२ साउन १३, १५)**।

इषे मासे— शु. तृतीया, पञ्चमी, त्रयोदशी **(२०८२ भदौ ९, ११, १९)**।

ऊर्जे मासे— शु. द्वितीया, तृतीया, त्रयोदशी **(२०८२ असोज ७, ८, १८)**।

सहसि मासे— शु. तृतीया, दशमी, त्रयोदशी **(२०८२ कात्तिक ७, १४, १७)**।

सहस्ये मासे— शु. द्वितीया, सप्तमी, त्रयोदशी **(२०८२ मङ्सिर ५, १०, १६)**।

२०८२ पुस ७, ९, १७; माघ ७, ८, १२, १८; फागुन ८, १०; चइत ६, ७, ११, १४, २०८३ वैशाख ६, ११, १७; जेठ ४, ७, १२, १५ गते इ.।

(१२) गृहारम्भ-गृहप्रवेशदिन (घरको जग राख्ने र घरमा प्रवेश गर्ने दिन)

पारस्करगृह्यसूत्रमा **"पुण्याहे शालां कारयेत्"** (पार.गृ.सू. ३।४।१) भनिएको छ। कर्कोपाध्याय-जयराम इत्यादि व्याख्याताहरुले **"पुण्याहग्रहणम् उदगयनाऽऽपूर्यमाणपक्षयोरनादरार्थम्" "पुनः पुण्याह-ग्रहणं तूदगयनशुक्लपक्षयोरनियमार्थम्"** इत्यादि भनि दक्षिणायनका र कृष्णपक्षका पनि पुण्याहमा गृहारम्भ हुने कुरा स्पष्ट पारेका छन्। नक्षत्रमा कसैले धनिष्ठापञ्चकभित्र पर्ने नक्षत्रलाइ छोड्नपर्ने भनेका छन्।) **गृहप्रवेश**का विषयमा जहिले घरको निर्माण पूरा हुञ्छ तहिले गृहप्रवेश गर्ने कुरा **"निष्ठितां प्रपद्यते"** (पार.गृ.सू. ३।४।१८) भनेर प्रतिपादित गरिएको हुनाले जुनसुकै मैनामा पनि पुण्याहमा गृहप्रवेश गर्न हुञ्छ। इच्छा लागे अरु वास्तुशास्त्र-ज्योतिषादिले भनेका कुराको पनि विचार गरेर गृहप्रवेश गरे पनि हुञ्छ। (वारको पनि विचार गर्नेले सोमवार, बुधवार, बिहिवार, शुक्रवार ग्राह्य मानेका छन्। कसैले शनिवारलाइ चोरभय गराउने भनि त्याज्यजस्तै मानेका छन्।)

तपसि मासे— शु. पञ्चमी, सप्तमी, एकादशी (रे.), पूर्णिमा, कृ. तृतीया, सप्तमी, दशमी **(२०८१ मङ्सिर २०, २२, २६, ३०, पुस ३, ७, १०)**।

तपस्ये मासे— शु. द्वितीया, पञ्चमी, सप्तमी, द्वादशी, कृ. पञ्चमी, दशमी **(२०८१ पुस १७, २०, २२, २७, माघ ६, ११)**।

मधौ मासे— शु. द्वितीया, पञ्चमी, दशमी कृ. द्वितीया **(२०८१ माघ १८, २१, २६, फागुन ३)**।

माधवे मासे- शु. तृतीया, सप्तमी, दशमी, एकादशी, पूर्णिमा, कृ. द्वितीया, षष्ठी, दशमी **(२०८१ फागुन १८, २२, २५, २६, चइत १, ३, ७, ११)**।

---

१. गुरुसँग विधिवत् वेद पढ्न नहुने प्रतिपदा, अष्टमी, चतुर्दशी, औँसि इत्यादि दिनलाइ शास्त्रीय भाषामा **अनध्याय** भन्दछन्। अनध्यायका दिनहरु र समयहरु कुनकुन हुन् भन्ने विषयमा **गृह्यसूत्र**, **धर्मसूत्र** र **स्मृति**हरुमा विस्तृत रूपमा बताइएको छ।

शुक्रे मासे– शु.पञ्चमी, त्रयोदशी, कृ. तृतीया, अष्टमी, दशमी **(२०८१ चइत २१, २९, २०८२ वैशाख ३, ८, १०)।**

प्रथमशुचौ मासे– शु.तृतीया, सप्तमी, एकादशी, द्वादशी, त्रयोदशी, कृ.द्वितीया, षष्ठी, अष्टमी **(२०८२ वैशाख १७, २१, २५, २६, २७, ३१, जेठ ४, ६)।**

नभसि मासे– शु. सप्तमी, अष्टमी, दशमी, द्वादशी, कृ. षष्ठी (उभ.), सप्तमी (रे.) कृ. सप्तमी **(२०८२ असार १८, १९, २१, २३, साउन १)।**

नभस्ये मासे– शु. पञ्चमी, षष्ठी, सप्तमी, अष्टमी, पूर्णिमा कृ. द्वितीया, तृतीया, पञ्चमी **(२०८२ साउन १३, १४, १५, १६, २३, २५, २६, २८)।**

इषे मासे–शु. तृतीया, पञ्चमी, षष्ठी, त्रयोदशी, पूर्णिमा **(२०८२ भदौ ९, ११, १२, १९, २१)।**

ऊर्जे मासे– शु. द्वितीया, तृतीया, षष्ठी, एकादशी, द्वादशी (ध.), त्रयोदशी (शत.), कृ. पञ्चमी, षष्ठी **(२०८२ असोज ७, ८, ११, १६, १७, १८, २५, २६)।**

सहसि मासे– शु. तृतीया, अष्टमी, दशमी (ध.), एकादशी (शत.), त्रयोदशी (उभ.) कृ. द्वितीया, तृतीया, षष्ठी, दशमी **(२०८२ कात्तिक ७, १२, १४, १५, १७, २१, २२, २५, २९)।**

सहस्ये मासे– शु. द्वितीया, षष्ठी, सप्तमी, अष्टमी (ध.), एकादशी (उभ.), द्वादशी (रे.) कृ. द्वितीया, अष्टमी, दशमी **(२०८२ मङ्सिर ५, ९, १०, ११, १४, १५, २०, २६, २८)।**

२०८२ पुस ७, ९, १०, १७, २१, २५, २६, २७; माघ ७, ८, ११, १२, २२, २४, २५; फागुन ८, १३, २२, २३, २६, ३०; चइत ६, १०,११, १४, १९, २१; २०८३ वैशाख ७, ११, १५, १६, १७, २१, २५, २८; जेठ ४, ७, १२, १३, १४, १७, २४, २७ गते इ.।

(१३) धान्यच्छेदनदिन (धान र जौको मुठि लिने दिन)

तपसि मासे– शु. पञ्चमी, पूर्णिमा, कृ. तृतीया, सप्तमी **(२०८१ मङ्सिर २०, ३०, पुस ३, ७)।**

तपस्ये मासे– शु. द्वितीया, सप्तमी, कृ.पञ्चमी **(२०८१ पुस १७, २२, माघ ६)।**

मधौ मासे– शु. दशमी, कृ.द्वितीया **(२०८१ माघ २६, फागुन ३)।**

माधवे मासे– शु. एकादशी, पूर्णिमा, कृ. द्वितीया, दशमी **(२०८१ फागुन २६, चइत१, ३, ११)।**

इषे मासे– शु. तृतीया, पञ्चमी, दशमी, द्वादशी, त्रयोदशी **(२०८२ भदौ ९, ११, १६, १८, १९)**

उर्जे मासे– शु. प्रतिपदा, तृतीया, सप्तमी, अष्टमी, दशमी, एकादशी, द्वादशी कृ. तृतीया, अष्टमी, दशमी **(२०८२ असोज ६, ८, १२, १३, १५, १६, १७, २३, २८, ३०)।**

सहसि मासे– शु. प्रतिपदा, पञ्चमी, अष्टमी, दशमी कृ. द्वितीया **(२०८२ कात्तिक ५, ९, १२, १४, २१)।**

सहस्ये मासे– शु. पञ्चमी, सप्तमी, अष्टमी, पूर्णिमा **(२०८२ मङ्सिर ८, १०, ११, १८)**

२०८२ माघ ६, ८, १५, १७, २०; फागुन ११, १५, १७; चइत ९, ११, १२, १५, १६, १९ गते इ.।

(१४) नवान्नप्राशनदिन (नयाँ धान र जौको न्वाइ खाने दिन)

मधौ मासे– शु. द्वितीया, पञ्चमी, द्वादशी **(२०८१ माघ १८, २१, २८)।**

माधवे मासे– शु. चतुर्थी, अष्टमी, दशमी **(२०८१ फागुन १९, २३, २५)।**

शुक्र-मासे– शु. अष्टमी, पूर्णिमा **(२०८१ चैत २४, ३१)।**

इषे मासे– शु. चतुर्थी, पञ्चमी, सप्तमी, नवमी, पूर्णिमा **(२०८२ भदौ १०, ११, १३, १५, २१)।**

ऊर्ज मासे– शु. द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, द्वादशी, त्रयोदशी **(२०८२ असोज ७, ८, ९, १७, १८)।**

सहसि मासे– शु. प्रतिपदा, तृतीया, नवमी, दशमी, पूर्णिमा **(२०८२ कात्तिक ५, ७, १३, १४, १९)।**

सहस्ये मासे– शु. द्वितीया, सप्तमी, अष्टमी, नवमी, त्रयोदशी **(२०८२ मङ्सिर ५, १०, ११, १२, १६)।**

२०८२ माघ ७, ८, ९, १३, १८, १९; फागुन ६, १०, १४; चइत ७, ११, १३, १४, १९ ।

(१५) वाणिज्यारम्भदिन (बेपार आरम्भ गर्ने / पसल खोल्ने दिन)

तपसि मासे– शु.पञ्चमी, षष्ठी, सप्तमी, एकादशी, द्वादशी, पूर्णिमा **(२०८१ मङ्सिर २०, २१, २२, २६, २७, ३०)।**

तपस्ये मासे– शु. द्वितीया, तृतीया, पञ्चमी, सप्तमी, द्वादशी **(२०८१ पुस १७, १८, २०, २२, २७)।**

मधौ मासे– शु. द्वितीया, पञ्चमी, दशमी **(२०८१ माघ १८, २१, २६)।**

माधवे मासे– शु.तृतीया, सप्तमी, दशमी, एकादशी, पूर्णिमा **(२०८१ फागुन १८, २२, २५, २६, चइत १)।**

शुक्रे मासे– शु. द्वितीया, पञ्चमी, त्रयोदशी **(२०८१ चइत १८, २१, २९)।**

प्रथमशुचौ मासे– शु. तृतीया, सप्तमी, द्वादशी, त्रयोदशी **(२०८२ वैशाख १७, २१, २६, २७)**।
नभसि मासे– शु. सप्तमी, अष्टमी, द्वादशी **(२०८२ असार १८, १९, २३)**।
नभस्ये मासे– शु. प्रतिपदा, षष्ठी, सप्तमी, त्रयोदशी, पूर्णिमा **(२०८२ साउन ९, १४, १९, २१, २३)**।
इषे मासे– शु. तृतीया, पञ्चमी, त्रयोदशी, पूर्णिमा **(२०८२ भदौ ९, ११, १९, २१)**।
ऊर्जे मासे–शु. प्रतिपदा, तृतीया, षष्ठी, एकादशी, द्वादशी **(२०८२ असोज ६, ८, ११, १६, १७)**।
सहसि मासे– शु. तृतीया, षष्ठी, अष्टमी, दशमी, त्रयोदशी **(२०८२ कात्तिक ७, १०, १२, १४, १७)**।
सहस्ये मासे– शु. द्वितीया, सप्तमी, अष्टमी, एकादशी, द्वादशी **(२०८२ मङ्सिर ५, १०, ११, १४, १५)**।
२०८२ पुस ५, ७, ९, १७; माघ ६, ८, ११, १२, १३; फागुन ८, १०, १३; चइत ५, ६, ७, ११, १४, १९; २०८३ वैशाख ७, ११, १६, १७; जेठ ४, ७, १३, १७ गते इ.।

(१६) कर्णवेधदिन

कर्णवेध गर्दा जन्ममास, चतुर्मास, चैत्र, पौष महिना र जन्मनक्षत्र छोड्नु पर्ने मानिएको छ। मृगशीर्ष, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, रेवती, अश्विनी नक्षत्र ग्राह्य मानिएका छन्। छोराको दाहिने र छोरिको देउरे कान पहिला छेड्ने प्रचलन छ। जन्मेको बारौं अथवा सोरौं दिनमा कर्णवेध गर्नु पनि राम्रो मानिएको छ। (वारको पनि विचार गर्नेले सोमवार, बुधवार, बिहिवार, शुक्रवार ग्राह्य भनेका छन्।)

(१७) अक्षरारम्भदिन

चूडाकर्म भएपछि अर्थात् तिन वर्षपछि अक्षरारम्भ गराउने परम्परा रहेको बुझिन्छ। आजभोलि ५ वर्षमा अक्षरारम्भ गराउने प्रसिद्धि छ। अक्षरारम्भ (लिपिशिक्षारम्भ) गर्नका निम्ति शुक्लपक्षका द्वितीया, तृतीया, पञ्चमी, षष्ठी, दशमी, एकादशी, द्वादशी तिथि ग्राह्य मानिएका छन्। नक्षत्रमा अश्लेषा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, श्रवण, रेवती, अश्विनी नक्षत्र ग्राह्य मानिएका छन्। (वारको पनि विचार गर्नेले सउँवार, बुधवार र बिहिवार ग्राह्य भनेका छन्।)

(१८) विविध साइत

व्याकरणारम्भ– प्रतिपदा-अष्टमी-त्रयोदशी-चतुर्दशी-औँसि इ तिथिबाहेकका तिथि तथा रो., मृग., पुन., पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाति, विशा., अश्वि. नक्षत्र (र बुध, बिहि, शुक्र वार) ग्राह्य छन्।

गणितारम्भ– रोहिणी, मृग, पुष्य, हस्त, अनुराधा, शत, पूभ, रेवती (र बुध, बिहि, शुक्रवार) ग्राह्य छन्।

कन्यावरण– कृत्तिका, रोहिणी, मृगशीर्ष, मघा, पूफ, उफ, हस्त, स्वाति, अनुराधा, मूल, पूषा, उषा, श्रवण, धनिष्ठा, पूभ, उभ, रेवती नक्षत्र (र शुभ वारहरु) ग्राह्य छन्।

क्षौरकर्म (कपाल-दारि बनाउने)– मृगशीर्ष, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाति, ज्येष्ठा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती, अश्विनी (र सोम, बुध, बिहि, शुक्र वार) ग्राह्य छन्।

पशूनां गृहप्रवेशः (पशु सार्ने)– चतुर्थी-अष्टमी-नवमी-चतुर्दशी-अमावास्या तिथि छोडेर रोहिणी, उफ, उषा, श्रवण, उभ इ नक्षत्र छोडेर (मङ्गलवार छोडेर) अन्य तिथि-नक्षत्र-(वार) पशु सार्न ग्राह्य छन्।

पशु किनबेच– शु.प्रतिपदा र चतुर्थी-अष्टमी-नवमी-द्वादशी-चतुर्दशी तिथि बाहेकका तिथि (कृ.प्रतिपदा ग्राह्य छ), पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, विशाखा, ज्येष्ठा, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती, अश्विनी नक्षत्र (र बिहि, शुक्र वार) ग्राह्य छन्।

चुल्लीनिर्माण (चुलो बनाउने)– रोहिणी, आर्द्रा, पुष्य, पूफ, उफ, पूषा, उषा, पूभ, उभ, अश्विनी नक्षत्र ग्राह्य छन्।

द्रव्यप्रयोग (ऋण लेन-देन)– मृगशीर्ष, पुनर्वसु, पुष्य, चित्रा, स्वाति, विशाखा, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती, अश्विनी नक्षत्र ग्राह्य छन्। (वारको पनि विचार गर्नेले बुधवार ऋण नदिने र आइतवार-मङ्गलवार नलिने गर्नु भञ्छन्)।

गृहच्छादन (घर छाउने)– द्वितीया, तृतीया, पञ्चमी, दशमी, एकादशी, त्रयोदशी तिथि तथा रोहिणी, मृगशीर्ष, पुनर्वसु, पुष्य, उफ, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, उषा, अश्विनी नक्षत्र (र आइत-मङ्गलवारबाहेकका अरु वार) ग्राह्य छन्।

औषध-सेवन– मृगशीर्ष, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, मूल, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती, अश्विनी नक्षत्र (र आइत, सोम, बुध, बृहस्पति, शुक्र वार) ग्राह्य छन्।

हल्सारो– चतुर्थी-षष्ठी-नवमी-चतुर्दशी-बाहेकका तिथि तथा रोहिणी, मृगशीर्ष, पुनर्वसु, पुष्य, उफ, हस्त, चित्रा, स्वाति, विशाखा, अनुराधा, मूल, उषा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, उभ, रेवती, अश्विनी नक्षत्र (र आइत-शनिवारबाहेकका अरु वार) ग्राह्य छन्।

बीजवपन (बिउ छर्ने)– प्रतिपदा-द्वितीया-चतुर्थी-षष्ठी-नवमी-चतुर्दशीबाहेकका तिथि तथा रोहिणी, मृगशीर्ष, पुनर्वसु, पुष्य, मघा, उफ, हस्त, चित्रा, स्वाति, विशाखा, अनुराधा, मूल, उषा, धनिष्ठा, उभ, रेवती, अश्विनी नक्षत्र (र आइत, सोम, बुध, बिहि, शुक्र वार) ग्राह्य छन्। भूमिरज, भूमिशयन परेका दिन छोड्न पर्ने मानिञ्छन्।

रोपाइँ—रोहिणी, उफ, विशाखा, मूल, शत., पूभ नक्षत्र (र मङ्ल-शनिवारबाहेकका अरु वार) ग्राह्य छन्।

दाइँ— रोहिणी, मघा, पूफ, उफ, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, शतभिषा, रेवती नक्षत्र ग्राह्य छन्।

भकारि भर्ने— रोहिणी, मृगशीर्ष, पुनर्वसु, पुष्य, उफ, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, पूषा, उषा, श्रवण, धनिष्ठा, शत., उभ, रेवती, अश्विनी नक्षत्र (र आइत, सोम, बिहि, शुक्र वार) ग्राह्य छन्।

भकारिबाट अन्न झिक्ने— रोहिणी, मृगशीर्ष, पुष्य, उफ, हस्त, चित्रा, विशाखा, अनुराधा, मूल, उषा, उभ, रेवती, अश्विनी नक्षत्र (र शुभ वार) ग्राह्य छन्।

काठको खलियो लाउने— रोहिणी, आर्द्रा, मघा, पूफ, हस्त, स्वाति, विशाखा, अनुराधा, मूल, पूषा, श्रवण नक्षत्र (र आइत, सोम, मङ्गल, बुध, शुक्र वार) ग्राह्य छन्।

पुराणश्रवण (१८ पुराण सुन्ने)— शुभ तिथि तथा रोहिणी, मृगशीर्ष, पुष्य, हस्त, अनुराधा, मूल, श्रवण, अश्विनी नक्षत्र (र शुभवार) ग्राह्य छन्। बृहस्पति (गुरु) रहेका नक्षत्रबाट ४, ८, ९, १४ र २७ औँ स्थानमा रहेको नक्षत्र शुभ मानिन्छ भने २० र २४ औँ स्थानमा रहेको नक्षत्र अग्राह्य मानिन्छ।

होम जुर्ने (अग्नि जुर्ने) दिनहरु

२०८१ धनुर्मास (पुस) १, ३, ५, ७, ९, ११, १३, १४, १७, १९, २१, २३, २५, २७, २८
मकरमास (माघ) १, ३, ५, ७, ९, ११, १४, १६, १७, १९, २१, २३, २५, २८, ३०
कुम्भभास (फागुन) २, ४, ६, ८, १०, ११, १३, १५, १६, १९, २१, २३, २५, २७, २९
मीनमास (चइत) २, ३, ५, ७, ९, ११, १३, १५, १७, १९, २१, २३, २५, २७, २९
२०८२ मेषमास (वैशाख) १, ४, ५, ६, ८, ११, १२, १३, १५, १७, १९, २२, २४, २६, २८, ३०
वृषमास (जेठ) १, ३, ४, ६, ८, १०, १४, १६, १८, २०, २२, २४, २५, २७, २९, ३१
मिथुनमास (असार) २, ४, ६, ९, ११, १२, १४, १६, १८, २०, २३, २५, २७, २९, ३१
कर्कटमास (साउन) १, ३, ४, ६, ८, ९, १२, १४, १६, १८, २०, २२, २४, २५, २७, २९, ३१
सिंहमास (भदौ) २, ४, ८, १०, १२, १४, १५, १७, १९, २१
कन्यामास (असोज) ६, ८, १०,१३, १५, १७, १९, २१, २३, २५, २६, २८, ३०
तुलामास (कात्तिक) १, ३, ६, ८, ९, ११, १३, १५, १७, १९, २१, २४, २६, २८, ३०
वृश्चिकमास (मङ्सिर) २, ३, ४, ६, ८, १०, १२, १५, १७, १९, २१, २३, २५, २७, २८
धनुर्मास (पुस) १, ३, ६, ८, १०, १२, १३, १५, १७, १९, २१, २३, २५, २८, ३०
मकरमास (माघ) २, ४, ५, ७, ९, १२, १४, १६, १८, २०, २२, २४, २५, २७, २९
कुम्भभास (फागुन) २, ४, ७, ९, १०, १२, १४, १६, १८, २०, २२, २५, २७, २९
मीनमास (चइत) १, ३, ४, ७, ९, ११, १३, १६, १८, २०, २२, २४, २६, २८, २९
२०८३ मेषमास (वैशाख) १, ३, ६, ८, १०, १२, १३, १५, १७, १९, २१, २३, २५, २८, ३०
वृषमास (जेठ) १, ३, ५, ७, ९, ११, १३, १५, १८, २०, २२, २४, २६, २८, ३०, ३१ इ.।

रुद्री जुर्ने दिनहरु

२०८१ धनुर्मास (पुस) १, ३, ५, ७, ९, ११, १३, १४, १७, १९, २१, २३, २५, २७, २८
मकरमास (माघ) १, ३, ५, ७, ९, ११, १४, १६, १७, १९, २१, २३, २५, २८, ३०
कुम्भभास (फागुन) २, ४, ६, ८, १०, ११, १३, १५, १६, १९, २१, २३, २५, २७, २९
मीनमास (चइत) २, ३, ५, ७, ९, ११, १३, १५, १७, १९, २१, २३, २५, २७, २९
२०८२ मेषमास (वैशाख) १, ४, ५, ६, ८, ११, १२, १३, १४, १६, १९, २०, २१, २३, २६, २७, २८, ३०
वृषमास (जेठ) २, ३, ४, ६, ९, १०, ११, १२, १४, १७, १८, १९, २१, २४, २५, २६, २८, ३१
मिथुनमास (असार) १, २, ४, ७, ८, ९, ११, १३, १६, १७, १८, २०, २३, २४, २५, २७, ३०, ३१, ३२
कर्कटमास (साउन) २, ५, ६, ७, ८, १०, १३, १४, १५, १७, २०, २१, २२, २४, २७, २८, २९, ३१
सिंहमास (भदौ) ३, ४, ५, ६, ८, ११, १२, १३, १५, १८, १९, २०
कन्यामास (असोज) ७, १०, ११, १२, १४, १७, १८, १९, २१, २४, २५, २६, २८, ३१,
तुलामास (कात्तिक) १, २, ४, ६, ९, १०, ११, १३, १६, १७, १८, २०, २२, २४, २५, २७, २९
वृश्चिकमास (मङ्सिर) १, ३, ५, ७, १०, १२, १४, १६, १८, २०, २३, २४, २५, २७, ३०
धनुर्मास (पुस) १, २, ४, ६, ९, १०, ११, १३, १६, १७, १८, २०, २३, २४, २५, २७, ३०
मकरमास (माघ) १, २, ४, ६, ९, १०, ११, १३, १६, १७, १८, २०, २३, २४, २५, २७
कुम्भभास (फागुन) १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १४, १७, १८, १९, २१, २४, २५, २६, २८
मीनमास (चइत) १, २, ३, ४, ६, ९, १०, ११, १३, १६, १७, १८, २०, २३, २४, २५, २७, ३०
२०८३ मेषमास (वैशाख) १, २, ४, ६, ९, १०, ११, १३, १६, १७, १८, २०, २३, २४, २५, २७, ३०, ३१
वृषमास (जेठ) १, ३, ५, ८, ९, १०, १२, १५, १६, १७, १९, २२, २३, २४, २६, २९, ३०, ३१ इ.।

विशेष— वैदिक परम्परामा दैव कर्मका निम्ति पूर्वाह्णलाइ उत्तम मानिएको छ। विविध कर्मका निम्ति आथर्वण ज्योतिषले बताएका मुहूर्तअनुसार समयको निर्धारण गर्नु उचित छ। ति मुहूर्त र ति मुहूर्तमा गर्ने कर्मको विवरण एसै वैदिक-तिथिपत्रमा पछाडि दिइएका छन् (पृ.८०)।

(१९) काष्ठमण्डपनगरस्य प्रथमलग्न-सारणी (काठमाण्डु २७° ४२' उत्तर)

अंशाः	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेषः १	२ ५१	२ ५८	३ ६	३ १४	३ २१	३ २८	३ ३६	३ ४४	३ ५१	३ ५९	४ ७	४ १५	४ २३	४ ३०	४ ३८	४ ४७	४ ५४	५ २	५ ११	५ १९	५ २७	५ ३५	५ ४४	५ ५२	६ १	६ ९	६ १७	६ २७	६ ३४	६ ४३
वृषः २	६ ५२	७ १	७ ९	७ १८	७ २८	७ ३६	७ ४५	७ ५६	८ ४	८ १३	८ २३	८ ३२	८ ४१	८ ५२	९ १	९ १०	९ २०	९ ३०	९ ४०	९ ५०	१० १	१० १०	१० २०	१० ३१	१० ४०	१० ५१	११ १	११ ११	११ २२	११ ३३
मिथुनम् ३	११ ४३	११ ५३	१२ ४	१२ १६	१२ २६	१२ ३७	१२ ४८	१२ ५८	१३ ९	१३ २०	१३ ३२	१३ ४३	१३ ५४	१४ ५	१४ १६	१४ २८	१४ ३९	१४ ५१	१५ २	१५ १३	१५ २५	१५ ३६	१५ ४७	१६ ०	१६ ११	१६ २२	१६ ३४	१६ ४६	१६ ५७	१७ ९
कर्कटः ४	१७ २०	१७ ३२	१७ ४४	१७ ५६	१८ ७	१८ १९	१८ ३१	१८ ४२	१८ ५४	१९ ६	१९ १७	१९ २९	१९ ४१	१९ ५२	२० ४	२० १६	२० २८	२० ४०	२० ५१	२१ ३	२१ १४	२१ २६	२१ ३८	२१ ४९	२२ १	२२ १३	२२ २४	२२ ३६	२२ ४८	२२ ५९
सिंहः ५	२३ ११	२३ २२	२३ ३४	२३ ४५	२३ ५७	२४ ९	२४ २०	२४ ३२	२४ ४३	२४ ५४	२५ ६	२५ १७	२५ २९	२५ ४०	२५ ५२	२६ २	२६ १४	२६ २६	२६ ३७	२६ ४८	२६ ५९	२७ ११	२७ २२	२७ ३४	२७ ४५	२७ ५६	२८ ८	२८ १९	२८ ३०	२८ ४१
कन्या ६	२८ ५३	२९ ४	२९ १५	२९ २७	२९ ३८	२९ ४९	३० ०	३० ११	३० २२	३० ३४	३० ४५	३० ५७	३१ ८	३१ १९	३१ ३०	३१ ४१	३१ ५३	३२ ४	३२ १५	३२ २७	३२ ३८	३२ ५०	३३ १	३३ १२	३३ २३	३३ ३५	३३ ४६	३३ ५८	३४ ९	३४ २१
तुला ७	३४ ३२	३४ ४३	३४ ५५	३५ ६	३५ १७	३५ २९	३५ ४१	३५ ५२	३६ ३	३६ १५	३६ २७	३६ ३८	३६ ५०	३७ १	३७ १२	३७ २४	३७ ३६	३७ ४८	३७ ५९	३८ १०	३८ २३	३८ ३४	३८ ४६	३८ ५७	३९ ९	३९ २१	३९ ३२	३९ ४४	३९ ५६	४० ७
वृश्चिकः ८	४० १९	४० ३१	४० ४३	४० ५४	४१ ६	४१ १८	४१ २९	४१ ४१	४१ ५२	४२ ४	४२ १६	४२ २८	४२ ४०	४२ ५१	४३ २	४३ १४	४३ २५	४३ ३७	४३ ४९	४४ ०	४४ ११	४४ २३	४४ ३५	४४ ४७	४४ ५७	४५ ९	४५ २०	४५ ३१	४५ ४३	४५ ५४
धनुः ९	४६ ५	४६ १६	४६ २७	४६ ३८	४६ ४९	४७ ०	४७ ११	४७ २२	४७ ३२	४७ ४४	४७ ५४	४८ ५	४८ १५	४८ २५	४८ ३७	४८ ४७	४८ ५७	४९ ८	४९ १७	४९ २८	४९ ३८	४९ ४८	४९ ५८	५० ८	५० १८	५० २८	५० ३८	५० ४७	५० ५७	५१ ७
मकरः १०	५१ १५	५१ २५	५१ ३५	५१ ४४	५१ ५४	५२ ३	५२ ११	५२ २०	५२ ३०	५२ ३८	५२ ४८	५२ ५७	५३ ५	५३ १३	५३ २३	५३ ३२	५३ ४०	५३ ४८	५३ ५७	५४ ६	५४ १४	५४ २२	५४ ३०	५४ ३८	५४ ४६	५४ ५४	५५ २	५५ ११	५५ १९	५५ २६
कुम्भः ११	५५ ३४	५५ ४२	५५ ५०	५५ ५७	५६ ५	५६ १२	५६ २०	५६ २८	५६ ३६	५६ ४४	५६ ५१	५६ ५८	५७ ६	५७ १२	५७ २०	५७ २७	५७ ३५	५७ ४२	५७ ५०	५७ ५७	५८ ४	५८ ११	५८ १८	५८ २६	५८ ३३	५८ ४०	५८ ४८	५८ ५५	५९ २	५९ ९
मीनः १२	५९ १५	५९ २२	५९ ३०	५९ ३७	५९ ४४	५९ ५२	५९ ५९	० ६	० १३	० १९	० २६	० ३४	० ४०	० ४८	० ५५	१ २	१ ९	१ १७	१ २३	१ ३१	१ ३८	१ ४५	१ ५२	१ ५९	२ ७	२ १४	२ २१	२ २९	२ ३७	२ ४४
अंशाः	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९

(२०) लग्न-षड्वर्गशुद्धि-विचार

एकविंशे तु मेषस्य वृषस्य तु चतुर्दशे।
मिथुनस्य सप्तदशे सप्तमे कर्कटस्य च॥

अष्टादशेऽंशे सिंहस्य कन्यायाः सप्तमे तथा।
चतुर्विंशे तुलायाश्च द्वादशे वृश्चिकस्य च॥

धनुषः स्यात् सप्तदशे मकरस्य चतुर्दशे।
षड्विंशेऽंशे तु कुम्भस्य शुद्धिर्मीनस्य सप्तमे॥

अर्थ– मेषको एक्काइसौँ, वृषको चौधौँ, मिथुनको सत्रौँ, कर्कटको सातौँ, सिंहको अठारौँ, कन्याको सातौँ, तुलाको चौबिसौँ, वृश्चिकको बारौँ, धनुको सत्रौँ, मकरको चौधौँ, कुम्भको छब्बिसौँ र मीनको सातौँ अंशमा षड्वर्गशुद्धि हुञ्छ।

[लग्नको विचार गर्न चाहानेहरुलाइ सुविधा पुऱ्याउन याँहाँ प्रथम लग्नसारणी दिय्येको हो। मूल वैदिक परम्परामा लग्नविचारको आवश्यकता पर्दैन। वैदिक मुहूर्तहरुको विचार गरेर कर्म गर्न उचित हुञ्छ। वैदिक मुहूर्तहरुको विवरण एसै तिथिपत्रमा पछाडि दिइएको छ (पृ.८०)]

(२१) सार्वत्रिक दशमलग्न-सारणी

अंशाः	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेषः	३	३	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८
१	४७	५६	६	१५	२५	३४	४४	५३	४	१३	२३	३२	४२	५१	१	११	२१	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३१
वृषः	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३
२	४१	५२	२	१२	२३	३३	४३	५४	४	१५	२५	३६	४७	५७	८	१८	२९	३९	५०	१	११	२२	३२	४४	५५	६	१७	२७	३८	४९
मिथुनम्	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९
३	०	११	२२	३३	४४	५५	५	१७	२७	३८	४८	०	११	२२	३३	४३	५४	५	१६	२७	३७	४८	५९	९	२०	३१	४२	५२	३	१३
कर्कटः	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४
४	२५	३५	४६	५६	६	१७	२७	३७	४८	५८	८	१९	२९	३९	४९	५९	८	१९	२९	३९	५०	०	९	१९	२९	३९	४९	५९	८	१८
सिंहः	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२९
५	२८	३८	४७	५७	६	१६	२६	३५	४५	५४	४	१३	२३	३२	४१	५०	५९	९	१९	२८	३७	४७	५६	५	१४	२३	३३	४२	५१	०
कन्या	२९	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३
६	१०	१९	२८	३८	४६	५५	४	१४	२३	३२	४१	५०	०	९	१८	२७	३६	४६	५५	४	१३	२३	३२	४१	५१	०	९	१९	२८	३७
तुला	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८
७	४७	५६	६	१६	२५	३४	४४	५३	३	१३	२२	३२	४१	५१	१	११	२१	३१	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	१	११	२१	३१
वृश्चिकः	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३
८	४२	५२	२	१२	२३	३३	४३	५४	४	१५	२५	३६	४६	५७	७	१८	२८	३९	५०	१	११	२२	३३	४४	५५	५	१६	२७	३८	४९
धनुः	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९
९	०	११	२२	३३	४४	५५	५	१६	२७	३८	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१६	२६	३७	४८	५९	९	२०	३१	४२	५२	३	१३
मकरः	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४
१०	२५	३५	४५	५६	६	१६	२७	३७	४८	५८	९	१९	२९	३९	५०	५९	९	१९	३०	४०	५०	०	९	१९	२९	३९	४९	५९	८	१८
कुम्भः	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९
११	२८	३८	४७	५७	७	१७	२६	३६	४५	५५	४	१३	२२	३२	४२	५१	०	९	१९	२८	३७	४६	५६	५	१४	२४	३३	४२	५१	०
मीनः	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३
१२	९	१९	२८	३८	४७	५६	५	१४	२३	३२	४१	५०	०	९	१८	२७	३६	४६	५५	५	१४	२३	३२	४१	५१	०	९	१९	२८	३७
अंशाः	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९

वैदिक पात्रोको अध्ययन गर्न र जिज्ञासा राख्न अनुरोध

वेदाङ्ग-ज्योतिषमा प्रतिपादित वैदिक ज्योतिषका कालगणना-सिद्धान्तको पुनर्जागरण गरेर तेसका आधारमा प्रकाशित गरिँदै आएको एस वैदिक तिथिपत्र(पात्रो)को अध्ययन गर्न र आफुलाइ लागेका विभिन्न प्रकारका जिज्ञासाहरु राखि सुसूचित हुन वैदिक सनातन-वर्णाश्रम-धर्म-सँस्कृति-प्रेमी सबै महानुभावहरुलाइ अनुरोध छ।

स्वाद्ध्यायशाला, काठमाण्डु, नेपाल।

svadhyaya@hotmail.com

९८४१९६८२६२

ग्रहमैत्रीचक्रम्

ग्रह	रवि	सोम	मङ्गल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
मित्र	सो. मं. गु.	र. बु.	र. सो. गु.	र. शु.	र. सो. मं.	बु. श.	बु. शु.
सम	बु.	मं. गु. शु. श.	शु. श.	मं. श. गु.	श.	मं. गु.	गु.
शत्रु	शु. श.		बु.	सो.	बु. शु.	र. सो.	र. सो.

(२२) वर-वधू-योग-गुणबोधक-सारणी

वरको राशि		मेष			वृष			मिथुन			कर्कट			सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक			धनु				मकर				कुम्भ			मीन		
वधूको राशि	नक्षत्र	अश्विनी	भरणी	कृ.१	कृ.३	रोहिणी	मृ.२	मृ.२	आर्द्रा	पुन.३	पुन.१	तिष्य	अश्लेषा	मघा	पूफ.	उफ.१	उफ.३	हस्त	चित्रा २	चित्रा २	स्वाति	विशा.३	विशा.१	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूषा.	पूषा.३	उषा.१	उषा.३	श्रव.१	श्रव.२	धनि.२	धनि.२	शत.	पूभा.३	पूभा.१	उभा.	रेवती
मेष	अश्विनी	२८	३३	२८॥	१८॥	२३॥	२२॥	२६	१७	१९	२४॥	३२॥	२९	२३	२७	१७॥	१०॥	१०॥	१३	२२॥	२८	२२॥	१९॥	२६॥	१५	१३	२५	२६	२३॥	२६	२७	२६	२१	२०	१५	१६	१५॥	२५॥	२७
	भरणी	३४	२८	२९	१९	२३॥	१५॥	१९	२६	२६॥	३२॥	२४॥	२६॥	२२	२०	२६	२१॥	२०	४	१४	२९॥	२२	१९॥	१७॥	१९॥	२०	१८	१९	२७	२८॥	२७	२६	११	१०	२०	२४	२३॥	१८॥	२७॥
	कृत्ति.१	२७॥	२९	२८	१८	११	१७	२०	२०	२७	२६॥	२७॥	२४॥	१६॥	२०	२२	१५॥	१५॥	१८	२७॥	१५॥	१९॥	१६॥	२०॥	२६॥	२५	१८	१९	१२॥	१५॥	१२॥	११	२६	२५	२६॥	१८॥	१८॥	२०॥	१२॥
वृष	कृत्ति.३	१९॥	२०	१९	२८	२१	२७॥	१८	१७॥	१८॥	२३	२४	२१	१९	२२	२४	२१	२१	२३॥	२२॥	१०॥	१४॥	२१॥	२५॥	३१॥	२२	१४॥	१४॥	८	१४	११	१०	२४॥	२९॥	३१॥	२३॥	२१	२३	१५
	रोहिणी	२३॥	२४	१२	२१	२८	३६	२७	२३॥	२३	२८	२९	१४	१२॥	२६॥	२८	२६	२६	२०	१९	१५॥	९॥	१६॥	३०॥	२४॥	१४	१९॥	२१	१२॥	१७	१९	१७॥	२१	२६	२४॥	३०॥	२८	२७	२०
	मृ.२	२३॥	१५॥	१९॥	२८॥	३६	२८	१९	२४	२३	२८	२१	२३	२१॥	१७॥	२५॥	२३॥	२६	१३	१२	२५	१९॥	२५॥	२२॥	२५॥	१५	१०॥	१२	१८	२२॥	२७	२५॥	१४	१९	२७	२९॥	२७	१८	२८
मिथुन	मृ.२	२७	१९	२२॥	२०	२७	२०॥	२८	३३	३२॥	२०	१३	१५	२४	२०	२८॥	३१॥	३४	२१	१४	२७	२०॥	१५	१३	१५	२३	१९	१७॥	२५	२०	२४॥	२६	११॥	१३	२१	२३॥	२५॥	१७	२६॥
	आर्द्रा	१८॥	२७	२१॥	१९	२४	२६॥	३४	२८	२५	१२॥	२०॥	१३	२३	२९	२२	२४॥	२४॥	२८	२३	२७	२१	१५॥	१९	५	१६	२८	२७	२८	२३॥	२३॥	२४॥	१८॥	१९	१२	१८	२०	२६॥	२६॥
	पुन.३	२०	२६	२३	२०॥	२३	२४	३२॥	२४	२८	१५॥	२२॥	१७	२३	२७	२१॥	२३॥	२५॥	२७	२०॥	२८	२२	१६॥	२२॥	८	१४	२८	२६	२७	२२॥	२३॥	२४॥	१८	१९॥	१४	१७	१९	२८	२७॥
कर्कट	पुन.१	२२॥	२९॥	२६॥	२३	२७	२७	१९	१०॥	१४॥	२८	३५	२९॥	१७॥	२१॥	१५॥	१८	१९	२१	२०॥	२८	२२	२०	२६	११॥	८	२२	२२॥	२१॥	२६	२७	२७	२२	१३॥	८	११	१७	२६	२५॥
	तिष्य	३१॥	२२॥	२७॥	२४	२७	२०	१२	१८॥	२१॥	३५	२८	३०	१८॥	१५॥	२४॥	२६	२७	१२	११॥	२६॥	२१	२०	१९	२२	१७	१२	१२॥	२२	२७	२५	२५	१३	४॥	१४॥	१८	२६	१८	२७
	अश्लेषा	२६	२४॥	२३॥	२०	१३	२१	१३	१२	१५	२८॥	२९	२८	१६	१६॥	१८॥	२१	२१	२६	२५॥	१२॥	१७॥	१५॥	२०	२६	२२॥	१६	१७॥	८॥	१३	१३	१३	२७	१८॥	१९॥	१२॥	१८॥	२१	१३
सिंह	मघा	२१	२१	१७॥	१८॥	११॥	१९॥	२२	२२	२१	१७॥	१९॥	१७	२८	३०	२७॥	१६॥	१६॥	२२	२५	११॥	१७	२४॥	२६॥	३४	२५	१९॥	२१	१०	५॥	५॥	५	१९	२५	२६	१८॥	१८॥	१९॥	१३
	पूर्वफ.	२७	१९	२१	२२	२५॥	१७॥	२०	२८	२७	२३॥	१७॥	१७॥	३०	२८	३५	२४	२२॥	८	११	२५॥	१९	२६॥	२४॥	२६॥	२०	१७॥	१९	२५॥	२१	१९॥	१८॥	५॥	१०॥	१९॥	२४॥	२४॥	१७॥	२५॥
	उफ.१	१८॥	२७	२२	२३	२७	२५॥	२८॥	२१	२१॥	१७॥	२६॥	१९॥	२६॥	३५	२८	१७॥	१६॥	१४	१७	२६	१७	२४॥	३३॥	१९॥	१०	२५॥	२७	२६॥	२२	२१	२०	१२॥	१८	१२	१६	१६॥	२७॥	२५॥
कन्या	उफ.३	१२॥	२२॥	१६॥	२१	२६	२४॥	३१॥	२३॥	२४॥	२०	२८	२२॥	१७॥	२५	१८॥	२८	२७	२४॥	१६॥	२५॥	१६॥	२०	२८	१५	१४	२९॥	२८	३०॥	२५॥	२५	२६	१६	१६॥	१०॥	१४॥	१७॥	२८॥	२७॥
	हस्त	११	२१	१७	२२	२५॥	२६	३३	२२॥	२४॥	२०	२८	२३	१८॥	२२॥	१७	२६	२८	२८	२०	२६॥	१८॥	२१	२८	१५	१५	२७	२६	२८॥	२४	२५	२६	२०॥	२१	१०॥	१५॥	१८॥	२६॥	२७॥
	चित्रा २	१३	५॥	१९	२३॥	२०	१२	१९	२७	२५॥	२१॥	१२	२७	२३	९	१५	२४॥	२७	२८	२०	१९	२६॥	२९	१३	२७	२८	१४	१४	२२	१७	१९	१९	१७॥	१८	२४	१८॥	२१॥	१०॥	२०॥

वरको राशि / वधूको राशि	नक्षत्र	मेष			वृष			मिथुन			कर्कट			सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक			धनु				मकर				कुम्भ			मीन		
		अश्विनी	भरणी	कृ.१	कृ.३	रोहिणी	मृ.२	मृ.२	आर्द्रा	पुन.३	पुन.१	पुष्य	अश्लेषा	मघा	पूफ.	उफ.१	उफ.३	हस्त	चित्रा२	चित्रा२	स्वाति	विशा.३	विशा.१	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूषा.॥	पूषा.३॥	उषा.१	उषा.३	श्रव.१॥	श्रव.२॥	धनि.२	धनि.२	शत.	पूभ.३	पूभ.१	उभ.	रेवती
तुला	चित्रा २	२२॥	१५	२८॥	२३॥	२०	१२	१३	२३	२०	१९॥	११॥	२६॥	२६	१२	१८	२७॥	२०	२१	२८	२७	३४॥	२४॥	८	२२॥	२८	१४	१३	२२	२५॥	२७॥	२७।	२५॥	२०	२६	२०	१४	३॥	१२॥
	स्वाति	२९	३०॥	१७	१२॥	१५॥	२६	२७	२६	२८	२९	२७॥	१३॥	१३॥	२५॥	२६	२५॥	२७॥	२१	२८	२८	२०	१०	२३॥	१८॥	२३	२७	२६	१९	२२	२३॥	२४॥	२८॥	२३	२२	२७	२१	१९॥	१२॥
	विशा.३	२२॥	२३	२०॥	१५॥	११॥	१८	२१	२१	२१	२२	२१	१७॥	१८	२०	१८	१७॥	१८॥	२७॥	३४॥	१९	२८	१८	१८	२२॥	२८	२२	२१	१४	१७॥	१७॥	१७॥	३२	२६॥	२६	२२	१६	१३	५॥
वृश्चिक	विशा.१	१७॥	१८॥	१५॥	२०॥	१५॥	२३॥	१३॥	१४॥	१४॥	१९	१९	१५॥	२४॥	२५॥	२३॥	१८	१९	२८	२३॥	९	१७	२८	२८	३२॥	२३॥	१७॥	१७॥	९॥	१३	१२	१२	२७	२७	२६॥	२२॥	२१	१९	११॥
	अनुराधा	२५॥	१६॥	२०॥	२५॥	२८॥	२१॥	११	१६	२१॥	२६	१९	२१	२६॥	२२॥	३१॥	२६	२७	१२	७॥	२२॥	१७	२८	२८	३१	१६॥	१४॥	१५॥	२२॥	२६	२७	२६	१४	१३	२२	२६॥	२६	१९	२७
	ज्येष्ठा	१३	१८॥	२५॥	३०॥	२३॥	२३॥	१३	३	५	१०॥	२१	२६	३३	२५॥	१८॥	१३	१३	२५	२०॥	१६॥	२०॥	३१॥	३०	२८	१५	१७॥	१८॥	१७॥	२१	२१	२०	२७	२६	१९	१२	११॥	२२	२१
धनु	मूल	१३	२०	२५॥	१९	१३	१३	२१	१५	१२	८	१७॥	२३॥	२५	१९	१०	१४	१३	२७	२७	२१	२७	२४॥	१६॥	१६	२८	२८	२७	२५॥	१५॥	१५॥	१६॥	२१	२९॥	२१॥	१५॥	१७	२५	२६॥
	पूषा.॥	२६	१८॥	१८	१२॥	१८॥	१०॥	१९	२७	२७	२३	१३	१७	१९॥	१७॥	२५॥	२८॥	२७	१३	१३	२७	२१	१८॥	१६॥	१८॥	२८	२८	२७	३४	२३	२३॥	२४॥	८	१६॥	२३॥	३०॥	३२	२३	३२
	पूषा.३॥	२७	२०	१९	१३॥	२०	१२	१७॥	२६	२६	२४॥	१४॥	१८॥	२१	१९	२७	२८॥	२६	१३	१२	२६	२०	१८॥	१७॥	१९॥	२७	२७	२८	३४	२४	२४॥	२३॥	९॥	१५	२२॥	२९	३३॥	२४॥	३३॥
	उषा.१	२४॥	२७	१२॥	७	११॥	१८	२५	२७	२७	२३॥	२४	९॥	१०	२५॥	२६॥	२९॥	२८॥	२१	२१	१९	१३	१०॥	२४॥	१८॥	२६॥	३६	३४॥	२८	१८	१६॥	१८	१५॥	२३॥	२३॥	२९॥	३१॥	३२	२३॥
मकर	उषा.३	२८	२९॥	१६॥	१४	१७	२३॥	२०	२४॥	२२॥	२८	२९	१४	६॥	२२	२३	२५॥	२५	१७॥	२४॥	२३॥	१६॥	१४	२८	२२	१६	२५॥	२७	१७॥	२८	२८	२६॥	२६॥	१७॥	१७॥	२३॥	३०॥	३१॥	२२॥
	श्रव.१॥	२८	२८	१४॥	१२	१८	२७	२३॥	२१॥	२२॥	२८	२६	१५	७॥	१९॥	२१	२४	२५	२०	२७	२२॥	१७॥	१४	२८	२३	१७॥	२३॥	२४॥	१६	२५	२८	२८	३०	२०॥	१८॥	२३	३०॥	२९॥	२३॥
	श्रव.२॥	२७	२६॥	१३	११	१६॥	२५॥	२५	२२॥	२३॥	२८	२६	१५	७	१८॥	२०	२५	२६	२०	२७	२३॥	१७॥	१४	२७	२२	१८॥	२४॥	२३॥	१६	२४	२७	२८	२९	२२	१९॥	२४॥	२९॥	२९॥	२२॥
	धनि.२	२१	१२	२७	२४॥	२१	१३	९॥	१७॥	१६	२२	१३	२८	२०	५॥	१३॥	१६	१९॥	१७॥	२५॥	२६॥	३०	२८	१४	२८	२१	८	९॥	१६	२६॥	२८	२८	२८	१८॥	२३॥	१९	२६॥	१५॥	२२॥
कुम्भ	धनि.२	२०	११	२६	३०॥	२७	१९	१२	१९	१८॥	१३॥	४॥	१९॥	२६	११॥	१९	१७॥	२१	१९	२०	२२	२६॥	२८	१३	२७	३०॥	१६॥	१५॥	२४॥	१८॥	२०	२१	१९॥	२८	३३	२८॥	१८	७	१४
	शत.	१५	२१	२८	३२॥	२५॥	२७	२०	१२	१३	८	१४॥	२०॥	२७	२१	१३	११॥	९॥	२५	२६	२०	२६	२७॥	२२	२०	२२॥	२४॥	२३	२४॥	१८॥	१८॥	१९	२४॥	३३	२८	२९	८॥	१७	१६
	पूभ.३	१७॥	२५	२०	२४॥	३१॥	३१॥	२४॥	१८	१८	१३	२०	१३॥	१९॥	२५॥	१७	१५॥	१७॥	१९॥	२०॥	२८	२२	२३॥	२८	१३	१६॥	३०॥	२९॥	३०॥	२४॥	२४॥	२४	२०	२७	१९	२८	१७॥	२२॥	२०
मीन	पूभ.१	१५॥	२२॥	१७॥	२०	२७	२७	२५॥	१९	१९	१८	२५	१८॥	१७॥	२४	१५॥	१६॥	१८॥	२०॥	१३॥	२१	१५	२१	२७	११॥	१६	३०	३१॥	३०॥	२९॥	२९॥	२९॥	२५॥	१७	१०	१८॥	२८	३३	३०॥
	उभ.	२५॥	१६॥	१९॥	२२	२६	१८	१७॥	२५॥	२८	२७	१९	२१	१८॥	१६॥	२६॥	२७॥	२६॥	९॥	३॥	१९॥	१२	१९	२०	२२	२४	२२	२३॥	३१	३०॥	२९॥	२९॥	१४॥	६	१६	२१॥	३३	२८	३४
	रेवती	२६	२५॥	१२॥	१५	१८	२७	२५॥	२४॥	२६॥	२५॥	२७	१४	१४	२४॥	२४॥	२५॥	२६॥	२०॥	१३॥	११॥	५॥	१२॥	२७	२२	२६॥	२९	३०॥	२१॥	२३॥	२१॥	२२॥	२२॥	१४	१६	१८	२९॥	३४	२८

[वरवधूगुणयोगादिको कुरा पनि मूल वेद-वेदाङ्गग्रन्थमा छैन। यो अर्वाचीन कालमा आएको कुरा देखिञ्छ। तसर्थ वैदिकहरुले तेसको विचार नगरे पनि हुञ्छ। लोकमा तेसको खोजि गरिने हुँदा यो चक्र याँहाँ सङ्गृहीत गरिएको हो। वरवधूको गुण कम्तिमा १८ हुन आवश्यक मान्ने र जति बडि गुण भयो तेति राम्रो मान्ने प्रचलन छ।]

(२३) अवकहडचक्र (वर-वधूमेलापकसारणीसहित)

चरणगत नामाद्याक्षर	नक्षत्र राशि	राशि-स्वामी	वर्ण	वश्य	योनि	वैरि-योनि	गण	नाडी	आसन
चूचेचोला	अश्विनी मेष	मङ्गल	क्षत्रि	चतुष्पद	अश्व	महिष	देव	आद्य	अश्व
लीलूलेलो	भरणी मेष	मङ्गल	क्षत्रि	चतुष्पद	गज	सिंह	नर	मध्य	प्रेत
अइउए	कृ.१ मेष कृ.३ वृष	मङ्गल १ शुक्र ३	क्षत्रि १ वैश्य ३	चतुष्पद	अज	वानर	राक्षस	अन्त्य	अग्निकुण्ड.
ओवावीवू	रोहिणी वृष	शुक्र	वैश्य	चतुष्पद	सर्प	नकुल	नर	अन्त्य दोषाभाव	गौ
वेवोकाकी	मृग.२ वृष मृग.२ मिथुन	शुक्र २ बुध २	वैश्य २ शूद्र २	चतु २ द्विपद २	सर्प	नकुल	देव	मध्य दोषाभाव	मृग
कुघङछ	आर्द्रा मिथुन	बुध	शूद्र	द्विपद	श्वान	मृग	नर	आद्य दोषाभाव	सर्प
केकोहाही	पुन.३ मिथुन पुन.१ कर्कट	बुध ३ चन्द्र १	शूद्र ३ ब्राह्मण १	द्विपद ३ जल १	मार्जार	मूषक	देव	आद्य	कमल
हुहेहोडा	तिष्य (पुष्य) कर्कट	चन्द्र	ब्राह्मण	जल	मेष	वानर	देव	मध्य दोषाभाव	कलश
डिडुडेडो	अश्ले. कर्कट	चन्द्र	ब्राह्मण	जल	मार्जार	मूषक	राक्षस	अन्त्य	काक
मामिमूमे	मघा सिंह	सूर्य	क्षत्रि	चतुष्पद	मूषक	मार्जार	राक्षस	अन्त्य	महिष
मोटाटीटु	पूफ सिंह	सूर्य	क्षत्रि	चतुष्पद	मूषक	मार्जार	नर	मध्य	शिला
टेटोपपी	उफ.१ सिंह उफ.३ कन्या	सूर्य १ बुध ३	क्षत्रि १ वैश्य ३	चतु १ द्विपद ३	गौ	व्याघ्र	नर	आद्य	शिला
पुषणठ	हस्त कन्या	बुध	वैश्य	द्विपद	महिष	अश्व	देव	आद्य	गज
पेपोररी	चित्रा २ कन्या चित्रा २ तुला	बुध २ शुक्र २	वैश्य २ शूद्र २	द्विपद	व्याघ्र	गौ	राक्षस	मध्य	मयूर
रूरेरोता	स्वाति तुला	शुक्र	शूद्र	द्विपद	महिष	अश्व	देव	अन्त्य	दोला
तीतूतेतो	विशा.३ तुला विशा.१ वृश्चि.	शुक्र ३ मङ्गल १	शूद्र ३ ब्राह्मण १	द्विपद ३ कीट १	व्याघ्र	गौ	राक्षस	अन्त्य दोषाभाव	अज
नानीनूने	अनुराधा वृश्चि.	मङ्गल	ब्राह्मण	कीट	मृग	श्वान	देव	मध्य	हंस
नोयायियु	ज्येष्ठा वृश्चि.	मङ्गल	ब्राह्मण	कीट	मृग	श्वान	राक्षस	आद्य	कच्छप
येयोभाभी	मूल.धनु	गुरु	क्षत्रि	मनुष्य	श्वान	मृग	राक्षस	आद्य	मूल
भूधफाढ	पूषा धनु	गुरु	क्षत्रि	मनुष्य	वानर	अज	नर	मध्य	शयन
भेभोजाजी	उषा.१ धनु उषा.३ मकर	गुरु १ शनि ३	क्षत्रि १ वैश्य ३	मनुष्य १ चतुष्पद ३	नकुल	सर्प	नर	अन्त्य	शयन
खीखूखेखो	श्रवण मकर	शनि	वैश्य	चतुष्पद	वानर	अज	देव	अन्त्य दोषाभाव	नर
गागीगूगे	धनि.२ मकर धनि.२ कुम्भ	शनि	वैश्य २ शूद्र २	चतुष्पद २ द्विपद २	सिंह	गज	राक्षस	मध्य	आढक
गोसासीसु	शतभि. कुम्भ	शनि	शूद्र	द्विपद	अश्व	महिष	राक्षस	आद्य	वृष
सेसोददी	पूभद्र.३ कुम्भ पूभद्र.१ मीन	शनि ३ गुरु १	शूद्र ३ ब्राह्मण १	द्विपद ३ जल १	सिंह	गज	नर	आद्य	भद्रपीठ
दूथझञ	उभद्र. मीन	गुरु	ब्राह्मण	जल	गौ	व्याघ्र	नर	मध्य दोषाभाव	भद्रपीठ
देदोचाची	रेवती मीन	गुरु	ब्राह्मण	जल	गज	सिंह	देव	अन्त्य दोषाभाव	चक्र

(**जुजेजोखा** अभिजित्—मकर राशि)

रोहिण्यार्द्रा-मृगेन्द्राग्नि-पुष्य-श्रवण-पौष्णभम्। अहिर्बुध्न्यर्क्षमेतेषां नाडीदोषो न विद्यते॥

(नाडीदोष नलाग्ने नक्षत्र **रोहिणी, मृगशीर्ष, आर्द्रा, पुष्य (तिष्य), विशाखा, श्रवण, उत्तरभाद्र र रेवती** हुन्।)

[अवकहडचक्रादिको विषय पनि मूल वेद-वेदाङ्गग्रन्थमा छैन। तसर्थ वैदिकहरुले **"मम व्रते ते हृदयं दधामि मम चित्तमनु चित्तं ते अस्तु। मम वाचमेकमना जुषस्व प्रजापतिष्ट्वा नियुनक्तु मह्यम्"** (पारस्करगृह्यसूत्र १।८।८) भन्ने वरको प्रार्थनाको अनुकूल हृदय भएकि कन्या विवाह गरे सर्वार्थसिद्धि हुन्छ। गुणको विचार गर्न पर्दैन। इच्छा लागे गुणको विचार गरे पनि हुन्छ।]

वैदिक नक्षत्रनामकरणको रीति एसै वैदिक-तिथिपत्रमा पछाडि दिइएको छ (पृ. ६४–६६)।

(२४) समयशुद्धिः

वैदिक-सिद्धान्त-अनुसार **तपोमास**देखि (आर्तव माघ महिनादेखि) **शुचिमास**सम्म (आर्तव आषाढ महिनासम्म) अर्थात् एस वर्ष **वत्सर**मा **२०८१।८।१६ देखि २०८२।३।११ सम्म उदगयन (उत्तरायण)** पर्छ। तेसमध्ये प्रारम्भका ६ ओटा **शुक्लपक्ष**का **दिनहरु** (सबै गरेर **९० दिन**) वैदिक दैव कर्मका निम्ति **शुद्ध समय** मानिञ्छन्। [कलिसंवत् **५०९१ संवत्सर**मा **२०८२।९।५ देखि २०८३।२।३१ सम्म** उदगयन (उत्तरायण) पर्छ। तेस समयका ६ ओटा शुक्लपक्षका दिनहरुमा वैदिक दैव कर्मका निम्ति **शुद्ध समय** हुञ्छ।]

(२५) गुरुको (बृहस्पतिको) र शुक्रको उदयास्त

गुरुको (बृहस्पतिको) र शुक्रको उदय हुँदा मात्र यो कर्म गर्नु, गुरुको (बृहस्पतिको) अथवा शुक्रको अस्त भएका अवस्थामा यो कर्म नगर्नु भन्ने विधि-निषेध वेदमन्त्रसंहिता, ब्राह्मणग्रन्थ, श्रौतसूत्र, गृह्यसूत्र, धर्मसूत्र इत्यादि मूल वेद-वेदाङ्गग्रन्थमा र मनुस्मृति-याज्ञवल्क्यस्मृतिमा पनि नभएकाले **यज्ञकालार्थसिद्धि**का निम्ति (**सम्मतं ब्राह्मणेन्द्राणां यज्ञकालार्थसिद्धये।**—वे.ज्यो., श्लो.२) लगधमुनिबाट प्रोक्त वेदाङ्गज्योतिषग्रन्थमा बृहस्पतिको र शुक्रको उदय र अस्तका विषयमा प्रतिपादन गरिएको छैन। गुरु-शुक्रको उदय-अस्तको विचार अरु मूल वेद-वेदाङ्गग्रन्थमा पनि नभएकाले वैदिकहरुले तेसको विचार नगरे पनि हुञ्छ। इच्छा लागे गुरु-शुक्रको उदय-अस्तको पनि विचार राखेर शुभ कर्म गरे पनि हुञ्छ।

एस वर्ष कलिसंवत् **५०९० (वत्सर)**मा **गुरुको (बृहस्पतिको)** र **शुक्रको** उदय हुने र अस्त हुने कुराको विवरण एस प्रकार छ—

द्वितीयशुचिकृष्णद्वितीया	**(२०८२।२।२९ [बृहस्पतिवार])**	**गुरु पश्चिमतिर अस्त**
नभःशुक्लएकादशी	**(२०८२।३।२२ [आइतवार])**	**गुरुको पूर्वतिर उदय**

माधवकृष्णषष्ठी	**(२०८१।१२।७ [बृहस्पतिवार])**	**शुक्र पश्चिमतिर अस्त**
माधवकृष्णदशमी	**(२०८१।१२।११ [सोमवार])**	**शुक्रको पूर्वतिर उदय**
सहस्यकृष्णदशमी	**(२०८२।८।२८ [आइतवार])**	**शुक्र पूर्वतिर अस्त**

[आगामी **कलिसंवत् ५०९१** संवत्सरमा **गुरु** (बृहस्पति) को **२०८३।४।२ मा** पश्चिमतिर **अस्त** भएर **२०८३।४।२६ मा** पूर्वतिर **उदय** हुनेछ। **शुक्र**को **२०८२।१०।१६ मा** पश्चिमतिर **उदय** हुनेछ।]

(२६) ग्रहण

ग्रहणको उल्लेख वेदमा (शै.शा.ऋग्वेदसंहिता ५।४०।५–९, मा.वा.शतपथब्रा. ५।३।२।२ इत्यादि) पनि पाँइञ्छ। किन्तु ग्रहणका समयमा स्नान, दान इत्यादि धार्मिक कृत्य गर्न पर्ने विधान भने वेदमन्त्रसंहिता-ब्राह्मणग्रन्थ-श्रौतसूत्र-गृह्यसूत्र-धर्मसूत्रहरुमा छैन। महाभारतमा अपशकुनका रूपमा ग्रहणका उल्लेख पाँइञ्छन् (सभापर्व ८०।२९; वनपर्व २००।२५; भीष्मपर्व २।२३, ३।२८, ३२-३३; मौसलपर्व २।१९)। लघुस्मृति-पुराणहरुमा ग्रहणका विषयका वचनहरु पाँइञ्छन्। ग्रहणलाइ सूतकजस्तो मानिएकाले अरु काम्यफलको चाहाना नगर्नेले स्पर्शकालको र मध्यकालको स्नान नगरेपनि शुद्धिका लागि मोक्षकालको स्नान गर्न पर्ने कुरा बताइएको देखिञ्छ। विष्णुस्मृतिमा **न रात्रौ राहुदर्शनवर्जम्** (ग्रहणका वेलामा बाहेक रातिमा नुहाउन हुन्न) भनेर ग्रहणमा राति पनि स्नान गर्न हुने कुरा गरिएको छ (विष्णुस्मृति ६४)। याज्ञवल्क्यस्मृतिमा (१।२१८) ग्रहणलाइ श्राद्धकालका रूपमा लिइएको छ। गौतमधर्मसूत्रमा राहु देखिएपछि भोलिपल्ट तेही समयसम्म गुरुसँग वेदाध्ययन गर्न नहुने कुरा छ (२।७।२२) र याज्ञवल्क्यस्मृतिमा पनि एक दिन अनध्याय हुने कुरा छ (१।१४६)। मनुस्मृतिमा (४।११०) चाहिँ राहुसूतकमा गुरुसँग विधिपूर्वक गरिने अध्ययनअध्यापन ३ दिनसम्म छोड्न पर्छ भनिएको छ। ग्रहणका वेला भोजन, शयन इत्यादि नगर्ने प्रचलन छ।

एस वर्ष कलिसंवत् ५०९० (वत्सर) मा इषमासमा २०८२ भदौ २२ गते (२०२५ सेप्टेम्बर ७) आइतवार लाग्ने खग्रास चन्द्रग्रहणको विवरण—

स्पर्श- २२:११ (**रातको** १०:११) बजे

सम्मीलन- २३:१४ (**रातको** ११:१४) बजे

मध्य- २३:५६ (**रातको** ११:५६) बजे

उन्मीलन- २४:३८ (**रातको** १२:३८) बजे

मोक्ष- २५:४१ (**रातको** १:४१) बजे

सर्वपर्व काल- ३ घण्टा ३० मिनेट।
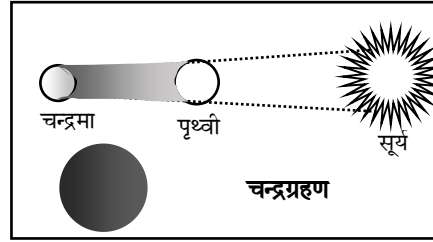
आगामी वर्ष कलिसंवत् ५०९१ (संवत्सर) मा मधुमासमा **२०८२ फागुन १९ गते** (२०२६ मार्च ३) मङ्गलवार लाग्ने खग्रास चन्द्रग्रहण नेपाल-भारतमा ग्रस्तोदित छ। १५:३५ (अपराह्ण ३:३५) मा ग्रहण स्पर्श र १७:१९ (अपराह्ण ५:१९) मा ग्रहणको मध्य हुञ्छ। **काठमाण्डुमा १८:०५ (साँझ ६:०५) मा चन्द्रोदय हुञ्छ।** १९:०३ (साँझ ७:०३) मा ग्रहण मोक्ष हुञ्छ।

२०८१ चइत १ गते शुक्रवार लाग्ने खग्रास चन्द्रग्रहण उत्तर अमेरिका र दक्षिण अमेरिकातिर माात्र देखिञ्छ। २०८१ चइत १६ गते शनिवार लाग्ने खण्डग्रास सूर्यग्रहण पनि उत्तर युरोप र उत्तर अमेरिकातिरबाट मात्र देखिञ्छ। २०८२ असोज ५ गते आइतवार र २०८२ फागुन ५ गते मङ्गलवार लाग्ने खण्डग्रास सूर्यग्रहण अण्टार्कटिकातिरबाट मात्र देखिञ्छ। ग्रहण देखिएमा बार्ने र नदेखिएमा बार्न नपर्ने कुरा सबैले बुझ्नुपर्छ। सञ्चारमाध्यमका र सामाजिक-सञ्जालका नमिल्दा प्रचारदेखि सावधान हुनपर्छ।

(२७) वैदिकानां नक्षत्रनामकरणरीतिः (नाम राख्ने वैदिक रीति)

नाम राख्ने कार्यलाइ नामकरण (न्वारन/नरन) भञ्छन्। बालक जन्मेका दश दिनमा सुत्केरिलाइ शय्याबाट (ओच्छयानबाट) उठाएर स्नान गराइ ब्राह्मणभोजन गराएर पिताले (बाबुले) जातकको नाम राख्ने विधान गृह्यसूत्रमा छ— **"दशम्यामुत्थाप्य ब्राह्मणान् भोजयित्वा पिता नाम करोति द्व्यक्षरं चतुरक्षरं वा घोषवदाद्यन्तरन्तस्थं दीर्घाभिनिष्ठानं कृतं कुर्यान् न तद्धितमयुजाक्षरमाकारान्तं स्त्रियै तद्धितम्, शर्म ब्राह्मणस्य, वर्म क्षत्रियस्य, गुप्तेति वैश्यस्य"** (पारस्करगृह्यसूत्र १।१७।१–४)। याज्ञवल्क्यस्मृतिमा चाइँ एघारौं दिनमा नामकरण गर्न पर्ने बताइएको छ। नेपालमा पनि एघारौं दिनमा नामकरण (न्वारन) गर्ने चलन छ। माध्यन्दिनीयवाजसनेयि-शुक्लयजुर्वेदशाखाध्यायिहरुले पारस्करगृह्यसूत्रको अनुसरण गर्न पर्छ। पारस्करगृह्यसूत्रमा भनिएअनुसार नाम राख्न कृत् र तद्धित बुझ्न पर्ने हुञ्छ। तेसका निम्ति व्याकरणशास्त्रको ज्ञान आवश्यक हुञ्छ। घोषवान्, अन्तस्थ इत्यादि वर्ण चिन्न शिक्षाशास्त्रको ज्ञान आवश्यक हुञ्छ। नाम राम्रो र शुद्ध संस्कृत भाषाको हुन पर्ने कुरामा शास्त्रले जोड दिएको छ। आजभोलि कतिपय वैदिक सनातनी हिन्दुहरुले विदेशि भाषाका नाम पनि राख्न थालेको देखिञ्छ। यो अत्यन्तै शोचनीय विषय हो। तेसैले हिन्दुहरुले संस्कृतभाषाको नाम राखेर आँफ्नो मौलिक शास्त्रीय परम्परा जोगाउन आवश्यक देखिञ्छ। छोरिको पुंलिङ्गी नाम राख्न हुँदैन। एसका निम्ति पनि संस्कृत भाषाको ज्ञान आवश्यक हुञ्छ।

नक्षत्रनाम– नक्षत्रअनुसारको नाम राख्ने वैदिक पद्धति वेदाङ्गज्योतिषमा पाँइन्छ। यो पद्धति पछिसम्म पनि चल्दै गरेको देखिन्छ। निर्णयसिन्धुमा एस पद्धतिको उल्लेख नभएपनि १८४७ वैक्रमाब्दमा रचिएको धर्मसिन्धुमा चाइँ छ। १७५६ वैक्रमाब्दमा ऋषिभट्टले रचेको **संस्कारभास्कर**मा पनि यो विषय उल्लिखित छ (१२२-१२४ पत्र)। एस पद्धतिका विषयमा वेदाङ्गज्योतिषको कौण्डिन्यायनव्याख्यानका भूमिकामा विस्तृत प्रतिपादन गरिएको छ। वैदिक परम्परामा नक्षत्रअनुसारको नाम 'चुचेचोला अश्विनी' इत्यादिअनुसार राखिँदैन, नक्षत्रका देवताअनुसार राखिन्छ; जस्तै कृत्तिका नक्षत्रमा जन्मेका जातकको नाम **कृत्तिका**का देवता **अग्नि** भएकाले अग्निगुप्त, अग्निजुष्ट, अग्नित्रात, अग्निदत्त, अग्निदयिता, अग्निपालिता, अग्निरक्षिता इत्यादि रूपमा राखिन्छ। द्विजातिले श्रौतयज्ञ, स्मार्तयज्ञ, विवाह-व्रतबन्ध-अन्त्यकर्म-श्राद्धादिका लागि एसै गरि नाम राख्न पर्छ। श्रौत-स्मार्त-यज्ञादि कर्मका लागि तेस प्रकारले नक्षत्रनाम राखेपछि फलितज्योतिषमा विशेष आग्रह हुने व्यक्तिहरुले फलादेशका लागि 'चुचेचोला' इत्यादि अवकहडचक्रअनुसार राशिको नाम समेत राख्नै गरे पनि हुन्छ।

(२८) नक्षत्र, वैदिक नक्षत्रदेवता तथा नक्षत्रनाम

न.	नक्षत्रम्	नक्षत्रदेवता	नक्षत्रदेवतासम्बद्धानि सम्भावितानि नामानि
कृ	कृत्तिकाः	**अग्निः**	**पुं**– अग्निगुप्तः, अग्निजुष्टः, अग्नित्रातः, अग्निदत्तः, अग्निदिष्टः, अग्निपातः, अग्निरातः, अग्निलातः, **स्त्री**– अग्निदयिता, अग्निपालिता, अग्निरक्षिता इत्यादिकानि
रो	रोहिणी	**प्रजापतिः**	**पुं**–प्रजापतिगुप्तः, प्रजापतिजुष्टः, प्रजापतित्रातः, प्रजापतिदत्तः, प्रजापतिदिष्टः, प्रजापतिपातः, प्रजापतिरातः, प्रजापतिलातः, **स्त्री**– प्रजापतिदयिता, प्रजापतिपालिता, प्रजापतिरक्षिता इत्यादिकानि
मृ	मृगशिरः (मृगशीर्षम्)	**सोमः**	**पुं**–सोमगुप्तः, सोमजुष्टः, सोमत्रातः, सोमदत्तः, सोमदिष्टः, सोमपातः, सोमरातः, सोमलातः, **स्त्री**–सोमदयिता, सोमपालिता, सोमरक्षिता इत्यादिकानि
आ	आर्द्रा	**रुद्रः**	**पुं**–रुद्रगुप्तः, रुद्रजुष्टः, रुद्रत्रातः, रुद्रदत्तः, रुद्रदिष्टः, रुद्रपातः, रुद्ररातः, रुद्रलातः, **स्त्री**–रुद्रदयिता, रुद्रपालिता, रुद्ररक्षिता इत्यादिकानि
पुन	पुनर्वसू	**अदितिः**	**पुं**–अदितिपालितः, अदितिरक्षितः, अदितिसम्पातः, अदितिसुपातः, अदितिप्रदत्तः, अदितिसुलातः, अदितिसुरातः, **स्त्री**–अदितिगुप्ता, अदितिजुष्टा, अदितित्राता, अदितिदत्ता, अदितिदिष्टा, अदितिपाता, अदितिराता, अदितिलाता, इत्यादिकानि
पु	पुष्यः (तिष्यः)	**बृहस्पतिः**	**पुं**–बृहस्पतिगुप्तः, बृहस्पतिजुष्टः, बृहस्पतित्रातः, बृहस्पतिदत्तः, बृहस्पतिदिष्टः, बृहस्पतिपातः, बृहस्पतिरातः, बृहस्पतिलातः, **स्त्री**–बृहस्पतिदयिता, बृहस्पतिपालिता, बृहस्पतिरक्षिता इत्यादिकानि
अ	आश्लेषाः	**सर्पाः**	**पुं**–सर्पगुप्तः, सर्पजुष्टः, सर्पत्रातः, सर्पदत्तः, सर्पदिष्टः, सर्पपातः, सर्परातः, सर्पलातः, **स्त्री**–सर्पदयिता, सर्पपालिता, सर्परक्षिता इ. [**पुं**–नागगुप्तः, नागजुष्टः, नागत्रातः, नागदत्तः, नागदिष्टः, नागपातः, नागरातः, नागलातः, **स्त्री**–नागदयिता, नागपालिता, नागरक्षिता इत्यादिकानि]
म	मघाः	**पितरः**	**पुं**–पितृगुप्तः, पितृजुष्टः, पितृत्रातः, पितृदत्तः, पितृदिष्टः, पितृपातः, पितृरातः, पितृलातः, **स्त्री**–पितृदयिता, पितृपालिता, पितृरक्षिता इत्यादिकानि
पूफ	पूर्वफल्गुन्यौ	**भगः**	भगगुप्तः, भगजुष्टः, भगत्रातः, भगदत्तः, भगदिष्टः, भगपातः, भगरातः, भगलातः, **स्त्री**–भगदयिता, भगपालिता, भगरक्षिता इत्यादिकानि
उफ	उत्तरफल्गुन्यौ	**अर्यमा**	**पुं**–अर्यमपालितः, अर्यमरक्षितः, अर्यमसम्पातः, अर्यमसुपातः, अर्यमप्रदत्तः, अर्यमसुलातः, अर्यमसुरातः, **स्त्री**–अर्यमगुप्ता, अर्यमजुष्टा, अर्यमत्राता, अर्यमदत्ता, अर्यमदिष्टा, अर्यमपाता, अर्यमराता, अर्यमलाता, इत्यादिकानि
ह	हस्तः	**सविता**	**पुं**–सवितृपालितः, सवितृरक्षितः, सवितृसम्पातः, सवितृप्रदत्तः, सवितृसुरातः, **स्त्री**–सवितृगुप्ता, सवितृजुष्टा, सवितृत्राता, सवितृदत्ता, सवितृदिष्टा, सवितृपाता, सवितृराता, [**पुं**–सूर्यगुप्तः, सूर्यजुष्टः, सूर्यत्रातः, सूर्यदत्तः, सूर्यदिष्टः, सूर्यपातः, सूर्यरातः, सूर्यलातः, **स्त्री**–सूर्यदयिता, सूर्यपालिता, सूर्यरक्षिता] इ.

चि	चित्रा	**त्वष्टा**	**पुं**–त्वष्टृगुप्तः, त्वष्टृजुष्टः, त्वष्टृत्रातः, त्वष्टृदत्तः, त्वष्टृदिष्टः, त्वष्टृपातः, त्वष्टृरातः, त्वष्टृलातः, **स्त्री**–त्वष्टृदयिता, त्वष्टृपालिता, त्वष्टृरक्षिता इत्यादिकानि
स्वा	स्वातिः	**वायुः**	**पुं**–वायुगुप्तः, वायुजुष्टः, वायुत्रातः, वायुदत्तः, वायुदिष्टः, वायुपातः, वायुरातः, वायुलातः, **स्त्री**–वायुदयिता, वायुपालिता, वायुरक्षिता इत्यादिकानि
वि	विशाखे	**इन्द्राग्नी**	**पुं**–इन्द्राग्निपालितः, इन्द्राग्निरक्षितः, इन्द्राग्निसम्पातः, इन्द्राग्निप्रदत्तः, इन्द्राग्निसुरातः, **स्त्री**–इन्द्राग्निगुप्ता, इन्द्राग्निजुष्टा, इन्द्राग्नित्राता, इन्द्राग्निदत्ता, इन्द्राग्निदिष्टा, इन्द्राग्निपाता, इन्द्राग्निराता इत्यादिकानि
अ	अनुराधाः	**मित्रः**	**पुं**–मित्रगुप्तः, मित्रजुष्टः, मित्रत्रातः, मित्रदत्तः, मित्रदिष्टः, मित्रपातः, मित्ररातः, मित्रलातः, **स्त्री**–मित्रदयिता, मित्रपालिता, मित्ररक्षिता इत्यादिकानि
ज्ये	ज्येष्ठा	**इन्द्रः**	**पुं**–इन्द्रगुप्तः, इन्द्रजुष्टः, इन्द्रत्रातः, इन्द्रदत्तः, इन्द्रदिष्टः, इन्द्रपातः, इन्द्ररातः, इन्द्रलातः, **स्त्री**–इन्द्रदयिता, इन्द्रपालिता, इन्द्ररक्षिता इत्यादिकानि
मू	मूलबर्हणी (मूलम्)	**निर्ऋतिः**	**पुं**–निर्ऋतिपालितः, निर्ऋतिरक्षितः, निर्ऋतिसम्पातः, निर्ऋतिसुपातः, निर्ऋतिप्रदत्तः, निर्ऋतिसुलातः, निर्ऋतिसुरातः, **स्त्री**–निर्ऋतिगुप्ता, निर्ऋतिजुष्टा, निर्ऋतित्राता, निर्ऋतिदत्ता, निर्ऋतिदिष्टा, निर्ऋतिपाता, निर्ऋतिराता, निर्ऋतिलाता इत्यादिकानि
पूषा	पूर्वाषाढाः	**आपः**	**पुं**–अप्पालितः, अब्रक्षितः, अप्सम्पातः, अप्सुपातः, अप्प्रदत्तः, अप्सुलातः, अप्सुरातः, **स्त्री**–अब्गुप्ता, अब्जुष्टा, अप्त्राता, अब्दत्ता, अब्दिष्टा, अप्पाता, अब्राता, अब्लाता इत्यादिकानि
उषा	उत्तराषाढाः	**विश्वे देवाः**	**पुं**–विश्वदेवगुप्तः, विश्वदेवजुष्टः, विश्वदेवत्रातः, विश्वदेवदत्तः, विश्वदेवदिष्टः, विश्वदेवपातः, विश्वदेवरातः, विश्वदेवलातः, **स्त्री**–विश्वदेवदयिता, विश्वदेव-पालिता, विश्वदेवरक्षिता इत्यादिकानि
श्र	श्रवणः (श्रोणा)	**विष्णुः**	**पुं**–विष्णुगुप्तः, विष्णुजुष्टः, विष्णुत्रातः, विष्णुदत्तः, विष्णुदिष्टः, विष्णुपातः, विष्णुरातः, विष्णुलातः, **स्त्री**–विष्णुदयिता, विष्णुपालिता, विष्णुरक्षिता इ.
ध	धनिष्ठाः	**वसवः**	**पुं**–वसुगुप्तः, वसुजुष्टः, वसुत्रातः, वसुदत्तः, वसुदिष्टः, वसुपातः, वसुरातः, वसुलातः, **स्त्री**–वसुदयिता, वसुपालिता, वसुरक्षिता इत्यादिकानि
श	शतभिषक्	**वरुणः**	**पुं**–वरुणपालितः, वरुणरक्षितः, वरुणसम्पातः, वरुणसुपातः, वरुणप्रदत्तः, वरुणसुलातः, वरुणसुरातः, **स्त्री**–वरुणगुप्ता, वरुणजुष्टा, वरुणत्राता, वरुणदत्ता, वरुणदिष्टा, वरुणपाता, वरुणराता, वरुणलाता, इत्यादिकानि
पूभ	पूर्वभद्रपदे	**अज एकपात्**	**पुं**–अजैकपाद्गुप्तः, अजैकपाज्जुष्टः, अजैकपात्त्रातः, अजैकपाद्दत्तः, अजैकपाद्दिष्टः, अजैकपात्पातः, अजैकपाद्रातः, अजैकपाल्लातः, **स्त्री**–अजैकपाद्दयिता, अजैकपात्पालिता, अजैकपाद्रक्षिता इत्यादिकानि
उभ	उत्तरभद्रपदे	**अहिर्बुध्न्यः**	**पुं**–अहिर्बुध्न्यगुप्तः, अहिर्बुध्न्यजुष्टः, अहिर्बुध्न्यत्रातः, अहिर्बुध्न्यदत्तः, अहिर्बुध्न्यदिष्टः, अहिर्बुध्न्यपातः, अहिर्बुध्न्यरातः, अहिर्बुध्न्यलातः, **स्त्री**–अहिर्बुध्न्यदयिता, अहिर्बुध्न्यपालिता, अहिर्बुध्न्यरक्षिता इत्यादिकानि
रे	रेवती	**पूषा**	**पुं**–पूषगुप्तः, पूषजुष्टः, पूषत्रातः, पूषदत्तः, पूषदिष्टः, पूषपातः, पूषरातः, पूषलातः, **स्त्री**–पूषदयिता, पूषपालिता, पूषरक्षिता इत्यादिकानि
अ	अश्वयुजौ	**अश्विनौ**	**पुं**–अश्विगुप्तः, अश्विजुष्टः, अश्वित्रातः, अश्विदत्तः, अश्विदिष्टः, अश्विपातः, अश्विरातः, अश्विलातः, **स्त्री**–अश्विदयिता, अश्विपालिता, अश्विरक्षिता इ.
भ	भरण्यः/अपभरण्यः	**यमः**	**पुं**–यमगुप्तः, यमजुष्टः, यमत्रातः, यमदत्तः, यमदिष्टः, यमपातः, यमरातः, यमलातः, **स्त्री**–यमदयिता, यमपालिता, यमरक्षिता इत्यादिकानि।

अग्निः प्रजापतिः सोमो रुद्रोऽदितिर्बृहस्पतिः। सर्पाश्च पितरश्चैव भगश्चैवाऽर्यमाऽपि च॥ सविता त्वष्टाऽथ वायुश्चेन्द्राग्नी मित्र एव च। इन्द्रो निर्ऋतिरापो वै विश्वेदेवास्तथैव च॥ विष्णुर्वसवो वरुणोऽज एकपात् तथैव च। अहिर्बुध्न्यस्तथा पूषा अश्विनौ यम एव च॥ नक्षत्रदेवता ह्येता एताभिर्यज्ञकर्मणि। यमानस्य शास्त्रज्ञैर्नाम नक्षत्रजं स्मृतम्॥–वेदाङ्गज्योतिष,श्लो. ३२–३५।

(२९) सङ्कल्प-रचना-प्रकार-निदर्शनम् (वैदिक सङ्कल्प)

ओ३म्। तत् सत्। स्वस्ति। श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य अचिन्त्यापरिमित-मायाशक्तिकस्य लीलामयेच्छया सृष्टानां शतकोटियोजनविस्तारकाणामव्यक्तमहदहङ्कारा-ऽऽकाश-वायु-तेजोप्-पृथिवीरूपावरणाऽऽवृत–चतुर्दशभुवनात्मकानामनन्तकोटि-सङ्ख्याकानां ब्रह्माण्डानामेकतमस्मिन्नेतस्मिन् ब्रह्माण्डे भूर्-लोके भूमण्डले जम्बूद्वीपे भारतवर्षे कर्मभूमौ कुमारिकाखण्डे आर्यावर्तान्तर्गते हिमालयदक्षिणपार्श्वस्थे नेपालदेशे विष्णुप्रजापतिक्षेत्रान्तर्गते ... (अमुक)**क्षेत्रे** ......(अमुक-[गण्डकी]**प्रदेशे** ....(अमुक-[चुँदिताम्रकूट] **ग्रामे (**.....अमुक-[व्यास]**नगरे) इह पुण्यदेशे वेदोक्तजगत्सृष्टिकारिणः पद्मोद्भवस्य ब्रह्मणो द्वितीये परार्धे प्रथमे वर्षे प्रथमे मासे प्रथमे पक्षे प्रथमे दिवसे ब्रह्मतिथ्यात्मकेषु मत्स्यपुराणाद्युक्तेषु श्वेतवाराहादिषु त्रिंशति कल्पेषु प्रथमे श्वेतवाराहकल्पे स्वायम्भुवादिषु चतुर्दशसु मन्वन्तरेषु सप्तमे वैवस्वतमन्वन्तरे एकसप्ततौ ससन्ध्यासन्ध्यांशासु चतुर्युगीषु अष्टाविंशतितम्यां चतुर्युग्याम्, तत्र च सत्य-त्रेता-द्वापरेषु व्यतीतेषु कलौ युगे प्रवृत्ते तस्य च प्रथमे चरणे पञ्चसु सहस्रेषु** ...ऊननवतौ **च वर्षेषु गतेषु तदुत्तरे वर्षे प्रवृत्ते वेदोक्तपञ्चवर्षात्मकयुगानुसारिणां चान्द्राणां प्रभवादीनां षष्टेः संवत्सराणां पञ्च-वर्षात्मकेषु वैष्णवादिषु द्वादशसु युगेषु** ..... दशमे ...... ऐन्द्राग्ने **युगे तस्य च वेदोक्तेषु संवत्सर-परिवत्सरेदावत्सरेद्वत्सर-वत्सराख्येषु पञ्चसु वर्षेषु** ....अनला**परनामके** ....वत्सर**ाख्ये** ..... पञ्चमे **वर्षे** ....उदग**यने** ..... शिशिरे **ऋतौ** ....तपसि **मासे [वैदिके आर्तवे** .... माघे **मासे]** .... शुक्ले **पक्षे** .... प्रतिपदि **तिथौ** [........ कौस्तुभे **करणे]** .... अनुराधासु **नक्षत्रे** *[विष्कम्भादिषु सप्तविंशतौ योगेषु .....सप्तमे सुकर्मणि योगे ...... आदित्यवासरे श्रीसूर्ये .....अनुराधासु नक्षत्रे (....वृश्चिकराशौ) स्थिते देवगुरौ ....मृगशीर्षे नक्षत्रे (......वृषराशौ) स्थिते चन्द्रमसि च ......वृश्चिकराशौ स्थिते शेषेषु ग्रहेषु यथायथं नक्षत्रेषु राशिषु च स्थितेषु सत्सु एवं ग्रहगणविशेषेण विशिष्टे]* **शुभे पुण्ये काले अद्य** .... अमुक-**शर्मा** .... अमुक**गोत्रः** ....अमुक-**प्रवरो माध्यन्दिनीयवाजसनेयिशुक्ल-यजुर्वेदशाखाध्यायी कात्यायनश्रौतसूत्र-पारस्करगृह्यसूत्र-कात्यायनत्रिकण्डिकस्नानसूत्रानुसारी अहम्** .... सर्वात्मसूर्ययोधि-मन्देहरक्षसामपाहननेन आत्मसंश्लिष्ट-पापावधूननेन च परमात्मप्रसादस्य सिद्धये प्राणायामपूतो भूत्वा प्रातःसन्ध्योपासनं (पवित्रजपयज्ञं च) **करिष्ये।**

विशेष– अरुले भन्ने गरेको कलिवर्ष (वास्तविक महाभारतयुद्धाब्द वा युधिष्ठिरराज्या–रोहणाब्द) ५१२६ मा ३६ घटाउँदा रहने ५०९० वैदिकहरुले मान्ने कलिवर्ष (कृष्णको स्वर्गारोहण-देखि गनिने वास्तविक कलिवर्ष) हुञ्छ। तेसैको सङ्कल्पमा उल्लेख गर्न पर्छ। ५ वर्षे वैदिक युगका संवत्सरपरिवत्सरादि ५ वर्षमध्ये पाँचौं **वत्सर** र चान्द्र ६० संवत्सर मध्येको ५०औं **अनल** नामको संवत्सर एउटै हुन्। कर्मकालमा तिथि नै मुख्य भएकाले तिथिसम्मको मात्र उल्लेख गर्ने, करण, योग इत्यादिको उल्लेख सङ्कल्पमा नगर्ने गरे पनि हुञ्छ। अरु वार, सूर्यको नक्षत्र वा राशि इत्यादिको पनि उल्लेख गर्ने इच्छा भए तिनको पनि उल्लेख गरे पनि हुञ्छ। इच्छा नभए वैदिक धर्मकृत्यका सङ्कल्पमा तिनको पनि उल्लेख नगरे पनि हुञ्छ। वेदाङ्गज्योतिषअनुसारका पात्रामा बताइएका **कलिसंवत्को, वैष्णवादियुगको, संवत्सर, परिवत्सर इत्यादि संवत्सरको, प्रभव, विभव इत्यादि चान्द्र संवत्सरको, उत्तरायण-दक्षिणायनको, शिशिर, वसन्त इत्यादि ऋतुको, तपः, तपस्य इत्यादि मासको वा वैदिक आर्तव चान्द्र माघ, फाल्गुन इत्यादि महिनाको, अधिक–मासको [द्वितीय शुचिमासको (द्वितीय आषाढको) अथवा द्वितीय सहस्यमासको (द्वितीय पौषको)], वैदिक तिथि, नक्षत्र इत्यादिको** पनि सङ्कल्पादिमा माथि देखाइएअनुसार प्रयोग गर्न पर्छ।

सङ्कल्पमा नक्षत्रको वचन र विभक्ति मिलाउँदा **'कृत्तिकासु नक्षत्रे', 'रोहिण्यां नक्षत्रे'** इत्यादि भन्न पर्छ। तसर्थ **कृत्तिकासु, रोहिण्याम्, मृगशिरसि (मृगशीर्षे), आर्द्रायाम्, पुनर्वस्वोः, पुष्ये (तिष्ये), अश्लेषासु, मघासु, पूर्वफल्गुन्योः, उत्तरफल्गुन्योः, हस्ते, चित्रायाम्, स्वातौ (स्वात्याम्), विशाखयोः, अनुराधासु, ज्येष्ठायाम्, मूले (मूलबर्हण्याम्), पूर्वाषाढासु, उत्तराषाढासु, श्रवणे, श्रविष्ठासु (धनिष्ठासु), शतभिषजि, पूर्वभद्रपदयोः, उत्तरभद्रपदयोः, रेवत्याम्, अश्वयुजोः, अपभरणीषु (भरणीषु)** एस्ता रूपको प्रयोग गर्न पर्छ॥

(३०) अग्निवास-सारणी

तन्त्रले बताएका अथवा तन्त्रमूलक लघुस्मृति र पुराणले बताएका कर्महरुमा गरिने होमका लागि अग्नि जुराउने प्रचलन छ। वैदिक कर्ममा होमका लागि भने अग्नि जुराउने आवश्यकता पर्दैन।

सैका तिथिर्वारयुता कृताऽऽप्ता शेषे गुणेऽभ्रे भुवि वह्निवासः। सौख्याय होमे शशियुग्मशेषे प्राणाऽर्थनाशौ दिवि भूतले च॥

अग्निवाससारणी

ति. / वारः	शुक्लपक्षे १	२	३	४	५	६	७	कृष्णपक्षे ८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	वारः
आ.	भू.	भू.	स्व.	पा.	भू.	भू.	स्व.	पा.	भू.	भू.	स्व.	पा.	भू.	भू.	स्व.	**सो.**
सो.	भू.	स्व.	पा.	भू.	भू.	स्व.	पा.	भू.	भू.	स्व.	पा.	भू.	भू.	स्व.	पा.	**म.**
म.	स्व.	पा.	भू.	भू.	स्व.	पा.	भू.	भू.	स्व.	पा.	भू.	भू.	स्व.	पा.	भू.	**बु.**
बु.	पा.	भू.	भू.	स्व.	पा.	भू.	भू.	स्व.	पा.	भू.	भू.	स्व.	पा.	भू.	भू.	**बृ.**
बृ.	भू.	भू.	स्व.	पा.	भू.	भू.	स्व.	पा.	भू.	भू.	स्व.	पा.	भू.	भू.	स्व.	**शु.**
शु.	भू.	स्व.	पा.	भू.	भू.	स्व.	पा.	भू.	भू.	स्व.	पा.	भू.	भू.	स्व.	पा.	**श.**
श.	स्व.	पा.	भू.	भू.	स्व.	पा.	भू.	भू.	स्व.	पा.	भू.	भू.	स्व.	पा.	भू.	०
०	पा.	भू.	भू.	स्व.	पा.	भू.	भू.	स्व.	पा.	भू.	भू.	स्व.	पा.	भू.	भू.	**आ.**

संक्षेप-विवरण— भू.=भूमि, स्व.=स्वर्ग, पा.=पाताल। अग्निवासको फल— स्व.–प्राणनाश, पा.–धननाश, भू.–सुख। (तन्त्रको सिद्धान्तअनुसार अग्निको वास भूमिमा हुँदा अग्नि जुर्छ, अग्निको वास स्वर्गमा र पातालमा हुँदा चाहिँ जुर्दैन।)

अग्नि जुर्ने दिनहरु एसै वैदिक-तिथिपत्रमा अगाडि (पृ.५५) दिइएका छन्।

(३१) शिववास-सारणी

रुद्री लाउन लोकमा शिववासको विचार गर्ने प्रचलन छ। रुद्रीमा वेदका मन्त्रहरुको नै प्रयोग छ। तेसको पद्धति भने तन्त्र र लघुस्मृतिपुराणको हो। रुद्री लाउन चाहाने व्यक्तिहरुका उपयोगका र सुविधाका लागि याँहाँ शिववाससारणी दिय्येको छ।

वैदिक शतरुद्रिय-मन्त्र-जप इत्यादिको व्यवस्था चाहिँ भिन्न प्रकारको हुञ्छ।

तिथिं द्विघ्नां पञ्चयुतां
कुर्यात् तष्टां नगैस्ततः।
शेषे वेदे रसे खे च
नेष्टा रुद्र्यन्यथा शुभा॥

रुद्री जुर्ने दिनहरु एसै वैदिक-तिथिपत्रमा अगाडि (पृ.५५) दिइएका छन्।

शिववास-सारणी

शुक्ल-पक्षे तिथयः	शिववासः	फलम्	कृष्ण-पक्षे तिथयः
१	श्मशाने	मृत्युः	०
२	गौरीसन्निधौ	शुभम्	१
३	सभायाम्	तापः	२
४	क्रीडायाम्	सन्तानहानिः	३
५	कैलाशे	सुखम्	४
६	वृषे	श्रीप्राप्तिः	५
७	भोजने	भोजनप्राप्तिः	६
८	श्मशाने	मृत्युः	७
९	गौरीसन्निधौ	शुभम्	८,३०
१०	सभायाम्	तापः	९
११	क्रीडायाम्	सन्तानहानिः	१०
१२	कैलाशे	सुखम्	११
१३	वृषे	श्रीप्राप्तिः	१२
१४	भोजने	भोजनप्राप्तिः	१३
१५	श्मशाने	मृत्युः	१४

(३२) नागशिरोदिग्-विचार

भदौ–असोज–कात्तिकमा पूर्वतिर; मुङ्सिर–पुस–माघमा दक्षिणतिर; फागुन–चइत–वैशाखमा पश्चिमतिर तथा जेठ–असार–साउनमा उत्तरतिर नागको शिर हुञ्छ।

(३३) वारवेला-चक्र

वारवेलाको कुरा पनि आदित्यवार, सोमवार इत्यादि वारहरुको उल्लेख नै वेद-वेदाङ्गका मूल ग्रन्थमा नपाँइने हुनाले वैदिक-हरुका लागि आवश्यक छैन। वैदिकहरुले त विभिन्न कर्मका लागि आथर्वणज्योतिषादि ग्रन्थमा समुचित मानिएका दिनका रौद्र-श्वेतादि मुहूर्तको विचार गर्नु समुचित छ (इ मुहूर्त एसै पात्रामा पनि समाविष्ट छन्)। वारवेलाको व्रास्ता नगरे पनि हुञ्छ।

वारवेला-चक्र																	
दिवा									रात्रि								
वार	घ.प. ३।४५ घ. मि. १:३० (६:००-७:३०)	७।३० ३:०० (७:३०-९:००)	११।१५ ४:३० (९:००-१०:३०)	१५।० ६:०० (१०:३०-१२:००)	१८।४५ ७:३० (१२:००-१३:३०)	२२।३० ९:०० (१३:३०-१५:००)	२६।१५ १०:३० (१५:००-१६:३०)	३०।० १२:०० (१६:३०-१८:००)	वार	घ.प. ३।४५ घ. मि. १:३० (१८:००-१९:३०)	७।३० ३:०० (१९:३०-२१:००)	११।१५ ४:३० (२१:००-२२:३०)	१५।० ६:०० (२२:३०-२४:००)	१८।४५ ७:३० (२४:००-२५:३०)	२२।३० ९:०० (२५:३०-२७:००)	२६।१५ १०:३० (२७:००-२८:३०)	३०।० १२:०० (२८:३०-३०:००)
आ	उद्वेग	चर	लाभ	अमृत	काल	शुभ	रोग	उद्वेग	आ	उद्वेग	शुभ	अमृत	चर	रोग	काल	लाभ	उद्वेग
सो	अमृत	काल	शुभ	रोग	उद्वेग	चर	लाभ	अमृत	सो	अमृत	चर	रोग	काल	लाभ	उद्वेग	शुभ	अमृत
म	रोग	उद्वेग	चर	लाभ	अमृत	काल	शुभ	रोग	म	रोग	काल	लाभ	उद्वेग	शुभ	अमृत	चर	रोग
बु	लाभ	अमृत	काल	शुभ	रोग	उद्वेग	चर	लाभ	बु	लाभ	उद्वेग	शुभ	अमृत	चर	रोग	काल	लाभ
बृ	शुभ	रोग	उद्वेग	चर	लाभ	अमृत	काल	शुभ	बृ	शुभ	अमृत	चर	रोग	काल	लाभ	उद्वेग	शुभ
शु	चर	लाभ	अमृत	काल	शुभ	रोग	उद्वेग	चर	शु	चर	रोग	काल	लाभ	उद्वेग	शुभ	अमृत	चर
श	काल	शुभ	रोग	उद्वेग	चर	लाभ	अमृत	काल	श	काल	लाभ	उद्वेग	शुभ	अमृत	चर	रोग	काल

(३४) यात्रामा चन्द्र-वासको विचार

मेष, सिंह र धनु राशिमा पूर्व दिशामा चन्द्रमा हुञ्छन्। वृष, कन्या र मकर राशिमा दक्षिण दिशामा हुञ्छन्। मिथुन, तुला र कुम्भ राशिमा पश्चिम दिशामा हुञ्छन्। कर्कट, वृश्चिक र मीन राशिमा उत्तर दिशामा हुञ्छन्। चन्द्रमा सम्मुख हुँदा यात्रादि गर्दा अर्थलाभ, पछाडि हुँदा प्राणसंशय, दाइनेतिर हुँदा सुखसम्पत्ति र देउरेतिर हुँदा धनक्षय हुञ्छ भन्ने अर्वाचीन ज्योतिषिहरुको मान्यता छ।

चन्द्रवास-चक्र		
	कर्कट, वृश्चिक, मीन उत्तर	
मिथुन, तुला, कुम्भ पश्चिम	✷	मेष, सिंह, धनु पूर्व
	वृष, कन्या, मकर दक्षिण	

(३५) यात्रामा योगिनी-वासको विचार

योगिनीचक्र		
वायव्य ७, १५	२, १० उत्तर	८, ३० ईशान
पश्चिम ६, १४	✷	१,९ पूर्व
४, १२ नैरृत्य	५, १३ दक्षिण	३, ११ आग्नेय

प्रतिपदा र नवमीमा पूर्वमा, तृतीया र एकादशीमा आग्नेय दिशामा, पञ्चमी र त्रयोदशीमा दक्षिणमा, चतुर्थी र द्वादशीमा नैरृत्य दिशामा, षष्ठी र चतुर्दशीमा पश्चिममा, सप्तमी र पूर्णिमामा वायव्य दिशामा, द्वितीया र दशमीमा उत्तरमा तथा अष्टमी र अमावास्यामा ईशान दिशामा योगिनी रहने मानिएको छ। योगिनीलाइ देउरे तिर हुँदा सुखदा, पछाडि हुँदा अर्थदा, दाइनेतिर हुँदा धनहन्त्री र सम्मुखमा हुँदा मरणप्रदा मानिएको छ।

(३६) यात्रामा नक्षत्रको विचार

सबै दिशातिर जाँदा अश्विनी, मृगशीर्ष, पुष्य, हस्त, श्रोणा (श्रवण) र रेवती इ नक्षत्र शुभ हुञ्छन्। ज्येष्ठामा पूर्वतिर, पञ्चकमा (धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वभद्रपद, उत्तरभद्रपद र रेवती नक्षत्रमा) दक्षिणतिर, रोहिणीमा पश्चिमतिर र उत्तरफल्गुनीमा उत्तरतिर नजानु।

(३७) यात्रामा वारको विचार

सोमवारमा र शनिवारमा पूर्वतिर यात्रा नगर्नु। बिहिवारमा दक्षिणतिर यात्रा नगर्नु। आइतवारमा र शुक्रवारमा पश्चिमतिर यात्रा नगर्नु। मङ्गलवारमा र बुधवारमा उत्तरतिर यात्रा नगर्नु। सोमवारमा र बिहिवारमा आग्नेय दिशातिर यात्रा नगर्नु। आइतवारमा र शुक्रवारमा नैर्ऋत्य दिशातिर यात्रा नगर्नु। मङ्गलवारमा वायव्यदिशातिर यात्रा नगर्नु। मङ्गल र शनिवारमा ईशान दिशातिर यात्रा नगर्नु। अत्यावश्यक परि वारदिक्शूल पर्दा यात्रा गर्न परेमा आइतवार घिउ, सोमवार दुध, मङ्गलवार गुड, बुधवार तिल, बिहिवार दहि, शुक्रवार जौ र शनिवार मास खाएर जानु (यात्रा गर्नु)। पूर्वतिर मङ्गलवार जाँदा लाभ हुञ्छ। दक्षिणतिर शनिवार जाँदा सुख हुञ्छ। पश्चिमतिर बुध र बिहिवार जाँदा सिद्धि हुञ्छ। उत्तरतिर आइतवार र शुक्रवार जाँदा कल्याण हुञ्छ। एस प्रकारको मान्यता वारवादिहरुको छ।

(३८) यात्रामा समयको विचार

यात्राका निम्ति गर्गले उषःकाल राम्रो हुञ्छ भनेका छन्, बृहस्पतिले शकुन राम्रो हुनुपर्छ भनेका छन्। अङ्गिराले यात्रा गर्नेका मनको उत्साहलाइ सिद्धिसूचक मानेका छन्। जनार्दनले ब्राह्मणका अनुमतिले ब्राह्मणलाइ मङ्गलपाठ गर्न लगाएर यात्रा गर्ने कुराको प्रशंसा गरेका छन्।

(३९) नष्टप्राप्ति-विचार

सूर्य रहेको नक्षत्रबाट नौओटा नक्षत्रमा हराएको वा गएको भए वनमा रहेको, तेसपछिका छओटा नक्षत्रमा हराएको वा गएको भए सुनिञ्छ, तेसपछिका सात नक्षत्रमा हराएको वा गएको भए फर्केर घरमा आउँछ, तेसपछिका दुइ नक्षत्रमा गएको भए गएको गएइ हुञ्छ, फर्केर आउँदैन; तेसपछिका तिन नक्षत्रमा हराएको वा गएको भए मोरेको हुञ्छ। मघा, पूर्वफल्गुनी र उत्तरफल्गुनीमा हराएका वस्तु नजिकै देखिञ्छ। हस्त, चित्रा, स्वाति, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढा, उत्तराषाढा, श्रवण र धनिष्ठामा हराएको वस्तु अरुका हातमा देखिञ्छ। शतभिषा, पूर्वभद्रपद, उत्तरभद्रपद, रेवती, अश्विनी र भरणी नक्षत्रमा हराएको वस्तु आँफ्नै घरमा देखिञ्छ। कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य (तिष्य) र अश्लेषा इ नक्षत्रमा हराएको वस्तु देखिँदैन र पाँइँदैन पनि।

चौरप्रश्नचक्र (नक्षत्रानुसारि)				**प्रश्नलग्नात् चौरज्ञानम्**		**प्रश्नलग्नअनुसार चोरको उमेर जान्ने रीति**	
अन्धलोचन	**मन्दलोचन**	**मध्यलोचन**	**सुलोचन**	प्रश्न-लग्न १	ब्राह्मणः	**प्रश्न लग्नको स्वामी**	**चोरको वय (उमेर)**
धनिष्ठा	हस्त	आर्द्रा	स्वाति	२	क्षत्रियः	शुक्र	युवक
पुष्य (तिष्य)	उत्तराषाढा	मघा	पुनर्वसु	३	वैश्यः	बुध	बालक
रोहिणी	अनुराधा	पूर्वभद्रपद	श्रवण	४	शूद्रः	बृहस्पति	अधबैंसे
पूर्वाषाढा	शतभिषा	चित्रा	कृत्तिका	५	स्वजनः	मङ्गल	तरुण
विशाखा	अश्लेषा	ज्येष्ठा	उत्तरभद्रपद	६	कुलाङ्गना (कुलस्त्री)	शनि	बुडो
उत्तरफल्गुनी	अश्विनी	अभिजित्	मूलबर्हणी	७	पुत्रः/भ्राता (भाइ)	सूर्य	प्रौढ
रेवती	मृगशीर्ष	भरणी	पूर्वफल्गुनी	८	भृत्यः (नोकर)	चन्द्रमा	कुमार
शीघ्रं लभ्यते *(छिटै पाइने)*	***बहुयत्नेन लभ्यते*** *(धेरै प्रयत्नले पाइने)*	***दूराच् छ्रूयते*** *(टाडाबट सुनिने)*	***न श्रूयते न प्राप्यते*** *(नसुनिने, नपाइने)*	९	कुलाङ्गना		
				१०	शत्रुः		
पूर्व	**दक्षिण**	**पश्चिम**	**उत्तर**	११	मूषकः (मुसो)		
दिन ४	३	६४	०	१२	भूमिगतः (भैँमा पुरिएको)		

(४०) विंशोत्तरीयदशान्तर्दशा-चक्र

सूर्य (६ वर्ष)				चन्द्र (१० वर्ष)				मङ्गल (७ वर्ष)			
कृ. उफ. उषा.				रोहि. हस्त श्र.				मृग. चित्रा धनि.			
ग्रह	व	मा	दि	ग्रह	व	मा	दि	ग्रह	व	मा	दि
सू	०	३	१८	च	०	१०	०	म	०	४	२७
च	०	६	०	म	०	७	०	रा	१	०	१८
म	०	४	६	रा	१	६	०	वृ	०	११	६
रा	०	१०	२४	वृ	१	४	०	श	१	१	९
वृ	०	९	१८	श	१	७	०	बु	०	११	२७
श	०	११	१२	बु	१	५	०	के	०	४	२७
बु	०	१०	६	के	०	७	०	शु	१	२	०
के	०	४	६	शु	१	८	०	सू	०	४	६
शु	१	०	०	सू	०	६	०	च	०	७	०

राहु (१८वर्ष)				गुरु (१६ वर्ष)				शनि (१९ वर्ष)			
आर्द्रा स्वाति शत.				पुन. वि. पूभ.				तिष्य अनु. उभ.			
ग्रह	व	मा	दि	ग्रह	व	मा	दि	ग्रह	व	मा	दि
रा	२	८	१२	वृ	२	१	१८	श	३	०	३
वृ	२	४	२४	श	२	६	१२	बु	२	८	९
श	२	१०	६	बु	२	३	६	के	१	१	९
बु	२	६	१८	के	०	११	६	शु	३	२	०
के	१	०	१८	शु	२	८	०	सू	०	११	१२
शु	३	०	०	सू	०	९	१८	च	१	७	०
सू	०	१०	२४	च	१	४	०	म	१	१	९
च	१	६	०	म	०	११	६	रा	२	१०	६
म	१	०	१८	रा	२	४	२४	वृ	२	६	१२

बुध (१७ वर्ष)				केतु (७ वर्ष)				शुक्र (२० वर्ष)			
अश्ले. ज्ये. रेव.				मघा मूल अश्वि.				पूफ.पूषा.भर.			
ग्रह	व	मा	दि	ग्रह	व	मा	दि	ग्रह	व	मा	दि
बु	२	४	२७	के	०	४	२७	शु	३	४	०
के	०	११	२७	शु	१	२	०	सू	१	०	०
शु	२	१०	०	सू	०	४	६	च	१	८	०
सू	०	१०	६	च	०	७	०	म	१	२	०
च	१	५	०	म	०	४	२७	रा	३	०	०
म	०	११	२७	रा	१	०	१८	वृ	२	८	०
रा	२	६	१८	वृ	०	११	६	श	३	२	०
वृ	२	३	६	श	१	१	९	बु	२	१०	०
श	२	८	९	बु	०	११	२७	के	१	२	०

(४१) त्रिभागीयदशान्तर्दशा-चक्र

सूर्य (४ वर्ष)				चन्द्र (६।८ वर्ष)				मङ्गल (४।८वर्ष)			
कृ. उफ. उषा.				रो. हस्त श्र.				मृ. चित्रा धनि.			
ग्रह	व	मा	दि	ग्रह	व	मा	दि	ग्रह	व	मा	दि
सू	०	२	१२	च	०	६	२०	म	०	३	८
च	०	४	०	म	०	४	२०	रा	०	८	१२
म	०	२	२४	रा	१	०	०	वृ	०	७	१४
रा	०	७	६	वृ	०	१०	२०	श	०	८	२६
वृ	०	६	१२	श	१	०	२०	बु	०	७	२८
श	०	७	१८	बु	०	११	१०	के	०	३	८
बु	०	६	२४	के	०	४	२०	शु	०	९	१०
के	०	२	२४	शु	१	१	१०	सू	०	२	२४
शु	०	८	०	सू	०	४	०	च	०	४	२०

राहु (१२ वर्ष)				गुरु (१०।८ वर्ष)				शनि (१२।८ वर्ष)			
आ. स्वाति शत.				पुन. विशा. पूभ.				तिष्य अनु. उभ.			
ग्रह	व	मा	दि	ग्रह	व	मा	दि	ग्रह	व	मा	दि
रा	१	९	१८	वृ	१	५	२	श	२	०	२
वृ	१	७	६	श	१	८	८	बु	१	९	१६
श	१	१०	२४	बु	१	६	४	के	०	८	२६
बु	१	८	१२	के	०	७	१४	शु	२	१	१०
के	०	८	१२	शु	१	९	१०	सू	०	७	१८
शु	२	०	०	सू	०	६	१२	च	१	०	२०
सू	०	७	६	च	०	१०	२०	म	०	८	२६
च	१	०	०	म	०	७	१४	रा	१	१०	२४
म	०	८	१२	रा	१	७	६	वृ	१	८	८

बुध (११।४ वर्ष)				केतु (४।८ वर्ष)				शुक्र (१३।४ वर्ष)			
अश्ले. ज्ये. रेव.				मघा मू. अश्वि.				पूफ.पूषा.भर.			
ग्रह	व	मा	दि	ग्रह	व	मा	दि	ग्रह	व	मा	दि
बु	१	७	८	के	०	३	८	शु	२	२	२०
के	०	७	२८	शु	०	९	१०	सू	०	८	०
शु	१	१०	२०	सू	०	२	२४	च	१	१	१०
सू	०	६	२४	च	०	४	२०	म	०	९	१०
च	०	११	१०	म	०	३	८	रा	२	०	०
म	०	७	२८	रा	०	८	१२	वृ	१	९	१०
रा	१	८	१२	वृ	०	७	१४	श	२	१	१०
वृ	१	६	४	श	०	८	२६	बु	१	१०	२०
श	१	९	१६	बु	०	७	२८	के	०	९	१०

योगिनीनां तान्त्रिकमन्त्राः— म– ॐ ह्रीं मङ्गले मङ्गलायै स्वाहा। पि– ॐ ग्लौं पिङ्गले वैरिकारिणि प्रसीद फट् स्वाहा। धा– ॐ धनदे धान्यकायै स्वाहा। भ्रा– ॐ भ्रामरि जगतामधीश्वरि भ्रामर्यै क्लीं स्वाहा। भ– ॐ भद्रिके भद्रं देहि अभद्रं नाशय स्वाहा। उ– ॐ उल्के मम रोगं नाशय जम्भय स्वाहा। सि– ॐ ह्रीं सिद्धे सर्वमानसं साधय स्वाहा। स– ॐ ह्रीं सङ्कटे मम रोगं नाशय स्वाहा।

(४२) योगिनीदशान्तर्दशा-चक्र

आर्द्रा चित्रा श्रवण **चन्द्र १**	**मङ्गला**	म.	पि.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	सं.
	मास	०	०	१	१	१	२	२	२
	दिन	१०	२०	०	१०	२०	०	१०	२०
पुन.स्वाति धनिष्ठा **सूर्य २**	**पिङ्गला**	पि.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	सं.	म.
	मास	१	२	२	३	४	४	५	०
	दिन	१०	०	२०	१०	०	२०	१०	२०
तिष्य विशा. शत. **बृहस्पति ३**	**धान्या**	धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	सं.	म.	पि.
	मास	३	४	५	६	७	८	१	२
	दिन	०	०	०	०	०	०	०	०
अश्वि.अश्ले. अनु. पूभ. **मङ्गल ४**	**भ्रामरी**	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	सं.	म.	पि.	धा.
	मास	५	६	८	९	१०	१	२	४
	दिन	१०	२०	०	१०	२०	१०	२०	०
भरणी मघा ज्येष्ठा उभ. **बुध ५**	**भद्रिका**	भ.	उ.	सि.	सं.	म.	पि.	धा.	भ्रा.
	वर्ष	०	०	०	१	०	०	०	०
	मास	८	१०	११	१	१	३	५	६
	दिन	१०	०	२०	१०	२०	१०	०	२०
कृ. पूफ. मूल रेवती **शनि ६**	**उल्का**	उ.	सि.	सं.	म.	पि.	धा.	भ्रा.	भ.
	वर्ष	१	१	१	०	०	०	०	०
	मास	०	२	४	२	४	६	८	१०
	दिन	०	०	०	०	०	०	०	०
रोहि. उफ. पूषा. **शुक्र ७**	**सिद्धा**	सि.	सं.	म.	पि.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.
	वर्ष	१	१	०	०	०	०	०	१
	मास	४	६	२	४	७	९	११	२
	दिन	१०	२०	१०	२०	०	१०	२०	०
मृग हस्त उषा. **राहु केतु ८**	**सङ्कटा**	सं.	म.	पि.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.
	वर्ष	१	०	०	०	०	१	१	१
	मास	९	२	५	८	१०	१	४	६
	दिन	१०	२०	१०	०	२०	१०	०	२०

(४३) ग्रहयज्ञः (नवग्रहका वैदिक मन्त्र, समिधा र दक्षिणा)

ग्रह	वैदिक मन्त्र	समिधा	दक्षिणा
सूर्यः	आ कृष्णेन रजसा –मा.वा.शु.य.वे.म.सं. ३३।४३।	अर्कः (आँक)	धेनुः (लैनि गाइ)
चन्द्रः	इमन् देवाः ९।४०।	पलाशः (पलाँस)	शङ्खः
मङ्गलः	अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत् ३।१२।	खदिरः (खयर)	अनड्वान् (गोरु)
बुधः	उद्‌द्बुद्ध्यस्वाग्नें १५।५४।	अपामार्गः (दत्तिउन)	हेम (सुन)
बृहस्पतिः	बृहस्पते ऽअति २६।३।	पिप्पलः (पिपल)	वासः (वस्त्र)
शुक्रः	अन्नात्‌त्परिस्स्रुतो रसम् १९।७५।	उदुम्बरः (डुम्रि)	हयः (घोडा)
शनिः	शन्नो देवीः ३६।१२।	शमी	कृष्णा गौः (कालि गाइ)
राहुः	काण्डात्‌त्काण्डात्‌त् प्ररोहन्ती १३।२०।	दूर्वा (दुबो)	आयसम् (फलाम)
केतुः	केतुङ्कृण्वन्नकेतवे २९।३७।	कुशाः	छागः (बोको)

श्रीकामः शान्तिकामो वा ग्रहयज्ञं समाचरेत्। वृष्ट्यायुःपुष्टिकामो वा तथैवाऽभिचरन्नपि॥
आ कृष्णेन इमन् देवा अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्। उद्‌द्बुद्ध्यस्वेति च ऋचो यथासङ्ख्यं प्रकीर्तिताः॥
बृहस्पते ऽअति यदर्य्यस् तथैव अन्नात्‌त् परिस्स्रुतः। शन्नो देवीस्तथा काण्डात् केतुङ्कृण्वन्निमाँस्तथा॥
अर्कः पलाशखदिरावपामार्गोऽथ पिप्पलः। उदुम्बरः शमी दूर्वा कुशाश्च समिधः क्रमात्॥
धेनुः शङ्खस् तथाऽनड्वान् हेम वासो हयः क्रमात्। कृष्णा गौरायसं छाग एता वै दक्षिणाः स्मृताः॥
—याज्ञवल्क्यस्मृति १।२९५–३००।

द्रष्टव्य— *याज्ञवल्क्यस्मृतिमा राहुको मन्त्र **"काण्डात्‌तत्काण्डात्"** दिइएको छ। अतः शुक्लयजुर्वेदीहरुले एसै मन्त्रको प्रयोग गर्नपर्छ। **"कयानश्चित्र"** अरु कुनै वेदका शाखाका अनुयायीहरुले प्रयोग गर्ने हो।*

ग्रहका तान्त्रिक मन्त्र

ॐ घृणि सूर्याय नमः। ॐ सों सोमाय नमः। ॐ अं अङ्गाराय नमः। ॐ बुं बुधाय नमः। ॐ बृं बृहस्पतये नमः। ॐ शुं शुक्राय नमः। ॐ शं शनैश्चराय नमः। ॐ रां राहवे नमः। ॐ कें केतवे नमः।

(४४) संस्कृत भाषा र नेपालि भाषाको शुद्ध उच्चारण र लेखन

संस्कृत भाषाको शुद्ध उच्चारण र लेखन

संस्कृतभाषा मानिसहरुको देवतासितको व्यवहारमा पनि प्रयुक्त हुने भाषा भएकाले संस्कृतमा शुद्ध उच्चारणको धेरै महत्त्व छ। मुख्यतया यज्ञादिमा प्रयुक्त हुने मन्त्रहरुमा शुद्ध उच्चारण र शुद्ध प्रयोग आवश्यक मानिएकाले वैदिक संस्कृतको र लौकिक संस्कृतको पनि उच्चारण शुद्ध राख्नु वेदको पहिलो अङ्ग शिक्षाशास्त्रको काम हो।

संस्कृतको वा वेदको उच्चारणलाइ शुद्ध राख्न पुराना प्रातिशाख्य जस्ता शिक्षा-ग्रन्थहरुमा वर्ण, स्वर, मात्रा, बल, साम र सन्तान इ विषयहरुको प्रतिपादन भएको छ। संस्कृतभाषाको शुद्ध उच्चारण गर्नका निम्ति ध्यान दिन पर्ने कुराहरु तल देखाइञ्छ।

ह्रस्व-दीर्घ-प्लुत स्वरहरुको उच्चारण

(क) **ह्रस्व–** सामान्य स्वरको राम्ररी उच्चारण गर्न सम्म सकिने लघुतम स्वरूप अर्थात् मात्रा-स्वर ह्रस्व भनिञ्छ। एस्ता स्वर अ, इ, उ, ऋ, लृ छन्। ए र ओ पनि कतैकतै ह्रस्व मानिएका छन्।

(ख) **दीर्घ–** सामान्य स्वरको द्विगुणित (दोब्बर लामो) रूप र यस्ता द्विगुणित स्वरको जति परिमाण (लम्बाइ) हुञ्छ तेति नै परिमाण हुने सन्ध्य (जोल्टे) स्वरहरु पनि दीर्घ भनिञ्छन्। अ२ (आ), ई, ऊ, ॠ, ॡ, ए, ऐ, ओ, औ इ वर्णहरु दीर्घ छन्।

(ग) **प्लुत–** सामान्य स्वरको एकवर्णीभूत त्रिगुणित (तेब्बर लामो) रूप र एस्ता त्रिगुणित स्वरको जति परिमाण हुञ्छ तेत्ति नै परिमाण हुने सन्ध्य स्वरहरु पनि प्लुत भनिञ्छन्। अ३, अँ३, इ३, इँ३, उ३, उँ३ इत्यादि वर्णहरु प्लुत छन्।

संस्कृत पड्दा-पडाउँदा एसैअनुसार **ह्रस्व, दीर्घ र प्लुत**को ठीक-ठीक उच्चाारण गर्न-गराउन आवश्यक छ।

संस्कृतका विशिष्ट वर्णहरु

संस्कृत पढ्दा-पढाउँदा नेपालि भाषामा नभएका (नेपालि भाषा मातृभाषा भएका मानिसहरुले नेपालि भाषा बोल्दा प्रयोग नगर्ने) ऋ, ऌ, व जस्ता वर्णहरु र क्ष, ज्ञ जस्ता संयुक्त व्यञ्जन भएका अक्षरहरुको उच्चारण गर्न सिक्न-सिकाउन विशेष प्रयास गर्न पर्छ। नत्र नेपालिका प्रभावले संस्कृतमा ति वर्णको उच्चारण गर्दा अशुद्ध उच्चारण हुन जान्छ।

ऋ— पाणिनिको "कृपो रो लः" एस सूत्र (अष्टाध्यायी ८।२।१८) बाट ऋ वर्णका पेटमा (बिचमा) रेफ थियो भन्ने कुरा देखिञ्छ। तेस सूत्रको व्याख्या गर्दा काशिका वृत्तिमा पनि 'र भन्दा ऋकारभित्र रएको रेफ तथा ल भन्दा ऌकारभित्र रएको लकार पनि लिइनाले कल्प्ता, क्लृप्त इत्यादि रूप प्रामाणिक हुन्' भनिएको छ। एस भनाइबाट पनि ऋकारका र ऌकारका पेटमा क्रमैले रेफ र लकार इ व्यञ्जन स्वर-भागसित घुलमिल भएर रहने कुरा बुझिञ्छ।

संस्कृत भाषाका उच्चारणमा ऋ वर्णका अगाडि र पछाडि स्वर भाग र माझमा रेफ (र) एकवर्णीभूत रूपमा रहेको कुरा स्पष्ट हुञ्छ। ति भाग कुन स्वरका थिए भन्ने प्रश्न उठ्छ। त्यो अ-को निकटको वर्ण भएको बुझिञ्छ। ऋमा अगाडि पनि अजस्तो स्वर रहेकाले तेसको सङ्केत हुने गरेर **ॠ** लिपि बनाउन उचित देखिञ्छ (कौण्डिन्न्यायनशिक्षा, २०४९, प्रस्ताविका, पृ. आ)। अतः हामिले संस्कृतपाठ्यपुस्तक **व्यावहारिकं संस्कृतम्** (प्रथमं पुस्तकम्, प्र.सं. २०५०, पृ. ४; बालपुस्तकम्, २०७८, पृ. १२)मा तेस्तो **ॠ** लिपिको समावेश गरिएको छ।

नेपालि मातृभाषाभाषीहरुले संस्कृत पढ्दा ऋषि (अ्र्अ्षि) ऋण (अ्र्अ्ण) कृष्ण (क्अ्र्अ्ष्ण) कृपा (क्अ्र्अ्पा) इत्यादिको उच्चारण गर्न प्रयत्नपूर्वक सिक्नु पर्ने देखिञ्छ।[1]

ऌ— यो पनि संस्कृत भाषाको विशिष्ट वर्ण हो। एसको उच्चारण नेपालिहरुले ल्रि भनेर गर्ने गरेको पाइञ्छ। माथिको ऋकारको विवेचनाबाट एस ऌकारको उच्चारण एउटै वर्ण बनेका अ्ल्अ् जस्तो हुने कुरा स्पष्ट हुञ्छ। अतः एसमा पनि अगाडि पनि अको सङ्केत हुने गरेर **ॡ** लिपि बनाउन उचित देखिञ्छ (कौण्डिन्न्यायनशिक्षा, २०४९, प्रस्ताविका, पृ. आ)। अतः हामिले संस्कृत पाठ्यपुस्तक **व्यावहारिकं संस्कृतम्** (प्रथमं पुस्तकम्, प्र.सं. २०५०, पृ. ५; बालपुस्तकम्, २०७८, पृ. १३) मा पनि तेस्तो **ॡ** लिपिको समावेश गरिएको छ।

अनुस्वार— अनुस्वार ङ-ञ-ण-न-म-श्रुतिभन्दा भिन्दै अयोगवाह वर्ण हो। यो स्वर र व्यञ्जन दुबै भन्दा विलक्षण नासिक्य श्रुति हो। यो संस्कृत भाषामा श, ष, स, ह पर हुँदा नित्य र अन्य सबै व्यञ्जनहरु पर हुँदा पनि विकल्पले प्रयुक्त हुञ्छ।

विसर्ग— ऊष्मा भनेको वायु (सास) हो। जसको उच्चारण गर्दा उच्चारणस्थानले र करणले पीडित भएको वर्णजनक वायु सुसाउँछ त्यो वर्ण ऊष्मा वा ऊष्म-वर्ण भनिञ्छ। विसर्ग पनि ऊष्मा हो। एसको उच्चारण सास फालेर गर्नुपर्छ। संस्कृत भाषामा विसर्गको धेरै प्रयोग पाइञ्छ। नेपालि भाषामा पनि कुनै न कुनै रूपमा विसर्ग पाइञ्छ।

ञ— पञ्च, काञ्छो, मञ्जन, झञ्झट इत्यादि पदको संयुक्त अनुनासिक व्यञ्जन ञकार हो। **न**मा र माथिका शब्दहरुमा आएका व्यञ्जनमा (**ञ**मा) स्थान-करणमा स्पष्ट भेद छ। **ञ** तालव्य छ। एसको उच्चारण गर्दा जिब्राले दन्तमूलमा छुँदैन। जिब्राको मध्याग्र भागले कठिन तालुमा छुञ्छ। अलिलि गैरिएर विचार र अभ्यास गरेमा 'पञ्च' शब्दको र 'दन्त' शब्दको अनुनासिक व्यञ्जनका श्रुतिहरुमा भेद पाउन सकिञ्छ। नेपालिको परम्परागत वर्णमालामा गोर्सिङ्ङे ञ लिपि उपस्थित पनि छ। साथै चवर्गको वर्ण पर भएका नकारजस्ता सुनिने अनुनासिक व्यञ्जनहरु चवर्गका पञ्चम वर्ण हुन् र तिनलाइ गोर्सिङ्ङे ञलिपिले सङ्केतित गर्नपर्छ भन्ने निरपवाद नियम मान्दा नेपालिका लेखाइमा धेरै जटिलता पनि आउँदैन, उल्टो सरलता नै बढ्छ। **अतः चवर्गसित संयुक्त भएको पञ्च इत्यादिमा पाइने नकार जस्तो सुनिने अनुनासिक व्यञ्जनलाइ न-भन्दा छुट्टै वर्ण चवर्गको पञ्चम वर्ण ञ मान्नु नै उचित छ।**[2]

---

१. ऋकारको विस्तृत विवेचना **नेपाली वर्णोच्चारणशिक्षा (२०३१)** मा छ (पृ.२३०-२४५)।

२. आधुनिक नेपालीमा ञकारश्रुति र गोर्सिङ्ङे ञ लिपि, **नेपाली वर्णोच्चारणशिक्षा**, पृ. २९९।

नेपालि भाषाको उच्चारण र लेखन

नेपालि भाषा देववाणी नभएर लोकभाषा भएकाले संस्कृतको उच्चारणलाइ झैँ नेपालिका उच्चारणलाई सधैँ एकै रूपमा राख्नु असम्भव छ। एसमा नजानिँदो परिवर्तन भै नै रहञ्छ र एसमा रोक लाउनु असम्भव छ; तेसो गर्नु आवश्यक पनि छैन। वेद पढ्ने व्यक्तिहरुमा र यज्ञमा प्रयुक्त हुने संस्कृतको उच्चारण गर्नेहरुमा दोषहरुको अभाव र गुणहरु हुनपर्छ भने झैँ नेपालि भाषाका सबै प्रयोक्ताहरुमा ति दोषहरुको अभाव र गुणहरु हुनैपर्छ भन्न पनि सकिँदैन। यो त लोकभाषा भएकाले एसको त लोकमा व्यक्तिका स्वभावअनुसार प्रयोग भै रहञ्छ। तसर्थ नेपालि शिक्षाशास्त्र (वर्णोच्चारणशिक्षा)ले नेपालिहरुका उच्चारणमा सामान्यतया पाइने वर्णहरुको विवेचना र वर्गीकरण गर्ने र तेसबाट नेपालिको लेखाइलाइ श्रुतिको अनुगामी र सजिलो बनाउने काममा सहयोग गर्ने उद्देश्य राख्छ। एसबाट नेपालि मातृभाषा नभएका नेपालिहरुलाइ पनि नेपालि उच्चारण र लेखाइ सिक्न धेरै सजिलो पर्छ। एसका अध्ययनबाट अध्येतामा वर्गीकरण-बुद्धिको वा अन्वय-व्यतिरेक-ज्ञानशक्तिको र अरु विचार-शक्तिको पनि विकासमा सहयोग मिल्छ। तेसैले गणित र व्याकरणले झैँ नै एसले पनि सामान्यशिक्षामा स्थान लिन सक्छ। संस्कृत-व्याकरणको र नेपालि व्याकरणको उद्देश्यमा रहेका भेदमा जागरूक भए झैँ नै संस्कृत शिक्षाशास्त्रको र नेपालि शिक्षाशास्त्रका उद्देश्यमा रहेका एस भेदमा पनि जागरूक हुनु आवश्यक छ।

वर्णक्रम

हाम्रा प्राचीन शिक्षाशास्त्रीहरुका वर्णवर्गीकरणअनुसारको वर्णमालामा जो वर्णहरुको क्रम छ त्यो युक्तियुक्त छ। कण्ठ, तालु, मूर्धा, दन्त, ओष्ठ इ उच्चारणस्थानहरु भित्रबाट बाहिर प्रायः क्रमशः रहेका छन्। अतः पहिले कण्ठ्य स्वर अ, अनि तालुस्थानी वर्ण इ, अनि ओष्ठस्थानी वर्ण उ इत्यादि क्रमले स्वरहरु राखिएका छन्। तेसै गरि कण्ठ्य कवर्ग, तालव्य चवर्ग, मूर्धन्य टवर्ग, दन्त्य तवर्ग र ओष्ठ्य पवर्गका वर्णहरु क्रमशः राखिएका छन्। तिनमा पनि पहिले अघोष क-ख अनि सघोष ग-घ, तिनमा पनि पहिले अल्पप्राण क र ग अनि महाप्राण ख र घ एस प्रकार युक्तियुक्त रूपमा वर्णहरुको क्रम मिलाइएको छ। ग्रीक वर्णमालामा जस्तै आजभोलिको अङ्ग्रेजी वर्णमालामा चाहिँ ए बी सी डी इ (A, B, C, D, E) इत्यादि स्वर र व्यञ्जन मात्र पनि नछुट्ट्याइ राखिएका कुरामा ध्यान दिएमा संस्कृतको वर्णक्रमको महत्त्व झनै बुझिञ्छ। आजका नेपालि भाषाशास्त्रीहरुले र शिक्षकहरुले पनि इ युक्तिहरुलाइ बुझेर तदनुसार स्थिर गरिएको नेपालि वर्णमालाको वर्णानुक्रम र तेसको व्याख्यान शिक्षार्थीहरुलाइ सुनाउने गरेमा शिक्षार्थीहरुमा वर्गीकरणबुद्धिको र युक्तिप्रियताको विकासमा महत्वपूर्ण सहायता हुनेछ। नेपालि वर्णमालाको वर्णानुक्रमका सबै युक्तिहरु **नेपाली वर्णोच्चारणशिक्षा** पुस्तक (२०३१) मा दिइएका छन्।

नेपालि भाषामा ह्रस्व, दीर्घ र प्लुतको प्रयोग

संस्कृतका शिक्षाग्रन्थहरुमा **ह्रस्व, दीर्घ र प्लुत**को विवेचना राम्ररी गरिएको छ। संस्कृतमा दीर्घ ई ऊ उच्चारण हुने गीत, नीति, शीतल, पूर्ण, चूर्ण इत्यादिको नेपालि भाषामा आउँदा सामान्यतया **ह्रस्व उच्चारण हुने गरेको पाइए पनि नेपालि अन्य धेरै शब्दहरुमा आफ्नै प्रकारले दीर्घ र प्लुतको उच्चारण हुने गरेको छ**[1]**। बाल-बालिकाहरुलाइ ह्रस्व, दीर्घ र प्लुत चिनाइदियो भने नेपालिमा कहाँ ह्रस्व, कहाँ दीर्घ र कहाँ प्लुत उच्चारण भइरहेको छ भनेर उनिहरु आफै सजिलै जान्न सक्तछन् र लेख्न सक्तछन्।** तल लेखिएअनुसार नेपालि भाषाका **ह्रस्व, दीर्घ र प्लुत**को परिचय दिन सकिञ्छ—

---

१. वर्णमालाबाट हटाइएका दीर्घ ई र ऊ नेपालीमा उच्चरित हुँदैनन्?, आमोदवर्धन कौण्डिन्न्यायन, देशसञ्चार (विद्युतीय पत्रिका) २०८० कात्तिक २ ।

(क) **ह्रस्व—** सामान्य स्वरको राम्ररि उच्चारण गर्न सम्म सकिने लघुतम स्वरूप अर्थात् छोटो स्वर ह्रस्व भनिञ्छ। आधुनिक नेपालिमा यस्ता स्वर अ, आ, इ, उ, ए, ओ इ छ वटा छन्।

(ख) **दीर्घ—**सामान्य स्वरभन्दा दोब्बर लामो स्वर र तेसको जति परिमाण हुञ्छ तेति नै परिमाण हुने सन्ध्य (जोल्टे) स्वरहरु तथा तेत्ति नै परिमाण हुने व्यञ्जनहरु दीर्घ भनिञ्छन्। आधुनिक नेपालि भाषामा अ२, आ२, ई, ऊ, ए२, ओ२, अइ्, अउ्, आइ्, आउ्, इउ्, उइ्, एइ्, एउ्, ओइ्, ओउ्, ङ्ङ्ङ्, न्न्न्न्, म्म्म्म्, र्र्र्र्, ल्ल्ल्ल्, स्स्स्स् (ठिङ्ङ्ङ्ङ्ङ, रन्न्न्न्न, झम्म्म्म्म, खर्र्र्र्र्र सल्ल्ल्ल्ल्ल, ढुस्स्स्स्स जस्ता शब्दमा सुनिने लामा ङ, न, म, र, ल, स व्यञ्जनवर्णहरु) इ बाइस वर्णहरु दीर्घ छन्।

(ग) **प्लुत**– सामान्य स्वरको तेब्बर लामो रूप र एस्ता त्रिगुणित स्वरको जति परिमाण हुञ्छ तेत्ति नै परिमाण हुने सन्ध्य स्वरहरु र तेस्ता व्यञ्जनहरु पनि प्लुत भनिञ्छन्। आधुनिक नेपालिमा अ३, अँ३, आ३, आँ३ ए३, ओ३, इत्यादि वर्णहरु प्लुत छन्।

ऋ— ऋ वर्ण नेपालि मातृभाषाभाषीहरुका उच्चारणमा पाइँदैन। संस्कृतबाट आएका ऋषि, ऋण, ऋचा, कृष्ण, कृपा, अमृत प्रभृति शब्दहरुका नेपालिमा आउँदा एसरी परिवर्तन भएको छ :— ऋण—रिसि, ऋण—रिण् वा रिन्, ऋचा—रिचा, कृष्ण—किस्न वा क्रिष्ण, कृपा—क्रिपा, अमृत—अम्रित इत्यादि।

व्यञ्जनद्वित्व— प्रातिशाख्यहरुमा उपलब्ध वर्णहरुको द्वित्व हुने प्रवृत्तिको ज्ञान नेपालिमा संस्कृतबाट आएका शब्दहरुको स्वरूप बुझ्नमा अत्यन्त उपकारक छ।

संस्कृतबाट नेपालिमा आउँदा पूरै उच्चारण फरक परेका संयुक्त अक्षर हुन्– क्ष र ज्ञ। तिनको संस्कृत पढ्दा संस्कृतअनुसार र नेपालि पढ्दा नेपालिअनुसार उच्चारण गर्नु उचित हुञ्छ। यो कुरा बुझेर सबैले शुद्ध उच्चारण गर्ने प्रयत्न गरौँ।

संस्कृत	नेपालि
अक्षरम् /अक्क्षरम्	अच्छेर् /अच्छ्यर्
क्षमा	छ्यमाँ /छेमाँ
ज्ञानम्	ग्याँन्
आज्ज्ञा	आग्ग्याँ
प्रज्ज्ञा	प्रग्ग्याँ

संस्कृतको उच्चारण र नेपालिको उच्चारण फरक परेर आएका प्रमुख वर्णहरु

ऋ, लृ, व, श, ष (चवर्ग— च छ ज झ ञ-सँग **श** र टवर्ग— ट ठ ड ढ ण-सँग **ष**को उच्चारण हुने कुरा चाहिँ संस्कृतमा पनि नेपालिमा पनि उस्तै हुञ्छ।)

संस्कृतमा केइ भिन्न स्वरूप भएका वर्णहरु– आ, ए, ओ (संस्कृतको **आ**-मा दीर्घता हुञ्छ भने **ए**मा अ र इ तथा **ओ**मा अ र उ को मिश्रण हुञ्छ)।

अक्षर-विभजन-सिद्धान्त

एस विषयमा पनि संस्कृतका शिक्षाग्रन्थमा धेरै लेखिएको छ। तेसको उपयोग गरेर जिम्दो नेपालि भासा सिद्धान्तमा अक्षर-विभाग-सिद्धान्तलाइ स्पष्ट गरिएको छ। संस्कृतको अक्षरसिद्धान्त नेपालिमा अक्षरशः नमिलेपनि तेसको अध्ययन गरेर नेपालि भाषामा मिल्ने कुराहरुलाई जिम्दो नेपालि भासा सिद्धान्तमा समावेश गरिएको छ। द्वित्व भएका व्यञ्जनहरुमा पहिलो व्यञ्जनको अगिल्लो स्वरको अङ्ग भएर उच्चारण हुञ्छ भने दोस्रो व्यञ्जनको उच्चारण पछिल्लो स्वरको अङ्गका रूपमा हुञ्छ।

पिताजी सुगृहीतनामा शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायनले लेख्नुभएको **जिम्दो नेपालि भासा** ग्रन्थको पैलो खण्ड (२०३०) मा नेपालि भाषाभाषीहरुका स्वाभाविक उच्चारणमा रहेका

व्यञ्जनद्वित्व र अक्षरविभाजनलाइ समेत यथार्थ रूपमा देखाइएको छ; जस्तै— **युक्.ति.युक्.त** (पृ.१) **प्रग्.ग्याँ.प्र.तिष्.ठान्, बक्.तब्.ब्य.ह.रु** (पृ.२) इत्यादि। नेपालि भाषाको इतिहासमा अक्षरविभाजनको यस्तो प्रतिपादन सर्वप्रथम एसै ग्रन्थमा भएको हो। वि.सं. २०५० तिरबाट उच्च माध्यमिक विद्यालय र त्रिभुवन विश्वविद्यालयका नेपालि विषयका पाठ्यक्रममा यो अक्षरविभाजन पढाउन थालिएको पाइञ्छ। पछिपछि नेपालि विषयका तलका कक्षाहरुमा पनि यो उच्चारणअनुसारको अक्षरविभाजनसिद्धान्त सिकाउन थालिएको पाइञ्छ।

चल्तिका सर्खारि नेपालि व्याकरणका ह्रस्व-दीर्घादिका प्रायः सबै नियम अप्रामाणिक, निराधार र काल्पनिक हुन्

चल्तिका नेपालि व्याकरणका ह्रस्व-दीर्घका नियम; ञकार-नकारका र णकार-नकारका नियम; ब-वका नियम; श-ष-सका नियम; केइको सट्टा केही, एस्तोको सट्टा यस्तो, एतिको सट्टा यति, इ-को सट्टा यी, एसलाइको सट्टा यसलाई, एसलेको सट्टा यसले, एसकाको सट्टा यसका लेख्नुपर्छ भन्ने नियम, तत्सम-तद्भवका नियम, अरु विभिन्न नियम समेत धेरै कुरा अप्रामाणिक तथा निराधार हुन् र शासकीय बलले बलजफ्ति लादिएका तथा लेख्ने-पड्नेलाइ व्यर्थ दुःख दिने र मूर्ख बनाउने नियम हुन्। इ लेख्ने नियमहरु ‘नेपाली भाषा प्रकाशिनी समिति’ले विक्रमसंवत् १९९२ देखि ‘परीक्षामा एसै नियमअनुसार जाँचिञ्छ’ भनेर बलै लागू गराएका हुन्। तिनै नियममा हुलका बलले मनलाग्दि केइ परिवर्तन गरि मोहनराज शर्माका ‘प्रज्ञा नेपालि सन्दर्भ व्याकरण’सम्मका (ने.प्र.प्र. २०७१) कथित व्याकरणले प्रचार गर्ने काम गरिरहेका छन्। यो शोचनीय कुरा हो। वास्तविक व्याकरणको आधार त बोलचालकै भाषा हो। जस्तो बोलिञ्छ तेस्तै लेख्ने हो। वास्तविक वर्णनात्मक व्याकरणले कुनै पनि एक भाषाका शब्दका लोकमा प्रचलित विभिन्न वैकल्पिक रूपहरु सबैलाइ मान्यता दिञ्छ, बलपूर्वक एकरूपता स्थापित गर्ने काम पनि गर्दैन। यास्क, पाणिनि, कात्यायन, पतञ्जलि इत्यादि मुनिद्वारा प्रणीत शास्त्रग्रन्थमा एसै सिद्धान्तको अनुसरण र व्याख्यान गरिएको छ। **जिम्दो-नेपालि-भासा-सिद्धान्त**ले पनि एसै कुराको व्याख्यान गर्दै आएको छ।

नेपालि भाषाको लेखाइलाइ निरर्थक, अवैज्ञानिक र दुराग्रहपूर्ण रीतिले कठिन बनाएर जनसमुदायमा विदेशी भाषाको मोह फैलाउन सबै तहको पठनपाठन अङ्‌ग्रेजि भाषाका माध्यमले गरि नेपालि भाषाको उपयोग नहुने स्थिति ल्याउने षड्यन्त्रबाट राष्ट्रलाइ मुक्त गर्न ढिलो गर्न नहुने कुरामा नेपालिभाषाप्रेमी सबैको र विशेष गरेर प्राज्ञिक क्षेत्रका अरु मान्छेको पनि ध्यान जान पर्छ।[१]

सर्खारि नियमले र तेसैका सुरमा चल्ने अरुका लेखाइले गर्दा पाठकहरुमा परेका बानि-लाइ पनि विचार गरेर मध्यममार्ग अँगालि नेपालि भाषाका लेखनको प्रयोग याहाँ गरिएको छ।

नेपालिको भाषिक शुद्धता

नेपालि भाषाको मूल क्षेत्र पश्चिम सुर्खेतदेखि पूर्व इलामसम्म हो। त्याहाँका नेपालि मातृभाषाभाषी सबैले शुद्ध नेपालि बोल्छन् भन्ने मुख्य सिद्धान्त सबैले बुझ्नुपर्छ। तेसैलाइ लेखाइमा उतार्ने र तेसै अनुसार व्याकरण बनाउन पर्ने हो। शब्दमा निश्चित विकल्प स्वाभाविक रूपमा नै हुञ्छन्। नेपालिका लेखाइका सम्बन्धमा “जे लेखे पनि हुने” भनेको पनि सुनिञ्छ। त्यो ठिक हैन। “संस्कृतअनुसार लेखे पनि हुने नेपालि उच्चारणअनुसार लेखे पनि हुने” भन्नु ठिक हो। जस्तै संस्कृतअनुसार “शिक्षा र शिक्क्षा” दुबै ठिक हुन् भने नेपालि उच्चारणअनुसार “सिच्छ्या” ठिक हो। अरु लेखाइ विनाआधारका हुन्। ति लेखाइ र तेस्तै खालका अहिले चलाइएका धेरै लेखाइ वि.सं. १९९२ देखि बलपूर्वक लागू गरिएका विनाआधारका लेखाइ हुन्। एस्तो कुरा विद्यार्थीहरुलाइ पनि बुझाउनु उपयुक्त हुञ्छ।

---

१. भानुभक्तकृत भाषारामायण (सुलभ संस्करण, २०७३), भूमिका, पृ. १४-१५।

नेपालि भाषाका शिक्षकहरुको कर्तव्य

विद्यार्थीहरुलाइ ह्रस्व भनेको छोटो, दीर्घ भनेको लामो उच्चारण हो भनी सिकाउनु पर्छ। उच्चारण बुझेर ह्रस्व लेखे पनि नम्बर नकाटौँ। तालव्य श सिटिबजाएजस्तो गरेर उच्चारण गरिन्छ। ष जिब्रो फर्काएर मूर्धन्य बनाएर उच्चारण गरिन्छ। स दन्त्य श्रुति हो। एसो भनेर राम्ररी ३ थरिका स सिकाउनुपर्छ। संस्कृत उच्चारणअनुसार भाषा र नेपालि उच्चारण-अनुसार भासा जे लेखे पनि अङ्क (नम्बर) नकाटौँ। विद्यार्थीको संस्कृतशब्दभण्डार र अभिव्यक्ति-क्षमता बढाउने कुरामा तथा साहित्यिक लेखनको क्षमता बढाउने कुरामा जोड दिऔँ।

संस्कृत अथवा नेपालिअनुसारका शुद्ध रूपहरु–

शान्ति वा सान्ति (शान्ती, षान्ति, षान्ती हैन)

अनुसरण (अनूसरण, अनुशरण, अनुषरण हैन)

शिखर वा सिखर (षिखर, शीखर, सीखर हैन)

वीर वा बिर (विर होइन)

वृद्ध, ब्रिद्ध वा ब्रिद्द (व्रीद्ध, व्रीद्द होइन)

भूमि अथवा भुमि

कीर्ति अथवा किर्ति (कृति, कीर्ती, किर्ती होइन)

शास्त्र अथवा सास्त्र वा सास्तर् (षास्त्र, शाश्त्र, साश्त्र होइन)

शिव अथवा सिब (शीव, सीव, शिब, षिव होइन)

विषय अथवा बिसय (बिषय, विशय, बीषय, बीशय होइन)।

विशेष अथवा बिसेस (बिशेश, विसेस, बीषेस, बिषेश होइन)।

पक्ष अथवा पच्छ्य ।

क्षेत्र अथवा छेत्र।

ज्ञान अथवा ग्याँन।

आज्ञा अथवा आग्याँ आदि।

संयुक्त अक्षर

उच्चारण गरिने ध्वनिहरूलाइ (श्रुतिहरूलाइ) सङ्केत गर्न लिपिहरुको प्रयोग गरिने हो। ध्वनि नै प्रधान हो, लिपि त तेसको सङ्केत मात्र हो। यो कुरा सबैले बुझ्नुपर्छ। नेपालि भाषा–व्याकरणका विज्ञहरुले यो कुरा राम्ररि हृदयङ्गम गर्न नसकेकोजस्तो बुझिन्छ। उनिहरु ध्वनि (श्रुति) वा वर्ण र लिपिको भेद नबुझ्ने भएका छन्। तेसैले "विद्या लेखे शुद्ध, खुट्टो काटेर विद्‌या लेखे अशुद्ध, पद्म लेखे शुद्ध, पद्‌म लेखे अशुद्ध, वृद्धि लेखे शुद्ध, वृद्‌धि लेखे अशुद्ध" इत्यादि भन्ने प्राध्यापक तहमा पुगेका नेपालि विषयकै शिक्षकसमेत देखिन्छन्। दुबैथरि लेखाइ शुद्ध हुन्, दुबैथरिको उच्चारण उस्तै हुन्छ र उक्त लेखाइहरु लिपिका भेद मात्र हुन् भन्ने कुराचाहिँ उनिहरुले बुझ्न नपाएकोजस्तो देखिन्छ। साथै उच्चारणअनुसार संयोगादि व्यञ्जनको द्वित्व गरेर "कन्न्या विद्द्या" इत्यादि लेख्दा पनि अशुद्ध नै लेखेको ठान्नेहरु पनि छन्। संयुक्त लिपिका प्रयोगका शैलीले झुक्किएर तथा कुन वर्ण पहिला उच्चारण हुन्छ र कुन वर्ण पछि उच्चारण हुन्छ भन्नेसम्म पनि पत्तै नपाइ अशुद्ध लेखाइ र उच्चारण "बुध्द" चाहिँ शुद्ध हो, शुद्ध लेखाइ र उच्चारण "बुद्ध" (बुद्‌ध) चाहिँ अशुद्ध हो भन्ने पनि देखिएका छन्। संस्कृत र नेपालि वर्णमालाको प्रशिक्षण सबैलाइ दिनुपर्ने देखिन्छ। एस कार्यमा योगदान दिन चाहने महानुभावहरु अगाडि आउन आवश्यक छ॥

(४५) आशौचविचार (जुठो-सूतकको वैदिक नियम)

कतिपय नेपालि पञ्चाङ्गहरुमा (पात्राहरुमा) जुठो-सुतकको व्यवस्था पनि दिने गरिएको देखिञ्छ। तर त्यो कुन शास्त्रका आधारमा दिइयेको हो खुलाइयेको पाँइदैन। **माध्यन्दिनीय-वाजसनेयि-शुक्लयजर्वेद-शाखाध्यायि र तदनुयायीहरुले जुठो-सूतकका विषयमा मुख्य रूपमा पारस्करगृह्यसूत्रको व्यवस्थाको अनुसरण गर्न पर्छ। तेसपछि याज्ञवल्क्यस्मृतिका विशेष कुरा अँगाल्न पर्छ। अरु स्मृति-पुराणका कुरा पारस्करगृह्यसूत्रका र याज्ञवल्क्यस्मृतिका अनुकूल भएमा मात्र ग्राह्य हुञ्छन्।** एस विषयमा वाराणसीको सम्पूर्णानन्द-संस्कृतविश्वविद्यालयको अनुसन्धानपत्रिका सारस्वती सुषमामा (५२ वर्ष, ३–४ अङ्क, २०५४, मार्गशीर्ष-फाल्गुन) प्रकाशित हाम्रा **"पारस्करगृह्यसूत्रोक्ताशौचनिरूपणम्"** भन्ने निबन्धमा, काठमाण्डुको उन्नयन भन्ने त्रैमासिक पत्रिकाका ४१ पूर्णाङ्कमा (२०५८ कात्तिक-मुङ्सिर-पुस) प्रकाशित **"हिन्दुधर्ममा आशौच : एक विवेचनात्मक शास्त्रीय विवरण"** भन्ने हाम्रा निबन्धमा, **'वैदिक धर्म मूल रूपमा'** भन्ने हाम्रा ग्रन्थका [द्वितीय संस्करण, २०६२, पृ. ४९४–४९८, पृ. ५९०–६०४; तृतीय संस्करण, २०८०, पृ. ७८६–७९०, पृ. ९०२–९१५], **'वैदिक हिन्दु धर्मसंस्कृति'** भन्ने हाम्रा ग्रन्थमा (२०६५) [पृ. १९०–१९१, पृ. २२९–२३४] र **'गौतमधर्मसूत्र'** (नेपालि-व्याख्यायुक्त, २०६९) भन्ने हाम्रा ग्रन्थमा [पृ. १८२–१८५, पृ. १९२–२०१] पनि विशेष विचारविमर्श गरिएको छ। तेसै आधारमा याँहाँ आशौचको विवरण प्रस्तुत गरिञ्छ।

आशौच — शुचि भनेको शुद्ध भनेको हो। **अशुचि** भनेको **अशुद्ध** भनेको हो। अशुचिको भावलाइ **आशौच** भञ्छन्। आशौचको सामान्य अर्थ देवकार्य, पितृकार्य र ब्रह्मकार्य गर्नमा अयोग्यता हो। एस्तो अयोग्यता अरु कारणले पनि आउन सक्छ तापनि आशौच शब्द कसैका जन्मले वा मृत्युले गर्दा आउने अयोग्यतालाइ बुझ्फाउँन रूढ भएको छ।

जननाशौच — जननाशौचकाल (सुत्केरो रहने अवधि)– जननाशौच आमा-बाबुलाइ मात्र लाग्ने कुरा शास्त्रका विभिन्न ग्रन्थहरुमा उल्लिखित छ। गौतमधर्मसूत्रमा जननाशौच सबै सपिण्डलाइ लाग्ने अथवा आमाबाबुलाइ मात्र लाग्ने अथवा आमालाइ मात्र लाग्ने कुरा बताइएको छ[1]। गौतमधर्मसूत्रका व्याख्याकार हरदत्तले मिताक्षरामा एस व्यवस्थाको समर्थन गर्ने व्याघ्रपाद[2], अङ्गिगरा[3], शङ्खलिखित[4], पैठिनसि[5] इत्यादि मुनिहरुका वचन पनि मिताक्षरा वृत्तिमा देखाएका छन्।

याज्ञवल्क्यस्मृतिमा पारस्करगृह्यसूत्रको अनुकूल रूपमा यो विषय प्रतिपादित छ[6]। वासिष्ठ-धर्म-सूत्रमा[7], मनुस्मृतिमा[8], पराशरस्मृतिमा[9] पनि जननाशौच आमा-बाबुलाइ मात्र अथवा आमालाइ मात्र लाग्ने पक्ष पनि देखाइएको छ। बौधायनधर्मसूत्रमा त ऊहापोह गरिकन दश दिन जननाशौच आमा-बाउलाइ मात्र लाग्ने भन्ने निष्कर्ष दिइएको छ[10]। देवीभागवतमा पनि जननाशौच पितामातालाइ मात्र लाग्ने कुरा छ[11]। मनुस्मृतिमा विशेष शुद्धि चाहाने सपिण्डहरुले मत्रै दश दिनसम्म जननाशौच

---

१. **मातापित्रोस् तन् मातुर्वा।**—गौतमधर्मसूत्र २।५।१४।

२. **सूतकं तु सपिण्डानां पित्रोर् वा मातुरेव वा।**—व्याघ्रवचन, मिताक्षरा वृत्ति (गौ.ध.सू.२।५।१४)।

३. **नाऽऽशौचं सूतके प्रोक्तं सपिण्डानां कथंचन।**
मातापित्रोरशौचं स्यात् सूतकं मातुरेव च॥—अङ्गिरोवचन, मिताक्षरा वृत्ति (गौ.ध.सू.२।५।१४)।

४. **जननेऽप्येवम्, तत्र मातापितरावशुची इति, मातेत्येके।**—शङ्खलिखितवचन, मिताक्षरा वृत्ति (२।५।१४)।

५. **जनने सपिण्डाः शुचयो मातापित्रोस् तु सूतकम्।**
सूतकं मातुरेव स्यादुपस्पृश्य पिता शुचिः॥—पैठीनसिवचन, मिताक्षरा वृत्ति (गौ.ध.सू.२।५।१४)।

६. **त्रिरात्रं दशरात्रं वा शावमाशौचमिष्यते। ऊनद्विवर्षे उभयोः सूतकं मातुरेव हि॥**—याज्ञवल्क्यस्मृति ३।१८।

७. **मातापित्रोर् वा, तन्निमित्तत्वान् मातुरित्येके।**—वासिष्ठधर्मसूत्र ४।२१,२२।

८. **सर्वेषां शावमाशौचं मातापित्रोस् तु सूतकम्।**
सूतकं मातुरेव स्यादुपस्पृश्य पिता शुचिः॥—मनुस्मृति ५।६२। (द्र.– गरुडपुराण २।३९।९)।

९. **सर्वेषां शावमाशौचं मातापित्रोस् तु सूतकम्। सूतकं मातुरेव स्यादुपस्पृश्य पिता शुचिः॥**
यदि पत्न्यां प्रसूतायां सम्पर्कं कुरुते द्विजः। सूतकं तु भवेत् तस्य यदि विप्रः षडङ्गवित्॥
सम्पर्काज्जायते दोषो नाऽन्यो दोषोऽस्ति वै द्विजे। तस्मात् सर्वप्रयत्नेन सम्पर्कं वर्जयेद् बुधः॥—पराशरस्मृ.३।२६–२८।

१०. **जनने तावन् मातापित्रोर् दशाहमाशौचम्, मातुरित्येके तत्परिहरणात्, पितुरित्यपरे शुक्रप्राधान्यात्, अयोनिजा ह्यपि पुत्राः श्रूयन्ते, मातापित्रोरेव तु संसर्गसामान्यात्।**—बौधायनधर्मसूत्र १।११।१७–२१।
सपिण्डत्वमविभक्तदायेष्वेव, विभक्तदायेषु सकुल्यत्वमेव।—बौधायनधर्मसूत्र १।११।७–८।

११. **पुत्रे जाते दशाहेन कर्मयोग्यो भवेत् पिता। मासेन शुध्येज्जननी दम्पती तत्र कारणम्॥**—देवीभाग.७।१५।९।

बार्न पर्ने कुरा उल्लिखित देखिन्छ[१]। एस्तै कुरा वासिष्ठधर्मसूत्रमा पनि छ[२]। यो पक्ष नेपालका परम्परामा सामान्यतया चलेको देखिन्छ।

'सुत्केरो परेका घरबाहेक अरु घरका सपिण्डलाइ सुत्केरो नलाग्ने' भन्ने पक्ष माध्यन्दिनीय-वाजसनेयि-शुक्लयजुर्वेदशाखाध्यायिहरुको मूलग्रन्थ पारस्करगृह्यसूत्रको सम्मत र धेरै स्मृतिमा बताइ-एकाले प्रबल पक्ष हो। सुत्केरालाइ जुठालाइ जस्तो कडा आशौच नमानेर आवश्यकता पर्दा काम गर्ने नेपालि परम्परा पनि रहिआएको छ। सङ्कटमा सूतक आइपरेमा कूष्माण्डीहोम गरेर तथा धेनुदान गरेर विवाहादि गर्नू भन्ने वचन निर्णयसिन्धुमा छ—

सङ्कटे समनुप्राप्ते सूतके समुपागते। कूष्माण्डीभिर्घृतं हुत्वा गां च दद्यात् पयस्विनीम्॥
चूडोपनयनोद्वाहप्रतिष्ठादिकमाचरेत्। यदैव सूतकप्राप्तिस्तदैवाभ्युदयक्रिया॥ (पृ.१९०)।

यो प्रचलन आजभन्दा ४०० वर्ष अगि रचिएको मुहूर्तमार्तण्ड-ग्रन्थमा पनि उल्लिखित छ—

चेत् स्यात् सूतकमुक्तपूर्वसमयेऽनारब्धकार्ये बुधः।
कुष्माण्डीघृतहोमतोऽपि जननाशौचे क्वचित् कारयेत्॥ (विवाहप्रकरण, श्लो.५३)।

बितिसकेपछि सुनेको जननाशौच (सुत्केरो) कसैका मतमा पनि सपिण्डलाइ लाग्दैलाग्दैन भन्ने र तेस्तामा पिताले चाहिँ स्नान सम्म गर्न पर्छ भन्ने कुरा पनि शास्त्रमा उल्लिखित छ[३]।

मरणाशौच — दुइ वर्ष नपुगेका बालबालिकाको मृत्युको आशौच— पारस्करगृह्यसूत्रअनुसार दुइ वर्ष नपुगेका बाल-बालिकाको मृत्यु हुँदा **आमा-बाबुलाइ मात्र आशौच लाग्छ**[४], **सपिण्डहरु शुद्धै हुन्छन्**[५]। दुइ वर्ष नपुगेका बालबालिकाको **चूडाकरण नहुँदै मृत्यु भएमा आमाबाबुलाइ १ अहोरात्र (दिन-रात) र चूडाकरण भएपछि मृत्यु भएमा ३ अहोरात्र आशौच लाग्छ**[६]। सुत्केराभित्र जातकको मृत्यु भएमा आमाबाबुलाइ **सुत्केरो चोखिने दिनसम्म** सुत्केराकोजस्तै आशौच रहन्छ[७]।

दुइ वर्ष पुगेका तर उपनयन नभएका बालबालिकाको मृत्युमा आशौच—याज्ञवल्क्य-स्मृतिअनुसार बालमरणमा सपिण्डलाइ एक अहोरात्र आशौच लाग्छ[८]। अतः दुइ वर्ष पुगेका चूडाकरण भएका वा नभएका जेसुकै भएपनि उपनयन भने नभएका बालबालिकाको मृत्यु भएमा सपिण्डहरुलाइ (सातपुस्ताभित्रका दाजुभाइलाइ) एक अहोरात्र वा **सज्योति (दिनभर वा रातभर) मात्र जुठो लाग्छ।** आमा-बाबुलाइ भने मोर्ने बाल-बालिकाको **चूडाकरण नभएको भए एक अहोरात्र** र **चूडाकरण भएको भए तिन अहोरात्र** आशौच लाग्छ (पारस्करगृह्यसूत्र ३।४।१०[९], द्र.– मनुस्मृति ५।६७)।

उपनीत सपिण्ड ब्राह्मणको आशौच— उपनयन (व्रतबन्ध) भएका[१०] सपिण्ड ब्राह्मण मरेमा सपिण्ड ब्राह्मणलाइ **दस अहोरात्र (१० दिन) आशौच लाग्ने** पक्ष पारस्करगृह्यसूत्रमा छ[११]। यो पक्ष **अग्नि पनि नभएका वेद पनि नभएका ब्राह्मणका लागि** हो। तेस्तामा **३ अहोरात्र** (३ दिन) आशौच लाग्ने कुरा पनि पारस्करगृह्यसूत्रमा छ[१२] (द्र. याज्ञ.स्मृति विज्ञानेश्वरपाठ ३।१८, पराशरस्मृ.३।१)। यो आहिताग्नि (वैदिक अग्निको विधिवत् आधान गरेका) र नित्यस्वाध्यायाध्ययन (सधैँ स्वशाखावेदको पाठ) गर्ने ब्राह्मणहरुका निम्ति हो। इ कुरा पराशरस्मृतिका वचनबाट र अरु लघुस्मृति–पुराणका वचनहरुबाट बुझिन्छ[१३]—

---

१. **यथेदं शावमाशौचं सपिण्डेषु विधीयते। जननेऽप्येवमेव स्यान् निपुणं शुद्धिमिच्छताम्॥**–मनुस्मृति ५।६१।
२. **जननेऽप्येवमेव स्यान् निपुणं शुद्धिमिच्छताम्।**—वासिष्ठधर्मसूत्र ४।२०।
३. **निर्दशं ज्ञातिमरणं श्रुत्वा पुत्रस्य जन्म च। सवासा जलमाप्लुत्य शुद्धो भवति मानवः॥**—मनु.५।७७।
नाऽशुद्धिः प्रसवाशौचे व्यतीतेषु दिनेष्वपि।—देवलवचन, पाराशरमाधवीय–१, ६०० पृ.।
४. **अद्विवर्षे प्रेते मातापित्रोराशौचम्।**—पारस्करगृह्यसूत्र ३।१०।२।
५. **शौचमेवेतरेषाम्।**—पारस्करगृह्यसूत्र ३।१०।३।
६. **एकरात्रं त्रिरात्रं वा।**–पारस्करगृह्यसूत्र ३।१०।४। (मनुस्मृतिमा पनि चूडाकर्म नभएका बालबालिकाको एक अहोरात्र र चूडाकरण भएका उपनयन नभएका बाल-बालिकाको तिन अहोरात्र आशौच लाग्ने कुरा छ— **नृणामकृतचूडानां विशुद्धिर् नैशिकी स्मृता। निर्वृत्तचूडकानां तु त्रिरात्राच् छुद्धिरिष्यते॥**–मनु.५।६७।)
७. **अन्तःसूतके चेदोत्थानादाशौचं सूतकवत्।**—पारस्करगृह्यसूत्र ३।१०।६।
८. **अहस् त्व(तु?)दत्तकन्यासु बालेषु च विशोधनम्।**—याज्ञवल्क्यस्मृति, विश्वरूप ३।२२, विज्ञानेश्वर ३।२४।
९. **एकरात्रं त्रिरात्रं वा।**— पारस्करगृह्यसूत्र ३।१०।४।
१०. **यद्युपेतो भूमिजोषणादि समानमाहिताग्नेरोदकान्तस्य गमनात्।**—पारस्करगृ.सू. ३।१०।१०।
११. **दशरात्रमित्येके।**—पारस्करगृह्यसूत्र ३।१०।३०, द्र.- गौतमधर्मसूत्र २।५।१।
१२. **त्रिरात्रं शावमाशौचम्।**—पारस्करगृह्यसूत्र ३।१०।२९।
१३. **दशाहं निर्गुणे प्रोक्तमाशौचं वाऽतिनिर्गुणे।**
एक-द्वि-त्रिगुणैर् युक्तश् चतुस्-त्र्ये-कदिनैः शुचिः॥—कूर्मपुराण २।२३।७।

एकाहाच् छुध्यते विप्रो योऽग्निवेदसमन्वितः।

त्र्यहात् केवलवेदस् तु द्विहीनो दशभिर् दिनैः॥–पराशरस्मृ.३।५,दक्षस्मृ. ६।६, दाल्भ्यस्मृ.१२०।

पुस्ता (पिँडि)	आशौच-दिन
चौथो	१०
पाँचौं	६
छैटो	४
सातौं	३

साधारण ब्राह्मणहरुमा (अग्नि वा वेद केही पनि नभएका ब्राह्मणहरुमा) **चौथो पुस्तासम्मका** व्यक्तिलाइ **१० अहोरात्र** (१० दिन), **पाँचौं पुस्ताका** व्यक्तिलाइ ६ **अहोरात्र**, **छैटो पुस्ताका** व्यक्तिलाइ **४ अहोरात्र** र **सातौं पुस्ताका** व्यक्तिलाइ **३ अहोरात्र** मात्र सपिण्डको मरणको आशौच लाग्छ भन्ने व्यवस्था पराशरस्मृतिमा छ—

चतुर्थे दशरात्रं स्यात् षण् निशाः पुंसि पञ्चमे।

षष्ठे चतुरहाच्छुद्धिः सप्तमे तु दिनत्रयात्॥—पराशरस्मृति ३।१०[१]।

सोदक, सकुल्य, सगोत्र, असगोत्र ज्ञाति-बन्धुहरुको आशौच (जुठो)— आठौं पुस्तादेखि चौधौं पुस्तासम्मका **सोदक** भनिने भाइबन्धुको र पन्ध्रौं पुस्तादेखि एक्काइस पुस्तासम्मका **सकुल्य** भनिने र बाइसौं पुस्तादेखिका **सगोत्र** भनिने भाइबन्धुहरुको समेत पारस्करका मतमा एउटै गाममा बस्ने भाइ-बन्धुहरुलाइ मूल पुरुष सम्झिँदै छ भने **सज्योति** (दिनभर अथवा रातभर) आशौच लाग्छ भन्ने देखिञ्छ।

आफुलाइ गायत्रीमन्त्र सुनाउने र विधिपूर्वक वेद–वेदाङ्ग पढाउने **गुरुको**, **मातामहको (आमाका बाबुको)**, **मातामहीको (आमाकि आमाको)** र उपनयन भएका तर विवाह नभएका **कन्या-हरुको** पनि **अरु सपिण्डहरुको जस्तै उदककर्म गर्न र आशौच बार्न** पर्छ[२]।

प्रवासमा मृत सपिण्डादिको आशौच— प्रवासमा मृत सपिण्ड, आचार्य, मातामह, मातामही, उपनीत अविवाहित स्त्रीहरुको **सुनेदेखि जति दिन अवशिष्ट (बाँकि) हुञ्छन् तेति दिन आशौच बार्न पर्छ**[३]।

अतिक्रान्त (कटिसकेको) आशौच— पारस्करगृह्यसूत्रका अनुयायीहरुमध्ये सपिण्डाशौच तिन दिन बार्न पर्नेहरुले जतिसुकै कालपछि सुनेपनि एक दिन र दस दिन वा सोभन्दा बढि बार्न पर्नेहरुले जतिसुकै कालपछि सुनेपनि **३ दिन अतिक्रान्त (कटिसकेको) आशौच बार्न** पर्छ[४]। अथवा **वर्षदिन नाघेपछि चाहिँ स्नान गरेर पानि दिएपछि शुद्ध हुञ्छ** भन्ने कुरा स्मृतिपुराणहरुमा देखिएकाले पारस्करको व्यवस्था मुख्य आशौचकाल बितेपछि वर्षदिन भने नपुग्दैका कालका लागि हो भन्ने देखिञ्छ। याज्ञवल्क्यकाअनुसार **सपिण्डको अतिक्रान्त आशौच जैलेसुकै सुने पनि स्नान र उदकदान गरेपछि जाञ्छ**[५]। दशाहादि पूर्ण आशौच लाग्नेहरुको बाहेक अरु थोरै काल मात्र आशौच लाग्नेहरुको जति काल आशौच लाग्ने हो तेति **काल नाघेपछि सुनिएको आशौच बार्न नपर्ने** व्यवस्था छ[६]।

खापिएको आशौच—पारस्करगृह्यसूत्रअनुसार **पछिल्लो जुठो अगिल्लो जुठाले नजाने देखिञ्छ**[७]। बाबु-आमा-पतिको जुठो र क्रिया गर्नेलाइ जोसुकैको जुठो पनि अगिल्ला जुठाले जाँदैन।

असगोत्रको आशौच— ऋत्विक्, सासु-ससुरा, मित, सम्बन्धि (बन्धुत्रयमा लिइएका पिताका, माताका र आँफ्ना फुपुका छोरा, सानिमा-ठुलिमाका छोरा र मामाका छोरा एति व्यक्ति), मामा, भानिज, विवाह गरेर दिइसकेका चेलिबेटि एतिका मृत्युमा उदकदान र आशौच बार्ने काम **इच्छा लागे गरे पनि हुञ्छ र इच्छा नलागे नगरे पनि हुञ्छ भन्ने व्यवस्था पारस्करगृह्यसूत्रमा**[८] **र याज्ञवल्क्य-स्मृतिमा छ**[९]। एस्तामा एउटै गाममा बस्ने भएमा वा स्नेह–उपकारत्व इत्यादि भएमा स्वेच्छाले अपस्नान (खल्को) तथा उदकदान (अञ्जलिदान) गर्ने र आशौच बार्ने काम गर्ने, नभएमा नगर्ने गर्न सकिञ्छ। एस्तामा **छोरिले बाबु-आमाको बाबु-आमा गुरु हुनाले आशौच बार्ने नै पक्ष लिन पर्ने**

१. द्र.— दाल्भ्यस्मृति ११९ श्लो., मूल गरुडपुराण १।१०७।१३–१४।

२. **आचार्ये चैवम्, मातामहयोश्च, स्त्रीणां चाऽप्रत्तानाम्।**–पारस्करगृ.सू. ३।१०।३९,४०,४१ (द्र.याज्ञ.विश्व.३।४)।

३. **प्रोषितश् चेत् प्रेयाच् छ्रवणप्रभृति कालशेषमासीरन्।**—पारस्करगृह्यसूत्र ३।१०।४४।

४. **अतीतश् चेदेकरात्रं त्रिरात्रं वा।**—पारस्करगृह्यसूत्र ३।१०।४४,४५।

५. **प्रोषिते कालशेषः स्यात् पूर्णे दत्त्वोदकं शुचिः।** —याज्ञवल्क्यस्मृति ३।२१।

६. **मृताशौचेऽपि अनुपनीतमरणादिनिमित्तेषु त्रिरात्रैकरात्रेषु मातुलादिपरगोत्रीयमरणनिमित्तकेषु पक्षिणी-त्रिरात्रादिषु च अतिक्रान्ताशौचं नाऽस्ति।**—धर्मसिन्धु, ३२७ पृ.।

७. **पारस्करमते स्वकालेनाऽनतीतं द्वितीयाशौचं प्रथमाशौचेन नैव गच्छतीति सिद्धान्तस्याऽपि स्वीकर्तुं शक्यत्वस्य सम्भा-वितत्वात्।**—पारस्करगृह्यसूत्रोक्ताशौचनिरूपणम् (शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन, सारस्वती सुषमा, ५२ वर्ष, ३–४ अङ्क, २०५४ वै., सम्पूर्णानन्द-संस्कृत-विश्वविद्यालय, वाराणसी)।

८. **अथ कामोदकान्यृत्विक्-श्वशुर-सखि-सम्बन्धि-मातुल-भागिनेयानाम्, प्रत्तानां च।**—पारस्करगृहयसूत्र ३।१०।४६,४७।

९. **कामोदकं सखि-प्रत्ता-स्वस्रीय-श्वशुरर्त्विजाम्।**—याज्ञवल्क्यस्मृति ३।४।

देखिञ्छ तापनि दिदि-बैनि-फुपुहरुले भने पितृपक्षका दाजु-भाइ-भदाऽहरुको आशौच बार्ने-नबार्ने जुनसुकै पक्ष पनि स्वेच्छाले लिन हुने देखिञ्छ। समानग्रामवासादिको विचारले **उदकदान र आशौच बार्ने काम गर्ने पक्षमा याज्ञवल्क्यस्मृतिका वचनबाट ति व्यक्तिको एक दिन** आशौच बार्न पर्छ[१]।

असवर्ण (फरक वर्णका) सपिण्डको आशौच— पारस्करगृह्यसूत्रमा असवर्ण सपिण्डको आशौचको छुट्टै स्पष्ट व्यवस्था देखिँदैन। किन्तु अन्यत्र एस विषयमा व्यवस्था पाइञ्छन्। तेसअनुसार **द्विज ब्राह्मणलाइ अद्विज सपिण्डको १ दिन आशौच (जुठो) लाग्छ र अद्विजलाइ द्विज ब्राह्मण सपिण्डको १० दिन आशौच (जुठो) लाग्छ**[२]। **असवर्णमा सपिण्डता चार पुस्तासम्म अथवा तिन पुस्तासम्म मात्र रहञ्छ** भन्ने शास्त्रीय व्यवस्था छ[३]। अवैध सङ्ग्रहबाट जन्मेर बन्धुजस्ता हुन आएका **असवर्णहरुको त जन्म-मरणनिमित्तक जुठो-सूतक नलाग्ने** कुरा पारस्करगृह्यसूत्रबाट बुजिन आउँछ।

क्षत्रिय-वैश्य-शूद्रहरुको आशौच— क्षत्रियलाइ र वैश्यलाइ सपिण्डको मरणाशौच **एक पक्ष (१५ दिन)** र शूद्रलाइ सपिण्डको मरणाशौच **दुइ पक्ष (३० दिन)** लाग्ने कुरा पारस्करगृह्यसूत्रमा छ[४]।

पारस्करले बताएको आशौचव्यवस्था सदाचारि बन्धुहरुका निमित्त मात्र हो भन्ने कुरा अर्थात् बुजिञ्छ। यो कुरा **'सदाचारि बन्धुहरुको मात्र उदककर्म गर्न आवश्यक हुञ्छ** र तिनका उपऱ्युक्त प्रकारका आशौचहरु पनि लाग्छन्; आचारभ्रष्ट, असत्, नास्तिक, पतित, विकर्मि इत्यादि प्रकारका बन्धुको उदककर्म गर्न पनि पर्दैन, आशौच बार्न पनि पर्दैन, नजिकमा भए शवदाह गरेर भस्म पारि स्नान गरेपछि आशौच सिद्दिञ्छ, **(नजिकमा नभए केइ पनि गर्न पर्दैन)'** भन्ने समेतका कुरा आङ्गिरस-मनुस्मृत्यादिका वचनले[५] स्पष्ट गरेका छन्।

माता-पिता-पतिको आशौच—पारस्करगृह्यसूत्रको दोस्रो काण्डको एघारौँ कण्डिका (अनध्यायप्रकरण)मा गुरुको आशौच दस दिन लाग्ने कुरा छ[६]। त्याँहाँको गुरुशब्दको अर्थ आचार्य भन्ने मात्र नलिएर महागुरु माता-पिता-पतिसमेतका गुरु भन्ने लिनु उचित छ। त्याँहाँ अनध्यायका प्रकरणमा पनि उदककर्मको उपदेशसमेत गरिएकाले[७] पारस्करका सम्प्रदायमा **महागुरुको मरणाशौच अग्नि र वेद भएका र नभएका सबै ब्राह्मणलाइ दस दिन लाग्ने बुझिञ्छ**[८]। **पडाउँदै गरेका गुरुको आशौच दस दिन लाग्ने भएपनि पडाउन छोडेका गुरुको आशौच अरु सपिण्डको जति लाग्छ तेति नै लाग्छ**[९]। **परमगुरु पनि सदाचारि भएमा मात्र** पारस्करले उपदेश गरेका उदककर्म गर्ने इत्यादि सबै व्यवस्था तिनका सम्बन्धमा लागु हुञ्छन् भन्ने बुजिञ्छ। **मार्कण्डेयस्मृतिमा एस विषयमा विशेष कुरा भनिएको छ**[१०]। तथापि परमगुरु आचारभ्रष्ट पतित भएमा पनि प्रायश्चित्त गरि दाहादि कर्म गर्ने, सपिण्डीकरण भने नगर्ने पक्ष लघुस्मृतिपुराणमा पाइञ्छ। पतित परमगुरुको सपिण्डीकरण नगर्ने कुरा श्रौतसूत्रादिको अनुकूल छ॥

---

१. **अहस्तु(त्व)दत्तकन्यासु बालेषु च विशोधनम्। गुर्वन्तेवास्यनूचानमातुलश्रोत्रियेषु च॥**—याज्ञवल्क्यस्मृति ३।२२।

२. **हीनवर्णानामधिकवर्णेषु सपिण्डेषु तदशौचव्यपगमे शुद्धिः, ब्राह्मणस्य क्षत्रविट्शूद्रेषु सपिण्डेषु षड्रात्र-त्रिरात्रैकरात्रैः, क्षत्रियस्य विट्शूद्रयोः षड्रात्रत्रिरात्राभ्याम्, वैश्यस्य शूद्रे षड्रात्रेण।**-विष्णुधर्मसूत्र २२।२१-२४।

३. **सपिण्डता तु पुरुषे सप्तमे विनिवर्तते।**
सजातीयेषु वर्णेषु चतुर्थे भिन्नजातिषु॥—वृद्धपराशरवचन, पाराशरमाधवीय, आचारकाण्ड ५८९ पृ.।
क्षत्र-विट्-शूद्रजातीनां सापिण्ड्यं तु त्रिपूरुषम्।
ब्राह्मणैरपि जातानामविभक्तार्थभागिनाम्॥—ब्रह्मपुराणवचन, षडशीतिशुद्धिचन्द्रिका, ६३ श्लो., ७७ पृ.।

४. **पक्षं द्वौ वाऽऽशौचम्।**—पारस्करगृह्यसूत्र ३।१०।३८।

५. **सतामेव हि बन्धूनां कर्म कुर्यात् प्रयत्नतः। भ्रष्टानामपि तुच्छानां पतितानां विकर्मिणाम्॥**
न कुर्वीत क्रियां यत्नादपि स्नानं समाचरेत्। असतां पतितानां च भस्मान्तं सूतकं स्मृतम्॥
—आङ्गिरसस्मृति १३७-१३९ श्लो.।

६. **गुरौ प्रेतेऽपोऽभ्यवेयाद् दशरात्रं चोपरमेत्।**—पारस्करगृ.सू. २।११।७।

७. **अपोऽभ्यवेयात्।**—पारस्करगृ.सू. २।११।७।

८. **पारस्करगृह्यसूत्रोक्ताशौचनिरूपणम्** (शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन, सारस्वती सुषमा, ५२ वर्ष, ३-४ अङ्क, २०५३ वै., सम्पूर्णानन्द-संस्कृतविश्वविद्यालय, वाराणसी)।

९. **आचार्ये चैवम्।**—पारस्करगृ.सू. ३।१०।३९।

१०. **पुत्रस्य जननात् पश्चात् पिता दुर्बुद्धितो यदि। चाण्डालो यवनो भिल्लो जायते स्वयमेव वा॥**
परपीडादिना वाऽपि बलाद् वा कामकारतः। पूर्वजातस् तत्तनयो निर्दुष्टः सच्चरित्रकः॥
तेन सद्भिर् वोपनीतो न सङ्कीर्णश् च कैरपि। कृतनित्यक्रियः सम्यक् कृताध्ययनसत्क्रियः॥
ततः परं मृतस् तातस् तादृशो यवनात्मकः। मृतौ तस्याऽस्य पुत्रस्य नाऽऽशौचं नोदकक्रिया॥
—मार्कण्डेयस्मृति, स्मृतिसन्दर्भ, षष्ठभाग, १५६ पृ.।

(४६) दिनमा र रातमा क्रमले हुने १५ मुहूर्त र मुहूर्तमा गर्ने कर्तव्य

मुहूर्त-क्रमः	तैत्तिरीयब्राह्मणानुसारीणि मुहूर्तनामानि		आथर्वणज्योतिषानुसारीणि मुहूर्तनामानि छायापरिमाणं समयश्च			मुहूर्त-मार्तण्ड-अनुसारि मुहूर्तनाम	आथर्वणज्योतिषोक्तेषु मुहूर्तेषु कर्तव्यविशेषाः (मुहूर्तअनुसार गर्ने काम)
	शुक्लपक्षे (दिनस्य)	कृष्णपक्षे (दिनस्य)	दिनस्य रात्रेश्च मुहूर्ताः	दिने छाया-परिमाणम्	मुहूर्तस्य समयः (बजेदेखि-बजेसम्म)		
१	चित्रः	सविता	**रौद्रः**	९३–६० अङ्गुल	**६:००–६:४८**	शिव	**रौद्रकर्माणि**
२	केतुः	प्रसविता	**श्वेतः**	६०-१२	**६:४८–७:३६**	सार्प	**स्नानालङ्करणादीनि**
३	प्रभान्	दीप्तः	**मैत्रः**	१२-६	**७:३६–८:२४**	मित्र	**मित्रकरणम्**
४	आभान्	दीपमानः	**सारभटः**	६-५	**८:२४–९:१२**	पितृ	**अभिचारकर्माणि**
५	सम्भान्	दीप्यमानः	**सावित्रः**	५-४	**९:१२–१०:००**	वसु	**देवकार्यम् (यज्ञ, विवाह इत्यादि)**
६	ज्योतिष्मान्	ज्वलन्	**वैराजः**	४-३	**१०:००–१०:४८**	अम्बु	**पौरुषम्**
७	तेजस्वान्	ज्वलिता	**विश्वावसुः**	३-०	**१०:४८–११:३६**	विश्वेदेव	**सर्वार्थारम्भः, स्वाध्यायाध्ययनम्**
८	आतपन्	तपन्	**अभिजित् (मध्याह्ने)**	शङ्कुमूले (किलाका बिचमा छाया हुँदा)	**११:३६–१२:२४**	अभिजित्	**चातुर्वर्ण्ययोगः, सर्वकामार्थ-साधनम्**
९	तपन्	वितपन्	**रौहिणः**	०-३	**१२:२४–१:१२**	ब्रह्मा	**वृक्षरोपणम्**
१०	अभितपन्	सन्तपन्	**बलः**	३-४	**१:१२–२:००**	इन्द्र	**सेनायोगः**
११	रोचनः	रोचनः	**विजयः**	४-५	**२:००–२:४८**	इन्द्राग्नि	**विजययात्रा, शान्ति-स्वस्तिकर्म**
१२	रोचमानः	रोचमानः	**नैर्ऋतः**	५-६	**२:४८–३:३६**	राक्षस	**आक्रमणम्**
१३	शोभनः	शुम्भूः	**वारुणः**	६-१२	**३:३६–४:२४**	वरुण	**जलजधान्य-गोधूम-यवादिरोपणम्**
१४	शोभमानः	शुम्भमानः	**सौम्यः**	१२-६०	**४:२४–५:१२**	अर्यमा	**सौम्यकर्म**
१५	कल्याणः	वामः	**भगः**	६०-९३ अङ्गुल	**५:१२–६:००**	भग	**नारीणां कन्यानां च सौभाग्यकर्म**

मुहूर्तहरुका छायापरिमाण आथर्वणज्योतिषअनुसार दिइएका हुन्। सामान्यतया २ घडि (४८ मिनिट) को १ मुहूर्त हुन्छ। गणित गर्दा जुन दिनको मुहूर्त चाइएको हो तेसै दिनको दिनमानको समान (बराबर) १५ भागको एक भागलाइ एक मुहूर्त मानेर सूर्योदयदेखि गणित गर्नपर्छ।

(४७) नेपाल-भारतका प्रमुख स्थानहरुको समयमा हुने अन्तर

यहाँ नेपालको प्रामाणिक सर्कारि समयसँगको स्थानीय समयको अन्तर र काठमाण्डुको समयसँगको स्थानीय समयको अन्तर मिनेट र सेकेण्ड**मा दिइएको छ।**

स्थाननाम	प्रा.स.अन्तर	काठ.स.अन्तर
कञ्चनपुर	–२४:१६	–२०:३२
दार्चुला	–२२:४८	–१९:०४
कैलालि	–२२:३६	–१८:५२
बाँके नेपालगञ्ज	–१८:२८	–१४:४४
दैलेख	–१८:०८	–१४:२४
जुम्ला	–१६:१६	–१२:३२
दाङ घोराइ	–१४:०४	–१०:२०
कपिलबस्तु तौलिहवा	–१२:४८	–९:०४
गुल्मि तम्घास	–१२:००	–८:१६
पाल्पा तानसेन	–१०:४८	–७:०४
बाग्लुङ	–१०:३६	–६:५२
स्याङ्जा पुतलिबजार	–९:३४	–५:४४
कास्कि पोखरा	–९:०४	–५:२०
मनाङ चामे	–८:००	–४:१६
तनहुँ दमौलि	–७:५२	–४:०८
चितवन भरतपुर	–७:१६	–३:३२
चितवन रत्ननगर	–६:५२	–३:०८
गोर्खा	–६:३६	–२:५२
धादिङ	–५:२४	–१:४०
मकवानपुर हेटौंडा	–४:५२	–१:०८
नुवाकोट विदुर	–४:२८	–०:४४
काठमाण्डु	–३:४४	०:००
काब्रे धुलिखेल	–२:४४	+१:००
सिन्धुपाल्चोक चौतारा	–२:०८	+१:३६
धनुषा	–१:१६	+२:२८
दोलखा चरिकोट	–०:४८	+२:५६
सिराहा	–०:०८	+३:३६
खोटाङ दिक्तेल	+२:१२	+५:५६
सुनसरि इनरुवा	+३:३६	+७:२०
मोरङ विराटनगर	+४:०८	+७:५२
झापा चन्द्रगडि	+७:१६	+११:००

काठमाण्डुको समयसँग भारतका कतिपय स्थानको समयको अन्तर (मिनेटमा)

उज्जयिनी –३६, कोलकाता +१५, गोरखपुर –१३, पुरी +४, जयपुर –३६, त्रिवेन्द्रम् –३१, दार्जिलिङ +१२, दिल्लि –३१, पुणे –४४, मुम्बइ –४८, मैसुरु –३३, लखनौ –१५, वाराणसी (काशी) –७, हरिद्वार –२७

(४८) दिनविभाग-चक्रम् (दिनका भागहरु)

विभागनाम	प्रातःकालः	सङ्गवः	मध्याह्नः	अपराह्णः	सायाह्नः	दिनमानको समान (बराबर) ५ भागको एक भाग समय
मुहूर्ताः	**सूर्योदयबाट ३ मुहूर्त**	**४–६**	**७–९**	**१०–१२**	**१३–१५**	
घट्यः (घडि)	सूर्योदयबाट ६ घडि	७—१२	१३—१८	१९—२४	२५—३०	
घ.मि. (बजे)	६:००—८:२४	८:२४—१०:४८	१०:४८—१३:१२	१३:१२—१५:३६	१५:३६—१८:००	

मतान्तरे दिनविभाग-चक्रम् (अर्को मतमा दिनका भागहरु)

विभागनाम (दिनका भागको नाम)	प्रातःकालः	मध्याह्नः	अपराह्णः	दिनमानको समान (बराबर) ३ भागको एक भाग समय
मुहूर्ताः	**सूर्योदयबाट ५ मुहूर्त**	**६–१०**	**११–१५**	
घट्यः (घडि)	सूर्योदयबाट १० घडि	११—२०	२१—३०	
घ.मि. (बजे)	६:००—१०:००	१०:००—१४:००	१४:००—१८:००	

प्रातः सङ्क्षेपतः स्नानं शौचार्थं तु तदिष्यते।
मन्त्रैस्तु विधिनिष्पाद्यं **मध्याह्ने** तु सविस्तरम्॥
—शङ्खवचन, हेमाद्रि.च.चि., श्राद्धकल्प, पृ.८८८।

सङ्गवान्ते ब्रह्मयज्ञं कुर्यात् स्नानपुरस्सरम्।
मध्यसन्ध्यां तर्पणं च वैश्वदेवमिति क्रमात्॥
—विश्वामित्रस्मृति ८।३५।

अपराह्णे पिण्डपितृयज्ञश्चन्द्राऽदर्शनेऽमावास्यायाम्। —कात्यायनश्रौतसूत्र ४।१।१।

(४९) आगामी पञ्चवर्षात्मक आश्विन (११) युगको विशेष विवरण

वर्षारम्भदिन (उदगयनारम्भ) ⍁		कलिसंवत्	संवत्सर	चान्द्र संवत्सर	दक्षिणायन आरम्भ हुने दिन ✧		वैदिक अधिकमास	विशेष ☐
२०८२।९।५	शनिवार	**५०९१**	**१ संवत्सर**	**५१ पिङ्गल**	२०८३।३।१	सोमवार	**५०९२—द्वितीय सहस्य [द्वितीय पौष]** (२०८४।८।१२–२०८४।९।११)	अर्वाचीन ज्योतिषअनुसार पर्ने भनिएका अधिकमासहरु वेदाङ्ग-ज्योतिषअनुसार शुद्ध महिना नै हुञ्छन्। **अयनका अन्तमा मात्र अधिकमास पर्छ** भन्ने **वेदाङ्गज्योतिषको सिद्धान्त**को अनुसरण गरेर बनाइएको व्यवस्था काठमाण्डु-उपत्यकामा चलेको छ।
२०८३।८।२३	बुधवार	**५०९२**	**२ परिवत्सर**	**५२ कालयुक्त**	२०८४।२।२२	शनिवार		
२०८४।९।१२	मङ्गलवार	**५०९३**	**३ इदावत्सर**	**५३ सिद्धार्थी**	२०८५।३।९	शुक्रवार	**५०९५—द्वितीय सहस्य [द्वितीयपौष]** (२०८७।८।९–२०८७।९।९)	
२०८५।९।१	शनिवार	**५०९४**	**४ इद्वत्सर**	**५४ रौद्र**	२०८६।२।२८	मङ्गलवार		
२०८६।८।२०	बृहस्पतिवार	**५०९५**	**५ वत्सर**	**५५ दुर्मति**	२०८७।२।१८	शनिवार		

⍁ एस स्तम्भमा दिइएका इ दिनमा वैदिक **तपोमासको शुक्लपक्षको प्रतिपदा** पर्छ। इ मितिमा तेस-तेस वर्षमा वेदाङ्गज्योतिषोक्त **नववर्ष**को आरम्भ हुञ्छ। इ दिनबाटै तेस-तेस वर्षमा वैदिक सौरचान्द्र **उदगयन**को (उत्तरायणको) आरम्भ हुञ्छ। तेसै दिन वैदिक सौरचान्द्र **शिशिरऋतु**को पनि आरम्भ हुञ्छ। तेसपछि दुइ-दुइ चान्द्र महिनामा पर्ने शुक्लप्रतिपदाका दिन वैदिक सौरचान्द्र **वसन्त ऋतु** र **ग्रीष्म ऋतु** क्रमैले आउँछन्।

✧ एस स्तम्भमा दिइएका इ मितिमा **वैदिक नभोमासको शुक्लपक्षको प्रतिपदा** पर्छ। इ दिनबाटै तेस-तेस वर्षमा सौरचान्द्र **दक्षिणायन**को र वैदिक सौरचान्द्र **वर्षा ऋतु**को पनि आरम्भ हुञ्छ, तेसपछि दुइ-दुइ चान्द्र महिनामा पर्ने शुक्लपक्षप्रतिपदामा वैदिक सौरचान्द्र **शरद् ऋतु** र **हेमन्त ऋतु** क्रमैले आउँछन्।

☐ अर्वाचीन ज्योतिषअनुसार **विक्रमसंवत् २०८३** (नेपालसंवत् ११४६) **जेठ**मा पर्ने भनिएको **अधिक ज्येष्ठ** महिना (द्वितीय वैशाख महिना) चाहिँ वेदाङ्गज्योतिषअनुसार शुद्ध **शुचिमास** (आषाढ) महिना हुञ्छ। कतिपय गणनामा आगामी **विक्रमसंवत् २०८५** (नेपालसंवत् ११४९) मा **कार्त्तिक** र **चैत्र**मा पर्ने भनिएका **अधिकमास** तथा **मार्ग** महिनामा पर्ने भनिएको **क्षयमास** पनि वेदाङ्गज्योतिषअनुसार शुद्ध महिना नै हुञ्छन्।

स्वाध्यायशालाकुटुम्बका प्रकाशित वैदिकज्योतिषविषयक प्रमुख निबन्ध (लेख)

नववर्षारम्भ : केही विचारणीय कुरा– कान्तिपुर २०५३।१।१।
वेदाङ्गज्योतिष र नववर्षारम्भ : संक्षिप्त विचार– हिमालय टाइम्स २०५३।१।२२।
स्वाद्ध्यायशाला र वेदाङ्गज्योतिष – कान्तिपुर २०५३।२।२०।
धर्म र वेदाङ्गज्योतिष – हिमालय टाइम्स २०५३।२।२१।
वैदिक कालगणना र प्रचलित पञ्चाङ्गहरु – श्रीसगरमाथा (दैनिक) २०५३।८।२०।
वैदिक कालगणनाको अनुगमन गर्न उद्बोधन– जनमञ्च २०५३।८।२७।
हाम्रा पञ्चाङ्गको सिंहावलोकन– कान्तिपुर २०५४।१।१।
वैदिक कालगणनाको अनुगमन गर्न उद्बोधन (समाचार)– आरती साप्ताहिक २०५४।८।१२।
वेदाङ्गज्योतिषं युगवर्षायनर्तुमासाधिमासादिगणना च (निबन्ध)– सारस्वती सुषमा, ५० वर्ष, ३–४ अङ्क, मार्गशीर्ष-फाल्गुनपूर्णिमा २०५२ वै., सम्पूर्णानन्दसंस्कृतविश्वविद्यालय, वाराणसी।
जैमिनीयधर्ममीमांसाशास्त्रनिर्णीतानां वैदिक-कृत्यकालानां चान्द्रमाननियतत्वम् (निबन्ध)– सारस्वती सुषमा, ५१ वर्ष, १–४ अङ्क, २०५३ वै., सम्पूर्णानन्द-संस्कृत-विश्वविद्यालय, वाराणसी।
लगधप्रोक्त वेदाङ्गज्योतिष और नववर्षारम्भ– सन्मार्ग (दैनिक), १९९८ क्रै., अप्रिल १,२ (२०५४।१२।१९,२०) वाराणसी।
वैदिक कालगणनापद्धतिको संरक्षणमा नेपालको योगदान – गोरखापत्र २०५५।१।१२ (शनिवारीय)।
वैदिक परम्परामा चान्द्र ऋतुहरुको स्थान – गरिमा (मासिक), साझाप्रकाशन, नेपाल, २०५५ पुस।
हाम्रा पञ्चाङ्गहरुको संक्षिप्त परिशीलन – गोरखापत्र २०५५।१२।२७ (शनिवारीय)।
दशमी कार्तिक २ गते नै हो – नेपाल समाचारपत्र २०५६।६।१७।
दशमी कात्तिक २ गते नै – कान्तिपुर २०५६।६।२२।
दशैंको निर्णय कुन शास्त्रअनुसार गर्ने? – नेपाल समाचारपत्र २०५७।६।१५।
पुस एघार गते वैदिक नववर्षारम्भ मनाउन आह्वान (समाचार)– हिमालय टाइम्स २०५७।९।१०।
वैदिक परम्पराका आस्तिक ज्योतिषीहरुले, धर्मशास्त्रीहरुले र अन्य धार्मिक सज्जनहरुले पनि विचार गर्नै पर्ने कुरा – उन्नयन (त्रैमासिक), काठमाण्डु, २०५७ कात्तिक-पुस।
धार्मिक पञ्चाङ्गमा वैदिक कालगणनापद्धति अँगाल्ने आवश्यकता –सङ्गम, काठमाण्डु, २०५८ वैशाख।
वैदिक पञ्चसंवत्सरात्मक युगव्यवस्था र चल्तीका सिद्धान्तज्योतिषग्रन्थ तथा पञ्चाङ्गपत्रहरु – गरिमा (मासिक), साझाप्रकाशन, ललितपुर, नेपाल, २०५८ वैशाख।
हिन्दुराज्य नेपालमा मौलिक वैदिक पञ्चाङ्गको खाँचो – हिमालय टाइम्स २०५८।८।२२।
हाम्रा संवत्हरुको पर्यालोचन – गरिमा (मासिक), साझाप्रकाशन, ललितपुर, नेपाल, २०५९ वैशाख।
वैदिक कालगणनामा संवत्सरको र अयनको सँगसँगै आरम्भ – गरिमा (मासिक), साझाप्रकाशन, ललितपुर, २०५९ पुस।
Scientific Vedic Calendar and Current Delusions– The Kathmandu Post 2003-4-13 (२०५९।१२।३०)।

आजभोलिको चल्तीको सूर्यसिद्धान्तग्रन्थ मूल वैदिक परम्पराको वेदाङ्ग ग्रन्थ हैन– उन्नयन (त्रैमासिक), ४९ अङ्क, काठमाण्डु, २०६० कात्तिक-पुस।
प्रचलित पञ्चाङ्गहरुमा सुधारको आवश्यकता–कान्तिपुर २०६०।९।३।
वैदिक कालगणनासिद्धान्तको पुनर्जागरण–गोरखापत्र २०६०।९।९।
एहि मङ्सिर २७ गते वैदिक नववर्ष मनाउन आह्वान (पत्रक)– स्वाद्ध्यायशाला, २०६१।८।२२।
वैदिक नववर्षारम्भको अवसरमा प्रदर्शनी (समाचार)– अन्नपूर्णपोष्ट २०६१।८।२८।
पञ्चाङ्ग प्रकाशित गर्दा विशेष ध्यान दिन पर्ने कुरा–ज्योतिर्विज्ञान मञ्च, २०६३ भदौ–कात्तिक।
संवत्को वैज्ञानिक कालगणना– कान्तिपुर २०६३।८।२३।
लोसार र वैदिक नववर्ष– कान्तिपुर २०६३।१०।१८।
वैदिक कालगणनासिद्धान्तको ज्ञानको आवश्यकता–ज्योतिर्विज्ञान मञ्च, काठमाण्डु,२०६४ जेठ–साउन।
हाम्रो मौलिक कालगणना– गोर्खापत्र २०६४।४।१२।
नयाँ नेपाल नयाँ पात्रो– कान्तिपुर २०६४।७।२४। **संवत्को वैज्ञानिकता र स्वीकार्यता**– कान्तिपुर २०६४।८।१०।
लोसारनिर्णयको आधार– कान्तिपुर २०६४।९।१९।
पात्रोमा संशोधन– गोर्खापत्र २०६४।१०।१४। **नेपाली-पात्रो-सुधार**– कान्तिपुर २०६४।१०।१९।
नवरात्र-विचार– ज्योतिर्विज्ञान मञ्च, काठमाण्डु, २०६८ वैशाख।
वैदिक-तिथिपत्रको(५०७६ को वैदिक पत्रोको) समीक्षा–ज्योतिर्विज्ञान मञ्च, काठमाण्डु, २०६८ वैशाख।
नवरात्र नौ दिनकै हुञ्छ–कान्तिपुर २०६८।६।८। **नौ दिनकै नवरात्र**–नागरिक २०६८।६।११।
नेपालमा वेदाङ्गज्योतिषको संरक्षण र प्रयोग (२०६९ भदौ ७ गते काठमाण्डुमा सम्पन्न भएको वेदाङ्गज्योतिषविषयक विचारगोष्ठीको समाचार)–मूलधार (साप्ताहिक) २०६९।५।१५ शुक्रवार।
वैदिक परम्परा, वेदाङ्गज्योतिषग्रन्थ र अधिकमास–मूलधार (साप्ताहिक) २०६९।५।२२।
हात्तीगौंडा (ब्रह्मपुरी)मा [खड्काभद्रकाली, काठमाण्डुमा] ५०७८ तपःशुक्लप्रतिपदामा [२०६९।८।२९ मा] मनाइएको वैदिक नववर्षको कार्यक्रमको समाचार– नेपाल समाचारपत्र २०६९।९।१।
वैदिक कालमीमांसाका सन्दर्भमा ज्योतिषशास्त्रको महत्त्व–मिमिरे, राष्ट्रबैङ्क, काठमाडौँ, ४२।१, २०७० वैशाख-जेठ।
घटस्थापनाको तिथि मिलेन–कान्तिपुर (सम्पादकलाइ पत्र) २०७१।६।६।
दसैंको वास्तविक पात्रो–स्वतन्त्र सञ्चारग्राम (साप्ताहिक) २०७१।६।१० शुक्रवार।
महानवमी र विजयादशमी एकै दिन कसरी हुञ्छ–सेतो पाटी (विद्युतीय पत्रिका) २०७१।६।१६।
वैदिक कालगणनापद्धतिअनुसार उपाकर्म र जनैपूर्णिमा पर्व–ज्योतिष म्यागजिन (विद्युतीय पत्रिका) २०७२।५।१०।
नयाँ वैदिक पात्रोको लोकार्पण (समाचार)–अन्नपूर्णपोष्ट (दैनिक) २०७३।८।१७
वैदिक तिथिपत्र (वैदिक पात्रो) कसरी प्रयोग गर्ने–ज्येष्ठ नागरिक संरक्षण दिग्दर्शन, नुवाकोट, २०७७ कात्तिक।
चाडपर्वको विवाद हटाउन वैदिक कालगणना अवलम्बन गरौं (समाचार)–थाहा खबर (विद्युतीय पत्रिका) २०८१।८।१७॥

स्वाद्ध्यायशालाकुटुम्ब के

प्रकाशित वेदवेदाङ्गादिशास्त्रसम्बद्ध ग्रन्थ

स्वाद्ध्यायशाला

स्वाद्ध्याय स्वशाखावेद को कहते हैं। स्वाद्ध्याय का अध्ययन गुरु–शिष्यपरम्परा से नियमपूर्वक करने का विधान है। वेद चार हैं— ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद। वेद के स्वरूप, प्रयोग, अर्थ और रहस्य को अवगत करने के लिए वेदाङ्गों का अध्ययन आवश्यक होता है। वेदाङ्ग छः हैं— शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द और ज्योतिष। वेद और वेदाङ्गों के अध्ययन को ब्राह्मणों के लिए निष्कारण धर्म माना गया है। अध्ययनद्वारा अर्थबोध, तत्पश्चात् तदनुरूप आचरण, तदनन्तर प्रचारण की कर्तव्यता— यह क्रम हमारे यहाँ हजारों वर्षों से मान्य रहा है। इसी दिशा में स्वाद्ध्यायशालाकुटुम्ब प्रयत्नशील है।

विशिष्ट विद्वान् शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन

स्वाध्यायशाला के संस्थापक का परिचय भी यहाँ दिया जा रहा है। परमपूज्य विद्वान् शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन (१९९७ मधुशुक्लषष्ठी — २०७४ इषशुक्लदशमी [२ फरवरी १९४१ — ३१ अगस्त २०१७]) विशिष्ट संस्कृतविद्वान्, वैदिक (शुक्लयजुर्वेदी), शिक्षाशास्त्री, कल्पशास्त्रमर्मज्ञ, उत्कृष्ट भाषाशास्त्री, वैयाकरण, कोषकार, वेदाङ्गज्योतिषविद्, मीमांसक एवं वेदान्तज्ञ हैँ। इन्होंने संस्कृत शिक्षा के सुधार के लिए लम्बा संघर्ष किया। संस्कृतशिक्षा को कैसे सन्तुलित और सर्वजनोपयोगी बनाया जा सकता है, इसका निदर्शन प्रस्तुत किया। (१) धार्मिक (२) शास्त्रीय (३) वैज्ञानिक तथा (४) साधारण शिक्षा के रूप में संस्कृतशिक्षा लेने इच्छुक चार प्रकार के लोगों के लिए संस्कृतशिक्षा संचालित की जा सकती है, इसके लिए नवीन पाठ्यक्रम-स्वरूप निर्माण किया है।

विद्वान् शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन का जन्म नेपाल के गण्डकी क्षेत्र अन्तगर्त त्रितुङ्गजनपद (तनहुँ जिले) में वासिष्ठ–मैत्रावरुण–कौण्डिन्न्येति-त्रिप्रवरक कौण्डिन्न्यगोत्रीय कान्यकुब्जोच्चकुलीन ब्राह्मणवंश में हुआ था। प्राथमिक शिक्षा पिताजी से तथा ग्रामीण पाठशाला से वहीं पाकर आगे काठमाण्डू में अध्ययन किया। त्रिभुवन विश्वविद्यालय से वेदान्त तथा साहित्य विषय में आचार्य एवम् संस्कृत विषय में एम्.ए. उत्तीर्ण किया। साहित्याचार्य तथा एम्.ए. दोनों में विश्वविद्यालय में सर्वप्रथम होकर कुलपतिपदक प्राप्त किया। तत्पश्चात् आगरा विश्वविद्यालय से दर्शनशास्त्र में एम्.ए. उत्तीर्ण करने के बाद वाराणसी के सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय से वेद-वेदान्त विषय में “वैदिकयज्ञा औपनिषदमात्मज्ञानं च” शीर्षक में विद्यावारिधि और वैदिक शिक्षाशास्त्र (ध्वनिविज्ञान) में “कौण्डिन्न्यायनशिक्षा” ग्रन्थ क-लिए वाचस्पति

(डी.लिट्.) उपाधि प्राप्त किया। इस ग्रन्थ में पाणिनीय अष्टाध्यायी, वार्त्तिक एवं महाभाष्य की भी गम्भीर समीक्षा की गई है। सनातनवर्णश्रमधर्मानुसार ब्राह्मणधर्म क-अनुपालक कौण्डिन्न्यायन जी ने अपने जीवन में वेद, वेदाङ्ग, वेदोपाङ्ग, स्मृति, पुराण इत्यादि शास्त्रों और संस्कृत वाङ्मय के अध्ययन को, तत्सम्बद्ध ग्रन्थप्रणयन को और संस्कृत शिक्षा के सुधार को ही लक्ष्य बनाया। कौण्डिन्न्यायन जी ने अपने सभी पाँच पुत्रोंको अपने गृह स्वाध्यायशाला में संस्कृत का अध्यापन किया। आगे परीक्षाएँ देकर प्रथम पुत्र वेदाचार्य, अन्य दो मीमांसाचार्य तथा वेदान्ताचार्य एवम् तथा विद्यावारिधि तक अध्ययन करके नेपालस्थित संस्कृतविश्वविद्यालय में प्राध्यापन करते हैं और वैदिक वाङ्मय के अनुसन्धान का कार्य भी कर रहे हैं। अन्य दो पुत्र पूर्वमध्यमा तक पाणिनीय-व्याकरण अध्ययन करके विज्ञान विषय लेकर उच्च परीक्षा देकर पश्चात् चिकित्सक और औषधविज्ञानविद् बनकर तत्तत् विषय में त्रिभुवन-विश्वविद्यालय तथा पोखरा-विश्वविद्यालय में प्राध्यापन का कार्य कर रहे हैं।

वेद-वेदाङ्गों क-विशिष्ट विद्वान् शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन जी ने त्रिभुवनविश्वविद्यालय तथा संस्कृतविश्वविद्यालय में ३६ वर्ष तक (वि.सं २०२४/सन् १९६७ से वि.सं. २०६०/सन् २००४ तक) अद्वैत-वेदान्त विषय का औपचारिक अध्यापन का वृत्तिकार्य किया।

उन्होंने वेद-वेदाङ्ग-वेदोपाङ्ग–सम्बद्ध अनुसन्धानपूर्ण ४० से अधिक ग्रन्थ रचे हैं।

ग्रन्थसूची

१. **कौण्डिन्न्यायनशिक्क्षा** [A Complete and Critical Study of Vedic & Sanskrit Phonetics, 1992] (प्रातिशाख्यादि–सर्ववेदाङ्गशिक्षाग्रन्थसार-सङ्ग्रहात्मकः समीक्षापूर्णः पुष्कलसर्वाङ्गोऽपूर्वो विपुलकायो वेदाङ्गशिक्षाग्रन्थः, काठमाण्डू, २०४९वै.)– इस ग्रन्थ में प्राप्य सभी प्रातिशाख्यग्रन्थ तथा संस्कृत-शिक्षाग्रन्थों का समीक्षापूर्ण सार ११५८ कारिकाओं में प्रतिपादित है और उन कारिकाओं की प्रमाणवचनपूर्ण संस्कृतव्याख्या भी है। भूमिका में वेदाङ्ग-शिक्षाशास्त्र का इतिहास दिया गया है। इस में शिक्षाशास्त्रों के आलोडन से वेदलोकोभयसाधारण संस्कृत के दीर्घ अवर्ण, अन्य दीर्घ स्वर, ऋकार, लृकार, एकार, ओकार, अनुस्वार, विसर्ग, ञकार, णकार, वकार यमवर्ण, किड्-किडाकारवर्ण जैसे अर्वाचीन काल में दुर्विज्ञात वर्णोंका भी यथार्थ रूप को वर्णित किया गया है। आवश्यक स्थलों में संस्कृत–शिक्षाशास्त्र से सम्बद्ध भारतीय तथा पाश्चात्त्य कुछ अनुसन्धाताओं के मत की खण्डन भी किया गया है। परिशिष्ट में ७ दुर्लभ शिक्षाग्रन्थ शौनकशिक्षा, शैशिरीयशिक्षा, व्याडिशिक्षा, चारायणीयशिक्षा, कौहलीयशिक्षा, सर्वसम्मतशिक्षा और पारिशिक्षा सङ्गृहीत हैं। यह ग्रन्थ वेदाङ्गशिक्षाशास्त्र के तैत्तिरीयारण्यक में वर्णित वर्ण, स्वर, मात्रा, बल, साम, सन्तान (संहिता) इन छहों विषयों का साङ्गोपाङ्ग प्रतिपादन करनेवाला ५००० वर्षों के संस्कृतवाङ्मय के इतिहास में अद्वितीय वेदाङ्ग-शिक्षाग्रन्थ है और वैदिक तथा लौकिक संस्कृत की प्रचलित अशुद्ध

उच्चारणरीति में संशोधन के लिए रचा गया है। यह ग्रन्थ सम्पूर्णानन्द-संस्कृत-विश्वविद्यालय से वाचस्पति (डी.लिट्.) उपाधि के लिए सन् १९९२ में (२०४९ वै.) स्वीकृत है।

पृष्ठ 896 / मूल्य : भा.रू. 500.00

२. **पाणिनीयशिक्षा** [Sanskrit Phonetics According to Paninian School, 1998, 2004] (आचार्यकौण्डिन्न्यायनकृतवेदाङ्ग-शिक्षाविमर्शाख्य-व्याख्यासहिता, सन् १९९८, २००४)– छात्रोपयोगी तथा शोधोपलब्धिपूर्ण संस्कृत व्याख्या तथा हिन्दी टीका भी इसमें प्रस्तुत की गई है। भारतवर्षीय वेदाङ्गशिक्षा के ग्रन्थों के परिचय से युक्त भूमिका, वेदाङ्गशिक्षाशास्त्रीय पारि-भाषिक शब्द-विवरण, श्लोकसूची इत्यादि परिशिष्ट इस ग्रन्थ में जोडे गए हैं। संस्कृत के दुर्विज्ञात कुछ वर्णों के और क्ष, ज्ञ जैसे संयुक्ताक्षर के विषय में विशेष प्रकाश भी डाला गया है। सम्बद्ध विषय में अन्य अनुसन्धाताओं की त्रुटि की ओर भी ध्यानाकर्षण किया गया है। यह ग्रन्थ चौखम्बा-विद्याभवन (वाराणसी) से प्रकाशित है।

द्वि.सं. पृष्ठ 256 / मूल्य : भा.रू. 200.00

३. **नारदीयशिक्षा** [Theory of Classical Music and Phonetics According to Samavedic School, 2002] (आचार्यकौण्डिन्न्यायनकृत-व्याख्यासहिता, सन् २००२)– इस संस्करण में छात्रोपयोगी तथा शोधो-पलब्धिपूर्ण संस्कृत व्याख्या के साथ हिन्दी टीका भी प्रस्तुत की गई है। भारतवर्षीय वेदाङ्गशिक्षा के ग्रन्थों के परिचय से और भारतवर्षीय गानपरम्परा और नारदीय शिक्षा का विशेष परिचय से युक्त भूमिका तथा पारिभाषिक शब्द-विवरण इत्यादि परिशिष्ट इस ग्रन्थ में जोडे गए हैं। यह ग्रन्थ चौखम्बा-विद्याभवन (वाराणसी) से प्रकाशित है।

पृष्ठ 288 / मूल्य : भा.रू. 200.00

४. **प्रतिज्ञासूत्रम्** [Theory of Phonetics According to Shukla Yajurvedic School, 2014] (संस्कृतहिन्दीव्याख्यासहिता, सन् २०१४)– इस संस्करण में छात्रोपयोगी तथा शोधोपलब्धिपूर्ण संस्कृत व्याख्या के साथ हिन्दी टीका भी प्रस्तुत की गई है। यह ग्रन्थ चौखम्बा-विद्याभवन (वाराणसी) से प्रकाशित है। व्याख्याकार- आमोदवर्धन कौण्डिन्न्यायन।

पृष्ठ 148 / मूल्य : भा.रू. 200.00

५. माद्ध्यन्दिनीयवाजसनेयि-शुक्लयजुर्वेदशाखाद्ध्यायि-निरग्निकद्विज-सदाचार-कर्म-संस्कारकर्म-श्राद्धकर्मादि-**वैदिकमन्त्रसङ्ग्रहः** सपरिशिष्टः [A Collection of Mantras for Grihya rituals of Maddhyandineeya recension of Shuklayajurveda, 1993] (२०५२ वै.)– इस ग्रन्थ में प्रचलित स्नान-सन्ध्योपासनादिनित्यकर्मादिपद्धतियों के स्वशाखाश्रुति तथा स्वशाखासूत्र से -विपरीत अंशों के संशोधन के लिए सप्रमाण निर्देशन भी हैं। परिशिष्ट में लोक में प्रचलित प्रमुख पौराण कर्मों में आवश्यक प्रमुख मन्त्रों का और स्तोत्रों का भी

सङ्ग्रह है। अन्त्य में वैदिक कालगणनासिद्धान्त और प्रचलित ज्योतिष का सङ्क्षिप्त ज्ञान भी श्लोकों में दिया गया है। केवल संस्कृत।

पृष्ठ 156 / मूल्य : भा.रू. 65.00

६. मा.वा.शुक्लयजुर्वेदशाखाध्यायिनां **ब्रह्मयज्ञपद्धतिः** (विस्तृत-प्रस्ताविकायुता, सन् २००४)– ब्रह्मयज्ञ (दैनिक नित्य वेदपाठ) के विषय में ज्ञातव्य अनेक सप्रमाण विषयों से युक्त इस ग्रन्थ में वैदिक समाज में ब्राह्मण का स्थान, ब्राह्मणों का आचार, ब्राह्मणों का कर्तव्य, वैदिक वाङ्मय के साथ ब्राह्मणों का सम्बन्ध और ब्रह्मयज्ञ की अवश्यकर्तव्यता इत्यादि विषय भी प्रतिपादित हैं। यह ग्रन्थ चौखम्बा-विद्याभवन (वाराणसी) से प्रकाशित है।

पृष्ठ 224 / मूल्य : भा.रू. 50.00

७. मा.वा.शुक्लयजुर्वेदशाखाध्यायिनां **सन्ध्योपासनपद्धतिः** (विस्तृतप्रस्ताविकायुता, सन् २०००)– सन्ध्योपासन की महत्ता, ब्राह्मण के लिए सन्ध्योपासन की नित्य कर्तव्यता, सन्ध्योपासन का रहस्य, शुद्ध वैदिक सन्ध्योपासनपद्धति इत्यादि विषय में वेद, स्मृति और पुराणों के प्रमाणवचन सहित प्रभूत प्रकाश डाला गया है। यह ग्रन्थ चौखम्बा-विद्याभवन (वाराणसी) से प्रकाशित है।

पृष्ठ 160 / मूल्य : भा.रू. 40.00

८. मा.वा.शुक्लयजुर्वेदशाखाध्यायिनां **सँस्कारपद्धतिः** (विस्तृतभूमिकायुता, २०१९)- सँस्कारों की महत्ता, ब्राह्मण के लिए उपनयन सँस्कार का महत्त्व इत्यादि विषय में वेद, स्मृति और पुराणों के प्रमाणवचन सहित प्रभूत प्रकाश डाला गया है। इसमें जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमणिका, चूडाकरण, उपनयन, उपाकर्म-उत्सर्जन तथा समावर्तन सँस्कारों की पारस्करगृह्यसूत्रानुसारिणी पद्धतियाँ हैं।

(संस्कृत मूल तथा नेपाली संक्षिप्त अनुवाद) पृष्ठ 784 / मूल्य : भा.रू. 350.00

९. मा.वा.शुक्लयजुर्वेदशाखाध्यायिनां **विवाहपद्धतिः** (विस्तृतभूमिकायुता, २०२३)- यह पारस्करगृह्यसूत्रानुसारिणी पद्धति है। विवाह सँस्कार के विषय में वेद, स्मृति और पुराणों के प्रमाण-वचन सहित प्रकाश डाला गया है।

(संस्कृत मूल तथा नेपाली संक्षिप्त अनुवाद) पृष्ठ 672 / मूल्य : भा.रू. 420.00

१०. मा.वा.शुक्लयजुर्वेदशाखानुसारिणी **अन्त्यकर्मपद्धतिः** (विस्तृतभूमिकासहिता, काठमाण्डू, २०६५ वै.)– इस ग्रन्थ में शुक्लयजुर्वेदसंहिता, शतपथब्राह्मण, कात्यायनश्रौतसूत्र तथा पारस्करगृह्यसूत्र के आधार पर विस्तृत प्रतिपादन नेपाली भाषा में किया गया है। पद्धति के मूल स्वशाखासूत्रोक्त रूप को सप्रमाण स्पष्ट रूप में दिखाया गया है।

(संस्कृत मूल तथा नेपाली संक्षिप्त अनुवाद) पृष्ठ 624 / मूल्य : भा.रू. 110.00

११. मा.वा.शुक्लयजुर्वेदशाखाध्यायिनाम् **एकोद्दिष्टश्राद्धपद्धतिः** (विस्तृतभूमिका-सहिता, काठमाण्डू, २०५८ वै.)– इस ग्रन्थ की भूमिका में श्राद्ध की परिभाषा, महत्ता, कर्तव्यता इत्यादि के विषय में वेद स्मृति पुराणों के वचन के आधार पर विस्तृत प्रतिपादन नेपाली भाषा में किया गया है। पद्धति के मूल स्वशाखासूत्रोक्त रूप को सप्रमाण स्पष्ट रूप में दिखाया गया है।

(संस्कृत मूल तथा नेपाली संक्षिप्त अनुवाद) पृष्ठ 224 / मूल्य : भा.रू. 40.00

१२. मा.वा.शुक्लयजुर्वेदशाखाध्यायिनाम् **पार्वणश्राद्धपद्धतिः** (विस्तृत-भूमिकासहिता, काठमाण्डू, २०६४ वै., द्वि.सं २०७२ वै.)– इस ग्रन्थ की भूमिका में श्राद्धसम्बद्ध शुक्लयजुर्वेदमन्त्र, शतपथब्राह्मणवचन, कात्यायन-श्रौतसूत्रवचन इत्यादि भी हैं। स्मृति पुराणों के वचन के आधार पर विस्तृत प्रतिपादन नेपाली भाषा में किया गया है। पद्धति के मूल स्वशाखासूत्रोक्त रूप को सप्रमाण स्पष्ट रूप में दिखाया गया है।

(संस्कृत मूल तथा नेपाली संक्षिप्त अनुवाद) पृष्ठ 328 / मूल्य : भा.रू. 95.00

१३. **वेदभाषानिघण्टुः** (कौण्डिन्न्यायनकोषः) [Vedic Concordance, 1993] (भूलोककाण्डान्तर्गत–देववर्ग–ब्रह्मवर्गात्मकः, २०५० वै.)– यह ऋग्वेद से लेकर आज तक की संस्कृत भाषा में प्रचलित सम्पूर्ण प्रमुख संस्कृत शब्दों को सङ्गृहीत करने वाले और अमरकोष की शैली में अनुष्टुप्श्लोकों में रचे गए बृहत् संस्कृतशब्दकोश का निदर्शन के रूप में प्रस्तुत भूलोककाण्डान्तर्गत देववर्ग–ब्रह्म–वर्गात्मक भाग है। प्रस्तावना और शब्दानुक्रमणिका से युक्त काठमाण्डू में प्रकाशित यह भाग सभी संस्कृतज्ञों के लिए, विशेषतः वैदिकों, मीमांसकों तथा धर्मशास्त्रियों के लिए अभ्यसनीय है। केवल संस्कृत।

पृष्ठ 72 / मूल्य : भा.रू. 25.00

१४. **वेदाङ्गज्योतिषम्** [Astronomy According to the Veda, 2005] (सोमाकरभाष्येण कौण्डिन्न्यायनव्याख्यानेन च सहितम्, सन् २००५)– दुर्लभ सोमाकरकृत भाष्य के साथ श्रीशिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायनद्वारा रचित अभिनव व्याख्यान से युक्त लगधमुनिप्रोक्त वेदाङ्गज्योतिष का यह अपूर्व संस्करण। हिन्दी में भी भूमिका और व्याख्या प्रस्तुत किए गए हैं। भूमिका भाग में वेदाङ्गज्योतिष का प्रामाण्य और श्रौत–स्मार्त धर्म कृत्य के काल के निर्धारण में वर्तमान काल में भी वेदाङ्गज्योतिष का अनुसरणीयत्व भली भाँती समझाया गया है। प्रचलित सिद्धान्तज्योतिष के ग्रन्थों के वेदाङ्गज्योतिषप्रतिकूल प्रतिपादन का अग्राह्यत्व भी इस में सिद्ध किया गया है। वेदाङ्गज्योतिष के अनुसन्धाताओं के लिए दुर्बोध मानी गई वेदाङ्गज्योतिषप्रोक्त अधिमासव्यवस्था का प्राचीन ग्रन्थ के अनुसन्धानद्वारा सर्वथा नवीन, युक्तियुक्त, वैज्ञानिक और स्पष्ट व्याख्या प्रस्तुत की गई है। वैदिक कालगणनापद्धति का वास्तविक रूप भारतीयसर्वकार-नियुक्त पञ्चाङ्गसुधारसमिति के अध्यक्ष मेघनाद साहा तथा सदस्यसचिव निर्मलचन्द्र लाहिडी से भी यथार्थ आकलन नहीं किया गया था। इस लिए सभी विशिष्ट स्थलों पर शङ्करबालकृष्ण दीक्षित, लाला छोटेलाल बार्हस्पत्य, सुधाकर द्विवेदी, बालगङ्गाधर तिलक, वेङ्कटेश बापूजी केतकर, शामशास्त्री इत्यादि व्याख्याताओं के व्याख्या की भी समीक्षा की गई है। परिशिष्ट में श्लोकसूची, पदसूची, हस्तलिखित महत्त्वपूर्ण दो पाण्डुलिपियों की प्रतिलिपियाँ, वेदाङ्गज्योतिषोक्त वैदिकतिथिपञ्जी (५ वर्षों की) इत्यादि महत्त्वपूर्ण सामग्री समाविष्ट है। वेदाङ्गज्योतिष का इतना विस्तृत व्याख्यात्मक प्रकाशन अभीतक किसी भी भाषा में नहीं हुआ है। यह ग्रन्थ चौखम्बाविद्याभवन (वाराणसी) से प्रकाशित है। संस्कृत—हिन्दी।

पृष्ठ 544 / मूल्य : भा.रू. 400.00

१५. **भारतवर्षीय ज्योतिष के ज्वलन्त प्रश्न और वेदाङ्गज्योतिष** (सन् २००८)— इस ग्रन्थ में इन प्रश्नों पर विचार किया गया है— १. प्रचलित ज्योतिषग्रन्थों में वैदिक पञ्चवर्षात्मक युग की उपेक्षा क्यों? २. नववर्षारम्भ माघ में अथवा चैत्र में? ३. संवत्सर-परिवत्सरादि की उपेक्षा क्यों? ४. चान्द्र वर्षों की उपेक्षा और बार्हस्पत्य वर्षों का स्वीकार क्यों? ५. सौरचान्द्र अयन की उपेक्षा क्यों? ६. चान्द्रऋतुओं का अनादर क्यों? ७. चान्द्रमासों की प्रधानता कैसे भुला दी गई? ८. चान्द्रमास की पूर्णिमान्तता क्यों? ९. अयन के अन्त में ही अधिमास मानने की व्यवस्था क्यों भुला दी गई? १०. क्षयमास कैसे स्वीकारा गया? ११. खण्डतिथि क्यों? १२. वेदाङ्गज्योतिष ग्रन्थ की उपेक्षा क्यों? १३. वैदिक नक्षत्रक्रम को क्यों छोडा गया? १४. वेदाङ्गज्योतिष में बताई गई नक्षत्र नामकरण की रीति की उपेक्षा क्यों? १५. वेदाङ्ज्योतिष ग्रन्थ के परिष्कार और व्याख्यान में ध्यान क्यों नहीं गया? १६. पञ्चाङ्ग–सुधार–समिति का वेदाङ्गज्योतिष ग्रन्थ में ध्यान क्यों नहीं गया? इन विषयों पर सप्रमाण विवेचन किया गया है। इस ग्रन्थ में लगधमुनिप्रोक्त याजुष-वेदाङ्गज्योतिष की हिन्दी व्याख्या और विवेचनात्मक भूमिका भी संलग्न है। यह ग्रन्थ चौखम्बाविद्याभवन (वाराणसी) से प्रकाशित है। हिन्दी।

पृष्ठ 272 / मूल्य : भा.रू. 150.00

१६. **ब्रह्ममीमांसासूत्रम्** (शाङ्करभाष्यानुकूलया कौण्डिन्न्यायनवृत्त्या सहितम्) (सन् २००२)— इस ग्रन्थ में सूत्रार्थप्रदर्शन के वाद अधिकरणरचना और कारिकाओं में भी अधिकरण का सार दिया गया है। सूत्रार्थ हिन्दी भाषा में भी दिया गया है। व्याख्या मूलतः शाङ्करभाष्य का अनुकूल है। कुछ स्थलों में वेदादिशास्त्र की दृष्टि से शाङ्करभाष्य की भी समीक्षा की गई है। भूमिका में दर्शन-शास्त्रपरिचय, भारतवर्षीय प्रमुखदर्शनविवरण, ब्रह्ममीमांसा–ग्रन्थपरिचय, ब्रह्ममीमांसासूत्रग्रन्थ के अध्ययन के अधिकारी का निरूपण तथा वेदान्तशास्त्र के ५८ ग्रन्थकारों का परिचय भी समाविष्ट किया गया है। यह ग्रन्थ चौखम्बा–विद्याभवन (वाराणसी) से प्रकाशित है। इस वृत्ति में वैदिक ज्ञानकर्मसमुच्चयवाद का समर्थन किया गया है।

पृष्ठ 528 / मूल्य : भा.रू. 300.00

१७. **गरुडपुराणम् (प्रेतकल्पात्मकम्)** (सन् २००४)— नौनिधिरामद्वारा रचित सारोद्धार गरुडपुराण प्रेतकल्प को ही मूल गरुडपुराण मानने के भ्रम का निवारण करने-वाला यह मूल गरुडपुराण का ४९ अध्यायात्मक प्रेतकल्प है। यह हिन्दीभाषा-टीकासहित है। भूमिका में पुराणों के और गरुडपुराण के विषय में प्रकाश डालने के साथसाथ अन्त्यकर्मविषयक ज्ञातव्य अनेक बातों का शास्त्रीय परिचय भी सङ्गृहीत किया गया है। प्रकाशक— चौखम्बा-विद्याभवन, वाराणसी।

(संस्कृत—हिन्दी) पृष्ठ 560 / मूल्य : भा.रू. 200.00

१८. **प्रायश्चित्तव्यवस्था** (काठमाण्डू, २०४९ वै.)— इस में काशी के विद्वानों से प्रदत्त भारतवर्षबहिर्गमन-विदेशि-विधर्मि-सहवाससहभोजनादि दुरित का प्रायश्चित्त की धर्मशास्त्रीय व्यवस्था दी गई है, तथा नेपाली भाषा में नेपाल के धार्मिकसांस्कृतिक पक्ष का कुछ इतिवृत्त का वर्णन भी संलग्न है।

(मूल संस्कृत, विस्तृत नेपाली भूमिका) पृष्ठ 80 / मूल्य : भा.रू. 25.00

१९. **काव्यप्रकाशः** [Literary Criticism of Sanskrit Literature, 1980] (आचार्यकौण्डिन्न्यायनकृतया हैमवत्या संस्कृतव्याख्यया सहितः, सन् १९८०)— शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायनद्वारा रचित विद्यार्थिहितकारिणी तथा विद्वज्जन-प्रमोदकारिणी नवीन संस्कृतव्याख्या से युक्त। भारतवर्ष के विभिन्न क्षेत्रों से काव्यप्रकाश में व्याख्या प्रस्तुत होनेपर भी नेपाल से कोई व्याख्या प्रस्तुत नहीं थी। इस अभाव को यह विशिष्ट व्याख्या अच्छी तरह मिटा देती है। यह ग्रन्थ मोतीलाल बनारसी दास ने प्रकाशित किया है। केवल संस्कृत। (अप्राप्य)

पृष्ठ 602 / मूल्य : भा.रू. 120.00

२०. **व्यावहारिकं संस्कृतम्** [Sanskrit Infant Reader, 2021] (सचित्रं बालपुस्तकम्, काठमाण्डू, २०७७ वै., द्वि.सं. २०७९)— प्रमोदवर्धन कौण्डिन्न्यायन। सर्वथा पाणिनीय-व्याकरणसम्मत संस्कृतभाषा को सरलता से सीखने-सिखाने के लिए उपयोगी संस्कृतवर्णमाला, सरलवाक्य, बाल-कविता, सङ्ख्याशब्द तथा अङ्क इत्यादि विषयों से युक्त अपूर्व क्रमबद्ध सचित्र पाठ्य-पुस्तक है। केवल संस्कृत।

पृष्ठ 72 / मूल्य : भा.रू. 100.00

२१. **व्यावहारिकं संस्कृतम्** [Sanskrit Reader, Book 1, 1991] (सचित्रं प्रथमम् पुस्तकम्, काठमाण्डू, २०५०वै., २०६७ वै., २०७६ वै., २०८० वै.)— सर्वथा पाणिनीय-व्याकरणसम्मत संस्कृतभाषा को सरलता से सीखने-सिखाने के लिए उपयोगी सरलवाक्य, बाल-कविता, सङ्ख्याशब्दप्रयोग (१-१० पुं., स्त्री, नपुं), गुणनसारणी (१-५), सङ्ख्याशब्द तथा अङ्क इत्यादि विषयों से युक्त अपूर्व क्रमबद्ध सचित्र पाठ्यपुस्तक है। केवल संस्कृत।

पृष्ठ 88 / मूल्य : भा.रू. 100.00

२२. **व्यावहारिकं संस्कृतम्** [Sanskrit Reader, Book 2, 1996] (सचित्रं द्वितीयम् पुस्तकम्, काठमाण्डू, २०५३वै., २०७५ वै., २०८० वै.)— सरलवाक्य, बालकविता, सङ्ख्याशब्दप्रयोग (११-२० पुं., स्त्री, नपुं), गुणनसारणी (६-११), वैदिकशास्त्रपरिचयश्लोक इत्यादि विषय युक्त। भूमिका में संस्कृत के शास्त्रीय रूप से शुद्ध उच्चारण कैसे करना चाहिए इस विषय का निर्देश भी है। संस्कृत।

पृष्ठ 88 / मूल्य : भा.रू. 110.00

२३. **व्यावहारिकं संस्कृतम्** [Sanskrit Reader, Book 3, 2001] (सचित्रं बालशिक्षार्थं तृतीयम् पुस्तकम्, काठमाण्डू, २०५८)— यह विभक्तियों का प्रयोग, लकारों का प्रयोग, सन्धि का अभ्यास, समासों का अभ्यास, तव्य-अनीयर्-ण्वुल्-तृच्-शतृ-शानच्-तुमुन्-क्त-क्त्वा-तरप्-तमप् इत्यादि प्रत्ययों का प्रयोगात्मक ज्ञान, प्रातिपदिकरूपावलि, धातुरूपावलि, पूरणप्रत्ययान्त प्रमुख सङ्ख्या-शब्द इत्यादि विषयों से युक्त पाठ्यपुस्तक है। केवल संस्कृत।

२४. **वेदवेदाङ्गोपाङ्गविमर्शः (पूर्ण संस्कृत, नेपाली सारांश सहित) [वैदिकवाङ्मय का परिचय] आमोदवर्धन कौण्डिन्न्यायन (भुँडी पुराण प्रकाशन, काठमाण्डु २०७९)।** इस में विशेष रूप से चारों वेदों की

शाखाओं का परिचय दिया गया है। साथ ही ६ वेदाङ्गों का भी परिचय दिया गया है। पहिलो अङ्ग शिक्षाशास्त्र का तो अधिक विस्तृत परिचय दिया गया है । साथ ही वेदोपाङ्ग प्रतिपद, अनुपद, छन्दोभाषा, धर्मशास्त्र, मीमांसान्याय और तर्कशास्त्र का भी परिचय दिया गया है। परिशिष्ट में विविध विषय में वैदिक शास्त्रीय निबन्ध समाविष्ट हैं।

पृष्ठ 424 / मूल्य : भा.रू. 500.00

२५. **कतिपय–नैपाल–संस्कृतग्रन्थकार–परिचयः** [A collecton of Short Biographies of 180 Nepalese Sanskrit Writers, 1991] **(२०४८ वै.)– इस ग्रन्थ में प्राचीनकाल, मध्यकाल और आधुनिक काल के नेपालदेशज ज्ञात १८० संस्कृतग्रन्थकारों का सङ्क्षिप्त परिचय दिया गया है। साथ में नेपाल में संस्कृत शिक्षा का इतिहास और वर्तमान स्थिति का परिचय भी संलग्न है।**

(संस्कृत मूल तथा भूमिका) पृष्ठ 100 / मूल्य : भा.रू. 25.00

२६. **मनुस्मृतिः** (सुपरिमार्जितया कल्लूकभट्टकृतया मन्वर्थमुक्तावल्या हिन्दी-व्याख्यया च समेता), कुल्लूक–भट्टव्याख्यायां ४०४ स्थलेषु विशेषेण शोधिता (चौखम्बाविद्याभवन, वाराणसी, २००७ क्रै.)

पृष्ठ 1024 / मूल्य : भा.रू. 750.00

२७. **मनुस्मृति** (श्लोकार्धकानुक्रमणीयुक्त, हिन्दीव्याख्यायुक्त, चौखम्बा विद्याभवन, २००८ क्रै.)– इस ग्रन्थ में अनेक स्थलों पर आधुनिकजनों के द्वारा मनुस्मृति में किए गए आक्षेपों का उत्तर भी दिया गया है।

पृष्ठ 672 / मूल्य : भा.रू. 350.00

२८. **गौतमधर्मसूत्रम्** (सुपरिमार्जितया हरदत्तकृतया मिताक्षरया व्याख्यया हिन्दीव्याख्यया च समेता, मिताक्षराव्याख्याया अनेकेषु स्थलेषु विशेषेण शोधिता)– विस्तृत समीक्षात्मक भूमिका तथा हिन्दी व्याख्या से युक्त, सम्पादक तथा हिन्दी व्याख्याकार– प्रमोदवर्धन कौण्डिन्न्यायन (चौखम्बाविद्याभवन, वाराणसी, २०१५ क्रै.)

पृष्ठ 592 / मूल्य : भा.रू. 450.00

२९. **गुरुकुलीय शिक्षा, उपनयन संस्कार, नित्य सन्ध्योपासन तथा ब्रह्मयज्ञ** (पुस्तिका)- इस पुस्तिका में वर्तमान समय में वैदिक शास्त्रीय आचारपालन का महत्त्व तथा वेदाध्ययन की शास्त्रीय पद्धति पर प्रकाश डाला गया है। नित्य सन्ध्योपासन तथा ब्रह्मयज्ञ के महत्त्व को भी समझाया गया है। **वैदिक गुरुकुलीय शिक्षापद्धति के पाठ्यक्रम को भी दिखाया गया है।** हिन्दी (पृष्ठ 8) (अन्तर्जाल में उपलब्ध)

नेपाली भाषा के ग्रन्थ

वृत्तनक्षत्रमाला (An Introduction to Prosody, 1971)। शिवराजाचार्यकौण्डिन्न्यायनकृत।

प्रायः लोग छन्द तथा वृत्तों का भेद नहीं जानते हैं। इस ग्रन्थ में छन्द के अन्तर्गत वृत्त होते हैं यह बात भी समझाया गया है। यहाँ २७ वृत्तों का सोदाहरण परि चय नेपाली भाषा में दिया गया है। संस्कृत में भी लक्षण तथा उदाहरण हैं। मूल्य भा.रू. 15.00

जिम्दो नेपालि भासा, प्रथम खण्ड २०३०, द्वितीय खण्ड २०३७, (Theory of Language, Linguistics, Grammar & Phonetics, part I, 1973, Part II, 1981)। यास्क-पाणिनि-कात्यायन-पतञ्जलि-वररुचि-भर्तृहरि के शाश्वत भाषा-व्याकरण-सिद्धान्त के अनुसार भाषा-व्याकरण के सिद्धान्तों का नेपाली भाषा में विस्तृत विवेचन। शिवराजाचार्यकौण्डिन्न्यायनकृत।

नेपाली वर्णोच्चारणशिक्षा (Nepali Phonetics)। साझा प्रकाशन, काठमाण्डू से प्रकाशित, २०३१ (1974)। शिवराजाचार्यकौण्डिन्न्यायनकृत।

वैदिक धर्म मूल रूपमा (An Introduction to the Vedic religion, philosophy and culture, First Edition 1989, Second Edition, 2005, Third Edition, 2024)। शिवराजाचार्यकौण्डिन्न्यायनकृत।

वैदिक यज्ञिय उपकरण र वृक्षहरु (सचित्र) (A Research-oriented Introduction to the Instruments used in the Vedic Rituals, 2015)। **आमोदवर्धनकौण्डिन्न्यायनकृत।**

इस ग्रन्थ में वैदिक यज्ञपात्रों का तथा यज्ञिय वृक्षों का सचित्र परिचय नेपाली भाषा में दिया गया है। पृष्ठ 176/ मूल्य भा.रू. 155.00

आदिकवि भानुभक्त आचार्यको भाषारामायण— आदिकवि के अन्य कृति तथा स्फुटपद्य सहित। शिवराजाचार्यकौण्डिन्न्यायनसम्पादित।

मूल हस्तलेख के अनुसार संशोधित तथा सम्पादित नेपालीभाषारामायण का अपूर्व संस्करण वि.सं. २०६७। (अप्राप्य)

लोकानुकूल सुलभ संस्करण, वि.सं. २०७३। पृष्ठ 608/मूल्य भा.रू. 750.00

सम्पर्कसूत्र

स्वाद्ध्यायशाला, ब्रह्मपुरी,

बुढानीलकण्ठनगर–६,

हात्तिगौँडा,

काठमाण्डू, नेपाल।

email : **svadhyaya2036@gmail.com**

मन्तव्य

स्वाद्ध्यायशालाप्रमुख श्री शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन के कार्यों के विषय में भारतीय विद्वानों के मन्तव्य के कुछ अंश—

नेपाल के विशिष्ट विद्वान् शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन के द्वारा बडे परिश्रम से प्रणीत ग्रन्थ कौण्डिन्न्यायनशिक्षा का यत्र तत्र अवलोकन कर मैं ग्रन्थकार के विपुल वैदुष्य का प्रत्यक्षीकरण कर आनन्द से परिप्लुत हो रहा हूँ। नेपाली पण्डित महोदय वेद तथा व्याकरण के महनीय पण्डित हैं।

—पद्मभूषण आचार्य बलदेव उपाध्याय

वाराणसी, २५/१/१९९४

विविधशास्त्रपरिशीलनधिषणः स्वनामधन्य आचार्यशिवराजः कौण्डिन्न्यायनः सोहापोहं काव्यप्रकाशव्याख्यायां हैमवत्यां विवृतौ प्रवृत्तो विजयतेतराम्। सकलशास्त्रमन्थनपरिणामभूतेयं तदीया विराजते विवृतिः।

—डा. भागीरथप्रसादत्रिपाठी "वागीशशास्त्री"

वाराणसी, १७/५/१९८५

स्वाद्ध्यायशालिनोऽस्य मनीषिणः "कौण्डिन्न्यायनशिक्षा"–"वेद-भाषानिघण्टु"नामकौ ग्रन्थौ एतदीयां वैदुषीं व्युत्पत्तिञ्च प्रमाणयतः।

—आचार्य डा. जयमन्तमिश्रः

दरभङ्गा, १४/१०/१९९४।

स्वाद्ध्यायशालाकुटुम्बका प्रकाशित वैदिकतिथिपत्रहरु

प्रचारण–सहयोगी

१. श्री चेतमणि न्यौपाने, त्रिपुरसुन्दरी–३, धुस्कुन, सिन्धुपाल्चोक, ९७४१००५२६९ ।
२. श्री रामप्रसाद धिताल, थाङपालधाप–८, सिन्धुपाल्चोक, ९८४१७५५९५१ ।
३. श्री तुलसी भारद्वाज (निरौला), बालुवाटार, काठमाण्डु, ९८४१४०५०७३ ।
४. श्री बालहरि घिमिरे, म्याग्दे–३, सिद्धाश्रम, बतासे, तनहुँ, ९८४६१३१७५७ ।
५. पं. श्री वैकुण्ठ अधिकारी (काश्यप), रत्ननगर–१५, चितवन, ९८४५१८३२६३ ।

सहयोगीहरु

१. श्री पहलबहादुर थापा, गल्कोट, बाग्लुङ, हाल टौखेल, गोदावरी–३, ललितपुर, ९८५११८८६६१ ।
२. श्री सुयशराज पराजुली, नवलपुर, हेटौँडा–११, मकवानपुर, ९८५५०६९५७१ ।
३. श्रीमती हरिमाया देवी पौडेल, भरतपुर–९, मिलनचोक, चितवन, ९८४५१८२४६८ ।
४. ज्यो. श्रीयुता शारदा पन्त, चिति स्याउत–११, लमजुङ, ९८६२६९११५८ ।
५. श्री भेषराज दुवाडी (आत्रेय), रत्ननगर न.पा.–१, निपनि, चितवन, ९८५५०६०९९२ ।
६. श्री विश्वराज आचार्य, बालुवाटार, काठमाण्डु, ०१–४४१८५८९ ।
७. श्री सुनील सिटौला, मैतिदेवी, काठमाण्डु, ९८५१०७२१८८ ।
८. श्री दुर्गाप्रसाद अर्याल विद्यावारिधि, का.म.पा.–६, बौद्ध, शिरोमणिमार्ग, ०१–४८२०५९७ ।
९. श्री लक्ष्मीकान्त पन्थी विद्यावारिधि, का.म.पा.–६, बौद्ध, शिरोमणिमार्ग, ०१–४८२०२२१ ।
१०. श्री दामोदर खनाल, व्यास न.पा.–५, चापाघाट, तनहुँ, ०६५–५६००३२ ।
११. श्री शिवराज काफ्ले, काफ्ले कानुनी सेवा केन्द्र, व्यास न.पा.–३, तनहुँ, ९८४६४८८६२६ ।
१२. श्री कमलभक्त पोखरेल, व्यास न.पा.–२, तनहुँ, ९८४६०५५५११ ।
१३. श्री दीपकभक्त उपाध्याय पौडेल (आत्रेय), र.न.पा.–१०, निपनि, चितवन, ९८४५०८०४२३ ।
१४. श्री चूडामणि धमला (धनञ्जय), रत्ननगर–१३, जयमङ्गला, चितवन, ०५६–५६३२५३ ।
१५. श्री राजु दुवाडी (आत्रेय), इचङ्गु, काठमाण्डु, ९८४१२१२६४९ ।
१६. श्री केशव प्रसाई (शाण्डिल्य), रत्ननगर न.पा.–१०, घेघौलि, चितवन, ९८४३२३८६९४ ।
१७. श्री शुकप्रसाद पन्त (भारद्वाज), रत्ननगर न.पा.–१०, बकुल्लर, चितवन, ९८४५०४९२८८ ।
१८. श्री वरुण सुवेदी, रत्ननगर न.पा.–१२, जमुनापुर, चितवन, ९८४५०५५८१५ ।
१९. श्री चिरञ्जीवीभक्त पौडेल, जितपुर, बारा, ९८४५५३३५८८ ।
२०. श्री कौशल सुवेदी, जितपुर सिमरा–१६, बारा, ९८४४२५५२६४ ।
२१. श्री लम्बोदर निरौला (वैदिक), महेन्द्रनगर (देवीस्थान) सुनसरी, ९८४२२३३६४८ ।
२२. ज्यो. पं. श्री ईश्वरीप्रसाद अधिकारी, भरतपुर–१२, चितवन, ९८४५४६९५०१ ।
२३. श्री सुबोध अधिकारी (वासुदेव), भरतपुर–१२, चितवन, ९८४५५१८०३१ ।
२४. श्री मुकेशकुमार प्रतिहस्त, श्री याज्ञवल्क्य सं.मा.वि., ज्ञानकूप, जनकपुर, ९८५४०२८३८९ ।

प्रस्तुत वैदिकतिथिपत्रका विषयमा

एस तिथिपत्रको प्रकाशन र प्रचारणमा विविध प्रकारले सहयोग पुऱ्याउने सबैमा यथोचित साधुवाद छ । प्रारम्भदेखि अहिलेसम्मका १५ ओटै तिथिपत्रका प्रकाशन–प्रचारणमा सहयोग पुऱ्याउने महानुभावहरूमा विशेष साधुवाद छ । आगामी वर्षहरूमा वैदिक तिथिपत्र पृथक् रूपमा प्रकाशन गर्ने योजना छ ।

स्वाद्ध्यायशालाकुटुम्ब

ब्रह्मपुरी, हात्तिगौँडा, बुडानीलकण्ठनगरपालिका–६, काठमाण्डु; नेपाल,
दूरस्वन (फोन) ९८४१९६८२६२, ९८४९०९१४६७, ९८४३०३५३९७ ।